॥ श्रीः ॥

जहांगीरनामा ।

जिसको

जोधपुरनिवासी

मुन्शी देवीप्रसादजीने

फारसी तुजुकजहांगीरीसे

हिन्दीमें अनुवादित किया।



जहांगीर।

कलकत्ता।

९७ मुक्तारामबाबूस्ट्रीट, भारतमित्र प्रेससे

पण्डित कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित।

सन् १९०५ ई०।



मुंशी देवीप्रसाद।

अनुवादकर्त्ताका परिचय।

इस पुस्तकके अनुवादकर्त्ता श्रीयुक्त मुंशी देवीप्रसाद महोदयका कुछ परिचय पाठकोंको देना चाहता हूं। आप हिन्दीभाषा और देवनागरीके प्रचारके बड़े पक्षपाती हैं। यद्यपि आप फ़ारसी और उर्दूके विद्वान हैं तथापि हिन्दीके तरफदार बहुत दिनसे हैं। बहुत दिन पहले हिन्दीमें राजस्थानका स्वप्न नामकी पुस्तक लिखकर आपने अपने हिन्दीप्रेमका परिचय दिया था और राजस्थानकी रियासतोंमें देवनागरी अक्षरोंके प्रचारके लिये जोर दिया था। मुसलमान बादशाहों और हिन्दू राजाओंका इतिहास जाननेमें आप अद्वितीय पुरुष हैं। राजस्थानकी एक एक रियासतहीकी नहीं एक एक गांव और एक एक कसबेकी सब प्रकारकी बातोंको आपने इस तरह खोज खोजकर निकाला है कि आपको यदि राजस्थानका सजीव इतिहास कहें तो कुछ भी अत्युक्ति नहीं होती। राजस्थानके इतिहासकी खोजमें आपने जैसा श्रम किया है उससे आपका नाम सुवर्रिखे राजपूताना पड़ गया है। पर सच पूछिये तो वह राजस्थानके केवल इतिहास लेखकही नहीं वरञ्च वहांके रीफार्मर या सुधारक भी हैं। बहुतसे देशी रजवाड़ोंमें उनकी लेखनीसे बहुत कुछ सुधार हुआ है। हिन्दीके प्रेमियोंके लिये यह एक बड़े हर्षका विषय है कि इस प्रवीणावस्थामें वह हिन्दीके मुरब्बी हुए हैं और हिन्दीभाषाके इतिहासभाण्डारको पूर्ण करनेकी ओर उनका ध्यान हुआ है।

मुंशी देवीप्रसादजी गौड़ कायस्थ हैं। आपके पूर्वपुरुष दिल्लीसे भूपाल गये थे। उनमेंसे एक मुंशी नरसिंहदास थे। उनके पुत्र मुंशी आलमचन्द थे उनके बेटे घासीराम मुंशी देवीप्रसादके परदादा

थे जो बड़े मुंशी और खुशनवीस थे। उनके बेटे मुंशी किशनचन्द जीका संबंध टौंकके नवाब अमीरखांके बख्शी दौलतरायजीकी कन्यासे हुआ था। इससे वह भूपाल छोड़कर सिरोंजमें आबसे थे जो भूपालसे १८ कोस पर नवाब अमीरखांकी अमलदारीमें था। वहीं मुंशी देवीप्रसादके पिता मुंशी नत्थनलालजीका जन्म भादों बदी ८ संवत् १८७६ को हुआ। उसी साल अमीरखांने अङ्गरेजों से सन्धि होजाने पर टौंकमें रहना स्वीकार किया। इससे देवीप्रसाद जीके दादा सकुटुम्ब टौंकमें आबसे। जब आपके पिता लिख पढ़ कर होशियार हुए तो वह अमीरखांके छोटे बेटे साहबजादे अब-दुलकरीमखांकी सरकारमें नौकर होकर संवत् १९०० विक्रमाब्दमें उनके साथ अजमेर चले आये। क्योंकि साहबजादेकी उनके बड़े भाई नवाब वजीरद्दौलासे नहीं बनती थी इससे अंगरेजोंने उनको अजमेरमें रहनेकी आज्ञा दी।

मुंशी देवीप्रसादका जन्म माघ सुदी १४ संवत् १९०४ को जय-पुरमें नानाके घर हुआ। नाना हकीम शंकरलाल जयपुर राज्यके चौकीनवीस भैया* हीरालालजीके पुत्र थे। देवीप्रसादजीने फारसी हिन्दी अपने पितासे पढ़ी और नौकरी भी टौंकहीकी सरकारमें संवत् १९२० से संवत् १९३४ तक की। इस बीचमें उनका रहना कभी अजमेरमें और कभी टौंकमें हुआ। क्योंकि उक्त साहबजादे के पुत्र पिताके बाद कभी अजमेरमें और कभी टौंकमें रहने लगे थे।

मुसलमानी राज्य होजानेसे टौंकमें हिन्दुओं पर बहुत अत्याचार होने लगा। इससे संवत् १९३५ के आरम्भमें मुंशी देवीप्रसादजी की नौकरीही नहीं छूटी वरञ्च उन्हें टौंक छोड़देनेका भी हुक्म हुआ। मुंशीजीने अजमेरमें आकर कोहेनूर आदि अखबारोंमें उन अत्या-चारोंकी बात लिखना आरम्भ की। परिणाम यह हुआ कि टौंक दरबारको कुछ सुध हुई। अत्याचार कुछ कम किये गये और

---

* ढूंढारदेश और हाडोती (कोटाबूंदी) में कायस्थोंको भैयाजी कहते हैं और मारवाड़ मेवाड़में पंचोली।

लखनऊके अवधअखबारमें रियासतकी ओरसे विज्ञापन प्रकाशित हुआ कि अब पिछली बातें रियासतमें नहीं होने पावेंगी।

मुंशीजीके छोटेभाई बाबू बिहारीलाल जोधपुरकी एजण्टीमें सेकेण्डक्लर्क थे। उनकी चेष्टासे आपको एक नौकरी संवत् १९३६ में जोधपुर दरबारमें मिली। पहले कई साल तक आप अपीलकोर्टके नायब सरिश्तेदार रहे। संवत् १९४० में महकमे खासके सर-दफ्तर होगये। १९४२ में आप मुंसिफ हुए। १९४६ में महकमें तवारीखके मेम्बर हुए। संवत् १९४८ में मनुष्यगणनाके डिपटी सुपरिण्टेण्डेण्ट और १९५५ में महकमे बाकियात और खासी दुकानातके सुपरिण्टेण्डेण्ट हुए। अढ़ाई सौ रुपये मासिक तक वेतन पाते रहे। संवत् १९५६ के अकालमें रियासतकी मुन्सिफी टूट गई तब आपने कुछ दिन तक फेमिन विभागमें काम किया। संवत् १९५७ में फिर जोधपुर परगनेमें मनुष्यगणनाके सुपरिण्टे-ण्डेण्ट हुए। आजकल रियासतके बड़े काम छोड़कर गुजारेके लायक कुछ काम आपने अपने पास रखे हैं और साहित्यसेवामें लगे हैं। दुनियामें धन जोड़नेकी इच्छा अधिक लोगोंको रहती है पर धन अमर नहीं है। मुंशी साहब इस समय वह धन जोड़ रहे हैं जो सदा अमर रहे।

अङ्गरेजीमें छपी हुई मुंशी देवीप्रसादजीके सार्टीफिकटोंकी एक पुस्तक मेरे दृष्टिगोचर हुई। उसके देखनेसे विदित होता है कि वह जिस विभागमें गये हैं उसीमें उनके कामकी इज्जत और उनकी सेवाकी सराहना हुई है। नौकरके लिये यही बड़ी इज्जत है कि उसके कामकी प्रशंसा हो। पर जिनके दृष्टि है उनकी समझमें आजाता है कि मुंशी देवीप्रसाद मामूली काम करनेवालोंके सदृश नहीं थे। उनकी प्रतिभाने हर जगह अपना चमत्कार दिखाया है। इतिहासके समझने पढ़ने और पुरानी बातोंकी खोज खोज कर निकालनेकी जो बुद्धि भगवानने उनको दी है उसने हर जगह अपनी तेजी दिखाई है। मनुष्यगणनामें जाकर आपने जोधपुर

राज्यकी प्रजाकी वह सुन्दर रिपोर्ट लिखी है कि वैसी रिपोर्ट देशी रियासतोंमें तो कहां भारतके अंगरेजी इलाकोंकी भी बहुत कम है।

अब कुछ बातें उनके साहित्यसेवा संबंधकी लिखी जाती हैं। उसके दो विभाग हैं एक उर्दू विभाग जिसमें उन्होंने बहुत पुस्तकें लिखी हैं। उनमेंसे अधिक इतिहास नीति और स्त्रीशिक्षाके विषय में हैं। गुलदस्तये अदब, तालीमउन्निसा और तवारीखे मारवाड़ नामकी पुस्तकोंके लिये उन्हें युक्तप्रदेशकी सरकारसे इनाम मिला। एक पुस्तक उन्होंने उर्दूमें कविता करनेवाले हिन्दूकवियोंके विषयमें बहुत सुन्दर लिखी है। हिन्दीमें आपने जो पुस्तकें लिखी हैं उनके भी दो विभाग है—एक तो वह जो मारवाड़ दरबारके लिये उक्त दरबारकी आज्ञासे बनाई गई हैं। वह मारवाड़में भी काम आती हैं और बाहर भी जाती हैं। उनमेंसे तीन तो मारवाड़ राज्यकी तीन सालकी रिपोर्ट हैं जिनमें सन १८८३—८४ ईस्वीसे १८८५—८६ तकका वर्णन है। एक सन् १८९१ ईस्वीकी मर्दुम-शुमारीकी रिपोर्ट है जिसके लिये उन्हें ५००) इनाम मिला। इसके पहले भागमें उमर, जाति और पेशे सहित मनुष्यगणना लिखी गई है। दूसरे भागमें मालाणी मारवाड़के कुल गांवोंकी परगनेवार लिष्ट अकारादि क्रमसे मनुष्य गणना मालिकोंके नाम और स्थानों का फासिला लिखा गया है। तीसरे भागमें मारवाड़में बसनेवाली सब जातियोंका हाल उनके पेशे और उनके चालचलनकी जरूरी बातें कितनेही कामके चित्रों सहित दी हैं। उसमें एक एक गांव की सूची, मनुष्यगणना आदि बहुतसी कामकी बातें लिखी हुई हैं। तेरह अलग अलग पुस्तकोंमें मारवाड़ राज्यके दीवानी फौजदारी और दूसरे प्रबन्ध संबंधी कायदे कानून लिखे हैं।

दूसरे विभागकी हिन्दी पुस्तकें वह हैं जो आपने अपनी रुचिसे लिखी हैं। यह हिन्दी साहित्यकी सेवाके लिये लिखी गई हैं। इनमेंसे कुछ छपी हैं कुछ नहीं छपी और कुछ अधूरी हैं। इनकी सूची इस लेखके अन्तमें दीगई है।

हिन्दीकी ओर आपका ध्यान थोड़ेही दिनसे हुआ है। कई एक विद्वानोंने आपसे आग्रह किया कि हिन्दीके भाण्डारमें इतिहासकी बहुत कमी है। आप इस कमीको दूर करते तो बड़ा उपकार होता। इतिहासका आपको सदासे अनुराग है। उसकी बड़ी सामग्री उन्होंने एकत्र की है। इसका कुछ परिचय उन्होंने अपनी सन् १८०५ ईस्वीकी जन्त्रीमें दिया है। यह अनुरोध उन्होंने अङ्गीकार किया और तबसे बराबर वह उस काममें लगे हुए हैं। इसके सिवा आप बहुतसे विद्वानोंको साहित्यसेवामें यथाशक्ति सहायता देनेसे भी नहीं रुकते हैं। भारतवर्षके नाना स्थानोंसे कितनी ही इतिहास संबंधी बातोंको जांच पड़तालके लिये उनके पास पत्र पहुंचते हैं। उनके उत्तरमें मुंशी साहब जोधपुरसे उनको अभीष्ट सामग्री भेज देते हैं। इतना परिश्रम करने पर भी वह साहित्य और इतिहासके संबंधके लेख समाचारपत्रोंको भेजते हैं। आपने विज्ञापन दे रखा है कि मुसलमानों और राजपूतोंके इतिहासके विषयमें कोई बात पूछना हो या किसी पुस्तककी जरूरत हो तो उनसे पत्रव्यवहार करें।

जब जब उन्होंने अपने या रियासती कामोंके लिये यात्रा की है तब तब कुछ समय निकालकर पुरानी बातें, पुराने ग्रन्थ, पुराने शिलालेख, पुराने पट्टे कागज और पुराने सिक्कोंके ढूंढ़नेमें बड़ा श्रम किया है। दो साल पहले काशीकी नागरीप्रचारिणी सभाके लिखने पर एक हजारके लगभग पुरानी हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकोंका पता मारवाड़ जैसे विद्याहीन देशमेंसे झटपट लगा दिया था।

आप पुश्तैनी कवि हैं। आपके पिता उर्दू फारसीके अच्छे कवि थे, फारसी कवितामें उनकी बनाई भक्तमाल मैंने पढ़ी है। आप स्वयं भी पहले उर्दूकी कविता करते थे और कितनेही कवि संशोधनके लिये अपनी कविता आपके पास भेजते थे। हिन्दीमें आपने कविता नहीं की पर पुरानी कविताका उद्धार किया है। "महिला मृदुवाणी" प्रकाशित कर आपने कविता करनेवाली स्त्रियोंकी

जीवनी और उनकी कविताको रक्षित किया है। राजरसनामृत नामसे आपने कविता करनेवाले राजा लोगोंकी कविता और जीवनीका एक अच्छा संग्रह किया है जो अभी छपा नहीं है। इसी प्रकार हिन्दीके कवियोंकी एक रत्नमाला गूंथी है। स्वर्गीय अजान कवि डुमरावंनिवासी पण्डित नकछेदी तिवारीने जिनकी मृत्युका शोक अभी बहुत ताजा है (जो गत मासमें इस असार संसारको छोड़ गये हैं) कवि पद्माकरकी जीवनी लिखकर उसकी इतिहास संबंधी बातोंको एकबार जांच जानेके लिये आपके पास भेजी थी। इसी प्रकार और बहुतसी बातोंकी खोज तलाश आपके द्वारा होती है। आपके पुत्र मुंशी पीताम्बरप्रसाद जिनकी उमर इस समय कोई ३० सालकी है उर्दूके बहुत अच्छे और होनेहार कवि हैं। उनकी बनाई नीतिकी कई पुस्तकें मैंने देखी हैं।

साहित्य संबंधमें राजस्थानको इस समय दो उज्वल रत्न प्राप्त हैं एक मुंशी देवीप्रसाद जोधपुरमें और दूसरे पण्डित गौरीशंकरजी ओझा उदयपुरमें। पहलेने मुसलमानी समयके भारतके इतिहास की खोजा है और दूसरेने संस्कृत और अंगरेजीके विद्वान होनेसे हिन्दुओंके प्राचीन इतिहासकी। सब साहित्यप्रेमियोंकी इच्छा है कि इन दो रत्नोंकी चमक दमक खूब बढ़े और सबकी आशा है कि भारतके विद्याभाण्डारको इनके द्वारा बहुत कुछ पूर्त्ति हो।

कलकत्ता
कार्तिक शुक्ला ११ संवत् १९६२ विक्रमाब्द। } बालमुकुन्द गुप्त।

मुंशीजीकी बनाई हिन्दीभाषाकी पुस्तकोंकी सूची।

१ अकबर बादशाहकी जीवनी।
२ शाहजहांकी जीवनी।
३ हुमायूं बादशाहकी जीवनी।
४ ईरानके बादशाह तुहमास्पकी जीवनी।
५ बाबर बादशाहकी जीवनी।
६ शेरशाह बादशाहकी जीवनी।
७ उदयपुरके महाराणा सांगाजीकी जीवनी।
८ राणा रतनसिंह विक्रमादित्य और बनवीरजीकी जीवनी।
९ महाराणा उदयसिंहकी जीवनी।
१० महाराणा प्रतापसिंहकी जीवनी।
११ आमेरके राजा पृथ्वीराज, पूरणमल, रतनसिंह, आसकरण, राजसिंह, भारमल और भगवानदासकी जीवनी।
१२ महाराज मानसिंहकी जीवनी।
१३ बीकानेरके राव बीकाजी और नराजीका चरित।
१४ राव लूणकरणकी जीवनी।
१५ राव जैतसीकी जीवनी।
१६ राव कल्याणमलकी जीवनी।
१७ मारवाड़के राठ मालदेवका चरित।
१८ राजा बीरबलकी जीवनी पहला भाग।
१९ राजा बीरबलकी जीवनी दूसरा भाग।
२० मीरांबाईकी जीवनी।
२१ भाषाभूषणके कर्त्ता महाराज श्रीजसवन्तजीकी जीवनी।
२२ जसवन्त स्वर्गवास।
२३ सरदार सुख समाचार।
२४ विद्यार्थी विनोद।
२५ स्वप्न राजस्थान।

२६ मारवाड़का भूगोल।

२७ मारवाड़का नकशा।

२८ प्राचीन कवि।

२९ बीकानेर राज पुस्तकालय।

३० इन्साफ संग्रह।

३१ नारी नवरत्न।

३२ महिला मृदुवाणी।

३३ मारवाड़की प्राचीन शिलालेखोंका संग्रह।

३४ जन्मी सन १८८८ से १९०५ तक वर्ष १८ की १८।

॥ श्री ॥

जहांगीरनामा ।

भूमिका ।

मैंने पहले अकबर बादशाहका संचिप्त इतिहास लिखा था और पीछे शाहजहां बादशाहका, उक्त दोनों बादशाहोंके बीचमें जहांगीरने बादशाही की है उसका इतिहास बाकी था। वह अब लिखकर हिन्दुस्थानके उक्त तीन नामी मुगल बादशाहोंके इतिहास का सिलसिला पूरा कर दिया जाता है।

अकबर और शाहजहांके इतिहास उनके नौकरोंके लिखे हुए हैं। उनमें कुछ कुछ खुशामद और अत्युक्ति भी है। पर जहांगीर ने अपना इतिहास आप लिखा है और ठीक लिखा है। क्योंकि नौकर लोग कभी किसी बादशाहके घर दरबार राज्यकार्य्य स्वभाव आदिकी बातें वैसी खुलकर नहीं लिख सकते जैसी जहांगीरने अपनी आप लिखी हैं। लिखी भी ऐसी हैं कि पढ़कर आनन्द आता है। क्योंकि केवल इतिहासही नहीं किन्तु न्याय नीति लौकिक रीति विद्याविनोद और नये संस्कारोंकी कितनीही बातें भी इसमें आगई हैं। आश्चर्य है कि जो बादशाह आजतक लोगोंमें मौजी विलासी शराबी शिकारी आदि कहलाता है वह ऐसा विद्वान बुद्धि-मान और लिखने पढ़नेमें सावधान हो कि उसकी लेखनीका एक एक अक्षर ध्यान देनेके योग्य हो। अधिक क्या लिखें पढ़नेवाले पढ़कर स्वयं देख समझ लेंगे। यदि कुछ खेदकी बात है तो इतनी है कि इस इतिहासके अन्तिम तीन वर्षोंका हाल स्वयं जहांगीरका

लिखा या लिखाया हुआ नहीं था। पोथी अधूरी थी शाहजहांके समयमें मिर्जा हादी(१) ने पिछला हाल संक्षिप्त रीतिसे लिखकर पूरी की। इस पोथीकी भूमिका भी उसी मिर्जा हादीकी लिखीहुई है। उसमें जहांगीरके बादशाह होनेसे पहलेका हाल है।

अपना रोजनामचा आप लिखनेकी चाल जहांगीरके घरानेमें ८ पीढ़ी पहलेसे चली थी। अमीर तैमूर साहिबकिरां जहांगीर का आठवीं पीढ़ीमें दादा था। उसने अपनी दिनचर्य्या जन्मकालसे मरण पर्य्यन्त लिखकर अपने सिरहाने छोड़ी थी। वह तुर्कीभाषा में है। उसका अनुवाद फारसी और उर्दूमें भी होगया है। उसका नाम तुजुकतैमूरी है।

दूसरी दिनचर्य्या बाबर बादशाहकी है जो तुजुकबाबरी और वाकआत बाबरीके नामसे प्रसिद्ध है। बाबर जहांगीरका परदादा था। उसका तुजुक भी तुर्कीभाषामें है। उसके फारसीमें दो अनुवाद हुए हैं एक ईरानमें मौलाना जैनुद्दीन खवाफीने किया और दूसरा हिन्दुस्थानमें मिर्जा अबदुर्रहीम खानखानांने किया।

तीसरी दिनचर्य्या यह जहांगीर बादशाहकी है। इसका ढङ्ग तुजुक बाबरीसे बहुत मिलता जुलता है। इतिहासके सिवा विद्या विज्ञान खगोल भूगोल काव्य कला राजनीति और लौकिक रीति आदि दूसरी दूसरी उपयोगी बातें जैसी बाबरके तुजुकमें हैं वैसीही वरञ्च उससे भी बढ़कर जहांगीरके तुजुकमें हैं। कारण यह कि हिन्दुओंकी धर्म्मनीति चालढाल आचार व्यवहार तथा भारतकी रीति भांति और प्रकृतिसे, अपने परदादाकी अपेक्षा जहांगीर अधिक जानकार होगया था। इसीसे उसने इन सब बातोंका वर्णन यथा प्रसङ्ग बाबरसे अच्छा किया है।

---

(१) पिछला हाल जो मिरजाहादीने लिखकर लगाया है "इकबाल नामये जहांगीरी" से लिया हुआ जान पड़ता है। इकबालनामा भी मोतमिदखां बख्शीने शाहजहांके समयमें पूरा किया था।

जहांगीर बादशाहकी इस किताबका नाम तुजुक जहांगीरी अर्थात् जहांगीर प्रबन्ध है। तुर्कीभाषामें प्रबन्धको तुजुक कहते हैं। पर इस पुस्तकको भोजप्रबन्ध या कुमारपाल प्रबन्ध आदिके समान न समझना चाहिये। क्योंकि उन पोथियोंमें बिना संवत् मिती और पते ठिकानेकी कथाएं हैं और यह पोथी सप्रमाण रोजनामचा है। विस्तारभयसे हमने इस जहांगीरनामेका अक्षर अक्षर अनुवाद नहीं किया है, अधिक स्थानोंमें सारांशसे काम लिया है और जहां अच्छा देखा है उसका पूरा आशय लेलिया है। तथा कहीं कहीं बादशाहके लेखका यथावत अनुवाद भी किया है।

बहुत जगह नोट भी लिखे हैं तथा मुसलमानी और इलाही तारीख और सनोंके साथ हिन्दी तिथि और संवत् गणित करके लिखे हैं। इसमें हमें अपनी २५० वर्षकी इतिहाससहायक जन्त्री से बहुत सहायता मिली है।

इस प्रकार यह काम जो १ अप्रैल सन् १९०१ ईस्वीमें छेड़ा गया था अब चार सालके परिश्रमके पश्चात् पूरा हुआ है। पर इतने पर भी जबतक यह काम विद्वानोंके पसन्द न आवे तबतक मैं अपनेको क्रतार्थ नहीं समझ सकता। ग्रन्थ बनाना सहज नहीं है फिर एक भाषासे दूसरी भाषामें अनुवाद करनेके लिये बहुतही समझ चाहिये। उसका मुझमें घाटा है। पर इतने पर भी अपनी मातृभाषामें इतिहासका घाटा देखकर इतना साहस करना पड़ा है।

तुजुक ज़हांगीरीमें तारीख महीने और सन् हिजरी भी लिखें हैं और इलाही भी। हिजरी मुसलमानोंका पुराना सन् है और इलाही अकबरने चलाया था। मैंने दोनोंके अनुसार हिन्दी तिथि महीने और वर्ष चण्डूपञ्चाङ्गसे गणित(२) करके इस पुस्तकमें यथा स्थान रख दिये हैं। यह श्रम न किया जाता तो पाठक ठीक तिथि न समझ सकते।

---

(२) इस गणितसे मैंने एक जन्त्री बना डाली है जो तारीखोंके मिलानेमें बहुत काम देती है।

पाठकोंके जाननेके लिये दोनों सनोंके महीने नीचे लिख दिये जाते हैं।

हिजरी महीने।	इलाही महीने।
१ मुहर्रम	१ फरवरदीन
२ सफर	२ उर्दीबहिश्त
३ रबीउलअव्वल	३ खुरदाद
४ रबीउस्सानी	४ तीर
५ जमादिउलअव्वल	५ अमरदाद
६ जमादिउस्सानी	६ शहरेवर
७ रजब	७ महर
८ शाबान	८ आबान
९ रमजान	९ आजर
१० शव्वाल	१० दे
११ जीकाद	११ बहमन
१२ जिलहिज	१२ असफन्दयार

हिजरी महीना चन्द्रदर्शनसे लगता है और इलाही सूर्यकी राशि बदलनेसे। मेखभानुके दिन फरवरदीनकी पहली तारीख होती है।

देवीप्रसाद,

जोधपुर।

॥ श्री ॥

जहांगीर बादशाहके तख्त पर बैठनेसे पहिलेका हाल जबकि वह शाहजादा सलीम, सुलतान सलीम और बादशाह सलीम कहलाता था।

जहांगीर बादशाह १७ रबीउलअव्वल सन ९७७ हिजरी बुधवार (आश्विन बदी ५ संवत् १६२६) को सीकरीमें शेख सलीम चिश्तीके घर पैदा हुआ था। उसका नाम इसी प्रसंगसे शाह सलीम रखा गया था। अकबर बादशाहने आगरेमें यह मङ्गलसमाचार सुनकर बहुतसा धन लुटाया और जितने कैदी किले और शहरमें थे उन सबको छोड़ दिया। फिर सीकरीमें शहर बसाकर फतहपुर नाम रखा और उसे राजधानी बनाकर आप भी वहां रहने लगा।

जब शाह सलीमकी उमर ४ वर्ष ९ महीनेकी हुई तो बादशाह ने २४ रज्जब सन ९८१ (अगहन बदी ११ संवत १६३०) को उसे पढ़ने बिठाया। उसका अतालीक पहिले कुतुबमोहम्मदखां अंगा और फिर मिरजाखां खानखानां रहा।

सन ९८५ में बादशाहने उसको १० हजारी, १० हजार सवार का मनसब दिया जिससे बड़ा उस वक्त कोई पद नहीं था। जब उसकी उमर १५ वर्षकी हुई तो ९९३ (१६४२) में पहिला व्याह राजा भगवन्तदासकी बेटीसे दूसरा सन ९९४ (संवत १६४३) में उदयसिंहकी लड़कीसे, तीसरा जेनखां कोकेके चचा ख्वाजाहसनकी बेटीसे और चौथा केशव मारूकी लड़कीसे हुआ।

पहिली बेगमसे पहिले सुलतान निसार बेगम और फिर २४ अमरदाद सन ९९५ (श्रावण सुदी १३ संवत् १६४४) को सुलतान खुसरो पैदा हुआ।

तीसरी बेगमसे १९ आबान सन ९९७ (कार्तिक सुदी ४ संवत् १६४६) को सुलतान परवेज जनमा।

चौथी बेगमसे २३ शहरेवर सन ९९८ (आश्विन बदी २ संवत् १६४७) को बहारबानू बेगम पैदा हुई।

दूसरी बेगमसे २९ रबीउलअव्वल गुरुवार सन १००० (माघ सुदी १ संवत् १६४८) को सुलतान खुर्रमका जन्म हुआ।

ता० ६ मह्र सन १००७ (आश्विन बदी १४ संवत् १६५५) को अकबर बादशाह तो दक्षिण फतह करनेके लिये गया और अजमेर का सूबा शाहसलीमको जागीरमें देकर राणाको सर करनेका हुक्म देगया।

शाहकुलीखां महरम और राजा मानसिंहकी नौकरी इनके पास बोली गई।

बङ्गालेका सूबा जो राजाको मिला हुआ था राजा अपने बड़े बेटे जगतसिंहको सौंपकर शाहकी सेवामें रहने लगा।

शाह सलीमने अजमेर आकर अपनी फौज राणाके ऊपर भेजी और कुछ दिनों पीछे आप भी शिकार खेलता हुआ उदयपुर तक गया जिसको राणा छोड़ गया था और सिपाहको पहाड़ोंमें भेजकर राणाको पकड़नेकी कोशिश करने लगा।

यहां खुशामदी और स्वार्थी लोग जो चुप नहीं बैठा करते हैं उसके कान भरा करते थे कि बादशाह तो दक्षिणको लेनेमें लगे हैं वह मुल्क एकाएकी हाथ आने वाला नहीं और वह भी बगैर लिये पीछे आनेवाले नहीं। इसलिये हजरत जो यहांसे लौटकर आगरेसे परेके आबाद और उपजाऊ परगनोंको लेलें तो बड़े फायदे की बात है। बंगालेका फसाद भी जिसकी खबरें आरही हैं और जो राजा मानसिंहके गये बिना मिटनेवाला नहीं है जल्द दूर हो जायगा। यह बात राजा मानसिंहके भी मतलबकी थी क्योंकि उसने बंगालेकी रक्षाका जिम्मा कर रखा था। इससे उसने भी हां में हां मिलाकर लौट चलनेकी सलाह दी।

शाह सलीम इन बातोंसे राणाकी मुहिम अधूरी छोड़कर इला-हाबादको लौट गया। जब अगरेमें पहुंचा तो वहांका किलेदार

कुलीचखां पेशवाईको आया। उस वक्त लोगोंने बहुत कहा कि इसको पकड़ लेनेसे आगरेका किला जो खजानोंसे भरा हुआ है सहजमेंही हाथ आता है। मगर उसने कबूल न करके उसको रुखसत कर दिया और जमनासे उतरकर इलाहाबादका रास्ता लिया। उसकी दादी होदेमें बैठकर उसे इस इरादेसे रोकनेके लिये किलेसे उतरी थी पर वह नावमें बैठकर जल्दीसे चलदिया और वह नाराज होकर लौट आई।

१ सफर सन १००९ (द्वितीय श्रावण सुदी ३ संवत १६५७) को शाह सलीम इलाहाबादके किलेमें पहुंचा और आगरेसे इधरके अक्सर परगने लेकर अपने नौकरोंको जागीरमें देदिये। बिहारका सूबा कुतबुद्दीनखांको दिया, जौनपुरकी सरकार लालाबेगको और कालपीकी सरकार नसीमबहादुरको दी। घनसूर दीवानने ३० लाख रुपयेका खजाना सूबे बिहारके खालसेमेंसे तहसीलकरके जमा किया था वह भी उससे लेलिया।

जब यह खबरें बादशाहको दक्षिणमें पहुंचीं तो उसने बड़ी महरबानीसे उसको अपने पास बुलानेका फरमान लिखा। जब अबदुस्समद मुंशीका बेटा शरीफ यह फरमान सलीम पास लेकर आया तो उसने पेशवाई करके फरमानको बड़े अदबसे लिया और जानेका भी इरादा किया। लेकिन फिर किसी खयालसे नहीं गया और शरीफको भी अपने पास रख लिया। वह खुशामद दरामदसे इनके दिलमें जगह करके वजीर बन गया।

बादशाह इन खबरोंके सुननेसे घरका फसाद मिटानेके लिये दक्षिणकी फतह अधूरी छोड़कर १५ उर्दीबहिश्त सन् १००९ (चैत सुदी २ संवत् १६५९) को आगरेकी तरफ लौटा खानखानां और शेख अबुलफजलको वहांका काम पूरा करनेके लिये छोड़ आया। २० अमरदाद (श्रावण सुदी ३) को आगरेमें पहुंचा।

सन १०१० (संवत् १६५८) में शाहसलीम ३००० सजे हुए

सवारों और जंगी हाथियोंसे आगरेको रवाना हुआ। जाहिरमें बापसे मिलनेकी बात थी। पर दिलमें इरादा औरही था।

बादशाह भी इस धूमधड़ाकेसे उसका आना सुनकर बहुत घबराया।

इटावा आसिफखां दीवानकी जागीरमें था। सलीम जब वहां पहुंचा तो दीवानने एक लाल सलीमकी नजरके लिये भेजा। आसिफखां अकबरको सलीमकी ओरसे बहकाया करता था इससे सलीमका आना सुनकर मारे डरके वह घबरा गया। पर लालसे बला टल गई। क्योंकि वहीं बादशाहका फरमान पहुंचा। उसमें लिखा था कि बापके घर बेटेका इतने हाथी और सेना लेकर आना बापके जीको औरही विचारमें डालता है। यदि अपने लशकरको हाजिरी देना चाहते हो तो हाजिरी होगई। अपने आदमियोंको जागीरके इलाकोंमें भेजकर अकेले आओ। यदि इधरसे पूरी तसल्ली न हो तो इलाहाबादको लौट जाओ। जब दिलजमई हो जावे तब आना।

यह फरमान पढ़कर सलीमने अकबरको अर्जी भेजी कि यह गुलाम बड़े चावसे चौखट चूमने आता था। फसादियोंने गुलामकी ओरसे हजरतको बदगुमान करके कुछ दिनके लिये सेवासे अलग रखा। खैर मेरी अधीनता हजरतके दर्पणसे साफ हृदयमें आपही दरस जावेगी।

सलीम कुछ दिनों तक इटावेमें रहकर इलाहाबादको कूच कर गया। पीछेसे अकबरका दूसरा फरमान पहुंचा कि हमने बिहार और बंगालेके सूबे भी तुम्हारी जागीरमें दे दिये हैं अपने आदमी भेजकर अमल दखल करलो। पर सलीमने उधर लशकर भेजना उचित न देखकर इनकार लिख भेजा और इलाहाबाद पहुंचकर बादशाही करनी शुरू करदी। अपने नौकरोंको खान और सुलतानके खिताब देदिये। उससे और तो सब बादशाही नौकर मिले हुए थे पर शेख अबुलफजल वजीर नहीं मिला हुआ था। बादशाह

भी उसको अपना इकरंगा खैरख्वाह समझता था इसलिये अकबरने उसको बुलानेका फरमान भेजकर लिखा कि फौज और लश्कर अपने बेटे अबदुर्रहमानको सौंपकर आप बहुत जल्द हाजिर हों।

जब सलीमको शेखके बुलानेकी खबर पहुँची तो उसके आनेमें अपनी बात बिगड़ती देखकर उसने सोचा कि जो वह आजावेगा तो फिर और कुछ फसाद उठावेगा और जबतक वह रहेगा हमारा जाना दरगाहमें न होगा इसलिये इसका इलाज पहिलेसेही करना चाहिये।

दक्षिण और आगरेका रास्ता राजा बरसिंहदेवके मुल्कमें होकर था और यह बहादुर राजा बादशाहसे अकसर बिगड़ाहुआ रहता था इसलिये शाहने इसीको शेखके मारनेका हुक्म दिया। राजा जाकर घातमें बैठ गया। जब शेख गवालियरसे १० कोस पर पहुंचा तो राजाने बहुतसे सवार प्यादोंके साथ जाकर शेखका रास्ता रोका और उसको मारकर उसका सिर इलाहाबादमें भेज दिया।

शेखके मारे जानेसे उधर तो बादशाहको बड़ा दुःख हुआ और इधर सलीम भी बहुत लज्जित हुआ।

बादशाहने सलीमको तसल्ली देकर लेआनेके लिये अपनी लायिक बेगम सलीमासुलतानको रवाने किया। फतहलशकर नामका हाथी खिलअत और खासेका घोड़ा साथ भेजा।

सलीम दो मंजिल आगे बढ़कर बेगमको बड़े अदब और धूम धड़क्केसे इलाहाबादमें लाया। और फिर उसके साथही बापकी सेवामें रवाना हुआ। जब आगरेके इलाकेमें पहुँचा तो बादशाहको अर्जी भेजी जिसमें लिखा था कि जब हुजूरने इस बन्दे के कसूर माफ कर दिये हैं तो हजरत मरयममकानीसे अर्ज करें कि वे तशरीफ लाकर गुलामको हुजूरकी खिदमतमें लेजावें और हुजूरी ज्योतिषियोंको मुहूर्त्त देखलेका हुक्म होजावे।

बादशाहने अपनी मांके दौलतखानेमें जाकर पोतेकी अर्ज दादी को सुनाई और उसके कबूल करलेने पर जवाबमें लिखा कि मिलने

के वास्ते मुहूर्त्तका क्या बहाना करते हो मिलनाही स्वयं मुहूर्त्त है।

इस फरमानके पहुंचतेही सलीमने जल्दीसे कूच करदिया। इधर से मरयममकानी बेगम एक मंजिल आगे जाकर पोतेको अपने दौलतखानेमें लेआई। वहां बादशाह भी आगया। बेटेने बापके कदमोंमें सिर रख दिया बाप बेटेको छातीसे लगाकर अपने घर ले आया।

सलीमने १२ हजार मुहरें और ९७७ हाथी अकबरको भेंट किये। उनमेंसे ३५० अकबरने रख लिये बाकी वापिस करदिये। दो दिन पीछे अपनी पगड़ी उतार कर सलीमके सिर पर रखदी। और राणाकी मुहिम पूरी करनेका हुक्म दिया। दशहरेके दिन सलीमने उधर कूच किया। निम्नलिखित अमीर बादशाहके हुक्म से उसके साथ गये।

जगन्नाथ, राय रामसिंह, माधवसिंह, राय दुर्गा, राय भोज, हाशमखां, करोबेग, इफ्तखार बेग, राजा विक्रमाजीत, मोटाराजा के बेटे शक्तसिंह, और दलीप, ख्वाज हिसारी, राजा शालिबाहन, मिरजा यूसुफखांका बेटा लश्करी, आसिफखांका भाई शाहकुली, शाहबेग कोलाबी।

शाहने फतहपुरमें ठहरकर इस मुश्किल कामके लायिक लश्कर और खजाना मिलनेकी अर्जी भेजी मगर दीवानोंने बेजा ढील करदी। तब शाहने फिर बादशाहको अर्जी लिखी कि यह गुलाम तो हजरतके हुक्मको खुदाके हुक्मका नमूना समझकर बड़े चावसे इस खिदमतको करना चाहता है मगर किफायती लोग इस मुहिम का सामान जैसा चाहिये नहीं करते हैं तो फिर बेफायदा अपनेको हलका करके वक्त खराब करना ठीक नहीं है। हजरतने कई दफे सुना होगा कि राणा पहाड़ोंसे बाहर नहीं निकलता है और हर रोज एक नये विकट स्थानकी ओटमें चला जाता है और जहां तक उससे होसकता है लड़ता नहीं है। उसके कामको तो यही तदबीर है कि लश्कर हर तरफसे जाकर उन पहाड़ोंको

हाकेके शिकारकी तरह घेर ले और लशकर इतना चाहिये कि जब उसके सामने पड़ जावे तो काम पूरा कर सके। दौलत-ख़्वाहोंने इसके सिवा जो और कोई सलाह देखी है तो बन्देको हुक्म होजावे कि सलाम करके अपनी जागीरमें चला जावे और वहां इस मुहिमका पूरा सामान करके राणाकी जड़ उखाड़नेको रवाना हो क्योंकि अभी बन्देके सिपाही बहुत टूटे हुए हैं।

बादशाहने यह अर्जी पढ़कर अपनी बहन बख़तुन्निसा बेगमको सलीमके पास भेजा और यह कहलाया कि तुम अच्छे मुहूर्त्तमें बिदा हुए हो और ज्योतिषी लोग मिलनेकी शुभघड़ी नजदीकके दिनोंमें नहीं बताते हैं इसलिये अभी तो तुम इलाहाबादको सिधार जाओ फिर जब चाहो खिदमतमें हाजिर होजाना।

शाह सलीम यह फरमान पहुंचतेही मथुरा होकर इलाहाबाद चला गया। वहां कुछ दिनों पीछे खुसरोकी मा अपने बेटेके कपूतपनसे अफीम खाकर मर गई। इससे शाहको बहुतही रञ्ज हुआ बादशाहने यह सुनतेही फरमान भेजकर उसको तसल्ली दी।

बादशाहने सलीमको इलाहाबाद जानेकी आज्ञा दे तो दी थी मगर दिलसे उसका दूर रहना नहीं चाहता था बल्कि उसकी इस दूरीसे बहुत दुःखी था। तोभी फसादी लोग उसका दिल बेजार करनेके लिये हर रोज कोई न कोई शिगूफा छोड़ा करते थे और शाहके हमेशा नशेमें रहनेका गिला खैरख़्वाहीकी लपेटमें किया करते थे। इन्हीं दिनों शाहका एक वाकआनवीस और दो खिदमतगार एक दूसरेके इश्क़में फंसकर सुलतान दानियालकी पनाहमें जानेके लिये भागे थे पर रस्तेसे पकड़े आये। शाहने गुस्सेसे वाकिआ नवीसकी खाल अपने सामने खिंचवाई एक खिदमतगारको खस्सी करा डाला और दूसरेको पिटवाया। इस सजासे उसकी धाक लोगोंके दिलोंमें बैठ गई और भागनेका रस्ता बन्द होगया।

जब स्वार्थी लोगोंने इस मामलेको खूब नमक मिरच लगाकर बादशाहसे अरज किया तो बादशाहने बहुतही नाराज होकर

के वास्ते मुहूर्त्तका क्या बहाना करते हो मिलनाही स्वयं मुहूर्त्त है।

इस फरमानके पहुंचतेही सलीमने जल्दीसे कूच करदिया। इधर से मरयममकानी बेगम एक मंजिल आगे जाकर पोतेको अपने दौलतखानेमें लेआई। वहां बादशाह भी आगया। बेटेने बापके कदमोंमें सिर रख दिया बाप बेटेको छातीसे लगाकर अपने घर ले आया।

सलीमने १२ हजार मुहरें और ९७७ हाथी अकबरको भेंट किये। उनमेंसे ३५० अकबरने रख लिये बाकी वापिस करदिये। दो दिन पीछे अपनी पगड़ी उतार कर सलीमके सिर पर रखदी। और राणाकी मुहिम पूरी करनेका हुक्म दिया। दशहरेके दिन सलीमने उधर कूच किया। निम्नलिखित अमीर बादशाहके हुक्म से उसके साथ गये।

जगन्नाथ, राय रामसिंह, माधवसिंह, राय दुर्गा, राय भोज, हाशमखां, करीबेग, इफ्तखार बेग, राजा विक्रमाजीत, मोटाराजा के बेटे शक्तसिंह, और दलीप, ख्वाज हिसारी, राजा शालिवाहन, मिरजा यूसुफखांका बेटा लशकरी, आसिफखांका भाई शाहकुली, शाहबेग कोलाबी।

शाहने फतहपुरमें ठहरकर इस मुशकिल कामके लायिक लशकर और खजाना मिलनेकी अर्जी भेजी मगर दीवानोंने बेजा ढील करदी। तब शाहने फिर बादशाहको अर्जी लिखी कि यह गुलाम तो हजरतके हुक्मको खुदाके हुक्मका नमूना समझकर बड़े चावसे इस खिदमतको करना चाहता है मगर किफायती लोग इस मुहिम का सामान जैसा चाहिये नहीं करते हैं तो फिर बेफायदा अपनेको हलका करके वक्त खराब करना ठीक नहीं है। हजरतने कई दफे सुना होगा कि राणा पहाड़ोंसे बाहर नहीं निकलता है और हर रोज एक नये विकट स्थानकी ओटमें चला जाता है और जहां तक उससे होसकता है लड़ता नहीं है। उसके कामकी तो यही तदबीर है कि लशकर हर तरफसे जाकर उन पहाड़ोंको

हाकेके शिकारकी तरह घेर ले और लश्कर इतना चाहिये कि जब उसके सामने पड़ जावे तो काम पूरा कर सके। दौलत-ख्वाहोंने इसके सिवा जो और कोई सलाह देखी है तो बन्देको हुक्म होजावे कि सलाम करके अपनी जागीरमें चला जावे और वहां इस मुहिमका पूरा सामान करके राणाकी जड़ उखाड़नेको रवाना हो क्योंकि अभी बन्देके सिपाही बहुत टूटे हुए हैं।

बादशाहने यह अर्जी पढ़कर अपनी बहन बखतुन्निसा बेगमको सलीमके पास भेजा और यह कहलाया कि तुम अच्छे मुहूर्त्तमें बिदा हुए हो और ज्योतिषी लोग मिलनेकी शुभघड़ी नजदीकके दिनोंमें नहीं बताते हैं इसलिये अभी तो तुम इलाहाबादको सिधार जाओ फिर जब चाहो खिदमतमें हाजिर होजाना।

शाह सलीम यह फरमान पहुंचतेही मथुरा होकर इलाहाबाद चला गया। वहां कुछ दिनों पीछे खुसरोकी मा अपने बेटेके कपूतपनसे अफीम खाकर मर गई। इससे शाहको बहुतही रञ्ज हुआ बादशाहने यह सुनतेही फरमान भेजकर उसको तसल्ली दी।

बादशाहने सलीमको इलाहाबाद जानेकी आज्ञा दे तो दी थी मगर दिलसे उसका दूर रहना नहीं चाहता था बल्कि उसकी इस दूरीसे बहुत दुःखी था। तोभी फसादी लोग उसका दिल बेजार करनेके लिये हर रोज कोई न कोई शिगूफा छोड़ा करते थे और शाहके हमेशा नशेमें रहनेका गिला खैरख्वाहोंकी लपेटमें किया करते थे। इन्हीं दिनों शाहका एक वाकआनवीस और दो खिदमतगार एक दूसरेके इश्कमें फंसकर सुलतान दानियालकी पनाहमें जानेके लिये भागे थे पर रस्तेसे पकड़े आये। शाहने गुस्सेसे वाकिआ नवीसकी खाल अपने सामने खिंचवाई एक खिदमतगारको खस्सी करा डाला और दूसरेको पिटवाया। इस सजासे उसकी धाक लोगोंके दिलोंमें बैठ गई और भागनेका रस्ता बन्द होगया।

जब स्वार्थी लोगोंने इस मामलेको खूब नमक मिरच लगाकर बादशाहसे अरज किया तो बादशाहने बहुतही नाराज होकर

कहा कि हमने आजतक एक जहानको तलवारसे फतह किया है मगर कभी अपने हजूरमें बकरेकी भी खाल उधेड़नेका हुक्म नहीं दिया और हमारा बेटा अजब सङ्गदिल है जो अपने सामने आदमीकी खाल खिचवाता है।

इन्हीं लोगोंने यह भी अर्ज की थी कि शाह अफीमको शराब में घोलकर इतनी जियादा पीते हैं कि जिसको तबीअत भी बरदाश्त नहीं कर सकती है और फिर जब नशा चढ़ता है तो ऐसेही ऐसे शर्मिन्दा करनेवाले हुक्म देतेहैं। उस वक्त किसीको कुछ कहने की मजाल नहीं होती अकसर लोग तो भागकर छुप जाते हैं और जिनको हाजिर रहनाही पड़ता है वह बेचारे दीवारकी तसवीरसे बने रहते हैं। बादशाहको बेटेसे बहुत मुहब्बत थी इसलिये इन बातोंसे घबराकर उसने यही मुनासिब समझा कि खुद इलाहाबाद जाकर बेटेको साथ लेआवे।

इस इरादेसे ४ शहरेवर सन् १०१२ (भादों बदी १३) की रात को नावमें बैठकर रवाने हुआ। मगर नाव जमीनमें बैठ गई मल्लाह बहुत पचे पर नावको उस आधीरातमें पानीके अन्दर न लेजा सके इसलिये लाचार तड़के तक जमनामें ठहरना पड़ा। दिन निकलते निकलते बड़े बड़े अमीर अपनी अपनी नावोंको बढ़ाकर सलाम करने आये। अकसर स्याने आदमियोंकी समझमें यह शकुन अच्छा न था तोभी बादशाहके डरसे कोई लौट चलनेकी अर्ज नहीं कर सकता था।

बादशाह यहांसे चलकर डेरोंमें आये जो ३ कोस पर जमनाके किनारे लगे थे। उस समय मेह बड़े जोरसे बरसने लगा और साथही मरयममकानी बेगमके बीमार होजानेकी खबर आई जो बादशाहके जाने पर राजी नहीं थी। मेह दो तीन दिन तक लगातार बरसता रहा जिससे किसीका भी डेरा खड़ा न होसका। बादशाह तथा पासके और कई नौकरोंके सिवा किसीको कनात नजर नहीं आती थी।

बुधवारको रातको खबर आई कि मरयममकानीका हाल बिगड़ गया है हकीमोंने निरास होकर इलाज छोड़ दिया है। बादशाह फौरन लौटकर उसके पास आया मगर उसकी जबान तब बन्द होगई थी।

१८ शहरेवर सोमवारकी रातको मरयममकानीका देहान्त होगया। बादशाह और कई हजार अमीर, मनसबदार, अहदी और शागिर्दपेशोंने मुण्डन कराया। हजरत अपनी मांकी लाशको कंधे पर उठा कर कई कदम गये फिर ताबूतकों दिल्ली रवाने करके लौट आये। दूसरे दिन आपने मातमी कपड़े उतारकर पोशाक बदली और सबलोगोंको खिलअत पहिनाये क्योंकि दसहरे का उत्सव था।

बेगमकी लाश १५ पहर में दिल्ली पहुंची और वहां हुमायूं बादशाहके मकबरे में दफनकी गई।

शाह सलीम यह खबर सुनतेही बापके रंजमें शरीक होनेके लिये आगरेमें पहुंच कर आदाब और तोरेका दस्तूर बजा लाया। बादशाह उसको छाती से लगाकर मिला खुशीकी नौबतें झड़ीं सब लोगोंका दिल खुश हुआ। शाहने २०० मुहरें सौ सौ तोलेकी ८ मुहरें पचास पचास तोलेकी १ मुहर २५ तोलेकी और पांच दो दो तोलेकी नजर कीं। एक हीरा लाख रुपयेका और ४ हाथी पेशकश किये। फिर बादशाह खासोआम दरगाह से उठकर महल में गया और कुछ बातें मेहरबानीकी करके सलीमसे कहनेलगा बाबा ऐसा मालूम होता है कि जियादा शराब पीनेसे तुम्हारे दिमागमें खलल आगया है तुम कुछ दिन हमारे दौलतखानेमें रहो तो उसकी दुरुस्तीका इलाज करें। यह कहकर उसको इबादतखानेमें बिठा दिया और भरोसेके खिदमतगारोंको निगहबानीपर मुकर्रर किया। सलीमकी मा बहनें हर रोज उसके पास आया करती थीं और तसल्ली देती थीं। जब१०दिन बीत गये और शराब पीनेकी आदतसे उसका कुछ पागलपन नहीं

पाया गया जैसा कि बादशाहसे कहा गया था तो उसको अपने दौलतखाने में जानेकी छुट्टी होगई और उसके कुछ नौकर जो बादशाहके डरसे इधर उधर छुप गये थे फिर आकर अपना अपना काम करने लगे।

शाह सलीम रोज बापसे सलाम करने जाताथा और बादशाह भी उस पर बहुत मेहरबानी करता था।

इन्हीं दिनोंमें शेख हुसैन जामके खत शाहके पास पहुंचे जिनमें लिखा था कि मैंने शेख बहाउद्दीन वलीको ख्वाबमें देखा, कहते थे कि सुलतानसलीम अब जल्द तख्त पर बैठेगा और दुनियाको लाभ पहुंचावेगा।

एक अजब बात और हुई कि शाहसलीमके पास गरांबार नाम एक हाथी बेड़ा लड़ने वाला था। उससे लड़ सके ऐसा कोई हाथी बादशाही फीलखानेमें न था। मगर खुसरोके पास आपरूप नाम हाथी लड़ने में इक्का था। बादशाहने हुक्म दिया कि इन दोनोंको लड़ावें और खासेके हाथियोंमेंसे रणथंभण हाथीको मददके वास्ते लेआवें। जो हाथी हारे उसीकी मदद वह करे। ऐसे हाथीको महावत लोग "तपांचा" कहते थे। यह बात भी लड़ाईके वक्त लड़ाके हाथियोंको अलग करनेके लिये बादशाहकीही निकाली हुई थी। ऐसेही चरखी उचारी, और लोहलंगर भी उन्होंने निकाले थे।

शाहसलीम और खुसरोने अर्जकी कि घोड़ोंपर सवार होकर पाससे तमाशा देखें। बादशाह झरोकेमें बैठा और शाहजादे खुर्रम को अपने पास बिठा लिया।

जब लड़ते लड़ते गरांबार हाथीने आपरूपको दबा लिया तो रणथंभण उसकी मददको बढ़ाया गया। शाहके आदमियोंने महावतको रोका और कई पत्थर भी मारे जिनसे उसकी कनपटी में खून निकला पर वह हुक्मके मुवाफिक हाथीको बढ़ा ले गया।

खुसरो और कई चुगल खोरोंने जाकर बादशाहसे शाहके आदमियोंकी गुस्ताखी और महावतके जख्मी करनेका हाल बहुत बढ़ाकर कहा। जिससे बादशाहने बिगड़कर शाहजादे खुर्रमको फरमाया कि तुम शाह भाईके पास जाकर कहो—शाह बाबा फरमाते हैं कि यह हाथी भी हकीकतमें तुम्हाराही है फिर इतनी जियादती करनेका क्या सबब है?

शाहजादे खुर्रमने जाकर दादाका हुक्म बापसे इस खूबीके साथ कहा कि सलीमको जवाबमें कहना पड़ा,—मुझे हरगिज इस बातकी खबर नहीं है। मैं हाथी और महावतको मारनेसे भी राजी नहीं हुआ हूं और न मैंने हुक्म दिया।

खुर्रमने अरज की कि यदि ऐसा है तो मुझे हुक्म होजावे मैं खुद जाकर आतिशबाजी और दूसरी तदबीरोंसे हाथियोंको अलग करदूं।

सलीमने खुशीसे उसको इजाजत देदी और उसने चरखी और बान छोड़नेका हुक्म दिया। और भी कई दूसरी तरकीबें कीगईं मगर कुछ न हुआ। आखिर रणथंभण भी हारकर भागगया और अब वह दोनों हाथी लड़ते लड़ते यमुनामें चले गये! गरांबार आपरूपसे लिपटा हुआ था और किसी तरहसे उसे नहीं छोड़ता था। अन्तको एक बड़ी नावके बीचमें आजानेसे अलग होगया।

शाहजादे खुर्रमने दादाके पास जाकर विनयकी कि शाहभाईने तो ऐसी जुरअत और गुस्ताखीका हुक्म नहीं दिया था न उनके जानते ऐसा काम हुआ। असल बात हुजूरके सामने कुछ फेरफार से अर्ज कीगई है।

२० जमादिउलअव्वल (कार्त्तिक वदी ७) को बादशाह बीमार हुआ। पहिले बुखार हुआ फिर दस्त आनेलगे हकीम अलीने बहुत इलाज किया पर कोई दवा न लगी।

उस वक्त दरबारमें राजा मानसिंह और खानआजम कर्त्तमकर्त्ता थे। खुसरो राजाका भानजा और खान आजमका जमाई था इस-लिये ये दोनों बादशाहके पीछे खुसरोको तख्त पर बिठानेके जोड़ तोड़ में लगे हुए थे और जो लोग शाह सलीमको नहीं चाहते थे वह सब इनके पेटेमें थे। शाहने यह सब हाल देखकर किलेमें आना जाना छोड़ दिया, पर शाहजादे खुर्रमने दादाकी पाटी नहीं छोड़ी। उसको माने बहुत कहलाया कि इस वक्तमें दरबार दुश्मनोंसे भरा हुआ है वहां रहना अच्छा नहीं है बल्कि शाहकी आज्ञासे उसकी माने खुद भी आकर यही बात उससे कही पर उसने जवाब दिया कि जब तक दादा साहिबका दम है मैं उनकी खिदमतसे अलग होना नहीं चाहता।

इन्हीं दिनोंमें सलीमकी लौंड़ियोंसे दो बेटे जहांदार और शहरयार नामक और पैदा हुए। जो लोग सलीमकी जगह खुसरोको बादशाह बनाना चाहते थे उन्होंने सलीमकी मौजूदगी में जब अपनी बात चलती न देखी तो लजाकर सलीमकी सेवा में आये। तब सलीम दूसरे दिन बापको देखने गया और शाहजादे खुर्रमको शाबाशी देकर अपने दौलतखानेमें लेआया।

१२ जमादिउस्सानी (कार्त्तिक सुदी १५ संवत् १६६२) बुधवार की रातको बादशाहका देहान्त होगया। दूसरे दिन वह सिक-न्दरेके बागमें दफन किया गया और शाह सलीम अपना नाम जहांगीर बादशाह रखकर आगरेके किलेमें तख्त पर बैठा। आगे जो कुछ हुआ वह जहांगीरने खुद अपनी कलमसे लिखा है।

नूरजहां बेगम।

नूरजहांका दादा ख्वाजा मुहम्मद शरीफ तेहरानी था वह खुरा-सानके हाकिम मुहम्मदखांका वजीर था। फिर ईरानके बादशाह तेहमास्प सफवीका नौकर होकर यज्दके सूबेका वजीर हुआ। उसके दो बेटे आका ताहिर और मिरजागयासबेग थे।

मिरजा गयासबेग बापके मरे पीछे दो बेटों और एक लड़की समेत हिन्दुस्थानको रवाना हुआ। कन्धारमें उसके एक लड़की और हुई।

मिरजा गयासबेग फ़तहपुरमें पहुँचकर अकबर बादशाहकी खिदमतमें रहनेलगा। बादशाहने उसको लायक देखकर बादशाही कारखानोंका दीवान कर दिया। वह बड़ा मुन्शी, हिसाबी और कवि था। फ़ुरसतका वक्त कवितामें बिताता था काम वालोंको खूब राजी रखता था। मगर रिशवत लेनेमें बड़ा बहादुर था।

जब अकबर बादशाह पञ्जाबमें रहा करता था तो अली कुली-बेग अस्तंजलू जो ईरानके बादशाह दूसरे इसमाईलके पास रहने वालोंमेंसे था ईरानसे आकर नौकर हुआ और तकदीरसे बादशाहने उसकी शादी मिरजा गयासबेगकी उस लड़कीसे करदी जो कन्धार में पैदा हुई थी। फिर अलीकुलीबेग जहांगीर बादशाहके पास जा रहा और शेरअफ़गनखांके खिताबसे सरफ़राज हुआ।

जब जहांगीर गद्दी पर बैठा तो उसने मिरजा गयासको एतमा-दुद्दौला खिताब देकर आधे राज्यका दीवान बनाया। और शेर-अफ़गनखांको बंगालेमें जागीर देकर वहां भेज दिया। उसने बंगालेमें जाकर दूसरेही साल वहांके सूबेदार कुतुबुद्दीनखांको मारा और आप भी मारा गया। वहांके कर्म्मचारियोंने मिरजा गयासकी लड़कीको जहांगीरके पास भेज दिया। जहांगीर कुतु-बुद्दीनखांके मारे जानेसे बहुत नाराज था। क्योंकि कुतुबुद्दीनखां उसका धाय भाई था। इससे उसने वह लड़की अपनी सौतेली माता रुकैया सुलतानको देदी। वहां वह कई वर्ष साधारण दशा में रही। जब उसका भाग्य उदय होने पर आया तो एक दिन नौरोजके जशनमें जहांगीरकी नजर उस पर पड़ गई और वह पसन्द आगई। बादशाहने उसे अपने महलकी लौंडियोंमें दाखिल कर लिया। फिर तो जल्द जल्द उसका दरजा बढ़ने लगा। पहले नूरमहल नाम हुआ फिर नूरजहां बेगम कहलाई। उसकी

सब घरवाले और नौकर चाकर बड़े बड़े पदों और अधिकारों पर पहुंच गये। उसका बाप एतमादुद्दौला कुल मुखतार और बड़ा भाई अबुलहसन एतकादखांका खिताब पाकर खानसामान हुआ। एतमादुद्दौलाके गुलामों और ख्वाजासराओं तकने खान और 'तरखान' के खिताब पाये। दिलाराम दाई जिसने बेगमको दूध पिलाया था हाजी कोकाको जगह औरतोंकी "सदर" (१) हुई। औरतोंको जो जीविका मिलती थी उसकी सनद पर वह अपनी मुहर करती थी जिसको सदरस्सुदूर (२) भी मंजूर रखता था।

"खुतबा" तो बादशाहके नामकाही पढ़ा जाता था बाकी जो कुछ बादशाहीकी बातें थीं वह सब नूरजहां बेगमको हासिल हो गई थीं। वह कुछ अरसे तक झरोकेमें बादशाहकी जगह बैठती और सब अमीर उसको सलाम करने आते और उसके हुक्म पर कान लगाये रहते थे। यहां तक कि सिक्का (३) भी उसके नामका चलने लगा था जिसका यह अर्थ था—

जहांगीर बादशाहके हुक्मसे और नूरजहां बादशाहके नामसे सोनेने सौ गहने पाये अर्थात् सौगुनी इज्जत पाई।

फरमानोंके ऊपर भी बेगमका तुगरा इस प्रकार होता था—

हुक्म उलियतुल आलिया नूरजहां बेगम बादशाह।

यहां तक हुआ कि जहांगीर बादशाहका नामही नाम रह गया। वह कहा भी करता था कि मैंने सलतनत नूरजहां बेगमको देदी है। मुझे सिवा एक सेर शराब और आध सेर गोश्तके और कुछ नहीं चाहिये।

बेगमकी खूबी और नेकनामीकी बात क्या लिखी जाय उसमें बुराई थोड़ी और भलाई बहुत थी। जिस किसीका काम अड़ जाता और वह जाकर बेगमसे अर्ज करता तो उसका काम निकाल देती

(१) दानाध्यक्ष (२) प्रधान दानाध्यक्ष।

(३) इस सिक्केमें सन् २१ और जलूस हिजरी सन् १०३० हैं।

थी और जो कोई उसकी दरगाहकी पनाहमें आजाता था फिर उस पर कोई जुल्म नहीं कर सकता था। उसने अपनी साहबीमें कोई ५०० अनाथ लड़कियोंका ब्याह कराया और उनको यथायोग्य दहेज भी दिया। नूरजहांके घरानेसे लोगोंको बहुत कुछ लाभ पहुंचा।

जहांगीर बादशाहके वजीर।

१ राय घनसूर—(बादशाह होनेसे पहिले)

२ बायजीदबेग काबुली (तथा)

३ ख्वाजा मुहम्मददोस्त काबुली (बादशाह होनेके पीछे वजीर हुआ और ख्वाजाजहांका खिताब पाया।)

४ जानबेग (वजीरुल मुमालिक)

५ शरीफखां (बादशाह होनेके पीछे अमीरुलउमराका खिताब पाया)

६ वजीरखां मुहम्मद मुकीम।

७ मिरजा गयास तेहरानी खिताब एतमातुद्दौला।

८ जाफरबेग कजवीनी (आसिफखां)

९ ख्वाजा अबुलहसन।

१० आसिफखां यमीनुद्दौला नं० ७ का बेटा।

कई बड़े मौलवी।

१ मुल्लारोज बहाय तबरेजी।

२ मुल्ला शुक्रउल्लाह शीराजी।

३ मीर अबुलक सिम गीलानी।

४ मुल्लाबाकर ... शमीरी।

५ मुल्लामुह ... सीसतानी।

६ मुल्ला ... अली।

७ काजी ... ाह।

८ मुल्ला ... काबुली।

९ मुल्ल ... हकीम स्यालकोटी।

१० मुल्ला अबदुललतीफ सुलतानपुरी।
११ मुल्ला अबदुर्रहमान।
१२ मुल्ला फाजिल काबुली।
१३ मुल्ला रूमन मुरागी।
१४ मुल्ला महमूद, जौनपुरी।
१५ भूरा गुजराती।
१६ सुल्तानफराय, सोमतरी।

बादशाहके हकीम।

१ हकीम रुकनाय, काशी।
२ हकीम सदरा, (मसीहुज्जमां)
३ हकीम अबुलकासिम गीलानी (हकीमुलमुल्क)
४ हकीम मोमनाई, शीराजी।
५ हकीम रूहउल्लह, काबुली।
६ हकीम वैद्य गुजराती।
७ हकीम तकी, गीलानी।
८ हकीम हमीद, गुजराती।

बादशाहके कवि।

१ बाबा तालिब इसफहानी।
२ हयाती, गीलानी।
३ मुल्ला नजीरी, नेशापुरी।
४ मुल्ला मुहम्मद सूफी, माजिन्दरानी।
५ तालिबेआमिली, (मलिकुश्शोरा)।
६ सईदाय गीलानी, जरगरबाशी।
७ मीर मासूम, काशी।
८ कौलशूरा, काशी।
९ मुल्ला हैदर, चगताई।
१० शैदा।

हाफिज या कुरानको कण्ठ करने वाले।

१ हाफिज अली।

२ हाफिज अबदुल्लाह।

३ उस्ताद मुहम्मदमानी (आर्दो)।

४ हाफिज चेला (हाफिज बरकत)।

हिन्दुस्तानी गवैये।

१ चतुरखां।

२ माखू।

३ खूसरा।

४ जहांगीरदाद।

५ खुसरोखां

६ परवेजदाद।

७ खुर्रमदाद।

८ नाथूजी।

पहला वर्ष।

सन् १०१४।

अगहन बदी १ गुरुवार संवत् १६६२ से वैशाख सुदी १ चन्द्रवार सं० १६६३ तक।

बादशाह लिखते हैं कि मैं ईश्वरके अति अनुग्रहसे गुरुवार ८ (१) जमादिउस्सानी सन् १०१४ को एक घण्टा दिन चढ़े ३८ वर्षकी अवस्थामें राजधानी आगरेमें तख्त पर बैठा। मेरे बापके २८ वर्षकी आयु होने तक कोई पुत्र जीता न था। इस लिये वह सन्तानके वास्ते फकीरोंसे प्रार्थना किया करते थे और उन्होंने अपने मनमें यह प्रतिज्ञा की थी कि अब जो कोई लड़का होगा तो पैदल ख्वाजाजीकी यात्राको जाऊंगा। उस समय शेख सलीम नाम एक महात्मा सीकरीके पहाड़में रहता था। उधरके मनुष्योंको उसमें बहुत श्रद्धा थी। मेरे पिता भी उसके पास गये और एक दिन उसको अपने अनुकूल देखकर पूछा कि मेरे कितने पुत्र होंगे? उसने कहा कि परमेश्वर आपको तीन पुत्र देगा। पिताने कहा कि मैं प्रथम पुत्रको तुम्हारे चरणोंमें डालूंगा। शेखने कहा हमने उसको अपना नाम दिया।

(१) ८ गुरुवारकी तिथि लेखकके दोषसे या और किसी भूलसे मूलमें गलत लिखी गई है। क्योंकि जब अकबर बादशाहकी मृत्यु १४को हुई थी तो सलीम उससे पहलेही ८ को किस रीतिसे तख्त पर बैठ सकता था।

इकबालनामये जहांगीरीमें १५ जमादिउस्सानी गुरुवार लिखी है, यह तारीख सही मालूम देती है।

पञ्चांगके हिसाबसे १३ या १४ होती है सो यह चन्द्रदर्शनका

"जब मेरा जन्म समय आया तो पिताने मेरी माताको शेखके घर भेज दिया और वहां तारीख १७ रबीउलअव्वल बुधवार सन् ९७७ को ७ घड़ी दिन चढ़े पीछे तुलाराशिके २४ वें अंशमें मेरा जन्म हुआ और सुलतान सलीम नाम रखा गया। परन्तु मैंने पिताके श्रीमुखसे उन्मादमें भी कभी नहीं सुना कि उन्होंने मुझे मुहम्मद सलीम या सुलतान सलीम कहा हो। वह सदा शेखू बाबा कहा करते थे। मैं जब बादशाह हुआ तो मेरे मनमें आया कि अपना नाम बदल देना चाहिये क्योंकि उस नाममें रूमके बादशाहोंके नामका धोखा होसकता था। बादशाहोंका काम जहांगीरी अर्थात् जगत् जीतनेका है इस लिये जहांगीर नाम रखनेकी दैवसे प्रेरणा मेरे हृदयमें हुई। मेरा राज्याभिषेक सूर्य्य निकलतेही हुआ था जब कि पृथ्वी प्रकाशमयी होगई थी इस हेतु मैंने उपनाम नूरुद्दीन रखना चाहा और भारतके विद्वानोंसे सुना भी था कि जलालुद्दीनके पीछे नूरुद्दीन बादशाह होगा इन बातोंसे मैंने नाम और उपनाम नूरुद्दीन जहांगीर बादशाह रखा। यह बड़ा काम आगरेमें हुआ उसका कुछ हाल लिखना जरूरी है।"

"आगरा हिन्दुस्थानके बड़े शहरोंमेंसे है। वह यमुनाके किनारे बसता है। यहां पुराना किला था। मेरे पिताने मेरे जन्म लेनेसे पहले उसको गिराकर तराशे हुए लाल पत्थरोंका किला बनाया। वैसा किला पृथ्वी पर्य्यटन करनेवाले कहीं नहीं बताते हैं। यह १५—१६ वर्षोंमें तय्यार हुआ था। उसके चार दरवाजे बड़े और दो छोटे हैं। ३५ लाख रुपये इस पर खर्च हुए थे। जो ईरानके १ लाख १५ हजार तूमान और तूरानकी १ करोड़ ५ लाख खानीके बराबर थे।

अन्तर है क्योंकि मुसलमान लोग तारीख पंचांगसे नहीं मानते चन्द्रदर्शनसे मानते हैं।

जहांगीर अगहन बदी १ गुरुवारको तख्त पर बैठा था।

"इस नगरकी बस्ती जमनाके दोनो ओर है। पश्चिमकी अधिक है। इसका घेरा ७ कोसका है। लम्बाई २ और चौड़ाई १कोस है। जो बस्ती पूर्वको नदीके उधर है वह २॥ कोसकी है लम्बी १ कोस और चौड़ी आध कोस। पर इसमें इमारतें इतनी अधिक हैं कि उनमें ईरान, खुरासान और तूरानके शहरोंके समान कई शहर बस सकते हैं। बहुधा लोगोंने तीन तीन और चार चार खण्डके मकान बनाये हैं और आदमियोंकी इतनी अधिक भीड़ रहती है कि गलियों और बाजारोंमें मुशकिलसे फिर सकते हैं।

"आगरा दूसरी "अकलीम"(१) के अन्तमें है इसके पूर्वमें कन्नौजकी विलायत पश्चिममें नागौर उत्तरमें सम्भल दक्षिणमें चन्देरी है।"

"हिन्दुओंकी किताबोंमें लिखा है कि यमुनाका सोता कलन्द नाम एक पहाड़में है जहां ठण्ड अधिक होनेसे मनुष्य नहीं जा सकते हैं। और जहां यमुना प्रकट होती है वह एक पहाड़ परगने खिजराबादके पास है।"

"आगरेकी हवा गर्म और खुश्क है। हकीम कहते हैं कि वह जान्दारोंको घुलाती और निर्बल करती है। बहुधा लोग उसे सह नहीं सकते। परन्तु जिनकी प्रकृति कफ और वायुकी होती हैं वह इसके अवगुणसे बचे रहते हैं। यही कारण है कि जिन पशुओं की ऐसी प्रकृति है जैसे कि भैंस और हाथी आदि वह इस जलवायु में अच्छे रहते हैं।

"लोदी पठानोंके राज्यसे पहले आगरा बड़ा नगर था किला भी था "मसऊदसाद" सुलेमानने सुलतान महमूद गजनवीके पड़-पोते मसऊदके पोते इब्राहीमके बेटे महमूदकी प्रशंसाके कसीदे

(१) मुसलमान भूगोलवेत्ताओंने पृथ्वीके ७ खण्ड ठहराकर हिन्दुस्थानको दूसरे तीसरे और चौथे खण्डमें माना है यह ७ खण्ड ८ लम्बी रेखाओंके भीतर जो पूर्वसे पश्चिमको भूमिके नकशेमें दिखाई जाती हैं ठहराये गये हैं।

(काव्य) में इस किलेके जीतनेका वर्णन किया है जिसमें लिखा है कि—

आगरेका किला गर्दमें प्रकट हुआ,
जिसके ऊपर कंगूरे पहाड़ोंके समान थे।

"सिकन्दर लोदीका विचार गवालियर लेनेका था इस लिये वह हिन्दुस्थानके बादशाहोंकी राजधानी दिल्लीसे आगरेमें आया और वहां रहा। उस दिनसे आगरेकी बस्ती बढ़ने लगी और वह दिल्लीके बादशाहोंका "पायतख्त" होगया।"

"जब परमात्माने हिन्दुस्थानकी बादशाही इस बड़े घरानेको दी तो बाबर बादशाहने सिकन्दर लोदीके बेटे इब्राहीमको मारने और राना सांगाको जो हिन्दुस्थानके राजों और जमींदारोंमें सबसे बड़ा था हरानेके पीछे यमुनाके पूर्वकी एक भूमि पसन्द करके एक बाग बनाया जिसके समान सुन्दर बाग दूसरी जगह कमही होंगे। उसका नाम गुलअफशां रखा। एक छोटीसी मसजिद भी उसके कोनेमें तराशे हुए लाल पत्थरोंकी बनवाई और भी बड़ी इमारत बनवानेके बिचारमें थे परन्तु आयु शेष होजानेसे नहीं बनवा सके।"

"खरबूजे आम और दूसरे मेवे आगरेमें खूब होते हैं सब मेवों से आममें मेरी रुचि अधिक है। विलायतके कितनेही मेवे जो हिन्दुस्थानमें नहीं होते थे स्वर्गवासी श्रीमान (अकबर) के समयमें होने लगे हैं। साहिबी हबशी और किशमिशी जातिके अंगूर बड़े बड़े शहरोंमें होने लगे हैं। लाहोरके बाजारोंमें अंगूरके मौसिममें जितनी जातिके चाहें मिल सकते हैं।

"एक मेवा अनन्नास नामक फरंगके टापुओंमें होता है जो बहुत सुगन्धित और स्वादिष्ट होता है, वह गुलअफशां बागमें हर साल कई हजार उत्पन्न होता है।"

"हिन्दुस्थानके सुगन्धित फूलोंको दुनिया भरके फूलोंसे उत्तम कहना चाहिये। कितनेही फूल ऐसे हैं जिनका किसी जगह पृथ्वीमें नाम निशान नहीं है। प्रथम चम्पाका फूल, बहुत कोमल और

सुगंधसम्पन्न केसरके फूलके आकारका है। पर चम्पाका रंग पीला सफ़ेदी लिये हुए है उसका वृक्ष बहुत सुडौल बड़ा पत्तोंसे हरा भरा और छाया फैलानेवाला होता है। फूलोंके दिनोंमें एक झाड़ ही सारे बागको महका देता है। उससे उतरकर केवड़ेका फूल है। जो आकार और डौलमें अनोखाही है। उसकी सुवास ऐसी तीव्र और तीक्ष्ण है कि कस्तूरीकी सुगन्धसे कुछ कम नहीं है।"

"फिर रायबेलका फूल श्वेत चमेलीकी जातिका है जिसके पत्ते दो तीन गुच्छोंके होते हैं और एक फूल मौलसरीका है उसका झाड़ भी बहुत सुन्दर सुडौल और सायादार होता है। उसके फूलका सौरभ खूब हलका होता है।"

"एक फूल सेवतीका केवड़ेकी किस्मसे है केवड़ेमें कांटे होते हैं सेवतीमें नहीं। उसका फूल पीलाई लिये होता है और केवड़ेका श्वेत—इन फूलों और चमेलीके फूलोंसे सुगन्धित तैल बनता है। और भी फूल हैं जिनका वर्णन बहुत कुछ होसकता है।"

"वृक्षोंमें सर्व सनूबर चिनार, सफ़ेदार और बेदमूला जिनका हिन्दुस्थानमें किसीने खयाल भी नहीं किया था बहुत होने लगे हैं। चन्दनका वृक्ष जो टापुओंमें होता था बागोंमें लगाया गया है।"

"आगरेके रहनेवाले विद्याओं और कलाओंके सीखनेमें बहुत परिश्रम करते हैं विविध धर्म्म और पंथकी अनेक जातियोंके लोग इस नगरमें बसते हैं।"

न्यायकी सांकल।

सिंहासनारूढ़ होतेही जहांगीर बादशाहने पहला हुक्म न्याय की सांकल बांधनेका दिया जो ४ मन(१) खरे सोनेकी बनाकर किलेमें शाहबुर्जसे लटकाई गई थी। उसका दूसरा सिरा कालिन्दी के कूल पर पत्थरके एक स्तम्भ पर रुपा था। यह सांकल ३० गज लम्बी थी। उसके बीचमें ६० घण्टे लगे थे कि यदि किसीका

(१) ईरानका ३२ मन।

न्याय अदालतमें न हो तो बादशाहको सूचना करनेके लिये उसको हिला दिया करे।

बादशाहके बारह हुक्म।

फिर बादशाहने यह बारह हुक्म अपने तमाम मुल्कोंमें कानून के तौर पर काममें लानेके वास्ते भेजे थे।

१—जकात(१) तमगा(२) मीरबहरी(३)के कर तथा और कितनेही कष्टदायक कर जो हरेक सूबे और सरकारके जागीरदारों ने अपने लाभके लिये लगा रखे हैं सब दूर किये जावें।

२—जिन रास्तोंमें चोरी लूट मार होती हो और जो बस्तीसे कुछ दूर हों वहांके जागीरदार सराय और मसजिद बनावें, कुए खुदावें, जिससे सरायमें लोगोंके रहनेसे बस्ती होजावे। यदि वह जगह बादशाही खालिसेके पास हो तो वहांका कर्म्मचारी काम करावे। व्योपारियोंका माल रास्तोंमें बिना उनकी मरजी और आज्ञाके नहीं खोला जावे।

३—बादशाही मुल्कोंमें जो कोई हिन्दू या मुसलमान मर जावे तो उसका माल असबाब सब उसके वारिसोंको देदेवें कोई उसमेंसे कुछ न ले और जो वारिस न हो तो उस मालकी सम्हालके वास्ते पृथक भाण्डारी और कर्म्मचारी नियत करदें। वह धर्म्म के कामों अर्थात् मसजिदों सरायों कूओं और तालावोंके बनाने तथा टूटे हुए पुलोंके सुधारनेमें लगाया जावे।

४—शराब और दूसरी मादक चीजें न कोई बनावे न बेचे।†

---

(१) महसूल सायर (२) मुहराना (३) नदियों और समुद्रका कर।

† इस जगह बादशाह लिखता है कि मैं आप शराब पीता हूं १८ वर्षकी अवस्थासे अब तक ३८ सालका हुआ हूं सदा पीता रहा हूं। पहले पहले तो जब कि अधिक तृष्णा उसके पीनेकी थी कभी कभी बीस बीस प्याले दुआतिशाके पीजाता था। जब होते होते उसने मुझे दबा लिया तो मैं कम करने लगा। ७ वर्षसे १५ प्यालोंसे ५—६ तक घटा लाया हूं। पीनेके भी

५—किसीके घरको सरकारी न बनावें।

६—किसी पुरुषके नाक कान किसी अपराधमें न काटे जावें और मैं भी परमेश्वरसे प्रार्थना कर चुका हूं कि इस दण्डसे किसी को दूषित नहीं करूंगा।

७—खालिसेके और जागीरदारोंके कर्म्मचारी प्रजाकी पृथ्वी अन्यायसे न लें और न आप उसको बोवें।

८—खालिसेके और जागीरदारोंके कर्म्मचारी जिस परगनेमें हों वहांके लोगोंमें बिना आज्ञा सम्बन्ध न करें।

९—बड़े बड़े शहरोंमें औषधालय बनाकर रोगियोंके लिये वैद्यों को नियत करें और जो खरच पड़े वह सरकारी खालिसेसे दिया करें।

१०—रबीउलअव्वल महीनेकी १८ तारीखसे जो मेरे जन्मको तिथि है मेरे पिताकी प्रथाके अनुसार प्रतिवर्ष एक दिन गिनकर इन दिनोंमें जीवहिंसा न करें प्रत्येक सप्ताहमें भी दो दिन हिंसा न हो, एक तो बृहस्पतिवारको जो मेरे राज्याभिषेकका दिन है और दूसरे रविवारको जो मेरे पिताका जन्मदिवस है। वह इस दिनको शुभ समझकर बहुत माना करते थे क्योंकि उनके जन्मदिन होनेके अतिरिक्त सूर्य्य भगवानका भी यही दिन है और यह जगत्की उत्पत्तिका पहला दिन है। सो बादशाही देशोंमें जीवहिंसा न होनेके दिनोंमेंसे एक दिन यह भी था।

११—यह स्पष्ट आज्ञा है कि मेरे पिताके सेवकोंके मनसब और जागीरें ज्यों की त्यों बनी रहें। वरंच यथायोग्य हरेकका पद बढ़ाया जावे(१)। और सब मुल्कोंके माफीदारोंकी माफियां

पहले कोई समय थे। कभी कभी पिछले ३—४ घण्टे दिनसे प्रारम्भ कर देता था और कभी दिनमेंही पीने लगता था। ३० वर्षकी अवस्था तक तो यही ढंग रहा फिर रातका समय स्थिर किया। अब तो केवल भोजनका स्वाद लेनेके वास्ते पीता हूं।

(१) बादशाह लिखता है कि फिर मैंने यथायोग्य सबके मनसब

बिलकुल उन पट्टोंके अनुसार जो उनके पास हों स्थिर रहें और मीरानसदरजहां (धर्माधिकारी) पालना करनेके योग्य लोगोंको नित्य प्रति मेरे सम्मुख लाया करें।

१२—सब अपराधी जो वर्षोंसे किलों और कारागृहोंमें कैद हैं छोड़ दिये जावें।

सिक्का।

फिर बादशाहने एक शुभमुहूर्त्तमें अपने नामकी छाप सोने चांदी पर छपवाई और अनेक तौलके रुपये मोहरें और पैसे चलाये जिनके नाम पृथक पृथक रखे गये। यथा—

सिक्का	तौल	नाम
मोहर	१०० तोला	नूरसुलतानी
”	५० ”	नूरशाही
”	२० ”	नूरदौलत
”	१० ”	नूरकरम
”	५ ”	नूरमेहर
”	१ ”	नूरजहांनी
”	आधा तोला	नूरानी
”	पाव तोला	रिवाजी
रुपया	१०० तोला	कौकबेताला
”	५० ”	कौकबेइकबाल
”	२० ”	कौकबेमुराद
”	१० ”	कौकबेबखत

बढ़ाये। १० के १२ से कम नहीं और अधिक १० के ३० और ४० (अर्थात् सवाये तिगुने और चौगुने) कर दिये। सब अहदियोंका खाना छोड़ा और कुल शागिर्दपेशोंका महीना सवाया कर दिया। अपने पूज्य पिताकी महलवालियोंका हाथखर्च उनकी दशा और व्यवस्थाके अनुसार १० से १२ और १० से २० तक सवाया और दूना बढ़ा दिया।

,,	५ ,,	कौकबेसफेद
,,	१ ,,	जहांगीरी
,,	॥ ,,	सुलतानी
,,	। ,,	निसारी
,,	तोलेका १०वां भाग	खैरकबूल

इन सिक्कों पर बादशाहका नाम, मुसलमानी कलमा, सन् जुलूस और टकसालका स्थान छापा जाता था। नूरजहांनी मोहर की जगह चलता था और जहांगीरी रुपयेकी जगह।

बादशाहकी उदारता और न्यायनीति।

बादशाहने एक लाख रुपये खुसरोको देकर फरमाया कि क़िलेके बाहर जो मुनइमखां खानखानांका मकान है उसको अपने वास्ते सुधरा लो।

पंजाबकी सूबेदारी सईदखां मुगलको दी पर उसके नाजिरोंका अन्यायी होना सुनकर कहला दिया कि हमारी न्यायशीलता किसी के अनाचारका सहन नहीं करती है जो उसके अनुचरोंसे किसी पर अन्याय हुआ तो अप्रसन्नताका दण्ड दिया जायगा।

फ़रीद बखशीको मीरबखशीके पदपर स्थिर रखा और सिरोपाव के सिवा जड़ाऊ दवात कलम और जड़ाऊ तलवार भी उसको दी और उसका मन बढ़ानेको कहा कि मैं तुमको तलवार और कलम का धनी (सिपाही और मुंशी) जानता हूं।

वजीरखां जो वजीर था और फतहउल्लह जो बखशी था वह दोनो अब भी उन्हीं कामों पर रहें।

अबदुलरज्जाक मामूरी जो बिना कारणही बादशाहके पाससे उसके बापकी सेवामें भाग आया था बादशाहने उसका अपराध क्षमा करके बखशीके पद पर बना रखा और खिलअत दिया।

अमीनुद्दौला जो जहांगीरका बखशी था और फिर बिना आज्ञा उनके पिताके पास आकर तोपखानेका अध्यक्ष होगया था। उसी काम पर बना रखा गया। इसी तरह जो लोग बाहर और भीतर

बापकी सेवामें थे जहांगीरने उन सबको उन्हीं कामों पर रहने दिया।

४ रज्जब अगहन सुदी ६ को शरीफखां जो बादशाहके भरोसे का आदमी था और जिसको तुमन और तोग़ मिला हुआ था विहारके सूबेसे आकर उपस्थित हुआ। बादशाहने प्रसन्न होकर उस को वकील और बड़े वजीरका उच्च पद अमीरुलउमराकी पदवी और पांच हजार सवारका मनसब दिया। इसका बाप ख्वाजा अबदुस्समद बहुत अच्छा चित्रकार था और हुमायूं बादशाहके पास प्रतिष्ठापूर्वक रहता था जिससे अकबर बादशाह भी उसका बहुत मान रखता था।

बंगालेकी सूबेदारी राजा मानसिंहके पासही बनी रही। बादशाह लिखता है—"उसे इस बातका जरा गुमान न था कि मैं उसके साथ ऐसा उदार बरताव करूंगा। मैंने उसको चारकुब्बकका सिरोपाव जड़ाऊ तलवार खासा घोड़ा देकर उस देशको बिदा किया जो ५० हजार सवारोंके रहनेकी जगह है। उसका बाप भगवान दास(१) और दादा भारमल था। भारमल उन कछवाहे राजपूतोंमें पहला पुरुष था जो मेरे बापकी सेवामें आकर रहे थे। सचाई राजभक्ति और वीरतामें अपनी जाति वालोंसे बढ़कर था।

उदयपुर पर चढ़ाई।

जहांगीर लिखता है—

राज्यतिलकके पीछे सब अमीर अपनी अपनी सेना सहित दरबारमें उपस्थित थे। मैंने सोचा कि यह सेना अपने पुत्र परवेज के साथ देकर रानासे लड़ने भेजूं। वह हिन्दुस्थानके दुष्टों और कट्टे काफिरोंमेंसे है। पिताके समय भी कई बार उसपर सेनाएं भेजी गईं पर उसका पाप नहीं कटा। मैंने शुभमुहूर्त्तमें पुत्र परवेजको भारी खिलअत जड़ाऊ परतला जड़ाऊ पेटी मोतियोंकी माला जो कीमती रत्नोंकी बनी ७२ हजारकी थी अरबी एराकी घोड़े और

(१) भगवन्तदास।

हाथी देकर बिदा किया। बीस हजारके लगभग हथियार-बन्द सजे हुए सवार अच्छे सरदारों सहित लड़ाईमें भेजे।

आसिफखां दीवानको खिलअत जड़ाऊ कमरपेटी हाथी घोड़ा और शाहजादेकी "अतालीकी" का काम मिला और सब छोटे बड़े अमीरोंको उसकी सलाह पर चलनेका हुक्म दिया गया।

अबदुलरज्जाक मामूरी बख्शी और मुखतारबेग शाहजादेका दीवान हुआ।

राजा भारमलके बेटे जगन्नाथको जो पांच हजारी था खिलअत और जड़ाऊ परतला मिला।

राजा सगर, राना(१)का चचा था और अकबर बादशाह उसको राना पदवी देकर खुसरोके साथ रानाके ऊपर भेजना चाहता था पर इसी बीचमें मर गया। जहांगीरने उसे भी खिलअत और जड़ाऊ पट्टा देकर परवेजके साथ कर दिया।

राजा मानसिंहके भतीजे माधवसिंह(२) और सेखावत रायसाल दरबारीको इस हेतु कि वह दोनों उसके पिताका विश्वासपात्र और तीन हजारी मनसबदार थे झंडे दिये।

इनके सिवा शेरखां पठान, शेख अबुलफजलका बेटा शेख अबदुर्रहमान, राजा मानसिंहका पोता महासिंह, वजीर जमील और कराखां जो दो दो हजार सवारोंके मनसबदार थे घोड़े और सिरोपाव पाकर शाहजादेके साथ बिदा हुए और राजा मनोहर भी गया।

बादशाह मनोहरके विषयमें लिखता है—"राजा मनोहर

(१) तुजुक जहांगीरीमें इसका नाम शंकर और रानाका चचेरा भाई लिखा है। पर यह राना अमरसिंहका चचा था क्योंकि राना उदयसिंहका बेटा और प्रतापसिंहका भाई था।

(२) माधवसिंह मानसिंहका भाई था भतीजा न जाने कैसे तुजुकमें लिखा है।

शेखावत जातिके कछवाहोंमेंसे है। मेरे बाप बचपनमें उससे बहुत मोह रखते थे। यह फारसी बोलता था। उससे लेकर आदम तक उस घरानेके किसी आदमीमें भी समझका होना नहीं कहा जा सकता है। परन्तु वह समझसे शून्य नहीं है और फारसीकी कविता भी करता है।"

यह लिखकर बादशाहने उसकी बनाई एक बैत भी लिखी है जिसका अर्थ यह है—छायाकी उत्पत्तिसे यही प्रयोजन है कि कोई सूर्य्य भगवानके प्रकाश पर अपना पांव न धरे।

इस लड़ाईमें बहुतसे अमीरों, खानोंके बेटों और राजपूतोंने अपनी इच्छासे जानेकी प्रार्थना की थी। एक हजार अहदियों (इक्कों) की नौकरी भी उक्त लड़ाईके लिये बोली गई थी।

बादशाह लिखता है—"सारांश यह है कि यह ऐसी फौज तय्यार हुई है कि काम पड़े तो बड़े बड़े शक्तिमान श्रीमानोंमेंसे हरेकका सामना करे।

दान पुण्य और पदवृद्धि।

बादशाहने २० हजार रुपये दिल्लीके गरीबोंके लिये भेजे।

सब बादशाही राज्यकी विजारत [माल] का काम आधा आधा वजीरुलमुल्क और वजीरखांको बांट दिया।

शेख फरीद बख्शीको चार हजारीसे पंज हजारी किया।

रामदास कछवाहेका मनसब दो हजारीसे तीन हजारी कर दिया वह अकबरके कृपापात्र सेवकोंमेंसे था।

कन्दहारके हाकिम मिरजा रुस्तम, अबदुर्रहीम खानखानां, उसके बेटों एरच, दाराब और दक्षिणमें रखे हुए दूसरे अमीरोंके वास्ते सिरोपाव भेजे गये।

बाज बहादुरको चार हजारी मनसब बीस हजार रुपये और उड़ीसेकी सूबेदारी मिली। उसका बाप निजाम, हुमायूं बादशाह की किताबें रखा करता था। सदरजहांका मनसब दो हजारीसे चार हजारी कर दिया। वह बादशाहके साथ पढ़ा था और उसके

बापकी बीमारीमें जब सब अमीर पलट गये थे तब भी वह नहीं पलटा था।

केशवदास मारूका मनसब बढ़कर डेढ़ हजारी होगया। यह मेढ़तिया राठोड़ोंमेंसे था और स्वामिभक्तिमें अपने बराबरवालोंसे बढ़ गया था।

गयासबेगको जो कई वर्षोंतक ब्यूतात [कारखानों] का दीवान था सात सदीसे डेढ़ हजारी करके वजीरखांकी जगह आधे राज्यका वजीर किया और ऐतमादुद्दौलाका खिताब दिया। वजीरखांको सूबे बंगालका दीवान करके जमाबन्दी तय्यार करनेके लिये भेजा।

कुलीचखांको एक लाख रुपये और गुजरातका सूबा इनायत हुआ।

पितरदासको जिसे अकबर बादशाहने रायरायांकी पदवी दी थी। इस बादशाहने राजा विक्रमादित्यकी उपाधि देकर मीरे-आतिश अर्थात् तोपखानेका अध्यक्ष बनाया और हुक्म दिया कि हमेशा अरदलीके तोपखानेमें ५० हजार तोपची और ३ हजार तोपें तैयार रखे। वह खत्री था अकबर बादशाहने उसे हाथी-खानेकी मुशरफी अर्थात् कामदारीसे बढ़ाकर अमीरोंके पद तक पहुँचाया था सिपाही भी था और प्रबन्धकर्त्ता भी।

खान आजमके बेटे बेरमका मनसब दो हजारीसे अढाई हजारी होगया।

लाल छाप।

बादशाहकी यह इच्छा थी कि अपने और अपने पिताके सेवकों के परममनोरथ पूरे करे। इससे आज्ञा दी कि उनमेंसे जो कोई अपनी जन्मभूमिको जागीरमें चाहता हो वह प्रार्थना करे। उसे चंगेज-खानी तौरे और कानूनके अनुसार लाल छापका पट्टा कर दिया जावेगा जिससे फिर कुछ हेरफेर न हो।

बादशाह लिखता है कि हमारे बाप दादे जिस किसीको शासन देते थे। उसके पट्टे पर लाल छाप कर देते थे। यह लाल छाप

शिगरफसे लगाई जाती थी। मैंने हुक्म दिया कि छाप लगानेकी जगह पट्टे पर सोना चढ़ा दिया करें। अब इस छापका नाम "आलतमगा" रख दिया है। (१)

अमीरोंकी इजाफे।

बदखशांके मिरजासुलेमानके पोते और शाहरुखके बेटे मिरजा सुलतानको बादशाहने बेटोंकी भांति पाला था। उसे एक हजारी मनसब दिया।

भावसिंहका मनसब बढ़कर डेढ़ हजारी होगया। यह राजा मानसिंहकी सन्तानमें बहुत योग्य था।

गयूरबेग काबुलीके बेटे जमानाबेगको डेढ़ हजारी मनसब, महावतखांका खिताब और शागिर्दपेशेके बखशीका पद मिला (२) यह पहले अहदी था फिर पानसदी हुआ था।

राजा बरसिंह देव।

राजा बरसिंहदेव(३) बुन्देलेको तीन हजारी मनसब मिला। बादशाह लिखता है कि यह बुन्देला राजपूत मेरा बढ़ाया हुआ है। बहादुरी भलमनसी और भोलेपनमें अपने बराबरवालोंसे बढ़कर है। इसके बढ़नेका यह कारण हुआ कि मेरे पिताके पिछले समय में शेख अबुलफजलने जो हिन्दुस्थानके शेखोंमें बहुत पढ़ा हुआ और बुद्धिमान था स्वामिभक्त बनकर बड़ेभारी मोलमें अपनेको

(१) जहांगीर बादशाहके कई फरमान इस लाल छापके हमारे देखनेमें भी आये हैं।

(२) कर्नल टाडने भूलसे इसको रजपूत लिख दिया है यह मुगल था।

(३) फारसी तवारीखमें नरसिंहदेव भूलसे लिखा है यह भूल एक नुकतेकी है क्योंकि 'बे' और 'नून' की शक्लमें एक नुकतेका फर्क है नीचे नुकता लग जावे तो 'बे' और ऊपर लगे तो 'नून' होजावे। फारसी लिपिमें नुकतोंके हेर फेरसे अर्थका अनर्थ होजाता है। इसके कई दृष्टान्त मैं स्वप्न-राजस्थान ग्रन्थमें लिख चुका हूं।

मेरे बापके हाथ बेच दिया था। उन्होंने उसको दक्षिणसे बुलाया। वह मुझसे लाग रखता था और हमेशा ढके छुपे बहुतसी बातें बनाया करता था। उस समय मेरे पिता फसादी लोगोंसे मेरी चुगलियां सुनकर मुझसे नाराज थे। मैं जान गया था कि शैखके आनेसे यह नाराजी और बढ़ जावेगी जिससे मैं हमेशाके लिये अपने बापसे विमुख होजाऊंगा। इस बरसिंहदेवका राज्य शैखके मार्ग में पड़ता था और यह उन दिनों बागी भी होरहा था। इसलिये मैंने इसको कहला भेजा कि यदि तुम उस फसादीको राहमें मार डालो तो मैं तुम्हारा बहुत कुछ उपकार करूंगा। राजाने यह बात मानली। शैख जब उसके देशसे होकर निकला तो इसने मार्ग रोक लिया और थोड़ीसी लड़ाईमें उसके साथियोंको तितर बितर करके शैखको मारा और उसका सिर इलाहाबादमें मेरे पास भेज दिया। इस बातसे मेरे पिता नाराज तो हुए परन्तु परिणाम यह हुआ कि मैं बेखटके उनके चरणोंमें चला गया और वह नाराजी धीरे धीरे दूर होगई।

३० घोड़ोंका दान।

बादशाहने तवेलेके कर्मचारियोंको हुक्म दिया कि नित्य ३० घोड़े दानके लिये लाया करें।

मिरजाअली अकबरशाहीको चार हजारी मनसब और संभल की सरकार जागीरमें मिली।

अमीरुलउमराकी एक उत्तम बात।

बादशाह लिखता है—"एक दिन किसी प्रसङ्गसे अमीरुलउमरा ने एक बात अर्ज की जो मुझे बहुत पसन्द आई। उसने कहा कि ईमानदारी और बेईमानी कुछ धन मालहीमें नहीं देखी जाती है, वरन यह भी बेईमानी है कि जो गुण अपनोंमें न हो वह दिखाया जावे और जो गुण दूसरोंमें हो वह छिपाया जावे। बेशक यह बात सही है। पास रहनेवालोंको चाहिये कि अपने और पराये

का राग द्वेष छोड़कर हरेक मनुष्यकी जैसी व्यवस्था हो वैसी अर्ज करते रहें ।”

तूरान जीतनेका विचार ।

“मैंने परवेजसे जाते समय कह दिया था कि जो राणा अपने पाटवीपुत्र कर्ण समेत हाजिर होजावे और अनुचर्य्या स्वीकार करे तो उसके देशको मत बिगाड़ना । इस सिफारिशके दो प्रयोजन थे एक तो यह कि तूरानकी विलायत जीतनेका विचार मेरे पिताके मनमें रहा करता था । परन्तु जब कभी उन्होंने यह इरादा किया तभी कोई न कोई विघ्न पड़ गया । अब यदि राणाकी लड़ाई एक तरफ होजाय और यह खटका जीसे निकल जाय तो मैं परवेजको हिन्दुस्थानमें छोड़कर अपने बाप दादोंके देशको चला जाऊं । वहां अभी कोई जमा हुआ हाकिम नहीं है । बाकीखां भी जो अबदुल्लाखां और उसके बेटे अबदुलमोमिनखांके पीछे जोर पकड़ गया था मर चुका है । उसके भाई वलीमुहम्मदका जो इस समय उस देशका अधिपति है राज्य नहीं जमा है ।”

“दूसरे दक्षिण जीतनेकी तय्यारी करना जिसका कुछ भाग मेरे पिताके समयमें लिया गया था अब मैं उस देशको एक बार अपने राज्यमें मिलाया चाहता हूं परमेश्वर मेरे यह दोनो मनोरथ पूरे करे ।”

मिरजा शाहरुख।

बदख्शांके हाकिम मिरजा सुलेमानके पोते मिरजा शाहरुख को अकबरने पांच हजारी मनसब और मालवेका सूबा दिया था जहांगीरने सात हजारी करके उसे उसी सूबेमें स्थिर रखा । अकबर भी इस मिरजाका बहुत मान रखता था । जब अपने बेटोंको बैठने का हुक्म देता तो इसको भी बिठाता ।

ख्वाजा अबदुल्लह नकशबन्दीका कसूर माफ होकर जागीर और मनसब बहाल रहा । यह बादशाहको छोड़कर उसके बापके पास चला आया था ।

अबुलनबी उजबकका मनसब अढाई हजारी होगया। यह तूरान का रहनेवाला था और अबदुलमोमिनखांके राज्यमें मशहदका हाकिम था।

सुलतान दानियालके बेटोंका बुलाना।

बादशाहने अपने विश्वासी सेवक शेख हुसैनको जो बड़ा शिकारी और जर्राह भी था अपने भाई सुलतान दानियालके बालबच्चोंको लानेके लिये बुरहानपुर भेजा था। खानखानांको भी कुछ ऊंची नीची बातें कहलाई थीं वह उसका और वहां भेजे हुए दूसरे अमीरोंका समाधान करके सुलतान दानियालके घरवालोंको लाहौर में बादशाहके पास ले आया।

नकीबखां इतिहासवेत्ता।

नकीबखांका पद बादशाहने बढ़ाकर डेढ़ हजारी कर दिया। यह बड़ा इतिहासवेत्ता था। बादशाह लिखता है—"सृष्टिकी उत्पत्तिसे आजतक सारी दुनियाका हाल इसकी जबान पर है। ऐसी धारणाशक्ति परमेश्वर बिरलेही मनुष्यको देता है। मेरे पिताने बादशाह होनेसे पहले इससे कुछ पढ़ा था इस लिये इसको उस्ताद कहते थे। यह इतिहास और परम्पराको ठीक ठीक जाननेमें अद्वितीय है।

अखयराज कछवाहके बेटे।

२७ शाबान (माघ बदी १४) को राजा मानसिंहके काका भगवानदासके पुत्र अखयराजके बेटों अभयराम, विजयराम और श्यामरामने विलक्षण उपद्रव किया। अभयरामके अपराधोंसे बादशाह कई बार आनाकानी कर गये थे। उस दिन अर्ज हुई कि वह अपने कबीलोंको देशमें भेजते हैं पीछेसे आप भी भागकर रानाके पास जाना चाहते हैं। बादशाहने रामदास और दूसरे राजपूत सरदारोंसे कहा कि कोई इनका जामिन हो जावे तो इनके मनसब और जागीरें बहाल रखकर इनके पिछले कसूर माफ कर दिये जावें। पर दुर्भाग्यसे कोई उनका जामिन न हुआ। तब बाद-

शाहने अमीरुलउमरासे कहा कि जबतक इनकी जामिनी न हो तबतक वह किसीके हवाले कर दिये जावें। अमीरुलउमराने उन को इब्राहीमखां काकड़ और शाहनवाजखांको सौंप दिया। उन्होंने इनके हथियार लेना चाहा तो यह लड़नेको तय्यार हुए। अमीरुल उमराने यह बात बादशाहसे कही। बादशाहने दण्ड देनेका हुक्म दिया। जब अमीरुलउमरा गया तो पीछेसे बादशाहने शेख फरीदको भी भेजा।

दो राजपूतोंने अमीरुलउमराका सामना किया। एकके पास तो तलवार थी और दूसरेके पास जमधर। जमधरवालेसे अमीरुलउमराका एक नौकर जिसका नाम कुतुब था लड़ा और मारा गया। इधर यह जमधरवाला भी काम आया और तलवारवाले को अमीरुलउमराके एक पठानने मार डाला। फिर दिलावर अभयरामके ऊपर गया जो दो राजपूतोंसे सजा खड़ा था और उन की तलवारोंसे घायल होकर वहीं खेत रहा। पीछे कुछ अहदियों और अमीरुलउमराके नौकरोंने मिलकर उनको मार डाला। एक राजपूत तलवार निकालकर शेख फरीदके ऊपर दौड़ा। पर शेख के एक हबशी गुलामने उसको भी ठिकाने लगाया।

यह मारामारी आमखास दौलतखानेमें हुई और इस दण्डसे बहुतसे बण्ड डर गये। अबुलनबी उजबकने बादशाहसे निवेदन किया कि जो ऐसा अपराध उजबकोंमें होता तो अपराधियोंका सपरिवार संहार कर देता।

बादशाहने फरमाया कि यह लोग मेरे बापके बढ़ाये हुए हैं मैं भी वही बरताव बरतता हूं। और फिर यह न्यायकी बात भी नहीं है कि एक मनुष्यके अपराधमें बहुतसे लोगोंको दण्ड दिया जावे।

मनसबोंका बढ़ाना।

बादशाहने ताजखां और फखतावेग काबुलीका मनसब बढ़ाकर

२ हजारी और डेढ़ हजारी कर दिया। पिछला उनके चचा मिरजा मुहम्मद हकीमके पास रहा करता था।

अबुलकासिम तमकीनका भी जो अकबर बादशाहका पुराना नौकर था डेढ़ हजारी मनसब होगया। बादशाह लिखता है कि—"ऐसा बहुपुती कोईही होगा। उसके ३० लड़के हैं और लड़कियां इतनीही नहीं तो इससे आधीसे तो कम नहीं।"

पुत्र पदवी।

बादशाहने शेख सलीम चिश्तीके पोते शेख अलाउद्दीनको बेटे की पदवी प्रदान की। यह बादशाहसे एक वर्ष छोटा था। बहुत साधु और साहसी था।

अली असगर बारहको सैफखांका खिताब और तीन हजारी, फरेदूंबरलासको दो हजारी और शेख बायजीदको तीन हजारी मनसब दिया। शेख बायजीद भी शेख सलीम चिश्तीका पोता था। उसकी माने सबसे पहले बादशाहको दूध पिलाया था।

पण्डितोंसे शास्त्रार्थ।

बादशाह लिखता है—"एक दिन मैंने पण्डितोंसे कहा कि यदि ईश्वरका १० भिन्न भिन्न शरीरोंमें अवतार लेना तुम्हारे धर्मका परम सिद्धान्त है तो यह बुद्धिमानोंको प्रमाण नहीं। इस कल्पना से यह मानना पड़ेगा कि ईश्वर जो सब उपाधियोंसे न्यारा है लम्बाई चौड़ाई और गहराई भी रखता है। यदि यह अभिप्राय है कि उसमें ईश्वरका अंश था तो ईश्वरका अंश सब प्राणियोंमें होता है उनमें होनेकी कोई विशेषता नहीं है। और जो ईश्वरके गुणोंमेंसे किसी गुणके सिद्ध करनेका प्रयोजन है तो इसमें कोई मुख्य बात नहीं किस वास्ते कि प्रत्येक धर्म और पन्थमें सिद्ध पुरुष होते रहे हैं जो अपने समयके दूसरे मनुष्योंसे समझमें बढ़ चढ़ कर थे।"

"बहुतसे वाद विवादके बाद वह लोग उस परमेश्वरको मान गये जो रूप और रेखासे विभिन्न है। कहने लगे कि हमारी बुद्धि

उस परमात्मा तक पहुंचनेमें असमर्थ है और बिना किसी आधारके उसको पहचाननेका मार्ग नहीं पासकते इस लिये हमने इन अवतारोंको अपने वहां तक पहुंचनेका साधन बना रखा है।"

"मैंने कहा कि यह मूर्तियां कबतक तुम्हारे वास्ते परमात्मा तक पहुंचनेका द्वार होसकती हैं।"

बादशाहके घरका हाल।

इसके आगे बादशाहने अपने बाप माइयों और बहनोंका कुछ कुछ वृत्तान्त लिखा है जो विलक्षण और सुहावना होनेसे यहां भी लिखा जाता है।

बादशाह लिखता है—"मेरे पिता प्रत्येक धर्म्म और पन्थके विद्वानों और विशेषकर हिन्दुस्थानके पण्डितोंका बहुधा सत्सङ्ग करते थे। वह पढ़े नहीं थे तो भी पण्डितों और विद्वानोंके पास बैठनेसे उनकी बातोंमें अविद्वत्ता नहीं दरसने पाती थी। गद्य और पद्यके गूढ़ार्थोंको ऐसे पहुंच जाते थे कि उससे बढ़कर पहुंचना सम्भव न था।"

"कद कुछ लम्बा था, वर्ण गेहुंवा, आंख भौं काली, छवि अच्छी, सिंहका सा शरीर, छाती चौड़ी, हाथ और बाहु दीर्घ, नाकके बायें नथने पर सुन्दर तिल, आधे चनेके बराबर, जो सामुद्रिक जानने वालोंके मनमें धन और ऐश्वर्य्यकी वृद्धिका हेतु है, बोली गम्भीर बातें सलोनी, स्वरूप और छवि इस लोकके लोगोंसे भिन्न थी, देवमूर्त्ति थे।"

बहन भाई।

"मेरे जन्मसे तीन महीने पीछे मेरी बहन शाहजादा खानम एक सहेलीसे पैदा हुई। पिताने उसे अपनी माताको सौंप दिया। उसके पीछे एक लड़का दूसरी सहेलीसे फतहपुरके पहाड़ोंमें हुआ। उसका नाम तो शाह मुराद था परन्तु पिता पहाड़ी कहते थे। जब उसको दक्षिण जीतनेके वास्ते भेजा तो वह कुसङ्गतमें पड़कर इतनी अधिक शराब पीने लगा कि ३० वर्षकी अवस्थामें जालनापुर

के पास मर गया जो बरार देशमें है। उसका वर्ण सांवला था बदन छरेरा कद लम्बा चालढालसे धीरता वीरता और गम्भीरता पाई जाती थी।"

"तारीख १० जमादिउलअव्वल सन् ९७९(१) बुधकी रातको फिर एक लड़का एक सहेलीसे अजमेरमें दानियाल मुजावरके घर पैदा हुआ। पिताने उसका दानियाल नाम रखा और शाह मुराद के मरने पर दक्षिणको भेजा। पीछे आप भी गये। जिन दिनोंमें आपने आसेरगढ़को घेरा था दानियाल खानखानां और मिरजा यूसूफ आदि सरदारों सहित अहमदनगरके किलेको घेरे हुए था। जब आसेरगढ़ फतह होगया, पिता दानियालको वहां छोड़कर आगरेमें आगये फिर वह भी अपने भाई शाह मुरादका अनुगामी होकर अधिक शराब पीनेसे ३३ वर्षकी अवस्थामें मर गया। उसकी मृत्यु बुरी तरह हुई। उसको बन्दूक और बन्दूककी शिकारसे बहुत रुचि थी। अपनी बंदूकका नाम 'इक्का' और 'जनाजा' रखा था। जब शराब बहुत बढ़ गई और खानखानांने मेरे पिता की ताकीदसे पहरे बिठाकर शराबका आना बन्द कर दिया तो दानियालने अपने सेवकोंसे बहुत नम्रतासे कहा कि जैसे बन पड़े मेरे वास्ते शराब लाओ। और निज सेवक मुरशिदकुलीसे कहा कि इसी बंदूक इक्का और जनाजामें भर ला। वह दुष्ट इनामके लोभसे दोआतिशा शराब उस बंदूकमें भरकर लेआया। उसकी तेजीसे बारूत और लोहा कटकर उसमें मिल गया फिर उसका पीना और मरना साथ साथ था।"

"दानियाल बहुत सजीला जवान था। उसे हाथी घोड़ोंका बहुत शौक था। यह असम्भव था कि किसीके पास अच्छा हाथी

(१) अकबरनामेमें बुध, २ जमादिउलअव्वल ९८० है और यही सही है बुध भी इसी तारीखको था। १० जमादिउलअव्वल और तिथि आसोज सुदी ३ सम्वत् १६२९ थी १० जमादिउलअव्वल ९७९ को बुध नहीं रविवार था।

गा थोड़ा सुने और संगा न ले। हिन्दुस्थानी रागोंका बड़ा रसिक था। हिन्दुओंके ढङ्ग पर हिन्दीमें यदि कुछ कविता करता तो बुरी न होती थी।

"दानियालके जन्मके पीछे फिर एक लड़की बीबी दौलतशाहसे पैदा हुई। पिताने उसका नाम शकरुन्निसा बेगम रखा। वह उनके पासही पली थी इससे बहुत अच्छी निकली। भलमनसी और सब पर दया रखना उसका स्वाभाविक गुण है। बचपनसे अबतक मेरे स्नेहमें डूबी हुई है ऐसी प्रीति बहन भाइयोंमें बहुत कम होती होगी। बाल्यावस्थामें पहली बार जैसी कि मर्य्यादा है बालकोंकी छाती दबानेसे दूधकी बून्द निकलती है। जब मेरी इस बहनकी छाती भी दबाई गई और उससे दूध निकला तो मेरे पिता ने मुझसे कहा कि बाबा इसको पी जा जिससे तेरी बहन तेरी मा को जगह भी हो जावे। ईश्वर जानता है कि जिस दिनसे मैंने उस दूधकी बून्दको पिया उसी दिनसे बहनपनेके सम्बन्धके साथ अपनेमें वह प्रीति भी पाता हूं जो लड़कोंको मासे होती है।"

"कुछ दिनों पीछे एक और लड़की उसी बीबी दौलतशाहसे पैदा हुई। पिताने उसका नाम आरामबानू बेगम रखा। उसका मिजाज कुछ गर्म्म और तेज है। पिता उसको बहुत प्यार करते थे। उसकी बहुतसी बेअदबियोंको सहते थे जो अति मोह होनेके कारण बुरी नहीं लगती थीं और मुझे सावधान करके कईबार कह चुके थे कि बाबा मेरी खातिरसे अपनी इस बहनके साथ जो हिन्दुओंको बोलीके अनुसार मेरी लाड़ली है मेरे पीछे ऐसाही बरताव बरतना जैसा कि मैं उससे बरतता हूं। इसका लाड़ करना और इसकी बेअदबियोंसे बुरा न मानना।"

"मेरे पितामें जो उत्तम गुण थे वह कहनेमें नहीं आते। इतने बड़े राज्य असंख्य कोष और हाथी घोड़ोंके स्वामी होकर परमेश्वर से डरतेही रहते थे और अपनेको उसकी सृष्टिका एक तुच्छ जीव मानते थे।"

"उनके विशाल राज्यमें जिसकी प्रत्येक सीमा समुद्रसे जामिली थी अनेक धर्म्म और पंथके लोग अपने अपने भिन्न भिन्न मतोंको लिये हुए सुखसे निर्भय बसते थे किसीको किसीसे कुछ बाधा न थी। जैसी कि दूसरी विलायतोंमें है कि शीया मुसलमानोंको ईरान और सुन्नियोंको रूम, हिन्दुस्थान और तूरानके सिवा जगह नहीं है। और यहां सुन्नी शीया एक मसजिदमें फरंगी और यहूदी एक गिरजामें नमाज पढ़ते थे।"

"सुलहकुल अर्थात् सबके साथ निबाहने वाले पंथ पर चलते थे हरेक दीन और धर्म्मके श्रेष्ठ पुरुषोंसे मिलते थे और जैसी जिस कीं समझ होती थी उसीके अनुसार उसका आदर सत्कार करते थे। उनकी रातें जागरनमें कटती थीं दिन और रातमें बहुतही कम सोते थे रात दिनका सोना एक पहरसे अधिक न था। रातोंके जागनेको गई हुई आयुका एक प्रतिकार समझते थे।"

"वीरताका यह हाल था कि मस्त और छुटे हुए हाथियों पर चढ़ जाते थे। खूनी हाथी जो अपनी हथनियोंको भी पास न आने देते थे यहांतक कि महावतों और हथनियोंको मारकर निकल खड़े होते थे, उन पर राहकी किसी दीवार या पेड़के ऊपरसे चढ़ जाते थे और उन्हें अपने वशमें कर लेते थे। यह बात कइबार देखी गई है।"

"१४ वर्षकी अवस्थामें राज्यसिंहासन पर विराजमान हुए थे हेमू "काफिर" जिसने पठानोंको गद्दी पर बिठाया था हुमायूँ बादशाहका देहान्त होने पर एक अपूर्व सेना और बहुतसे ऐसे हाथी सजाकर जैसे उस समय हिन्दुस्थानके किसी हाकिमके पास न थे दिल्ली पर चढ़ आया। आप उस समय पञ्जाबके पहाड़ोंकी तलहटीमें पठानोंको घेरे हुए थे। वहां यह समाचार पहुंचा तो बैरमखांने जो आपका शिक्षक था साथके सब सेनानियोंको बुलाकर आपको परगने कलानूर जिले लाहौरमें तख्त पर बिठाया। तरदीखां आदि मुगल जो दिल्लीमें थे हेमूसे लड़े और हारकर आपके पास

आये। बैरमखांने तरदीबेगको भाग आनेके अपराधमें मारडाला।

"हेमूं इस जीतसे घमण्डमें आकर कालानूरकी ओर बढ़ा। पानीपतके मैदानमें २ मोहर्रम गुरुवार सन् ९६४(१) को तम और तेजके पुञ्ज परस्पर भिड़े। हेमूकी सेनामें ३० हजार जङ्गी सवार थे और पिताजीके पास चार पांच हजारसे अधिक न थे। हेमू हवाई नामक हाथी पर चढ़ा हुआ था कि अकस्मात उसकी आंख मे तीर लगकर सिरमेंसे निकल गया। यह दशा देखकर उसकी फौज भाग निकली। दैवयोगसे शाहकुलीखां महरम हाथीके पास पहुंचकर महावत पर तीर मारता था। वह चिल्ला उठा मुझे मत मारो हेमू इसी हाथी पर है। फिर तो लोग दौड़ पड़े और उसको उसी दशामें पिताजीके पास लाये। बैरमखांने प्रार्थना की कि हजरत इस काफिरको मारकर गिजा (धर्म्मयुद्ध) के पुण्यको प्राप्त हों और आज्ञापत्रोंमें गाजी लिखे जावें।"

"आपने फरमाया कि मैं तो इसको पहलेही टुकड़े टुकड़े कर चुका। काबुलमें जबकि मैं ख्वाजा अबदुस्समद शीरींकलमसे चित्रकारीका अभ्यास करता था तो एक दिन मेरी लेखनीसे एक ऐसी तसवीर निकली कि जिसके अंग प्रत्यंग भिन्नभिन्न थे। एक पास रहने वालेने पूछा कि यह किसकी मूर्त्ति है तो मेरे मुंहसे निकला कि हेमूकी है।"

"निदान अपने हाथको उसके लोहूसे न भरकर एक सेवकको उसके मारनेका हुक्म देदिया। उसके सिपाहियोंकी ५००० लाशें तो गिनी गई थीं उनके सिवा और भी इधर उधर पड़ी थीं।"

"उनके दूसरे बड़े कामोंमेंसे गुजरातकी फतह और दौड़ है। जब इब्राहीमहुसैन मिरजा, मुहम्मदहुसैन मिरजा और शाह-मिरजा, बागी होकर गुजरातको गये और वहांके सब अमीरों (२) और दुराचारियोंसे मिलकर अहमदाबादके किलेको घेरलिया जिस

(१) अगहन सुदी ३ सम्वत् १६१३।

(२) यह अमीर गुजरातके अगले बादशाह मुजफ्फरके नौकर थे।

में मिरजा अजीजकोका और बादशाही लशकर था। आप मिरजा अजीज कोकाकी मा जीजी अंगाके घबरा जानेसे तुरन्त निजसेना सहित फतहपुरसे गुजरातको रवाने होगये और दो महीने के रस्तेको कभी घोड़े कभी ऊंट और कभी बुड़बहलकी सवारीपर ९ दिनमें काटकर ५ जमादिउलअव्वलको दुश्मनके पास जापहुंचे। शुभचिन्तकोंसे सलाह पूछने लगे तो कुछ लोगोंने रात्रिमें छापे मारनेकी सलाह दी। आपने फरमाया कि छापा मारना कायर और धूर्तोंका काम है। उसी चण नरसिंघे बजाने और सिंहनाद करनेका हुक्म देकर साबरमती पर आये और लोगोंको प्रबन्धपूर्वक नदीसे उतरनेकी आज्ञा की।"

"मुहम्मदहुसैनमिरजा कोलाहल सुनकर घबराया और स्वयं भेद लेनेको आया। इधरसे सुबहानकुली तुर्क भी इसी तलाशमें नदी पर आया था मिरजाने उसको देखकर पूछा कि यह किसकी फौज है। तुर्कने कहा कि जलालुद्दीन अकबर बादशाह हैं और उन्हीं की फौज है। मुहम्मदहुसैनमिरजाने कहा कि मेरे जासूस १४ दिन पहले बादशाहको फतहपुरमें देख आये हैं तू झूठ कहता है। सुबहानकुलीने कहा आज नवां दिन है कि हजरत फतहपुरसे धावा करके आये हैं। मिरजा बोला कि भला हाथी कैसे पहुँचे होंगे ? सुबहानकुलीने जवाब दिया कि हाथियोंकी क्या आवश्यकता थी हाथियोंसे बढ़चढ़ कर पहाड़ोंको तोड़ देने वाले ऐसे ऐसे शूरवीर आये हैं कि तुमको सरकशी करनेकी हकीकत मालूम हो जायेगी।"

"मिरजा दूर जाकर अपनी सेनाको सजाने लगा और बादशाह शत्रुओंके हथियार बांधनेकी खबर आने तक वहीं ठहरे रहे। जब किरावलोंने यह खबर पहुंचाई कि अब गनीम हथियार पहिन रहा है तो आप आगे बढ़े और खान आजमके बुलानेको आदमी भेजे। परन्तु उसने आनेमें विचार करके कहलाया कि शत्रु प्रबल है जबतक गुजरातका लशकर किलेसे बाहर न आजावे नदीके पारही रहना चाहिये। आपने फरमाया कि हमको हमेशा और

खास करके इस सफ़रमें ईश्वरकी सहायताका भरोसा है जाहरी बातों पर नजर होती तो इस प्रकार छड़ी सवारीसे धावा करके नहीं आते। अब शत्रु लड़नेको तय्यार है तो हमको देर करना उचित नहीं। यह कहकर ईश्वर पर भरोसा करके अपने कई सेवकों सहित नदीमें घोड़ा डाला। नदी छिलछिली न थी तोभी कुशलपूर्वक पार होगये। फिर अपना दो बुलगा(१) मांगा तो कोरदार(२)ने घबराहटमें लाते हुए आगे डाल दिया। शुभचिन्तकोंने इसको अपशकुन समझा। आपने कहा कि हमारा शकुन तो बहुत अच्छा हुआ है क्योंकि हमारे आगेका रस्ता खुल गया। इतनेमें मिरजा सेना सजाकर अपने स्वामीसे सामना करनेको आया।"

"खानआजमको इस बातका शान गुमान भी न था कि हजरत इतनी फ़ुरतीसे यहां पधार जावेंगे। जब कोई उसे हजरतके आने का समाचार कहता था वह स्वीकार न करता था। निदान जब उसको अनुमानों और प्रमाणोंसे आपके पधारनेका निश्चय होगया तो गुजरातके लशकरको सजाकर किलेसे बाहर निकलनेको तय्यार हुआ। आसिफखांने भी उसको यह खबर भेजी परन्तु उसके किलेसे निकलनेके पहलेही शत्रुका दल वृक्षोंमेंसे निकल आया और आप उस पर चले। मुहम्मद कुलीखां तोकताई और तरदीखां दीवाना कुछ शूरवीरोंसे आगे बढ़ तो गये थे पर थोड़ी दूर जाकर पीछे फिरे। तब आपने राजा भगवानदाससे फ़रमाया कि दुश्मन बहुत हैं और हमारे आदमी थोड़े हैं; हम सबको एक दिल होकर हल्ला करना चाहिये क्योंकि बंधी हुई मुट्ठी खुले हुए पंजेसे जियादा कारगर होती है। यह कहकर तलवार खेंची और साथियों सहित अल्लाहोअकबर और या मुईन कहते हुए दौड़े। दहनी

(१) दोबलगेका अर्थ कोषोंमें नहीं मिला यह कोई ऐसे हथियार अथवा बकतर वगैरहका नाम है जो गिरनेसे खुल जाता हो।

(२) हथियार रखनेवाला।

बाईं और बीचकी सेनाके शूरवीर भी पहुंचकर शत्रुसे लड़ने लगे। शत्रुकी सेनासे कौकबाई जो एक प्रकारका अग्न्यास्त्र होता है छूटा और थूहरोंके दृक्षोंमें पड़कर चक्कर खाने लगा। उसकी कड़कसे गनीमका हाथी भड़ककर अपने लश्करमें जापड़ा जिससे वहां बड़ी गड़बड़ मची और बीचकी फौजने बढ़कर मुहम्मदहुसैन मिरजा और उसके सिपाहियोंको हटा दिया। शूरवीरोंने खूब युद्ध किया। मानसिंह दरबारीने हजरतके देखते देखते अपने शत्रुको मारलिया। राघोदास कछवाहा काम आया मुहम्मद वफा जखमी होकर घोड़े से गिरा। ईश्वरकी कृपा और भाग्यबलसे शत्रु हार गये। आप इस विजयपर ईश्वरका धन्यवाद कररहे थे कि एक कलावन्तने सैफ खां कोकलताशके मारे जानेकी खबर दी। निर्णय करनेसे विदित हुआ कि जब मिरजा गोल (बीच) की फौज पर दौड़ा था तो सैफ खां दैवसंयोगसे उसके सामने आगया और वीरतापूर्वक लड़कर काम आया। मिरजा भी गोलवालोंके हाथों घायल हुआ।"

"सैफखां जैनखां कोकाका बड़ा भाई था और विचित्र वार्त्ता यह है कि लड़ाईसे एक दिन पहले जब बादशाह भोजन कररहे थे तो हजारेसे जो शानेकी हड्डी देख जानता था पूछने लगे कहो किसकी जीत होगी? उसने कहा कि जीत तो आपकी होगी परन्तु एक अमीर इस लश्करका शहीद होगा। सैफखांने निवेदन किया कि यह सौभाग्य मुझे प्राप्त होना चाहिये।

"जब मिरजा मुहम्मद हुसैन भागा तो घोड़ेका पांव थूहरमें फंस जानेसे गिर पड़ा। उसी समय गदाअली इक्का वहां पहुंचा और उसे अपने आगे घोड़े पर बैठाकर हजूरमें लाया। उस समय दो तीन आदमी और भी उसके पकड़नेमें शामिल होनेकी बात कहने लगे। आपने मिरजासे पूछा तुझे किसने पकड़ा? उसने कहा "बादशाहके नमकने।" उसके हाथ पीछेको बंधे थे आपने आगे की ओर बांधनेको फरमाया। फिर उसने पानी मांगा तो फरहत खां गुलामने उसके सिर पर दुहत्थड़ मारा। आपने उससे नाराज

होकर अपने पीनेका पानी मंगाया और मिरजाको पिलाया ।"

"मिरजा मुहम्मदहुसैनके पकड़े जाने पर आप धीरे धीरे अहमदाबादको चले । मिरजाको राय रायसिंह राठोड़के जो जसद राजपूतोंमेंसे था हवाले किया कि हाथी पर डालकर साथ लावे ।"

"इतनेमें अखतियारुलमुल्क जो गुजरातियोंके बड़े सरदारोंमेंसे था ५००० आदमियों सहित आता हुआ दिखाई दिया । बादशाही लोग उसको देखकर घबराये । पर हजरतने अपनी स्वाभाविक वीरतासे बाजे बजानेका हुक्म दिया । शुजाअतखां राजा भगवानदास और कई बन्दे आगे जाकर लड़ने लगे और राय रायसिंहके नौकरोंने इस विचारसे कि कहीं मिरजा मुहम्मदहुसैनको शत्रुकी सेना छुड़ा न लेजावे राजाके अनुमोदनसे उसका सिर काट दिया । अखतियारुलमुल्ककी फौज भी बिखर गई । घोड़ेने उसे थूहरोंमें गिरा दिया और सुहराबबेग इक्का उसका सिर काटलाया । यह इतनी बड़ी जीत उन थोड़ेसे आदमियों द्वारा ईश्वरकी कृपासे हुई थी ।"

कारखानोंका दीवान ।

"जिस दिन बादशाहने एतमादुद्दौलाको दीवान किया था कारखानोंकी दीवानीका काम मुअज्जुलमुल्कको दिया था जो अकबर बादशाहके समयमें करकराकखानेका मुशरिफ था ।"

"इसी तरह बंगाले चित्तोड़ रणथम्भोर खानदेश और आसेर आदि भारतके प्रसिद्ध किलोंका जीतना है ।"

"चित्तोड़के घेरेमें उन्होंने जयमलको जो किलेवालोंका सरदार था अपनी बन्दूकसे मारा था । यह बदूक जिसका नाम संग्राम है, जगतकी अनोखी बंदूकोंमेंसे है । इससे तीन चार हजार पशु पक्षी उन्होंने मारे होंगे ।"

"बन्दूकका निशाना वह बहुत अच्छा लगाते थे । इस काममें मैं भी उनका योग्य शिष्य होसकता हूं । बन्दूकसे शिकार करने की मुझे बड़ी रुचि है । एक दिन १८ हरन बन्दूकसे मारे ।"

"जिन नियमों पर पूज्य पिताजी चलते थे उनमेंसे एक मांस-त्याग भी था। सालमें तीन मास मांस खाते थे और नौ मास न खाते थे। पशुवधकी रुचि उनको कदापि न थी। उनके शुभ शासनकालमें बहुतसे दिन और महीने ऐसे नियत थे जिनमें पशुवध का सर्वथा निषेध था। अकबरनामेमें उनका वर्णन है।"

रोजा ईद।

यह पहली ईद(१) थी इस लिये जब बादशाह ईदगाहको गया तो बहुत भीड़ होगई थी। आपने दौलतखाने (राजभवन) में लौट कर खैरातके वास्ते कई लाख दाम दोस्तमुहम्मदको, एक लाख(२) मीर जमालहुसैन अंजू मीरान सदरजहां, मीर मुहम्मद रजा सबजवारी को और पांचहजार रुपये शेख मुहम्मदहुसैनजामीके चेलेको दिये। आज्ञाकी कि हरेक मनसबदार नित्य एक मुन्य ५० हजार दाम(३) भिक्षुवोंको दिया करे। हाजी कोकाको हुक्म दिया कि हररोज हकदार स्त्रियोंको जमीन और नकद रुपये दिलानेके लिये महलमें भेजा करे।

फिर कई मनुष्योंको हाथी घोड़े दिये। नकीब और तवेलेके कर्म्मचारी जो ऐसे लोगोंसे कुछ रुपये जलवानेके नामसे लिया करते थे बादशाहने उनको वह रकम सरकारसे देनेकी आज्ञा देकर उनसे लोगोंका पीछा छुड़ाया।

हाथी नूरगंज।

शालिवाहन बुरहानपुरसे सुलतान दानियालके हाथी घोड़े ले कर आया। उनमेंसे मस्तअलस्त नाम हाथीको बादशाहने पसन्द करके नूरगञ्ज नाम रखा। उसमें अनोखापन यह था कि उसके कानोंके पास दोनो ओर दो तरबूजोंके बराबर मांस उठा हुआ था

(१) फागुन सुदी २ संवत् १६६२

(२) अढ़ाई हजार रुपये।

(३) सवा हजार रुपये।

और मस्तीके समय उनमेंसे मद चूता था। उसका माथा भी उभरा हुआ था।

काबुलकी जकात।

बादशाहने और सब सूबोंकी जकात जो करोड़ोंकी थी पहले ही छोड़ दी थी अब काबुलकी जकात भी जिसकी जमा एक करोड़ २३ लाख दामकी थी माफ कर दी और कन्धारकी भी माफ की।

काबुल और कन्धारकी बड़ी आमदनी यही थी इस माफीसे ईरान और तूरानके लोगोंको बहुत लाभ हुआ।

रुकैया बेगम।

शाहकुलीखां महरमका बाग आगरेमें था परन्तु उसका कोई वारिस नहीं रहा था। इसलिये बादशाहने अपनी सौतेली माता मिरजा हिन्दालकी बेटी रुकैया बेगमको देदिया। अकबर बादशाहने सुलतान खुर्रमको इसे सौंपा था और वह पेटके बेटेसे अधिक खुर्रम पर स्नेह रखती थीं।

पहला नौरोज।

११ जीकाद सन १०१४ हिजरी (चैत सुदी १२) मंगलवारको रातको सूर्य्यनारायण मेखमें आये। दूसरे रोज नौरोज हुआ। उस दिन मेष राशिके १८ वें अंग तक खूब राग रंग और नाच कूद हुआ। क्योंकि यह पहला नौरोज था। बादशाहने आज्ञा दे दी थी कि इन दिनोंमें हर आदमी जो नशा चाहे करे कोई न रोके।

बादशाह लिखता है—इन १७।१८ दिनोंमें हर रोज एक बड़ा अमीर मेरे पिताको अपनी मजलिसमें बुलाकर रत्न और रत्नोंके जड़े हुए गहने तथा हथियार और हाथी घोड़े भेट किया करता था जिनमेंसे वह कुछ तो पसन्द करके लेलेते थे और शेष उसीको बख्श देते थे।

परन्तु मैंने इस वर्ष सिपाही और प्रजाके हितसे यह भेटें नहीं ली। हां कई पास रहनेवालोंकी भेंट ग्रहण की।

इन दिनोंमें कई अमीरोंके मनसब बढ़े जिनमें राजा बासूका मनसब अढ़ाई हजारीसे साढ़े तीन हजारी होगया। यह पञ्जाबका पहाड़ी राजा था और लड़कपनसे निरन्तर बादशाहका भक्त रहा था।

कन्धारके हाकिम शाहबेगखांका मनसब बढ़कर पांच हजारी होगया।

रायसिंह पांच हजारी हुआ।

राना सगरको १२०००) खर्चके लिये मिले।

गुजरात।

मुजफ्फर गुजरातीकी सन्तानमेंसे एक मनुष्य अपनेको अधिकारी समझकर बादशाहके राज्यसिंहासन पर बैठनेके समयसे अहमदाबादके आसपास लूट खसोट करने लगा था। पेम बहादुर उजबक और राय अलीभट्टी जो उस सूबेके वीर पुरुषोंमेंसे थे उससे लड़कर मारे गये थे। इसलिये बादशाहने राजा विक्रमादित्यको कई सरदार और छः सात सौ सजे हुए सवार देकर गुजरातकी सेनाकी सहायताके लिये भेजा और कहा कि जब उस प्रांतमें शांति होजावे तो राजा गुजरातका सूबेदार रहे और कुलीचखां हजूरमें आजावे। जब यह सेना वहां पहुंची तो उपद्रवी लोग जङ्गलोंमें भाग गये और वह देश निर्विघ्न होगया।

रानाकी हार।

शाहजादे परवेजकी अर्जी पहुंची कि राना थाने मांडलको जो अजमेरसे ३० कोस है छोड़कर भाग गया। बादशाही फौज उसके पीछे गई है।

खुसरोका भागना।

शाहजादा खुसरो जिसे अकबरकी बीमारीके समय कुछ ऐसे अमीरोंने बहका दिया था जिन्होंने कितनेही बार कितनेहो अपराध किये थे और दण्डसे बचना चाहते थे ८वीं जिलहज्ज द्वितीय चैत्र सुदी ९ रविवारको रातको अपने दादाकी समाधिके दर्शनका

मिष करके ३५० सवारोंके साथ आगरेसे निकल गया। अमीरुल-उमराने जब यह समाचार सुना तो जनानी ड्योढ़ी पर जाकर नाजिरसे अर्ज कराई कि हजरत बाहर पधारें कुछ जरूरी अर्ज करना है।

बादशाहको इस बातका खयाल भी न था। वह समझा कि गुजरात या दक्षिणसे कोई खबर आई है। बाहर आने पर यह वृत्तान्त सुना तो कहा क्या करना चाहिये? मैं आप जाऊं या खुर्रमको भेजूं?

अमीरुल उमराने प्रार्थना की कि यदि आज्ञा हो तो मैं जाऊं। बादशाहने कहा जाओ। तब उसने फिर पूछा कि जो समझानेसे न आवे और सामना करे तो क्या किया जावे? बादशाहने कहा जो किसी तरह भी सीधे रस्ते पर न आवे तो फिर जो तुझसे हो सके उसमें कमी मत करना क्योंकि राजासे किसीका सम्बन्ध नहीं होता है।

अमीरुलउमराको बिदा करनेके पीछे बादशाहने सोचा कि इसके हमारे पास अधिक रहनेसे खुसरो नाराज है ऐसा न हो कि इसको नष्ट करदे। इसलिये मुअज्जुलमुल्कको खुसरोके लौटा लाने को भेजा। शेख फरीदबखशीको भी उन सब ओहदेदारों और मन-सबदारोंके साथ जो पहरे चौकी पर थे इसी काम पर नियत किया और एहतिमामखां कोटवालको पता लगाने जानेका हुक्म दिया।

फिर समाचार लगे कि खुसरो पञ्जाबकी ओर जारहा है। उसका मामा मानसिंह बंगालेमें था इसलिये बहुधा अमीरोंका यह विचार हुआ कि वह रास्ता काटकर उधर चला जावेगा। इस पर हर तरफ आदमी भेजे गये। उसका पंजाबको जानाही निश्चय हुआ।

दिन निकलतेही बादशाह भी खुसरोके पीछे चला। २ कोस पर अकबर बादशाहका "रौजा"(१) आया। वहां पहुंचकर जहांगीर

(१) समाधिस्थान।

उनकी पवित्र आत्मासे सहायता मांगने लगा। इतनेहीमें मिरजा शाहरुखका बेटा मिरजा हसन जो खुसरोके पास जानेका उद्योग कर रहा था पकड़ा आया और पूछ ताछ करने पर असल बातसे इनकार न कर सका। बादशाह इसको अपने पिताके अनुग्रहका पहिला शुभशकुन समझकर आगे बढ़ा। जब दोपहर हुआ तो एक वृक्षकी छायामें ठहरकर खानआजमसे बोला कि सब तरहसे शान्तचित्त होने पर भी जब हमारी यह दशा हुई है कि मामूली अफीम भी जो पहरदिन चढ़े खानी चाहिये थी अबतक नहीं खाई है न किसीने याद दिलाई है तो उस कपूतका क्या हाल होगा? मुझे इसी बातका दुःख है कि बेटा बिना कारणही बैरी होगया। जो उसके पकड़नेकी दौड़धूप न करूं तो लुच्चे लोग बल पकड़ जावेंगे या वह भागकर उजबक(१) तथा कजलबाश(२)के पास चला जावेगा जिसमें इस राज्यकी हलकी होगी।

निदान बादशाह थोड़ासा विश्राम लेकर फिर चला और मथुरा होकर जो आगरेसे बीस कोस है, उसी परगनेके एक गांवमें ठहरा। वह गांव मथुरासे दो तीन कोस था। वहां एक तालाब भी था।

खुसरो जब मथुरामें पहुंचा तो हुसैन बेग बदखशी जो काबुल से दरबारमें आता था दो तीन सौ सवारोंसे उसको मिला और उस लुच्चाईसे जो बदखशांके लोगोंमें स्वाभाविक होती है अगुआ और सेनापति बनकर साथ होगया। वह और उसके आदमी रास्तेमें मुसाफिरों व्यापारियों और प्रजाको लूटते जाते थे। खुसरो देखता था कि किस प्रकार उसके बाप दादोंके राज्यमें अन्याय होरहा है और कुछ नहीं कह सकता था।

बादशाह लिखता है कि यदि उसका भाग्य बलवान होता तो लज्जित होकर बेधड़क मेरे पास चला आता और ईश्वर साक्षी है

(१) तूरानी लोग।
(२) ईरानी लोग।

कि मैं सर्वथा उसके अपराधोंको क्षमा करके उसपर इतनी दया करता कि उसके मनमें बालभर भी खटका न रहता। पर पूज्यपिता के स्वर्गवास होने पर उसने कई गुण्डोंके बहकानेसे अनेक कुविचार किये थे और जानता था कि उनकी सूचना मुझको होचुकी है इस लिये मेरी दया मयाका उसको विश्वास न था। उसकी मा भी मेरी कुमारावस्थाके दिनोंमें उसके कुलक्षणों तथा अपने भाई माधवसिंहके बुरे बरतावसे तंग आकर विष खाकर मर गई थी। मैं उसके शील और गुणोंको क्या लिखूं। वह पूरी बुद्धिमान थी उसको मुझसे इतनी प्रीति थी कि हजार बेटों और भाइयोंको मेरे एक बालके ऊपर वारती थी। उसने अनेकबार खुसरोको उपदेश लिखे और मुझसे भावभक्ति रेखनेकी सम्मति दी। परन्तु जब देखा कि कुछ लाभ न हुआ और आगे न जाने क्या हो तो गैरतसे जो राजपूतोंमें प्रकृतिगत होती है, मरनेकी ठानली। कभी कभी उस को बावलेपनकी सिड़ भी होजाती थी और यह पैतृक रोग था। उसके बाप भाई भी एक एक बार पागल होकर चिकित्सासे अच्छे हुए थे। २६ जिलहज्ज सन् १०१३ जेठ बदी १३ सम्वत १६६२ को जब मैं शिकारको गया हुआ था वह उन्मादमें बहुतसी अफीम खाकर मर गई। मानो वह अपने अभागे बेटेकी भविष्य व्यवस्था पहलेही जान गई थी। मेरा यह पहला विवाह तरुणावस्थामें हुआ था। जब उसके खुसरो उत्पन्न होचुका तो मैंने उसे बेगम की पदवी दी थी। वह मेरे साथ भाई और बेटेकी कुपात्रता न देख सकती थी इस लिये प्राण देकर उस दुःखसे छूट गई।

मुझे उससे बड़ा प्रेम था। इस कारण उसके मरने पर मुझपर ऐसे दिन बीते कि जीनेका कुछ मजा न रहा था। ४ दिन तक ३२ प्रहर मैंने कुछ खाया पिया नहीं। जब यह हाल मेरे पिता को विदित हुआ तो उन्होंने परम प्रेमसे मुझको शान्तिपत्र भेजा सिरोपाव और पगड़ी जो सिरसे उतारी थी उसी तरहसे बन्धी हुई

मेरे वास्ते भेजी। उनकी इस मेहरबानीसे मेरा शोक सन्ताप कुछ कम हुआ। चित्तने धैर्य्य पकड़ा। तात्पर्य्य इस लेखसे यह है कि जो लड़का अपनी कुशीलतासे माताकी मृत्युका कारण हुआ हो और कोरे भ्रमसेही बापके पाससे भागा हो तो दैवके कोपसे उसे वही दण्ड मिलना चाहिये था जो अन्तमें उसको मिला। अर्थात् पकड़ा जाकर जन्मकैदी हुआ।

१० (द्वितीय चैत्र सुदी ११ सं० १६६३) मंगलवारको बादशाह होडलमें उतरा। दोस्त मुहम्मदको आगरेके किले महलों और कोषोंकी रखवालीके वास्ते भेजकर फरमाया कि एतमादुद्दौला वजीरको तो पंजाबमें भेज दे और मिरजा हकीमके बेटोंको कैदमें रखें। जब सगे बेटोंसे यह हरकत हुई तो भतीजों और चचाके बेटोंका क्या भरोसा रहा।

बुधवारको पलवलमें बृहस्पतिवारको फरीदाबादमें और १३ शुक्रवारको दिल्लीमें डेरे हुए। बादशाहने हुमायूं बादशाह और निजामुद्दीन औलियाकी जियारत करके बहुतसे रुपये कङ्गालोंको बांटे।

१४ शनि (द्वि० चैत सुदी १५) को नरेलेकी सरायमें डेरा हुआ। खुसरो उस सरायको जला गया था। यहांके लोग खुसरो की तरफ झुके हुए थे। इस लिये बादशाहने उनके मुखियोंके द्वारा उनको दोहजार रुपये दिलाकर अपना कृपाभाजन बनाया। कुछ रुपयेशेख फजलुल्लह और राजा धीरधरको देकर फरमाया कि मार्गमें फकीरों और ब्राह्मणोंको दिया करें और तीस हजार रुपये अजमेर में राणा सगरको दिलाये।

१६ (वैशाख बदी २) सोमवारको पानीपतमें डेरे हुए। बादशाह लिखता है—यह स्थान मेरे बापदादोंके लिये बहुत शुभकारी हुआ। यहां उनकी खूब जय हुई है। एक इब्राहीम लोदी पर बाबर बादशाहकी, दूसरी हेमू पर मेरे पिताकी। यहां खुसरोके पहुंचनेसे कुछ पहले दिलावर खादिम पहुंचा था। और यह हाल

सुनकर उससे पहले लाहोरमें पहुंच जानेके लिये जल्दीसे कूच कर गया था परन्तु अबदुर्रहीम जो उसी समय लाहोरसे आगया था बहादुरखांके समझाने पर भी खुसरोंसे जा मिला और मलिक अनवरराय की पदवी पाकर लड़ाईके कामोंका अधिकारी हुआ। यदि कमालखां दिल्लीमें और दिलावरखां पानीपतमें खुसरोका रास्ता रोक लेता तो उसके साथी बिखर जाते और वह भी पकड़ लिया जाता।

१७ (वैशाख बदी ३) को बादशाहने करनालमें पहुंचकर कपटी शैख निजाम थानेसरीको मक्के भिजवा दिया। उसने खुसरोको उसके मनचाहे बरदान देकर सन्तुष्ट किया था।

१८ (वैशाख बदी ५) को परगने शाहाबादमें डेरा हुआ। बादशाहने शैख अहमद लाहोरीको जो पुराना सेवक, खानाजाद और चेला भी था मीरअदल (न्यायाध्यक्ष) का पद दिया। चेले और भक्त लोग उसके द्वारा बादशाहकी सेवामें उपस्थित होते थे। जिसको हाथ और छाती देना चाहिये उसको निवेदन करके दिलाता(१) था। शिष्य होनेके समय चेलोंसे उपदेशके कई वाक्य कहे जाते थे अर्थात—

(१) अपने समयको किसी मतके वैरभावसे दूषित न करें।

(२) सब मतमतान्तरवालोंसे मेल रखें।

(३) किसी जीवको अपने हाथसे न मारें।

(४) तारोंको जो परमेश्वरके तेजको धारण करनेवाले हैं यथा योग्य मानते रहें।

(५) परमात्माको सब कामोंमें व्यापक समझें।

(६) किसी समय और स्थानमें मनको भगवतस्मरणसे शून्य न रखें।

---

(१) छाती और हाथ देना इलाही मतका कोई नियम था। यह मत अकबर बादशाहने चलाया था और जहांगीर भी उसे मानता था और चेले करता था।

जहांगीर लिखता है—"मेरे पिताने इन विचारोंमें निपुणता प्राप्त की थी और इन विचारोंसे वह कभी खाली न रहते थे।

२४ मंगल (वैशाख बदी ११) को ५ आदमी खुसरोके साथियों मेंसे पकड़े आये। उनमेंसे दोने खुसरोके पास नौकर होना स्वीकार किया था वह हाथीके पांवके नीचे कुचलवाये गये और तीनने इनकार किया था वह निर्णय होने तक हवालातमें रखे गये।

दिलावरखांने १२ फरवरदीन (२२ जीकाद चैत्र बदी ८) को लाहोर पहुंचकर किला सजाया था। फिर खुसरो भी पहुँचा और कहा कि एक दरवाजेके किवाड़ोंको जलाकर गढ़में प्रवेश करें। गढ़ जीते पीछे ७ दिन तक नगर लूटनेकी आज्ञा दूंगा उसके साथियोंने एक दरवाजेके किवाड़ जलाये परन्तु भीतरवालोंने आड़ी भीत उठा कर रास्ता रोक दिया।

घेरेके ८ दिन पीछे बादशाही लशकरकी अवाई सुनी तो खुसरोने छापा मारनेके विचारसे नगरको छोड़ दिया ६।७ दिनोंमें १०।१२ हजार सवार उसके पास इकट्ठे होगये थे।

२६(१) (वैशाख बदी १३) गुरुवारको रातको खुसरोके आनेकी खबर सुनकर बादशाह मेह बरसतेमें सवार हुआ। सवेरे सुलतानपुरमें पहुंचकर दोपहर तक वहां रहे। उस समय दोनों ओरकी सेनाओंमें संग्राम मचा। मुअज्जुलमुल्क एक रकाबी बिरयानी(२) को बादशाहके वास्ते लाया था। परन्तु लड़ाईके समाचार सुनतेही बादशाह रुचि होने पर भी केवल एक ग्रास उसमेंसे शुकनके तौर पर खाकर सवार होगये। उसने अपना चिलता(३) बहुत मांगा पर किसीने लाकर न दिया। बरछे और तलवारके सिवा कोई हथियार भी पास न था। सवार भी ५० से अधिक चलनेके समय न

(१) मूलमें भूलसे १६ लिखी है।

(२) एक प्रकारका भोजन।

(३) झिलम कवच।

थे। क्योंकि कोई नहीं जानता था कि आज लड़ाई होगी। बादशाह ईश्वरके भरोसे उसी सामान और सेनासे चल पड़े। गोविन्दवालके पुल पर पहुंचे तबतक चार पांचसौ सवार अच्छे बुरे आ मिले थे। पर पुलसे उतरतेही शमसी तोशकची फतहकी बधाई लाया और उसने खुशखबरखांकी पदवी प्राप्त की। इस पर भी मीर जमालुद्दीनहुसैनने जो खुसरोको समझानेके लिये भेजा गया था खुसरोके पास बहुतसी फौज होनेका वर्णन ऐसी धूमधामसे किया कि लोग डरने लगे। जीत होनेके समाचार लगातार चले आते थे तो भी वह सीधा सादा सैयद यही कहे जाता था कि जिस धड़ल्ले का लशकर मैं देख आया हूं शेख फरीदको थोड़ीसी सेनासे वह क्योंकर हारा होगा ?

निदान जब खुसरोका सिंहासन उसके दो नाजिरों सहित लाया गया तो सैयद घोड़ेसे उतरकर बादशाहके पैरोंमें गिर पड़ा और कहने लगा कि भाग्य इससे बढ़कर नहीं होसकता !

लड़ाईका वृत्तान्त ।

बारहके सैयद बड़े वीर थे और युद्धमें सबसे बढ़ चढ़कर काम करते थे। शेख फरीद बखशीने उन्हींको हिरावल बनाकर सेनाके आगे भेजा था। उनके सरदार सैयद महमूदके बेटे सैफखांने सतरह घाव खाये थे। सैयद जलाल माथे पर तीर खाकर कुछ दिन पीछे मरा था। सैयद कमालने वीर साथियों सहित बड़ी बहादुरी दिखाई। जब दहनी अनीके सिपाही बादशाह सलामत बादशाह सलामत कहते शत्रुओं पर दौड़े तो उनके छक्के छूटगये। भागतेही बनी ४०० के लगभग मारे गये और घायल हुए खुसरोके रत्नोंका सन्दूक जिसे वह सदा अपने पास रखता था लूटमें उसके हाथ आया।

बादशाह लिखता है—कौन जानता था कि यह छोटी उमरका बालक मेरा भय और लज्जा छोड़कर ऐसा कुकर्म्म करेगा। औछे आदमी इलाहाबादमें मुझे भी बापसे लड़नेके लिये उभारते थे।

पर यह बात कभी मुझको स्वीकार न हुई। मैं जानता था कि वह राज्य जिसका आधार पिताकी शत्रुता पर हो स्थिर न होगा। अतएव मैं उन कुबुद्धि लोगोंके कहनेसे भ्रष्ट न हुआ। अपनी समझकी प्रेरणासे पिताकी सेवामें पहुंचा जो गुरु तीर्थ और ईश्वर थे। फिर जो कुछ मुझे मिला वह उसी इच्छाका फल है।

खुसरोका पीछा।

जिस रात खुसरो भागा था बादशाहने उसी रात पञ्जाबके एक बड़े जमींदार राजा बासूको हुक्म दिया कि अपने देशमें जाकर उसे जहां पावे पकड़नेकी चेष्टा करे।

इनायतखां और मिरजाअली अकबरशाही बहुतसी सेनाके साथ खुसरोके पीछे भेजे गये। बादशाहने यह प्रतिज्ञा की कि जो खुसरो काबुलको जावे तो जबतक पकड़ा न जावे लौटके न आवें। यदि काबुलमें न ठहरे और बदखशांको चला जावे तो महाबतखांको काबुलमें छोड़ आवें। बादशाहको भय था कि बदखशां जाकर वह उजबकोंसे मिल जावेगा तो अपने राज्यकी बात हलकी होगी।

२८ (बैशाख बदी ३०) शनिवारको जैपालके पड़ाव पर जो लाहोरसे ७ कोस है बादशाहके तम्बू लगे। खुसरो जब चिनाव नदीके तट पर पहुंचा तो पठानों और हिन्दुस्थानियोंने उसको हिन्दुस्थानकी तरफ लौटनेकी सम्मति दी और हुसैनबेग बदखशीने काबुल जाने पर पक्का किया। पीछे पठान और हिन्दुस्थानी तो उसको छोड़ गये और वह रात्रिमें लोधरे घाटसे चिनाव नदीके पार होने लगा। मगर चौधरीके जमाई केलणने खबर पाकर खेवटियोंसे कहा जहांगीर बादशाहका हुक्म नहीं है कि रातको बिना जाने पहिचाने कोई नदीसे उतर सके। यह गड़बड़ सुनकर खेवटिये तो भाग गये और इधर उधरके आदमी आधमके। हुसैनबेगने पहिले तो रुपयेका लालच दिया फिर तीर मारना आरम्भ किया केलण भी इधरसे तीर चलाने लगा। नाव ४ कोस तक बिना खेवटियोंके चलकर रेतमें अड़ गई आगे नहीं चली। बादशाहका

हुक्म जगह जगह खुसरोके रोकने और पकड़नेका पहुंच चुका था इसलिये प्रातःकाल होतेही पश्चिमी किनारेको कासिमतगीन और खिजरखां आदिने तथा पूर्वतटको जमीन्दारोंने रोक लिया।

२६ (बैशाख सुदी १) रविवारको दिन निकलतेही लोग हाथियों और नावों पर सवार होकर नदीमें गये और खुसरोको पकड़ लाये।

३० (बैशाख सुदी २) सोमवारको बादशाहने काबुल पहुंचकर मिरजा कामरांके बागमें डेरा किया और खुसरोके पकड़े जानेके समाचार सुनकर अमीरुलउमराको उसके लानेके लिये गुजरातको भेजा।

बादशाह लिखता है—मैं बहुधा अपनीही समझ बूझसे काम करता हूं दूसरेकी सलाहसे अपनी सलाहकोही ठीक समझता हूं। पहिले तो मैं अपने सब शुभचिन्तकोंकी सलाहके विरुद्ध अपनी सलाहसे जिससे इस लोक और परलोकमें मेरी भलाई हुई, पिताकी सेवामें चला गया। फल यह हुआ कि मैं बादशाह होगया। दूसरे खुसरोका पीछा करनेमें मुहूर्त्त आदि किसी बातके वास्ते न रुका तो उसको पकड़ लिया। अजब बात यह है कि मैंने कूच करनेके पीछे हकीमअलीसे जो ज्योतिषके गणितमें निपुण है पूछा कि मेरे प्रस्थान करनेकी घड़ी कैसी थी तो उसने कहा कि इस मनोरथकी सिद्धिके लिये वही मुहूर्त्त उत्तम था जिसमें श्रीमान चल खड़े हुए! उससे उत्तम मुहूर्त्त वर्षोंमें भी नहीं निकल सकता।

दूसरा वर्ष।

सन् १०१५।

वैशाख सुदी ३ मंगलवार संवत् १६६३ से वैशाख सुदी १ शुक्रवार संवत् १६६४ तक।

खुसरोका पकड़ा आना।

३ मुहर्रम १०१५ (वैशाख सुदी ५) गुरुवारको चङ्गेजखांकी रीति और तौरेके अनुसार बादशाहके बाएं ओरसे खुसरोको दरबार में लाये। उसके हाथ बंधे थे पांवमें बेड़ी पड़ी थी। हुसैनबेगको उसके दाएं और अबदुलरहीमको बाएं हाथ पर खड़ा किया। खुसरो इन दोनोंके बीचमें खड़ा हुआ कांपता और रोता था। हुसैनबेग इस अभिप्रायसे कि कुछ सहारा लगे अल जलूल बकने लगा। बादशाहने उसका मनोरथ जानकर उसका बोलना बन्द किया। पीछे खुसरोको कारागारमें भेजकर उन दोनों दुराचारियों के लिये यह हुक्म दिया कि उनको गाय और गधेका चमड़ा पहिना कर गधेके ऊपर उलटा बिठावें और शहरके आसपास फिरावें।

हुसैनबेग अन्तमें ४ पहर जीता रहकर सांस घुटजानेसे मर गया क्योंकि वह गायके चमड़ेमें था और यह जल्द सूखता है। अबदुर्रहीम(१) गधेके चमड़ेमें था जो देरसे सूखता है फिर ऊपरसे भी उसको गीला किया जाता था इसलिये वह जीता रहा।

इनाम और दण्ड।

बादशाह शुभघड़ी शुभमुहूर्त्त न होनेसे ९ मुहर्रम (वैशाख सुदी १०) तक शहरमें नहीं गया। शैख फरीदको मुरतिजाखांकी पदवी और कसबे भेरवा मिला जहां लड़ाई हुई थी। दण्ड देनेके वास्ते

---

(१) अबदुर्रहीमका नाम तुजुक जहांगीरीमें फिर भी कई जगह आया है। बादशाहने पहचानके वास्ते उसको अबदुर्रहीम गधा लिखा है।

मिरजा कामरांके बागसे शहर लाहोर तक दोनों ओर सूलियां खड़ी कीगईं। जो बदमाश इस फसादमें शरीक थे उनको सूलियों पर चढ़ाकर विचित्र विचित्र दण्ड दिये गये। जिन जमीन्दारोंने अच्छी सेवा की थी उनको चिनाब और भट नदीके बीचमें जमीनें देकर सरदारी और चौधराई बखशी गई। हुसैनबेगके साढ़े सात लाख रुपये तो मीरमुहम्मदबाकीके घरसे निकले और जो उसने अपने पास रखे थे अथवा दूसरी जगह सौंपे थे वह इसके सिवा थे। यह जब मिरजा शाहरुखके साथ बदखशांसे आया था तो केवल एक घोड़ा पास था और फिर बढ़ते बढ़ते इस पदको पहुँचा। इतना धनवान होकर ऐसे ऐसे साहसके काम करने लगा।

परवेजको बुलाना।

बादशाहने लड़ाईके बहुत दिन तक चलने और राजधानी आगरेके सूना रहनेके विचारसे शाहजादे परवेजको लिखा था कि कुछ सरदारोंको राणाको लड़ाई पर छोड़कर आसिफखां सहित आगरे चले आओ। पर विजय होनेके बाद लिखा कि मेरे पास चले आओ।

बादशाह लाहोरमें।

८ बुध (वैसाख सुदी १०) को बादशाहने लाहोरमें प्रवेश किया। शुभचिन्तकोंने गुजरात दक्षिण और बंगालेमें उपद्रव होनेसे राजधानीको लौट चलनेकी प्रार्थना की। पर बादशाहके मनमें यह बात नहीं आई क्योंकि हाकिम कन्धारकी अर्जियोंसे पाया गया था कि ईरानी सीमाके सरदार कन्धार लेनेके विचारमें हैं। साथही यह समाचार लगा कि हिरात और सीसतां आदिके हाकिमोंने आकर कन्धारके किलेको तीन तरफसे घेर लिया है और शाहबेगखां स्वस्थ चित्तसे उनका सामना कर रहा है।

कन्धारकी सहायता।

बादशाहने सिन्ध और ठट्ठेके अगले अधिपति मिरजा जानीके

बेटे मिरजा गाजीको बहुतसी फौजसे कन्धारको भेजा और अट्ठावन हजार रुपये खर्चके वास्ते दिये।

गुरु अर्जुनका वध।

बादशाहने गुरु अर्जुन(१)को इस अपराधमें कि जब खुसरो लाहोरको जाता हुआ गोविन्दवालमें उतरा था तो वह खुसरोसे मिला था और केसरका तिलक उसके माथे पर लगाया था, गोविन्द वाल(२)से बुलवाकर मरवा डाला और उसके घरबार और लड़के बाले मुरतिजाखांको प्रदान कर दिये।

अर्जुन गुरुके दो चेले राजू और अम्बा दौलतखां ख्वाजासराकी सहायतामें रहते थे और खुसरोके बलवेमें लूट मार करने लगे थे। बादशाहने राजूको तो मरवा डाला और अम्बाको जो धनाढ्य था एक लाख १५ हजार रुपये लेकर छोड़ दिया। यह रुपये धर्म-शालाओंको बांटे गये।

परवेजका आना।

२८ (आश्विन सुदी १) गुरुवारको दो पहर तीन घड़ी दिन चढ़े शाहजादा परवेज हाजिर हुआ। बादशाहने मेहरबानीसे उसको छातीसे लगा कर माथा चूमा। बादशाही चिन्ह आफताब गीर तथा दस हजारी मनसब उसे दिया। दीवानोंको उसे जागीर देनेका हुक्म दिया। मिरजा अलीबेगको काश्मीरकी हुकूमत दी।

राणाकी अधीनता।

परवेजके बुलाये जानेसे पहले राणाने आसिफखांसे कहलाया

---

(१) अर्जुन गुरु नानक साहबके पांचवें उत्तराधिकारी थे। जब गुरु नानक सं० १५८५ में धाम प्राप्त हुए थे उनके पीछे गुरु अङ्गद जी हुए। अंगदजीकी गद्दी पर अमरदासजी बैठे। अमरदासजीके उत्तराधिकारी गुरु रामदासजी हुए। उनके पीछे गुरु अर्जुनमल हुए। इनसे अकबर बादशाह मिला था।

(२) गोविन्दवाल रावी नदी पर बसता है इसको गोंदा खत्री ने सं० १६०३ में बसाया था।

पहले सोनेमें तुला तीन मन सोना चढ़ा। फिर ग्यारह बेर और पदार्थों में तुला। यह तुलादान एक सालमें दो बार सूर्य्य और चन्द्रके वर्षगांठके समय सोने चांदी धातु रेशम कपड़े और धानादि वस्तुओं में होता था। दोनोका धन अलग अलग खजाञ्चियोंको पुण्य करने के लिये सौंपा जाता था।

क़ुतुबुद्दीनखां कोका।(१)

इसी दिन धायभाई क़ुतुबुद्दीनखांको बादशाहने खासा खिलअत जड़ाऊ तलवार और खासा घोड़ा जड़ाऊ जीनका देकर बङ्गाले और बिहारकी सूबेदारीपर जो पचासहजार सवारोंकी जगह थी बड़ीभारी सेनाके साथ भेजा। दो लाख रुपये उसको और तीन लाख रुपये उसके सहकारियोंको दिये। बादशाहको अपने इस धायभाई और इसकी माके साथ सगी मा और भाई बेटोंसे अधिक प्रेम था।

केशव मारू।

केशवदास मारूका मनसब डेढ़हजारी होगया।

नथमल मंझोलीका राजा।

मंझोलीके राजा नथमलको बादशाहने पांचहजार रुपये दिये।

मिरजा अजीज कोका।

मिरजा अजीजकोकाने बुरहानपुरके राजा अलीखांको एक पत्र भेजा था। उसमें अकबर बादशाहकी बहुतसी निन्दा लिखी थी। यह पत्र बुरहानपुरमें राजा अलीखांके माल असबाबके साथ अबुलहसनके हाथ लगा। उसने बादशाहको दिखलाया। बादशाहको पत्र पढ़कर बहुत क्रोध हुआ। बादशाह लिखता है—जो मेरे पिताने उसकी माताका दूध न पिया होता है उसको अपने हाथसे बध करता। मेरा यही निश्चय था कि उसका वैर मुझसे खुसरोकी दामादीके कारण है। पर इस पत्रसे उसकी दुष्टता और नमकहरामी मेरे बापके साथ भी सिद्ध हुई। जिन्होंने उसको और उसके घरानेको धूलसे उठाकर आकाश

(१) कोका तुर्कीमें धायभाईको कहते हैं।

तक पहुंचाया था। मैंने उसे बुलाकर वह पत्र उसके हाथमें दिया और उच्चस्वरसे पढ़नेको कहा। मेरा ऐसा अनुमान था कि पत्र देतेही उसका दम बन्द होजावेगा। पर वह निर्लज्जतासे उसे इस तौर पर पढ़ने लगा कि मानो उसका लिखा हुआ ही नहीं है। हुक्मसे पढ़ता है। अकबरी और जहांगीरी बन्दोंमेंसे जो उस सभा में उपस्थित थे जिस किसीने वह पत्र देखा और पढ़ा उसीने उसको धिक्कार दी। मैंने पूछा कि उस दुष्टताको छोड़कर जो मुझसे तुझको है जिसके कारणोंकी कल्पना भी तूने अपनी कुटिल बुद्धिसे कर रखी है, मेरे बापसे क्या तेरा ऐसा बिगाड़ हुआ था जिससे उनके शत्रुओंको तुझे ऐसी बातें लिखनी पड़ी? मेरे साथ जो कुछ तूने किया मैंने उसे टालकर तुझे फिर तेरे मनसब पर रहने दिया। मैं जानता था कि तुझको मुझीसे बैर है पर अब जाना कि तू अपने पालकर बड़ा करनेवालेका भी द्रोही है। मैं तुझे उसी धर्म और कर्मको सौंपता हूं जो तेरा है और था। उसने उत्तरमें कुछ न कहा। कुछ कहता भी तो क्या कहता, कालामुंह तो होही चुका था।"

बादशाहने यह कहकर उसकी जागीर छीन लेनेका हुक्म दिया। यह अपराध क्षमाके योग्य न होने पर भी कई कारणोंसे उसे कुछ दण्ड न दिया।

परवेजका व्याह।

२६ जमादिउस्सानी (कार्त्तिक बदी १३) रविवारको शाहजादे परवेजका विवाह सुलतान मुरादकी बेटीसे मरयममकानी बेगमके महलमें हुआ और उत्सवकी मजलिस परवेजके स्थान पर रची गई। जो कोई गया उसे बहुत प्रकारके सत्कारोंके सिवा सिरोपाव भी मिला।

शिकार।

१० रज्जब (कार्त्तिक सुदी १२) रविवारको बादशाह शिकारके लिये गिरझक और नन्दनेको जाता था। रास्तेमें आगरेसे चलकर चार दिन तक राजा रामदासके बागमें डेरा किया।

था कि मैं अपने अपराधोंसे लज्जित हूं तुम कह सुनकर ऐसा करो कि शाहजादा मेरे लड़के बाघाका आना स्वीकार कर ले। शाहजादा कहता था कि या तो राना आप आवे या करणको भेजे। परन्तु जब खुसरोके भागनेके समाचार पहुंचे तो आसिफखां आदि अमीर बाघाके आने पर राजी होगये। वह माण्डलगढ़में आकर शाहजादेसे मिला और शाहजादा राजा जगन्नाथ आदि सरदारों को वहां छोड़ आया।

सुलतान दानियालके बेटे।

मुकर्रबखां जो सुलतान दानियालके बेटोंको लानेके लिये बुरहानपुर गया था ६ महीने २२ दिन पीछे उनको लेकर आगया। ८रबीउस्सानी (सावन सुदी ११) सोमवारको बादशाहने उन्हें देखा। उन पर आशातीत कृपा की। वह सात बहन भाई थे। तीन लड़के तहमुर्स, बायशंकर और होशंग थे। चार लड़कियां थीं। तहमुर्सको तो बादशाहने अपनी सेवामें रख लिया बाकी अपनी बहनोंको सौंप दिये और कहा कि इनको अच्छी तरह सम्हाल रखना।

लंगरखाने।

बादशाहने अपने राज्यभरमें लंगरखाने खोलनेका हुक्म भेजा। कहा—प्रत्येक स्थान पर चाहे वह खालसेका हो चाहे जागीरका, वहांकी व्यवस्थाके अनुसार कंगालोंके लिये साधारण खाना पकवाया जाय जिससे मुसाफिरोंको भी लाभ हो।

राजा मानसिंह।

राजा मानसिंहके लिये बंगालमें खासा खिलअत भेजा गया।

शाहजादे खुर्रम और बेगमोंका लाहोरमें आना।

बादशाह चलते समय खुर्रमको महलों और खजानोंकी रखवाली पर आगरेमें छोड़ आया था। अब जो खुसरोके पकड़े जानेपर उसको बुलाया तो वह बेगमों सहित लाहोरमें पहुंचा। बादशाह

१३ शुक्र(१) को नावमें बैठकर "धर" नामक गांवकी सीमा तक अपनी मां "मरयममकानी" के स्वागतको गया। चंगेजखां, तैमूर और बाबरके नियत किये नियमोंके अनुसार अदब और आदाब बजा लाया।

राणाकी मुहिम।

१७ (भादों बदी ५) को मुअज्जुलमुल्क उस लश्करकी बखशी-गरी पर भेजा गया जो राणाके मुल्कमें नियत था।

रायसिंह और दलपतका बदल जाना।

रायसिंह और उसके बेटे दलपतका नागोर प्रान्तमें प्रतिकूल हो जानेका वृत्तान्त सुनकर बादशाहने राजा जगन्नाथ और मुअज्जुल-मुल्कको हुक्म भेजा कि जल्द वहां जाकर फसाद मिटावें।

इबराहीम बाबा पठान।

शैख इबराहीम बाबा नामक एक पठान लाहौरके किसी परगने में गुरु शिष्यका पन्थ चला रहा था। बहुतसे पठान उसके पास एकत्र होगये। बादशाहने उसकी दूकान उठा देनेके लिये हुक्म दिया कि शैख इब्राहीमको पकड़कर परवेजके हवाले किया जावे वह उसे चुनारके किलेमें कैद करे।

मनसबोंमें वृद्धि।

६ (२) जमादिउलअव्वल (भादों सुदी ८) रविवारको बयालीस मनसबदारोंके मनसब बढ़े और पचीस हजार रुपयेका एक माणिक्य शाहजादे परवेजको दिया गया।

सौरपक्षका तुलादान।

९ (भादों सुदी १२) बुधवारको बादशाहका ३८वां वर्ष सौरपक्ष से लगा। राजमाताके भवनमें तोलनेके लिये तक लगाया गया। तीन पहर चार घड़ी दिन व्यतीत होने पर बादशाह तुलामें बैठा। उसके प्रत्येक पलड़ेको दीर्घावस्थावाली स्त्रियोंने थामकर आशीर्वाद दिया।

(१) मूलमें १२ भूलसे लिखी है।

(१) मूलमें भूलसे ७ लिखा है।

परवेजका तुलादान।

१२ रज्जब(अगहन बदी १) बुधवारको परवेजकी तुला सौरपक्ष से हुई। उसको १२बार धातुओं और दूसरी वस्तुओंमें तौला गया। प्रत्येक तुला दो मन १८ सेरकी हुई।

कंधार।

उस सेनाके सिवा जो मिरजा गाजीके साथ गई थी बादशाहने तीन हजार सवार एक हजार बरकन्दाज और शाहबेगखां, मुहम्मद अमीन तथा बहादुरखांके साथ भेजे और दो लाख रुपये खर्च के लिये दिये।

हजूरी बखशी।

बादशाहने अबदुर्रज्जाक मामूरीको जो रानाके सूबेसे बुलाया गया था हजूरी बखशी बनाकर हुक्म दिया कि अबुलहसनसे मिल कर काम करे। यह अकबर बादशाहका बांधा हुआ प्रबंध था कि बड़े बड़े कामोंमें दो योग्य आदमी शामिल कर दिये जाते थे। वह लोग अविश्वासके विचारसे नहीं शामिल किये जाते थे वरञ्च इस लिये कि यदि कुछ हरज मरज हो तो सहायता करें।

रामचन्द्र बुन्देला।

बादशाहको सुनाया गया कि अबदुल्लहखांने दसहरेके दिन अपनी जागीर कालपीसे बुन्देलोंके देशमें धावा मारा। नन्दकुमारके बेटे रामचन्द्रको जो बहुत समयसे उधरके जङ्गलोंमें लूट खसोट कर रहा था पकड़ कर कालपीमें ले आया। बादशाहने इसके उपहारमें उसको झंडा, तीन हजारी जात और दो हजार सवारका मनसब दिया।

राजा संग्राम।

सूबे बिहारकी अर्जियोंसे विदित हुआ कि जहांगीर कुलीखांने संग्रामके साथ जो सूबेबिहारके बड़े जमींदारोंमें ३।४ हजार सवार और बहुतसे पैदलोंका स्वामी था, एक विषम मैदानमें, उसकी दुष्टता और शत्रुताके कारण युद्ध किया। संग्राम गोलीसे मारा गया।

उसके आदमी जो मारे जानेसे बचे, भाग गये। बादशाहने इस कामके इनाममें उसका मनसब बढ़ाकर साढ़े चार हजारी जाती और तीन हजार सवारोंका कर दिया।

शिकारकी गिनती।

बादशाहने ३ महीने ६ दिन तक शिकार खेला। ५८१ पशु बंदूकों, चीतों, जाल और हांकेसे शिकार हुए। उनमेंसे १५८बादशाहकी बंदूकसे मारे गये। दो बार हांका हुआ। एक बार तो करछाकमें जहां बेगमें भी थीं १५५ पशु बध हुए। दूसरी बार नन्दनेमें १११। सबका ब्योरा यह है—पहाड़ी मेंढ़े १८०, गोरखर नीलगाय ८, पहाड़ी बकरे २८, हरिन आदि ३४८। जोड़ ५६६। कमी रही जोड़में १५।

बादशाहने कई बड़े भारी पशुओंका तोल भी लिखा है। जैसे एक पहाड़ी बकरा २ मन २४ सेर था। एक मेंढ़ा २ मन ३ सेर और एक गोरखर ८ मन १६ सेर निकला।

बादशाह लाहोरमें।

बादशाह शिकारसे लौटकर १६ शव्वाल (फागुन बदी २) बुधवारको लाहोरमें आया।

दलपत रायसिंहका बेटा।

इन्हीं दिनोंमें बादशाहको खबर पहुंची कि सादिकखांका बेटा जाहिदखां, शेख अबुलफजलका बेटा अबदुर्रहमान और मोअज्जुलमुल्क वगैरह मनसबदार दलपतका नागोरके परगनेमें होना सुनकर उसके ऊपर गये। वह भी भागनेका अवसर न पाकर लड़नेको खड़ा हुआ और थोड़ीसी लड़ाईमें अपने बहुतसे मनुष्योंको कटाकर माल असबाब सहित भाग निकला।

धायका मरना।

जीकाद (फागुन व चैत) में कुतुबुद्दीनकी मा जिसने बादशाह को दूध पिलाया था मर गई। बादशाह उसकी लाशका पाया अपने कन्धे पर रखकर कुछ दूर तक गया शोकके मारे कई दिन

तक खाना नहीं खाया न कपड़े बदले क्योंकि उसकी गोदमें पला था और उसका मोह सगी मासे अधिक समझता था।

दूसरा नौरोज।

२२ जीकाद (चैत बदी ८) बुधवारको साढ़े तीन घड़ी दिन चढ़े सूर्य्य अपने राजभवन मेषमें आया। बादशाह राजरीतिके अनुसार दौलतखानेको सजाकर सोनेके सिंहासन पर बैठा, अमीरों और मुसाहिबोंको बहुतसा दान दिया।

कन्धार और ईरानका दूत।

मिरजा गाजी सेना सहित १२ शव्वाल (फागुन सुदी १३) को कन्धारमें पहुंचा। कजलबाश हिलमन्द नदीके तटको जो ५०।६० कोस पर है चला गया। इन लोगोंने अकबर बादशाहका मरना सुनकर फरह और हिरातके हाकिमों और सेवस्तानके मलिकोंके कहनेसे शाहअब्बासके बिना हुक्महो इतना साहस किया था। परन्तु जब यह वृत्तान्त शाहको विदित हुआ तो उससे पुरानी प्रीतिकी प्रेरणासे हुसैनबेगको उन लोगोंके रोकनेके लिये भेजा। वह रास्तेमें उनको मिला और तिरस्कार करके क्षमा मांगनेके लिए लाहौरमें आया।

शाह बेग जैसा कि हुक्म था कन्धार सरदारखांको सौंपकर दरगाहमें आगया।

रामचन्द्र बुन्देला।

२७ (जीकाद चैत बदी १४) अबदुल्लहखां रामचन्द्र बुन्देलेको लेकर आया। बादशाहने उसके पांवसे बेड़ी काटकर खिलअत पहनाया और राजा बासूको सौंपकर आज्ञा दी कि जमानत लेकर उसको उसके भाई बन्धुओं सहित जो उसके साथ पकड़े आये हैं छोड़ दे। उसे इतनी कृपाकी आशा न थी।

खुर्रमको मनसब।

२ जिलहज्ज (चैत सुदी ४ सं० १६६४) को बादशाहने खुर्रमको तूमान तोग झण्डा और नक्कारा देकर आठ हजारी जात और पांच

हजार सवारोंके मनसब पर नियत किया और जागीर देनेकी भी आज्ञा दी।

पीरखां लोदीको सलाबतखां और पुत्रकी पदवी।

बादशाहने दौलतखां लोदीके बेटे पीरखांको जो सुलतान दानियालके बेटोंके साथ आया था नक्कारा निशान सलाबतखां उप-नाम और ३ हजारी जात व डेढ़ हजार सवारोंका मनसब प्रदान किया और इसके सिवा पुत्रकी पदवी भी दी।

इसके दादा उमरखांके चचा बड़े दौलतखांने सुलतान सिकन्दर लोदीके बेटे इब्राहीम लोदीसे नाराज होकर अपने बेटे दिलावरखां को काबुलमें बाबर बादशाहके पास भेजा था। उसकी सलाह और सहायतासे पञ्जाब जीतकर वहांकी हाकिमी दौलतखांकेही पास रहने दी। दौलतखां बूढ़ा आदमी था इस लिये बाबर बादशाह उसको बाप कहता था।

दूसरी बार जब फिर काबुलसे आया तो दौलतखां उसी अवसर पर मर गया। बादशाहने दिलावरखांको खानखानांकी पदवी दी। वह सुलतान इब्राहीमकी लड़ाईमें बाबर बादशाहके साथ रहा था और हुमायूं बादशाहकी सेवामें बंगालेकी लड़ाइयोंमें भी गया था। मुंगेरकी लड़ाईमें पकड़ा गया। शेरखांने उससे अपनी नौकरी कर लेनेको बहुत कहा। परन्तु उसने स्वीकार नहीं किया और कहा कि तेरे बाप सदा मेरे बड़ोंकी नौकरी करते थे फिर मैं कैसे तेरा नौकर रह सकता हूं। इस पर शेरखांने रोष करके उसे दीवारमें चुनवा दिया।

सलाबतखांका दादा उमरखां जो दिलावरखांका चचेरा भाई था सलेमखांके राज्यमें बहुत बढ़ा। पर सलीमखांके पीछे जो उसके बेटे फीरोजको मुहम्मदखांने मार डाला इससे उमरखां शङ्कित हो कर अपने भाइयों सहित गुजरातमें चला गया और वहीं मरा। उसका बेटा दौलतखां मिरजा अबदुर्रहीम खानखानांकी सेवामें रहा। खानखानां उसको सगे भाईके समान मानता था। उसने

बहुधा लड़ाइयोंमें इसी दौलतखांकी सहायतासे फतह पाई थी। जब अकबर बादशाहने खानदेश और आसेरगढ़ विजय करके सुलतान दानियालको दिया तो दानियालने दौलतखांको खानखानासे अलग करके अपनी सरकारका काम सौंपा। वह वहीं मरा। उसके दो बेटे मुहम्मदखां और पीरखां थे। मुहम्मदखां बापके पीछे तुरन्त ही मर गया और पीरखांको बादशाहने बुलाकर यह मान सन्मान दिया। उसकी खातिर यहांतक मंजूर थी कि बड़े बड़े अपराध जो किसीकी प्रार्थनासे भी माफ न किये जाते थे उसके कहनेसे चमा होजाते थे।(१)

बादशाह काबुलमें।

बादशाहका विचार अपने बाप दादाके देश तूरान जीतनेका था और चाहता था कि हिन्दुस्तानको निर्विघ्न करके सुसज्जित सेना जङ्गी हाथियों और पूरे कोष सहित उधर जाय। इसीलिये परवेज को राणाके ऊपर भेजा था और आप दक्षिण जानेके उद्योगमें था कि खुसरो प्रतिकूल होगया। न राणाकी लड़ाई फतह हुई न दक्षिणको जाना हुआ। खुसरोके पीछे लाहोर आना पड़ा उसके पकड़े जाने और कजलबाशोंके कन्धार छोड़ देनेसे छुटकारा हुआ तो अपने पुराने स्थान काबुलके देखनेकी रुचि हुई। तब ७ जिलहज (चैत सुदी ८) को लाहोरसे कूच करके दिलामेजबागमें जो रावी नदीके उस पार था डेरा किया और वहीं १८ फरवरदीन रविवार (चैत सुदी ११) को मेख(२) संक्रान्तिका उत्सव करके कई आदमियोंके मनसब बढ़ाये और ईरानके दूत हसनबेगको दस हजार रुपये दिये।

---

(१) इसी पीरखांको फिर फरजन्द खानजहांकी भी पदवी मिल गई थी। इसका वृत्तान्त आगे बहुत जगह आवेगा इस लिये यह सविस्तर वर्णन उसके घरानेका किया गया है। यह शाहजहां बादशाहसे बागी होकर जुझारसिंह बुन्देलेके हाथसे मारा गया।

(२) चंडू पञ्चांगमें मेख संक्रान्ति चैत सुदी १० को लिखी है।

हरनकी कबर पर लेख।

बादशाहने शनिवारको उस बागसे रवाना होकर गांव हरहर-पुरमें और मंगलको जहांगीरपुरमें डेरा किया। बादशाहके शिकार खेलनेके जो स्थान थे उनमेंसे एक यह गांव भी था। इसकी सीमा में बादशाहके एक प्यारे हरन हंसराज नामकको समाधि पर स्मारकस्तम्भ बनाया गया था जिस पर यह लिखा था—"इस सुरम्य बनमें एक हरन नूरुद्दीन जहांगीर बादशाहके जालमें फंसा और एक महीनेमें पशुपन छोड़कर सब खासेके हरनोंका सरदार हुआ।" बादशाहने उस हरनके सद्गुणोंसे जो पाले हुए हरनों से लड़ने और जङ्गली हरनोंके शिकार करनेमें अद्वितीय था यह हुक्म दिया कि कोई इस जंगलके हरनोंको बध न करे और उनके मांसको हिन्दू मुसलमान गाय और सूअरके समान अपवित्र समझें। उसके कबरके पत्थरको हरनके आकारमें बनादे। सिकन्दर मुईनको जो उस परगनेका जागीरदार था जहांगीरपुरमें किला बनानेका हुक्म दिया।

गुजरात।

१४ गुरुवार (चैत्र सुदी १५) को बादशाह जखडाले(१) में और १६ शनिवारको हाफिजाबादमें ठहरा। वहांके करोरी मीर कवा-मुद्दीनने वहां एक मकान बनाया था उसीमें निवास किया। वहां से दो कूचमें चिनाव नदी पर पहुंचे। वहां जो पुल बांधा गया था २१ गुरुवारको उसके ऊपरसे पार होकर बादशाह गुजरातमें पहुँच गया।

गुजरात् नामकी उत्पत्ति।

अकबर बादशाहने काश्मीर जाते हुए एक किला चिनावके तट पर बनाया और गूजरोंको जो इस प्रान्तमें चोरी धाड़ा किया

---

(१) जखडयाला।

करते थे उसमें बसाया। इसीसे उसका नाम गुजरात रखकर अलग परगना बना दिया।

गुजरातसे कूच।

शुक्रवारको गुजरातसे कूच होकर ५ कोस पर खवासपुरेमें जो शेरखांके गुलाम खवासखांका बसाया हुआ था मुकाम हुआ। वहां से दो कूचोंमें भटके तट पर पड़ाव हुआ। रातको मेह वायुके प्रकोप और ओले गिरनेसे पुल टूट गया। बादशाहको बेगमों सहित नावमें बैठकर उस नदीसे पार होना पड़ा। फिरसे पुल बांधनेका हुक्म हुआ। एक सप्ताहमें जब पुल बंध गया तो सारी सेना कुशलपूर्वक पार होगई।

भट-नदीका निकास।—

भट नदी काश्मीरमें नरनाग नामक एक झरनेसे निकली है। नरनाग काश्मीरी बोलीमें सांपको कहते हैं कभी वहां सांप होंगे।

बादशाह लिखता है—"मैंने पिताके समयमें दो बार इस झरने को देखा है। कश्मीरसे यह २० कोसके लगभग है। वहां एक अठपहलू चबूतरा २० गज लम्बा और उतनाही चौड़ा बना है। उसके आसपास पत्थरकी कोठरियां और कई गुफाएं तपस्या करने वालोंके योग्य बनी हैं। इस झरनेका पानी ऐसा साफ है कि जो खसखसका एक दाना भी डालें तो तलीमें पहुंचने तक दिखाई देता रहे। इसमें मछलियां बहुत हैं। मैंने सुना था कि इस की थाह नहीं है इस लिये एक पत्थरसे रस्सी बंधवाकर उसमें डल-वाई और फिर नपवाई तो मालूम हुआ कि आदमीके कदके ड्योढ़े से ज्यादा गहरा नहीं है।

"मैंने सिंहासनारूढ़ होनेके पीछे इसके चौतरफ बगीचे पक्के घाट और महल बहुत उत्तम बनवा दिये थे जिनके समान पृथिवीमें फिरनेवाले लोग कहीं कम बताते हैं। यह पानी गांव यमपुरमें पहुंचकर जो शहरसे दो कोस है ज्यादा होजाता है। तमाम काश्मीरकी केसर इसी गांवमें होती है। मालूम नहीं कि दुनिया

में कहीं इतनी केसर और होती है कि नहीं। हर साल पांचसौ मन केसर हासिलमें आती है। मैं केसर फूलनेके दिनोंमें पिताके साथ यहां आया हूं। संसारके सारे फूल कोंपल और पत्ते निकलनेके पीछे खिलते हैं और केसरको सूखी जमीनसे पहले ४ उंगल लम्बी कोंपल निकलती है फिर सोसनी रंगके फूल निकलते हैं। उनमें चार पंखड़ियां और चार तंतु नारंगी रंगके कुसुम जैसे एक उंगल लम्बे होते हैं यही केसर है। कहीं एक कोस और कहीं आध कोसमें केसरकी क्यारियां होती हैं। दूरसे बहुत भली लगती हैं। फूल चुनते समय उसकी तीव्र सुगन्धसे पासवालोंके सिरमें दर्द होने लगा। मैं नशेमें था और प्याले पीरहा था तो भी मेरे सिरमें दर्द होगया। तब मैंने पशुप्रकृति फूल चुननेवाले काश्मीरियोंसे पूछा कि तुम्हारा क्या हाल है? जाना गया कि उमर भर में कभी उनका सिर नहीं दुखा।"

"इस झरनेका पानी जिसको काश्मीरमें भट कहते हैं दायें बायेंके नालोंके आ मिलनेसे दरिया होजाता है। यह शहरके बीचोंबीच होकर निकलता है। इसकी चौड़ाई बहुधा एक तुर्क के टप्पे से अधिक न होगी। इस पानीको मैला और बेमजा होनेसे कोई नहीं पीता है। काश्मीरके सब लोग डल नामके तालाबका पानी पीते हैं जो शहरके पास है। भटका पानी इस तालाबमें हो कर बारामूला, पगली और दम्बोरके रास्तेसे पञ्जाबमें जाता है। काश्मीरमें नदी नाले और झरने बहुत हैं मगर अच्छा पानी लार के दरेका है जो एक गांव काश्मीरके अच्छे स्थानोंमेंसे भटके तट पर है। वहां एक सौके लगभग चिनारके हरे भरे वृक्ष आपसमें मिले खड़े हैं। उनकी छाया इस सारी भूमिको घेरे हुए है जो दूबसे ऐसी हरी होरही है कि उस पर बिछौना बिछाना निर्दयता और कूरपन है।"

यह गांव सुलतान जैनुलआबिदीनका बसाया हुआ है जिसने ५२ वर्ष काश्मीरका राज्य स्वतन्त्रतासे किया था। उसको बड़ा

बादशाह कहते थे। उसकी बहुतसी करामातें कही जाती हैं काश्मीरमें उसकी बहुतसी इमारतें और निशानियां हैं जिनमेंसे एक जैनलङ्का तीन कोससे ज्यादा लम्बे और चौड़े उलर नाम सरोवरमें बनी है। उसने इसके तय्यार करनेमें बहुत परिश्रम किया था। इस सरोवरका सोता गहरा दरियामें है। पहली बार तो बहुत पत्थर नावोंमें भर भर कर इस जगह पर डाले गये थे जब कुछ मतलब न निकला तो कई हजार नावें पत्थरों सहित डबोई गईं तब कहीं एक टीला १०० गज चौड़ा और इतनाही लम्बा पानीके ऊपर निकला जिसे ऊंचा करके चबूतरा बांधा। उस पर एक तरफको उसने एक भवन ईश्वराराधनके लिये बनाया था। वहां वह नावमें बैठकर आता और भजन करता। कहते हैं कि उसने कई चिल्ले इस जगहमें रहकर खेंचे थे। उसके कपूत पुत्रोंमें से एक कुपात्र उसे सेवाभवनमें अकेला देखकर मारने गया। परन्तु ज्योंही उसपर नजर पड़ी डरकर निकल आया। कुछ देर पीछे सुलतान बाहर आया और उसी बेटेको लेकर नावमें बैठा। रास्तेमें कहा कि मैं माला भूल आया हूं तू दूसरी नावमें बैठकर जा और लेआ। लड़का जब वहां गया और बापको बैठा पाया तो लज्जित होकर उसके पांओंमें गिर पड़ा और माफी मांगने लगा। इस प्रकार उस की और भी बहुतसी बातें लोग वर्णन करते हैं और कहते हैं कि उसने परकाय प्रवेशविद्यामें भी खूब अभ्यास किया था। निदान जब बेटोंको राज्यप्राप्त करनेमें आतुर देखा तो उनसे कहा—मुझे राज छोड़ना क्या प्राण त्याग करना भी सहज है लेकिन मेरे पीछे तुमसे कुछ नहीं होसकेगा। राज्य तुम्हारे पास नहीं रहेगा और तुम थोड़े ही समयमें अपनी करनीका फल पाओगे यह कहकर खाना पीना छोड़ दिया। ४० दिन तक सोया भी नहीं। भक्तों और तपस्वियोंके साथ भगवत भजन करता रहा। चालीसवें दिन परमगतिको प्राप्त हुआ। फिर उसके तीनों बेटे आदमखां हाजीखां और बहरामखां आपसमें लड़े और तीनोंही नष्ट होगये।

कश्मीरका राज वहींके साधारण सिपाहियोंमेंसे चक जातिके लोगोंके हाथ लगा।"

"जैनुलआबदीनने उलर तालाबमें जो चबूतरा बनाया था उसके तीन कोनों पर वहांके तीन हाकिमोंने मकान बनाये हैं। मगर उनमेंसे एकभी मजबूतीमें जैनुलआबिदीनकी इमारतको नहीं पहुंचता।"

कश्मीरकी बहार और खिजां (पतझड़) देखने योग्य है। मैंने खिजांकी ऋतु देखी है जैसी सुनी थी उससे अच्छी पाई। बहार अबतक नहीं देखी है आशा है कि वह भी देखी जावेगी।"

तीसरा वर्ष।

सन् १०१६।

बैशाख सुदी २ संवत् १६६४ से बैशाख सुदी २ संवत् १६६५ तक।

१ मुहर्रम १०१५ (बैशाख सुदी २) शनिवार(१)को बादशाह भट नदीके तटसे कूच करके तीसरे दिन रुहतासके किलेमें पहुंचा। यह किला शेरखांने उस प्रान्तके दंगई गक्खड़ोंके दबानेके लिये बनाया था। वह तो अधूराही छोड़ मरा था उसके बेटे सलेमखांने उसे पूरा किया। जो लागत आई वह हरेक पोल पर पत्थरोंमें खुदा दी है। उससे ज्ञात होता है कि ४० लाख २५ हजार रुपये इसमें लगे थे।

४ मुहर्रम (बैशाख सुदी ५) मंगलको सवा चार कोस चलकर पोलेमें और वहांसे भकरामें पड़ाव हुआ। गक्खड़ोंकी बोलीमें पोला टीलेको और भकरा जङ्गलको कहते हैं। पोलेसे भकरा तक सारे रस्तेमें नदी आई जिसके किनारों पर बहुतसे फूल कनेरके फूले हुए थे। बादशाहने अपने साथके सवारों और पैदलोंको हुक्म दिया कि सब लोग इन फूलोंके गुच्छे सिर पर टांक लें जिसके सिर पर फूल न हों. उसकी पगड़ी उतार दें। बादशाह लिखता है—"अजब बाग लग गया था।"

६ मुहर्रम (बैशाख सुदी ७) गुरुवारको शहर(२) में होकर सिहामें डेरा लगा। इस रस्तेमें पलाश बहुत फूले हुए थे। बादशाह उसके चमकीले रंग, बादलोंकी छाया और मेंहकी फुहारोंसे प्रसन्न मन होकर मदिराका सेवन करने लगा। उसके आनन्दमें बड़ी मौजसे रस्ता कटा।

---

(१) मूलमें चन्द्रवार गलत लिखा है।

(२) शहरका नाम नहीं लिखा है।

इस स्थानको हथिया भी कहते हैं क्योंकि हाथी नाम एक गक्खड़ का बसाया हुआ है और देशका नाम मारकल्लासे हथिया तक पूरुहार है। इधर कव्वे बहुत कम होते हैं। रुहतासमे हथियो तक "भोकयाल" लोग रहते हैं जो गक्खड़ोंके भाई बन्द हैं।

७ मुहर्रम (बैशाख सुदी ८) शुक्रवारको सवा चार कोस चलकर पक्केमें डेरा लगा। यहां एक सराय पक्की ईंटोंकी बनी हुई थी इसलिये पक्का नाम हुआ। इस रस्तेमें धूल बहुत उड़ती थी गाड़ियां बड़ी कठिनतासे मंजिल पर पहुंचीं।

८ मुहर्रम (बैशाख सुदी ६) शनिवारको साढ़े चार कोस चल कर कोरमें मुकाम हुआ। इधर वृक्ष बहुत कम थे। कोर गक्खड़ों को बोलीमें दरेको कहते हैं।

६ (बैशाख सुदी १०) रविवारको रावलपिण्डीमें मंजिल थी। यह गांव रावल नामक एक हिन्दूने बसाया था पिण्डी गांवको कहते हैं। इसके पास घाटीमें पानी बहता था और एक झालरेमें इकट्ठा होता था। बादशाहने उस जगह कुछ देर ठहर कर गक्खड़ों से पूछा कि यह पानी कितना गहरा है? उन्होंने कहा कि इसमें एक मगर रहता है जो कोई जानवर या आदमी पानीमें जाता है वह घायल होकर निकलता है। बादशाहने पहिले एक बकरी डलवाई वह सारे तालाबमें तैरकर आगई। फिर एक फर्राशको हुक्म दिया, वह भी उसी तरह तैरकर साफ निकल आया। गक्खड़ों की बात सच्ची न निकली।

१० (बैशाख सुदी ११) चन्द्रवारको गांव खरबूजेमें मुकाम हुआ यहां गक्खड़ोंने पिछले समयमें एक बुर्ज बनाया था और मुसाफिरों से कर लिया करते थे। उस बुर्जका आकार खरबूजेकासा था इसलिये यह नाम प्रसिद्ध होगया।

११ मंगल (बैशाख सुदी १२) को बादशाह कालापानीमें उतरे यहां एक घाटी मारकल्ला नाम है। कल्ला काफिलेको कहते हैं इस घाटीमें काफिले मारे जाते थे इस कारण ऐसा नाम हुआ।

इस जगह गक्खड़ोंके देशकी सीमा समाप्त होती है। बादशाह गक्खड़ों के वास्ते लिखते हैं कि अजब पशुप्रकृतिके लोग हैं आपसमें लड़ते झगड़ते रहते हैं। मैंने बहुत चाहा कि इनके झगड़े मिट जावें परन्तु कुछ सफलता न हुई।

१२ मुहर्रम (वैशाख सुदी १३) बुधवारको बाबा हसन अब्दाल में पड़ाव पड़ा। यहांसे एक कोस पूर्वको एक नाला है जिसका पानी बहुत वेगसे गिरता है। बादशाह लिखता है—"काबुलके तमाम रस्तेमें इसके समान और कोई नाला नहीं है कश्मीरके रस्तेमें जरूर ऐसे तीन नाले हैं।

एक झरनेके बीचमें जहांसे इस नालेका पानी आता है राजा मानसिंहने कुछ मकान बनाये थे। यहां आध आध गज और पाव पाव गजकी लम्बी मछलियां बहुत थीं इसलिये बादशाह तीन दिन तक इस सुरम्य स्थानमें रहा। शराब पी और मछलियां पकड़ी। वह लिखता है—"मैंने सफरादामको जिसे हिन्दीमें भंवरजाल कहते हैं अबतक अपने हाथसे पानीमें नहीं डाला था क्योंकि उसका डालना सहज नहीं है पर यहां अपने हाथसे डालकर दस बार मछलियां पकड़ीं और नाकमें मोती डालकर छोड़दीं।"

"हसनबाबाका समाचार वहांके इतिहास जाननेवाले और रहने वाले कुछ नहीं बता सके यहां जो प्रसिद्ध जगह है वह एक नाला है जो पहाड़मेंसे निकलता है बड़ा साफ सुथरा है। मानो अमीर खुसरोने उसीके वास्ते कहा है "इतना साफ है कि उसके नीचेकी रेतके कण अन्धा भी अंधेरी रातमें गिन सकता है।"

अकबर बादशाहके वजीर ख्वाजा शमसुद्दीन खाफीने यहां चबूतरा, कुण्ड और अपनी कबरके वास्ते एक गुंबद बनाया था। कुण्डमें पानी इकट्ठा होकर बागों और खेतोंमें जाता था। पर मरनेके पीछे यह गुंबद ख्वाजाके कुछ काम न आया। हकीम अबुलफतह गीलानी और हकीम हमाम दोनों भाई जो अकबर

बादशाहके सभासद थे मरनेके पीछे उसी बादशाहकी आज्ञासे यहां गाड़े गये।

१५ (जेठ बदी १) को अमरोहोमें मुकाम हुआ। अजब हरा भरा स्थान था। यहां ७।८ सहस्र घर "खर" और दिलाजाक जातिके रहते थे और भांति भांतिका अनाचार और लूट मार करते थे इसलिये बादशाहने वह प्रांत और अटककी सरकार जैनखां कोका के बेटे जफ़रखांको सौंपकर हुक्म दिया कि हमारे लौटने तक तमाम दिलाजाकोंको यहांसे उठाकर लाहोरकी तरफ चलता करें और खरोंके मुखियोंको पकड़कर कैद रखें।

१७ (जेठ बदी ३) सोमवारको कूच हुआ। बादशाह एक मंजिल बीचमें रहकर नीलाबके किनारे किले अटकमें पहुंचा। यह सुदृढ़ दुर्ग अकबर बादशाहका बनाया हुआ है। अटक पर १८ नावोंका पुल बांधा गया था परन्तु काबुलमें इतने लशकरकी समाई न देख कर बादशाहने बखशियोंको हुक्म दिया कि पास रहनेवालोंके सिवा और किसीको अटकसे न उतरने दें लशकर अटकके किलेमें रहे।

१९ (जेठ बदी ५) बुधवारको बादशाह शाहजादों और निज सेवकों सहित जाले पर सवार होकर नीलाबसे उतरा और कामा नदीके किनारे ठहरा। उसका पानी जलालाबादके आगे बहता है।

जाला एक प्रकारकी नाव है। जो घांस और बांसोंसे बनाई जाती है और उसके नीचे मशकें हवासे भरकर बांध दीजाती हैं उस तरफ उसको शाल कहते थे। जिन नदियोंकी तहमें पत्थर रहते हैं उनमें यह बड़ी काम आती थी।

अबदुलरज्जाक मास्मूरी और अहदियोंके बखशी बिहारीदासको हुक्म हुआ कि जिन लोगोंको जफ़रखांके साथ जानेको कहा गया है वह तय्यार करके भेजे जावें।

बादशाह फिर एक मंजिल बीचमें देकर बाड़ेमें पहुंचा, सरायमें ठहरा। यहां कामा नदीके उस पार जैनखां कोकाने जब वह यूसुफ़-ज़ई पठानोंको दण्ड देनेके वास्ते इधर आया था पचास हजार रुपये

लगाकर एक किला बनाया था। उसका नाम नया शहर रखा था हुमायूं और अकबर बादशाह यहां भेड़ियोंका शिकार खेला करते थे।

२५ (जेठ बदी १२) मंगलवार(१) को दौलताबादकी सरायमें डेरे हुए। यहां परशावर (पिशौर) का जागीरदार अहमदबेग यूसुफ़-ज़ई और गोरियाखेलके मलिकों (चौधरियों)को लेकर आया। उससे इस जिलेका बन्दोबस्त बादशाहकी मरजीके मुवाफिक नहीं हुआ था इसलिये बादशाहने उसका काम छीनकर शेरखां अफगानको दिया।

२६ (जेठ बदी १३) बुधवारको परशावरके पास सरदारखांके बागमें डेरे हुए। यहां इस प्रान्तके जोगियोंका प्रसिद्ध तीर्थ गोरख खड़ी था बादशाह इस विचारसे कि कोई जोगी मिले तो उसके सतसङ्गसे लाभ उठावे वहां गया परन्तु कोई न मिला।

२७ (जेठ बदी १४) गुरुवारको जमरोदमें और शुक्रको खैबर-घाटेके पार अलीमसजिदमें और शनिको मारपेच घाटोसे उतरकर गरीबखानेमें बादशाहके मुकाम हुए। यहां जलालाबादका जागी-रदार कासमतगीन जर्दालू लाया। बादशाह लिखता है– कशमीर के जर्दालूसे अच्छे नहीं थे।" काबुलसे "केलास" भी आये जिनका नाम अकबर बादशाहने शाहआलू रख दिया था। क्योंकि केलास नाम छिपकलीका था।

२ सफर (जेठ सुदी ४) मंगलवारको पसावलके मैदानमें नदीके तट पर डेरे हुए। नदीसे उधर एक पहाड़ था जिसको हरयाली और वृक्ष नहीं होनेसे "कोहेबेदौलत" कहते थे बादशाह लिखता है कि मैंने अपने बापसे सुना है कि ऐसे पहाड़ोंमें सोनेकी खानें होती हैं।

आसिफखांका वजीर होना।

३ सफर (जेठ सुदी ५) बुधवारको बादशाहने अमीरुलउमराको बीमारी बढ़ जानेसे जिसे जिले लाहोरमें छोड़ आया था आसिफखां

(१) मूलमें भूलसे गुरुवार लिखा है।

को भारी सिरोपाव और जड़ाऊ दवात कलम देकर वजीरका काम सौंपा। २८ वर्ष पहले अकबर बादशाहने भी इसको इसी स्थान पर मीरबखशीका पद प्रदान किया था। इसने चालीस हजार रुपयेका एक माणिक्य वजीर होनेका सलाम करते समय बादशाह को भेट किया। ख्वाजा अबुलहसन बखशी भी उसके शामिल रखा गया।

नदीमें एक सफेद पत्थर पड़ा था बादशाहने उसका हाथी बनवाकर अपना नाम उसकी छाती पर खुदवा दिया।(१)

विक्रमाजीतके बेटे कल्याणको दण्ड।

इसी दिन राजा विक्रमाजीतका बेटा कल्याण गुजरातसे आया उस पर कई दोष लगाये गये थे जिनमेंसे एक यह भी था कि एक मुसलमानी कसबनको घरमें डालकर भेद छुपानेके लिये उसके मा बापको मारा और अपने घरमें गाड़ दिया। बादशाहने निर्णय करके उसकी जीभ कटवा डाली और उमरकैद करके हुक्म दिया कि कुत्ते पालनेवालों और हलालखोरोंके साथ खाना खाता रहे।

बुधको सुरखाबमें और वहांसे चलकर जगदलगमें डेरे हुए। यहां बलूतकी लकड़ी बहुत थी और रस्तेमें पत्थर भी बहुत आये।

१२ (जेठ सुदी १३) शुक्रवारको आबतारीकमें १४ को यूरत बादशाहमें १५ रविवारको छोटी काबुलमें मुकाम हुआ। यहां शाहआलू गुलबहार नामक स्थानसे बहुत बढ़िया आये थे बादशाह ने १०० के लगभग खाये और कुछ अनोखे फूल भी देखे जो अबतक देखनेमें नहीं आये थे। "मीरमूशां" नामक एक जानवर भी भेटमें आया जिसकी आकृति गिलहरीकीसी थी। वह जिस घरमें रहता था चूहे वहां नहीं आते थे रंग काला और सफेद था। नेवले से बड़ा था सूरत बिल्लीकीसी थी। बादशाहने चित्रकारोंसे उसका

(१) ऐसाही एक बड़ा हाथी अजमेरमें भी जहांगीर बादशाहका मदार दरवाजेके बाहर एक मन्दिरमें है जिसको हाथी भाटा कहते हैं।

खिंचवाया। अहमदबेगखां दो हजार बरकन्दाजोंसे बंगशके पठानोंको दण्ड देनेके लिये नियत हुआ। अबदुर्रज्जाक मामूरीको जो अटकमें था हुक्म लिखा गया कि दो लाख रुपये राजा विक्रमाजीतके बेटे मोहनदासके साथ खर्चके लिये भेजदे।

शेख अबुलफजलके बेटे शेख अबदुर्रहमानको दो हजारी जात, डेढ़ हज़ार सवारका मनसब और अफजलखांका खिताब दिया गया।

बाग शहरआरा।

१३ (आषाढ़ बदी ५) गुरुवारको बादशाह पुलेमस्तांसे बाग शहर आरा तक दोनोंतरफ रुपये अठन्नियां चवन्नियां लुटाता गया। बागकी शोभा देखकर शराब पीने लगा। बीचमें चारगज चौड़ी एक नदी बहती थी। बादशाहने मौजमें अपने मित्रों और समान वय वालोंसे उसके फलांगनेको कहा। फलांगनेमें कई एक नदी में गिर पड़े। बादशाह फलांग गया तो भी उसको यह लिखना पड़ा कि जिस फुरतीसे ३० वर्षकी अवस्थामें अपने बापके सामने कूदा था अब ४० वर्षकी अवस्थामें नहीं कूद सकता हूं।

फिर पैदल सात बागोंमें फिरा जो काबुलमें मुख्य थे। पके हुए शाह आलू वृक्षोंमें ऐसे भले लगते थे कि मानो लाल और माणिक्य लटक रहे हैं।"

इन सातों बागोंमेंसे शहरआरा बाग तो बाबर बादशाहकी चची और मिरजा अबूसईदकी बेटी शहर बानू बेगमका था। और एक बाग अकबर बादशाहकी बड़ी मा बिग्गा बेगमका और एक बादशाहकी सगी मा मरयममकानीका बनाया हुआ था। पर शहरआरा बाग काबुलके सब बागोंमें श्रेष्ठ था। उसमें पीछेसे भी सुधार होता रहता था। बादशाह लिखता है—उसकी सफाई यहां तक है कि जूता पहने उसके आंगनमें पांव रखना शुद्ध प्रकृति और सुसभ्य बुद्धिसे दूर है।

बादशाहने उसके पास धरती मोल लेकर और उसमें पानी

निकालकर एक नया बाग लगानेका हुक्म दिया जिसका जहांआरा नाम रखा।

बादशाह विशेषकर शहरआरा बागमें कभी सखाओं और कभी बेगमोंके साथ रहा करता था। रातोंको काबुलके मौलवियों और विद्यार्थियोंसे कहता था कि बगरा(१) पकानेकी सभा सजाकर आजाशक(२) नाच नाचें। फिर उन लोगोंको सिरोपाव देकर एक हजार रुपये नकद भी आपसमें बांट लेनेको दिये।

बादशाहने हुक्म देदिया था कि जबतक मैं काबुलमें रहूं प्रति गुरुवारको एक हजार रुपये गरीबों और कङ्गालोंको बांटे जावें।

फिर बादशाहने चिनारके वृक्षोंके बीचमें गज भर लम्बा और पौन गज चौड़ा स्वेत पाषाण खड़ा कराकर उसपर एक तरफ अपना नाम और अपनी पीढ़ियां अमीर तैमूर तक खुदवादीं और दूसरी तरफ यह लिखाया कि हमने काबुलके सब जकात और टैक्स माफ कर दिये। हमारे बेटों पोतोंमेंसे जो कोई उन करोंको लेगा वह ईश्वरके कोपमें पड़ेगा। बादशाहके काबुलमें आनेकी तारीख जो १३ सफर गुरुवार थी वही इस पत्थर पर खोदी गई।

यह टैक्स प्राचीन समयसे लिये जाते थे। बादशाहके आने पर माफ होजानेसे प्रजा बड़ी प्रसन्न हुई।

गजनीन और उसके आसपासके जो मलिक और खान आये थे उनको सिरोपाव मिले और जो उनके काम थे कर दिये गये।

काबुलके दक्षिणको एक पहाड़में एक पत्थरका चबूतरा तख्तशाहके नामसे प्रसिद्ध था। उस पर बैठकर बाबर बादशाह मद्य पिया करता और वहीं एक कुण्ड खुदा हुआ था जिसमें दो मन मदिरा हिन्दुस्थानके तौलकी आती थी। चबूतरेकी दीवार पर

---

(१) आईन अकबरीमें लिखा है कि बगरा एक प्रकारका पुलाव होता था जो मांस बेसन घी खांड और सिरकेसे बनाया जाता था।

(२) इस नाचका अर्थ वर्णन सहित किसी कोषमें न मिला।

यह लेख खुदा था कि यह सिंहासन जहीरुद्दीन मुहम्मदबाबर बादशाहका है जिसका राज्य चिरस्थायी रहे। सन् ९१४ (सं० १५६१)

बादशाहने इसके बराबर एक सिंहासन, और वैसाही एक कुण्ड पत्थर कटवाकर बनवाया और वहां अपना और अमीर तैमूर का नाम खुदवा दिया।

बादशाह जिस दिन इस सिंहासन पर बैठा था। उस दिन दोनो कुण्डोंमें मदिरा भरवा दी गई थी। जो नौकर वहां हाजिर थे उनको पीनेका हुक्म देदिया था।

गजनीनके एक शाइरने बादशाहके काबुलमें आनेकी यह तारीख कही थी।

बादशाहे बलाद हफ्त इकलीम (१)

अर्थात् सात विलायतोंके शहरोंका बादशाह।

बादशाहने उसको इनाम और सिरोपाव देकर यह तारीख भी उसी सिंहासनके पास दीवार पर खुदवा दी।

पचास हजार रुपये शाहजादे परवेजको दिये गये। वजीरुलमुल्क मीरबखशी हुआ और कुलीचखांके नाम हुक्म लिखा गया कि एक लाख १७ हजार रुपये लाहोरके खजानेसे कन्धारके लशकरमें खर्चके वास्ते भेजदे।

चकरीका रईस एक जङ्गको तीरसे मारकर लाया यह जानवर बादशाहने तबतक नहीं देखा था। लिखा है कि पहाड़ी बकरे में और इसमें एक सींगका फर्क है। बकरेका सींग सीधा होता है और जंगका टेढ़ा बलदार।

वाकेआत बाबरी।

काबुलके प्रसंगसे बादशाह वाकेआतबाबरीको पढ़ा करता था। वह बाबर बादशाहके हाथकी लिखी हुई थी। उसके ३२ पृष्ठ बादशाहने अपने हाथसे लिखे और उनके नीचे तुरकी बोलीमें

(१) इसमें सन् १०१८ निकलते हैं और चाहिये १०१६।

समाप्ति लिखी। जिससे जाना जावे कि यह ३२ पृष्ठ उसके लिखे हुए हैं।

बादशाह लिखता है—मैं हिन्दुस्थानमें बड़ा हुआ हूं तो भी तुरकी भाषा बोलने और लिखनेमें असमर्थ नहीं हूं। (१)

काबुलमें पर्य्यटन।

२५ (असाढ़ बदी) को बादशाह बेगमों सहित जलगाह सफेदसंगके देखनेको गया। जो अति सुरम्य और प्रफुल्लित बन था।

२६ (असाढ़ बदी १३) शुक्रवारको बाबर बादशाहकी ज़ियारत करने गया बहुतसा सीरा रोटी और रुपये पितृगणको पुण्य पहुंचानेके लिये फकीरोंको बांटे। मिरजा हिन्दालकी बेटी रुकैया सुलतान बेगमने अबतक बापकी जियारत नहीं की थी। अब वह भी करके कृतार्थ हुई। मिरजा हिन्दालकी क़बर भी वहीं थी।

३ रबीउलअव्वल (असाढ़ सुदी ४) गुरुवारको शाहजादों और अमीरोंने खासेके घोड़े दौड़ाये। एक अरबी बछेरा जो दक्षिणके शाह आदिलखानने भेजा था सब घोड़ोंसे अच्छा दौड़ा।

हजारेके सरदार मिरजा संजर और मिरजा बाशीके बेटे हाजिर हुए जंग नाम जानवरोंको तीरोंसे मारकर लाये थे वैसे बड़े जंग बादशाहने नहीं देखे थे।

बुन्देले।

वरसिंह देव बुन्देलेकी अरजी आई कि मैंने अपने फसादी भतीजेको पकड़ लिया है तथा उसके कई आदमी मार डाले हैं। बादशाहने आज्ञा दी कि उसे गवालियरके किलेमें कैद रखनेके लिये भेजदो।

खुसरोका छूटना।

१२ (असाढ़ सुदी १३) को बादशाहने खुसरोको बुलाकर

(१) वाकेआत बाबरी भी तुरकीमें है।

शहरआरा बाग देखनेके लिये उसके पांवसे वेड़ी खुलवा दी यह काम पितृप्रेमसे हुआ ।

अटकका किला अहमदवेगसे हटाकर जफरखांको दिया गया और ताजखांको जो बंगश जातिके पठानों पर भेजा गया था पचास हजार रुपये दिये गये ।

मानसिंह ।

राजा मानसिंहके पोते महासिंहको भी बादशाहने बंगशको मुहिम पर भेजा और राजा रामदासको उसका शिक्षक बनाया ।

वर्षगांठको तुला ।

१८ शुक्रवार (सावन बदी ४) को बादशाहको ४० वीं सौर वर्षगांठका तुलादान दोपहर पीछे हुआ । उसमेंसे दस हजार रुपये गरीबोंको बांटे गये ।

शाह ईरान ।

सरदारखां हाकिम कन्धारकी अरजी हजारा और गजनीनके रास्तेसे १२ दिनमें पहुंची । लिखा था कि शाह ईरानका एलची जो दरगाहमें हाजिर होनेके लिये आता है हजारेमें पहुंच गया है और शाहने अपने सेवकोंको लिखा है कि कौन दुराचारी बिना हुक्म कन्धार पर गया है जो नहीं जानता है कि हमारे और हजरत अमीर तैमूर और हुमायूं बादशाहकी सन्तानमें क्या सम्बन्ध है । जो वह देश ले भी लिया हो तो मेरे भाई जहांगीर बादशाहके नोकरोंको देकर लौट आवे ।

राना सगर व राय मनोहर ।

१९ (सावन बदी ५) शनिवारको राना शंकर (सगर) का मनसब अढ़ाई हजारी जात दो हजार सवारका, और राय मनोहरका एक हजारी ६०० सवारोंका होगया ।

कुतुबुद्दीन कोकाका मारा जाना ।

२७ रविवार (सावन बदी १४) को शामको इसलामखांको

अरजी जहांगीर कुलीखांकी पत्र सहित जो बिहारसे आया था आगरेसे दरबारमें पहुंची। उसमें लिखा था कि ३ सफर (जेठ सुदी ५) को पहर दिन चढ़े वर्दवानमें अलीकुलीने कुतुबुद्दीनखांको जखमी किया जिससे वह आधीरातको मर गया। यह अलीकुली ईरान के शाह इसमाइलका रसोइया था। शाहके मरे पीछे कुटिलप्रकृति से कन्धारमें भाग आया। वहांसे मुलतानमें पहुंचकर खानखानां से मिला जबकि वह ठट्ठे के ऊपर जाता था। उसने अलीकुलीखांको बादशाही चाकरीमें रख लिया। फिर जब अकबर बादशाह दक्षिण जीतनेको जाता था और जहांगीर बादशाहको राना के ऊपर जानेका हुक्म दिया था तब वह जहांगीसे मिला। जहांगीरने तब तो उसे शेरअफगनका खिताब दिया था और राजसिंहासन पर बैठनेके पीछे बंगालेमें जागीर देकर भेज दिया। वहांसे लिखा आया कि ऐसे दुष्टको इस देशमें रखना उचित नहीं है। इस पर कुतुबुद्दीनखांको लिखा गया कि अलीकुलीखांको हजूरमें भेजे। और जो वह दंगा करे तो दण्ड दे। कुतुबुद्दीनखां तुरन्त उसकी जागीर वर्दवानमें गया। वह दो पुरुषोंसे अगवानीको आया तो खानके नौकरोंने उसे घेर लिया। तब उसने खानसे कहा कि तेरी यह क्या चाल बदल गई है? खानने अपने आदमियोंको अलगकर दिया और बादशाही हुक्म समझानेके लिये अकेला उसके साथ हो गया। उसने तलवार निकालकर दो तीन घाव खानके लगाये और अम्बाखां काशमीरीको भी जो सहायताके लिये आया था जखमी किया। फिर तो कुतुबुद्दीनखांके चाकरोंने उसको भी मार डाला। अम्बाखां उसी जगह मर गया और कुतुबुद्दीनखां चार पहर पीछे अपने डेरेमें मरा।

बादशाह लिखता है—"कुतुबुद्दीनखां कोका प्रियपुत्र भाई और परम मित्रकी जगह था। पर ईश्वरकी इच्छा पर कुछ वश नहीं लाचार सन्तोष किया। पिताकी मृत्युके पीछे कोका और उसकी माताके दुःखके समान और दुःख मुझ पर नहीं पड़ा।

खुर्रमका तुलादान।

२(१) रबीउस्सानी (सावन सुदी ३) शुक्रवारको बादशाह खर्रम के डेरे पर जो "औरते" बागमें था गया। अकबर बादशाह आप तो सालमें दो बार अपने जन्मकी सौर और सौम तिथिको तुला दान करता था और शाहजादोंको एक बार उनके जन्मकी सौर-तिथिको तोलता था। परन्तु इस दिन जो सौमपक्षका सोलहवां साल खुर्रमको लगा था उसको ज्योतिषियोंने भारी बताया था और वह कुछ बीमार भी था इस लिये बादशाहने उसको सोने चांदी और धातु आदि पदार्थोंमें विधिपूर्वक तौलकर वह सब माल पुण्य करा दिया।

काबुलसे कूच।

४(२) रबिउलअव्वल (सावन सुदी५) को बादशाहने हिन्दुस्थान जानेके लिये बाहर डेरे कराये और कुछ दिन पीछे आप भी काबुल से "जलगाह संगसफेद"में आगया। उसने काबुलके मेवों और विशेष कर साहबी और किशमिशी जातिके अंगूरों, शाह आलू, जर्द आलू और शफतालूकी बहुत प्रशंसा की है। अपने चचाके लगाये हुए जर्द आलूको सबसे अच्छा बताया है। एक बड़े फलको तोलमें २५ रुपये भरका कहा है। अन्तमें लिखा है कि काबुली मेवोंके सरस होने पर भी मेरी रुचिमें उनमेंसे एक भी आमके स्वादको नहीं पहुंचता है।

एक समय बादशाहने चलते चलते देखा कि अलीमसजिद और गरीबखानेके पास एक बड़ी मकड़ीने जो केंकड़ेके बराबर थी डेढ़ गज लम्बे सांपको गला पकड़कर अधमरा कर रखा था। बादशाह यह तमाशा देखनेको ठहर गया। थोडी देरमें सांप मर गया।

---

(१) मूलमें ६ गलत लिखी है पृ० ५५।

(२) मूलमें ४ जमादिउलअव्वल गलत है रबीउस्सानी चाहिये पृष्ठ ५५।

पुरानी लोथ।

बादशाहने काबुलमें सुना था कि सुलतान महमूद गजनवीके समयमें जुहाक और बामियां स्थानोंके बीचमें ख्वाजा याकूत नाम एक मनुष्य मरा था जो एक गुफामें गडा हुआ है। उसका शरीर अबतक नहीं गला है।" इस पर आश्चर्य करके अपने भरोसेके एक समाचार लिखनेवाले और एक जर्राहको बादशाहने भेजा। उन्होंने वापिस आकर निवेदन किया कि उसका आधा अंग जो जमीन से लगा हुआ है गल गया है और आधा जो नहीं लगा है वैसाही बना है। हाथोंके नख और बाल नहीं गिरे हैं एक ओरकी डाढ़ी मोंछ भी ठीक है। गुफाके द्वार पर तिथि भी खुदी हुई है। उससे सुलतान महमूदके पहिले उसका मरना प्रगट होता है। पर इस बातको कोई यथार्थरूपसे नहीं जानता।

मिरजाहुसैन।

१५ (भादों बदी २) गुरुवारको काहमर्दके हाकिम अरसलांबेगने जो तूरानके स्वामी वलीमुहम्मदखांका नौकर था हाजिर होकर सलाम किया और एक मनुष्यने मिरजा शाहरुखके बेटे मिरजाहुसैन को अरजी लाकर दी और प्याजी रङ्गका एक लाल भेट किया जो १००) का था। अर्जीमें लिखा था कि यदि कुछ फौज मिले तो बदख्शांको उजबकोंसे फतह करलूं। परन्तु बादशाह कभीसे सुना करता था कि मिरजाहुसैनको उज्बकोंने मारडाला है इसलिये जवाबमें लिखा कि जो तू वास्तवमें शाहरुखका बेटा है तो सेवामें उपस्थित हो फिर फौज देकर तुझे बदख्शांको बिदा करेंगे।

बंगश।

दो लाख रुपये उस सेनाकी सहायताके लिये भेजे गये जो महासिंह और रामदासके साथ बंगशके सरकश पठानों पर भेजी गई थी।

बालाहिसार।

२२ (भादों बदी ८) गुरुवारको बादशाहने बालाहिसार(१)के

(१) काबुलके किलेका नाम है।

मकानोंमेंसे किसीको भी अपने रहनेके योग्य न देखकर हुक्म दिया कि उनको गिराकर बादशाहोंके राजभवन और दीवानखाने बनावें ।

अस्तालिफ नाम खानसे आये हुए शफतालुओंमेंसे एक तोलमें ६२ रुपये अकबरी (६० तोले) का हुआ उसको गुठलीका गूदा भी मीठा था ।

शाहरुखकी मृत्यु ।

२५ (भादों वदी १२) को मालवेसे मिरजा शाहरुखके मरनेकी खबर आई । यह बदखशांका अमीर था । २५ वर्ष पहिले अकबर बादशाहके समयमें आया था और जबसे अबतक विनयपूर्वक सेवा करता रहा था । उसके चार बेटे हसन, हुसैन, सुलतानमिरजा और बदीउज्जमानमिरजा थे । हुसैन तो बुरहानपुरसे भागकर ईरानकी राह से बदखशांको चला गया था । बदखशियोंने उसे अपना स्वामी बना कर बहुतसा अंश अपने देशका उजबकोंसे छीन लिया था । उजबकों ने उसको मारडाला फिर बदखशियोंने दूसरे आदमीको मिरजा हुसैनके नामसे अपना मुखिया बना लिया । इस प्रकार कई मनुष्य मिरजाहुसैन बने मारे गये और फिर जीगये । उनमेंसे एक मिरजा हुसैनको अर्जीका आना ऊपर लिखा गया है ।

सुलतान मिरजाको बादशाहने अपने पास रखकर बेटोंके समान पाला था राज्याभिषेकके पीछे दो हजारी जात और हजार सवारोंका मनसब दिया था । उसीको अब मालवे भेजा और बदीउज्जमानको हजारी जात और ५०० सवारोंका मनसब दिया ।

हांकेका शिकार ।

बादशाहने काबुलमें आनेके पीछे हांकेका शिकार नहीं खेला था इसलिये अब फर्क नामक पहाड़को जो काबुलसे ७ कोस पर है घिरवाकर ४ जमादिउलअव्वल (भादों सुदी ६) मंगलवारको वहां गया । सौ हरन निकले उनमेंसे ५० शिकार हुए और पांच हजार रुपये हांकेवालोंको इनाम दिये गये ।

शेख अबुलफजलके बेटे अबदुर्रहमानका मनसब बढ़कर दो हजारी जात और दो हजार सवारका होगया।

बाबर बादशाहका सिंहासन।

६ (भादों सुदी ८) गुरुवारको जिसके तड़केही काबुलसे कूच होनेवाला था बादशाह ईदकी चान्दरातके समान पुनीत समझकर बाबर बादशाहके सिंहासनके निकट गया और वहां जो पत्थरमें कुछ खोदा गया था उसको मदिरासे भरकर सभासदोंको प्याले दिये। वह दिन बहुत आनन्द और हर्षमें बीता।

काबुलसे कूच।

७ (भादों सुदी ९) शुक्रवारको एक पहर दिन चढ़े बादशाह बाग शहरआरासे "जलगाह संगसफेद" तक दोनों हाथोंसे द्रव्य और चरन लुटाता गया।

११ (भादों सुदी १३) मंगलवारको एक कोस पर गिरामीमें और १८ मंगलवार (आश्विन वदी ६) को २॥ कोस पर नचाकमें डेरे हुए। यहां फिर हांकेका शिकार हुआ ११२ पशु मारे गये। जिनमें जङ्ग जातिके २४ हरन थे जो अबतक बादशाहने नहीं देखे थे। एक जङ्ग तोलमें २ मन १० सेरका हुआ और इतना भारी होकर भी ऐसा दौड़ता था कि १०।१२ कुत्ते दौड़ते दौड़ते थक गये थे तब कहीं बड़ी मुशकिलोंसे उसे पकड़ सके थे।

खुसरोका फिर कैद होना।

बादशाहने खुर्रमसे यह सुनकर कि खुसरो उसके प्राण लेनेके विचारमें है उसको हकीम अबुलफतहके बेटे फतहुल्लह सहित कैद कर दिया। गयासुद्दीनअली, आसिफखांके बेटे नूरुद्दीन और एतमादुद्दौलाके बेटे शरीफखांको जो उससे मिले हुए थे मरवा डाला।

हकीम मुजफ्फर।

२२ जमादिउलअव्वल (आश्विन बदी १०) शनिवारको हकीम मुजफ्फर अरदस्तानीके मरनेकी खबर पहुंची। यह अपनेको

यूनानी हकीम जालीनूसके वंशमें बताता था। ईरानके शाह तुहमास्पने इसके विषयमें कहा था कि अच्छा हकीम है आओ हम सब बीमार होजावें।

२४ जमादिउलअव्वल (आश्विन बदी १२) को बागवफा और नीमलेके बीचमें शिकार हुआ।

२ जमादिउस्सानी (आश्विन सुदी ३) को बागवफामें डेरे हुए।

अरसलांबेग उजबक जो अबदुल मोमिनखांके अमीरोंमेंसे किले काहमर्दका हाकिम था किला छोड़कर बादशाहकी सेवामें हाज़िर आया।

४ जमादिउस्सानी (आश्विन सुदी ५) को जलालाबादके हाकिम इज्जतखांको हांकेके शिकारका बन्दोबस्त करनेके वास्ते हुक्म दिया गया। तीन सौ जानवर शिकार हुए। गर्मी बहुत होनेसे अच्छे अच्छे शिकारी कुत्ते मर गये।

१२ (आश्विन सुदी १४) गुरुवार(१) को सराय अकोरामें डेरे हुए। शाह बेगखां हाकिम कन्धारने आकर मुजरा किया।

१४ शनिवार(२) (कार्त्तिक बदी १) को बादशाहने उड़ीसेकी सूबेदारी दी।

मिरजा बदीउज्जमान।

इसी दिनको यह खबर आई कि मिरजा शाह रुखका बेटा बदीउज्जमान मालवेसे भागकर रानाके पास जाता था परन्तु वहांके हाकिम अबदुल्लहखांने पीछा करके पकड़ लिया और उसके कई साथियोंको मार डाला। बादशाहने हुक्म दिया कि एहतमाम खां आगरेसे जाकर मिरजाको हजूरमें ले आवे।

तूरान।

२५ (कार्त्तिक बदी १२) को खबर पहुंची कि वलीमुहम्मदखांके

(१) मूलमें शनि भूलसे लिखा है।

(२) मूलमें चन्द्र भूलसे लिखा है।

भतीजे इमामकुलीखांने मिरजा शाहरुखके बेटे हुसैनको मार डाला है। बादशाह लिखता है कि मिरजा शाहरुखके बेटोंको मारना मानो दैत्यका काम होगया है जैसा कि कहते हैं कि एक दैत्यके लोहूकी हरेक बून्दसे दूसरा दैत्य उत्पन्न होजाता है।

दिलाजाक और गक्खड़।

जफरखां दिलाजाक पठानों और गक्खड़ोंके एक लाख घरोंको, जो अटक और व्यास नदीके बीचमें उपद्रव मचाया करते थे लाहोर की तरफ कूच कराकर धर्म्मके डेरोंमें बादशाहके पास आगया।

अकबर बादशाहका तुलादान।

रज्जबके लगतेही जो अकबर बादशाहके जन्मका महीना है बादशाहने एक लाख रुपये जो उनके सौर और सौम्य दोनोंके दोनों तुलादानोंके थे आगरा दिल्ली लाहोर और गुजरात आदि १२ शहरोंमें उनकी आत्माको प्रसन्न करनेके लिये पुख्यार्थ बांटनेको भेज दिये।

पदवी।

३ रज्जब (कार्तिक सुदी ५) गुरुवारको बादशाहने खानजहांकी पदवी सलाबतखांको और खानदौरांको काबुलके सूबेदार शाहबेग को, हाथी घोड़े और सिरोपाव सहित दी। काबुल, तिराह, बंगशको तमाम सरकार और स्वात बिजोरकी विलायत खानदौरांको जागीर में लगाई और पठानोंके दबानेके वास्ते फौजदारी भी उस प्रान्तकी उसीको प्रदान की। रामदास कछवाहा भी उन्हीं परगनोंमें जागीर पाकर इस सूबेके सहायकोंमें नियत हुआ।

मोटे राजाके बेटे किशनसिंहका मनसब हजारी जात और ५०० सवारोंका होगया।

शिकार।

बादशाहने रास्तेमें कई जगह लाल हरनोंका शिकार खेला जो बाबाहसन अब्दाल रावलपिण्डी रुहतास करखाक और नन्दनेके सिवा कहीं नहीं होते हैं। कुछ जीते हरन भी पकड़े कि उनसे

उन जातिके बच्चे पैदा कराये जावें। इन शिकारोंमें बेगमें भी शामिल थीं।

२५ (अगहन बदी १२) को कुतलासकी तलहटीमें जलालखां गक्खड़के चचा शमुसखांकी साधुताका बखान सुनकर बादशाह उसके घर गये। दो हजार रुपये उसको और इतनेही उसकी स्त्रियों बालकोंको देकर पांच आबाद गांव उसकी जीविकाके वास्ते दिये।

६ शाबान (अगहन सुदी ८) को अमीरुलउमरा अच्छा होकर जखड़ाले(१) में बादशाहके पास हाजिर हुआ। सब मुसलमान हकीम और हिन्दू वैद्य कह चुके थे कि वह न बचेगा। उसे अच्छा देखकर बादशाहको बहुत हर्ष हुआ।

राय रायसिंह।

राय रायसिंह जो बड़े राजपूत अमीरोंमेंसे था अमीरुलउमरा की सुफारिशसे दरबारमें उपस्थित हुआ। बादशाहने उसके अपराध क्षमा करके उसका अगला मनसब जागीर सहित बहाल कर दिया। जब बादशाह खुसरोके पीछे गया था तो रायसिंह पर भरोसा करके उसे आगरेमें छोड़ा था और कहा था कि महलके लोग बुलाये जावें तो उनके साथ आवे। परन्तु जब ऐसा अवसर आया तो दो तीन मंजिल तक साथ रहकर मथुरासे अपने देशको चला गया और देखने लगा कि यह उपद्रव जो उठा है कहांतक फैलता है। कुछ दिनों पीछे जब खुसरो पकड़ा गया तो रायसिंह बहुत लज्जित हुआ और अमीरुलउमराका वसीला पकड़ा।

बादशाह लाहोरमें।

१२ (अगहन सुदी १५) चन्द्रवारको बादशाह दिलामेजबागमें जो रावी नदी पर था पहुंचकर अपनी मातासे मिला। मिरजागाजी कन्धारसे आया।

१३ (पौष बदी १) मंगलवारको बादशाहने लाहोरमें प्रवेश किया।

(१) जखड़याला।

खुर्रमका मनसब और जागीर।

बादशाहने दीवानोंको आज्ञा की कि खुर्रमको ८ हजारी जात और ५ हजार सवारोंके अनुसार जागीर तो उज्जैनमें दें और सरकार फीरोजा (१) उसकी तनखाहमें लगा देवें।

आसिफखां वजीर।

२२ (पौष बदी ८) गुरुवारको बादशाह बेगमों सहित आसिफखां वजीरके घर गया। रातको वहीं रहा। उसने १० लाख रुपयेकी भेट जवाहिर जड़ाऊ गहनों हाथी घोड़ों और कपड़ों आदिकी बादशाहको दिखाई। बादशाहने कुछ लाल कुछ याकूत कुछ चीनके बढ़िया कपड़े पसन्द करके लेलिये और शेष पदार्थ उसीको बख्श दिये।

लालकी अंगूठी।

मुरतिजाखांने गुजरातसे एकही लालकी बनी हुई पूरी अंगूठी भेजी जो तोलमें एक टांक और एक रत्तीकी थी। रङ्गत और घड़त भी उसकी बहुत उत्तम थी उसके साथ एक लाल भी २ टांक और १५ रत्तीका था। बादशाहको यह अंगूठी बहुत पसन्द आई। वह लिखता है कि ऐसी अंगूटी किसी बादशाहके हाथमें नहीं सुनी गई थी।

मक्का।

मक्केके शरीफ (महन्त) ने विनयपत्र और काबे(२) का परदा भेजा। बादशाहने लानेवालेको ५ लाख दाम दिये और शरीफके वास्ते एक लाख रुपयेके उत्तम पदार्थ भेजे।

कन्धार।

१४(३) रमजान (माघ बदी १) गुरुवारको कन्धारमें अच्छा

---

(१) हांसी हिसार।

(२) पूज्यस्थान मुसलमानोंका।

(३) मूलमें लेखकके दोषसे १० लिखी है।

काम करनेके इनाममें मिरजागाजीका मनसब पूरा पांच हजारी और पांच हजार सवारका होगया। टट्टेका सारा देश उसके पट्टेमें था तोभी सुलतानके सूबेमें कुछ जागीर उसको मिली। कन्धारकी हुकूमत भी जो सीमा प्रान्तका सूबा था उसको समर्पित हुई। बिदा होते समय तलवार और सिरोपाव भी मिला यह मिरजा फारसी भाषाका कवि भी था।

खानखानाकी भेट।

१५ (माघ बदी ३) को खानखानांकी भेट बुरहानपुरसे पहुंची ४० हाथी कुछ जवाहिर कुछ जड़ाऊ चीजें तथा विलायत और दक्षिणके बने हुए कपड़े थे। सबका मूल्य डेढ़ लाख रुपये हुआ। ऐसीही उत्तम भेटें दूसरे अमीरोंने भी भेजी थीं जो उस देशमें नौकरी पर थे।

राय दुर्गाकी मृत्यु।

१८ (माघ बदी ५) को राय दुर्गाके मरनेकी खबर पहुंची। बादशाह लिखता है कि यह मेरे पिताका बड़ा किया हुआ था। ४० वर्षसे अधिक उनकी सेवामें रहा और बढ़ते बढ़ते चार हजारी मनसब तक पहुंचा। मेरे पिताकी सेवामें आनेसे पहिले राना उदयसिंहका प्रतिष्ठित सेवक था और सिपाहगरीकी समझ अच्छी रखता था।

सुलतानशाह पठान।

खुसरोका भेदू सुलतानशाह पठान खिजराबादके पहाड़से पकड़ा आया। बादशाहने उसको लाहौरके मैदानमें तीरोंसे मरवा डाला।

मुहम्मदअमीनसे मिलना।

१ शब्वाल (माघ सुदी २) को बादशाह मुहम्मदअमीन नामक एक साधुसे जाकर मिला और उसके उपदेशसे सन्तुष्ट होकर एक हजार बीघे जमीन और एक हजार रुपये देआया। हुमायूं बादशाह भी इस साधुसे बहुत भाव रखता था।

लाहोरसे कूच।

रविवार(१) को पहर दिन चढ़े बादशाहने लाहोरसे कूच किया कुलीचखांको हाकिम, और कवामुद्दीनको दीवान, शेख यूसुफको बख्शी और जमालुल्लहको कोतवाल करके हरेकको यथायोग्य सिरोपाव दिया।

२५ शव्वाल (फागुन बदी ११) को सुलतानकी नदीको उतरकर नकोदरसे २ कोस पर पड़ाव हुआ। अकबर बादशाहने तुलादानके कोषमेंसे शेख अबुलफजलको बीस हजार रुपये इन दोनों परगनों के बीचमें पुल बांधकर पानी रोकनेके लिये दिये थे। बादशाह लिखता है—"सच यह है कि यह जगह बड़ी साफ और हरी भरी है।" उसने नकोदरके जागीरदार मोअज्जुलमुल्कको हुक्म दिया कि इस पुलके एक तरफ बगीचा और मकान बनावे जिसको देख कर आने जानेवाले प्रसन्न हों।

पानीपत और करनालके बीचमें मुसाफिरोंको दो सिंह सताया करते थे। बादशाहने १४ रविवार(२) (चैत्र बदी १) को दोनों सिंह हाथियोंके हलकेमें घेरकर बन्दूकसे मार दिये। रस्ता जो बन्द होरहा था खुल गया।

दिल्लीमें प्रवेश।

१८ (चैत्र सुदी ५) गुरुवारको बादशाह दिल्लीमें पहुँचकर सलेमगढ़में उतरे जिसे सुलतान सलेमशाह पठानने यमुनाके बीचमें

(१) इस रविवारको क्या तिथि थी यह मूलमें नहीं लिखी है शव्वालकी १ तारीख माघ सुदी २ शनिवारको थी। पीछे एक रविवार तीजको, दूसरा एकादशीको, तीसरा फागुन बदी २ को और चौथा नवमीको था। इन चारों रविवारोंमेंसे किस रविवारको कूच किया ? सुलतानपुर लाहोरके पास है इससे सम्भव है कि फागुन बदी २ या नवमीको कूच किया होगा।

(२) मूलमें भूलसे सोमवार लिखा है।

बनाया था और अकबर बादशाहने मुरतिज़ाखांको बख्श दिया था जो दिल्लीका रहनेवाला था। मुरतिज़ाखांने यमुनाके तीर पर एक बड़ा चबूतरा पत्थरोंका बनाया था जिसके नीचे पानीसे मिली हुई एक चोखंडी काशी(१) के कामकी हुमायूं बादशाहके हुक्मसे बनाई गई थी। उसके समान हवादार स्थान कम था। हुमायूं बहुधा अपने सखाओं और सभासदों सहित वहां बैठा करता था।

बादशाहने ४ दिन तक उस स्थानमें रहकर अपने सखाओंके साथ खूब मद्य पान किया। उसका विचार सरकार पालमके रमनों में हाकेका शिकार खेलनेका था। पर राजधानीमें प्रवेश करनेका मुहूर्त्त निकट आगया था और दूसरा मुहूर्त्त इन दिनोंमें नहीं था इसलिये उसने नौकामें बैठकर जलके रस्तेसे आगरेको प्रस्थान किया।

चैत्र बदी ७ को मिरज़ा शाहरुखकी सन्तानमेंसे ४ लड़के और २ लड़कियां जो अकबर बादशाहको नहीं दिखाई गई थीं बादशाहके पास लाई गईं। बादशाहने लड़के तो अपने विश्वासपात्र अमीरोंको सौंपे और लड़कियां अन्तःपुरकी टहलनियोंको पालने के वास्ते दीं। 10575

राजा मानसिंह।

२० (चैत्र बदी ८) को राजा मानसिंह ६।७ फरमानोंके पहुंचने पर सूबे बिहारके किले रुहतासमे आकर बादशाहकी सेवामें उपस्थित हुआ। बादशाह लिखता है—"यह भी खानआजमके समान इस राज्यके पुराने खुर्रांट भेड़ियोंमेंसे है। जो कुछ इन लोगोंने मेरे साथ और मैंने इनके साथ किया है उसको ईश्वर जानता है। शायद कोई मनुष्य किसी मनुष्यसे इतनी टाला नहीं दे सकता है। राजाने १०० हथिनी और हाथी भेट किये जिनमेंसे एक भी ऐसा न था जो खासेके हाथियोंमें रखा जाता। पर यह मेरे पिताके कृपापात्रोंमेंसे था इसलिये मैं उसका अपराध उसके मुंह पर नहीं लाया और बादशाहोंकीसी दया मया करके उसका मान बढ़ाया।

(१) पच्चीकारी।

तीसरा नौरोज।

२ ज़िलहज्ज (चैत्र सुदी ५) गुरुवारको सूर्य मेख राशिमें आया। बादशाहने रंगते गांवमें नौरोजका उत्सव करके खानजहांको पांच हज़ारी जात पांच हजारका मनसब और ख्वाजाजहांको बख़्शीका पद दिया और वज़ीरखांको बंगालेसे बदलकर अबुलहसनको उसकी जगह भेजा।

५ जिलहज्ज (चैत्र सुदी ८) शनिवारको मध्यान्ह कालमें बादशाह पांच हज़ार रुपयेकी रेजगी अपने दोनों हाथोंसे लुटाता हुआ आगरेके किलेमें गया।

सफ़ेद चीता।

राजा वरसिंहदेवने एक सफ़ेद चीता भेट किया। बादशाहने और पशु पक्षी तो सफ़ेद रंगके देखे थे पर चीता नहीं देखा था। इसलिये विशेष रूपसे उसका वर्णन अपने ग्रन्थमें किया है।

रावरतन हाडा।

इन्हीं दिनोंमें भोज हाडाके बेटे रावरतनने जो राजपूत जातिके बड़े अमीरोंमेंसे था हाजिर होकर ३ हाथी नजर किये। उनमेंसे एक जो सबसे बड़ा था १५ हजार रुपयेका सरकारमें आंका गया और खासेके हाथियोंमें रखा गया। बादशाह लिखता है—"मैंने उसका नाम रतन गज रखा। हाथीका मोल हिन्दुस्थानके राजोंमें पचीस हज़ार रुपयेसे अधिक नहीं होता है लेकिन आजकल हाथी बहुत मंहगे होगये हैं। रतनको मैंने सरबलन्दरायके खिताबसे सम्मानित किया।

भावसिंह।

भावसिंहका मनसब दो हज़ारी जात और सौ सवारका होगया।

राजा सूरजसिंह।

२५ (वैशाख वदी ११) को राजा सूरजसिंहने हाजिर होकर नजर न्यौछावरकी। वह राना अमराके चचेरे भाई श्यामसिंहको

भी साथ लाया था जिसके विषयमें बादशाह लिखता है—"कुछ शअरदार है हाथीकी सवारी अच्छी जानता है।"

"राजा सूरजसिंह हिन्दीभाषाके एक कविको भी लाया था जिसने मेरी प्रशंसामें इस भावकी कविता भेट की—जो सूरजके कोई बेटा होता तो सदाही दिन रहता रात कभी न होती। क्योंकि सूरजके अस्त होने पर यह लड़का उसका प्रतिनिधि हो जाता और जगतको प्रकाशमान रखता। परमेश्वरका धन्यवाद है कि उसने आपके पिताको ऐसा पुत्र दिया जिससे उनके अस्त होने के पीछे मनुष्योंमें शोकरूपी रात्रि नहीं व्यापी। सूरज बहुत पश्चात्ताप करता है कि हाय मेरा भी कोई ऐसा बेटा होता कि मेरी जगह बैठकर पृथ्वीमें रात न होने देता! जैसा कि आपके भाग्यके तेज और न्यायके तपसे ऐसी भारी दुर्घटना हो जाने पर भी संसार इस प्रकारसे प्रकाशमय होरहा है कि मानो रातका नाम और पताही नहीं है—ऐसी नई उक्ति हिन्दीभाषाके कवियोंकी कम सुनी गई थी। मैंने इसके इनाममें उस कविको हाथी दिया। राजपूत लोग कविको चारण(१) कहते हैं। इस समय के एक फारसीके कविने इस कविताके भावकी फारसी कविता की है।"

---

(१) राजपूत कविको चारण नहीं कहते चारण तो एक जाति है जो विशेष करके कविता करती है।

चौथा वर्ष।

सन् १०१७।

वैशाख सुदी ३ संवत् १६६५ से चैत्र सुदी १ संवत् १६६६ तक।

जलाल मसऊदकी विचित्र मृत्यु।

८ मुहर्रम (वैशाख सुदी १०) गुरुवारको जलालमसऊद जिसको चार सदी जातका मनसब मिला हुआ था और कई लड़ाइयोंमें वीरतासे काम करचुका था ५०।६० वर्षकी अवस्थामें दस्तोंसे मर गया। जहांगीर लिखता है—"यह अफीमको टुकड़े टुकड़े करके खाया करता था और बहुधा अपनी माके हाथसे भी अफीम खाता था। जब मरने लगा तो उसकी मा भी अति मोहसे बहुतसी वही अफीम जो बेटेको खिलाया करती थी खाकर उसके मरनेसे एक दो घड़ी पीछे मर गई। अबतक किसी माकी बेटेसे इतनी ममता नहीं सुनी गई थी। हिन्दुओंमें रीति है कि स्त्रियां पतिके मरने पर प्रेम या अपने बाप दादाकी कीर्त्ति तथा लोकलाजसे जल जाती हैं परन्तु हिन्दू मुसलमानोंकी किसी मासे ऐसा काम नहीं हुआ(१)।

---

(१) जहांगीरके इस निश्चयके अनुसार बहुतसे हिन्दू मानते हैं कि मा बेटेके साथ सती नहीं होती। जैसा कि इस सोरठेसे प्रतीत होता है—

सगो सगाई नांह, मोह पगो सोही सगो।
यह अचरज जग मांह, मा बैठी तिरिया जले॥

पर मारवाड़में प्राचीनकालमें बेटे पोतोंके साथ भी स्त्रियां सती हुई हैं। इसका प्रमाण वह प्राचीन पुनीत पाषाण देते हैं जो उन की चिताओं पर सैकड़ों वर्षसे खड़े हैं। उस पर तिथि संवत् नाम ठाम और संक्षिप्त वृत्तान्त उन सत्यवती स्त्रियोंका खुदा हुआ है जो अपने बेटे या पोतोंके मोहसे उनकी लाशको गोदमें लेकर जल

मानसिंहका घोड़ा।

१५ (जेठ बदी १) को बादशाहने एक घोड़ा जो सब घोड़ोंमें उत्तम था परम प्रीतिसे राजा मानसिंहको दिया। बादशाह लिखता है—"इस घोड़ेको ईरानके शाह अब्बासने कई दूसरे घोड़ों और उत्तम सौगातों सहित अपने विश्वासपात्र दास मनूचिहरके हाथ मेरे पिताके पास भेजा था। इस घोड़ेके देनेसे राजाने इतनी प्रसन्नता और प्रफुल्लता प्रगट की कि यदि मैं एक राज्य भी उसको देता तो भी शायदही इतना आनन्द उत्साह दिखाता। यह घोड़ा यहां आया उस समय ४ वर्षका था। जब बड़ा हुआ तो सब मुगल और राजपूत चाकरोंने कहा कि इराक(१) से कोई ऐसा घोड़ा हिन्दुस्तानमें नहीं आया है। जब मेरे पिता खानदेश और दक्षिण मेरे भाई दानियालको देकर आगरेको आने लगे तो अति कृपासे दानियालको आज्ञा की कि एक वस्तु जो तेरी मनचाही हो मुझसे मांग। उसने अवसर पाकर यह घोड़ा मांगा और उन्होंने उसको दे दिया था।"

गई। ऐसी सतियोंको मा-सती और पोता-सती कहते हैं। पतिके साथ जलनेवालीको पदवी महासती है। इन घटनाओंके जो चित्र पत्थरों पर दिये जाते थे उनमें पहचानके लिये सतियोंकी मूर्त्तियां भी भिन्न भिन्न रूपसे खोदी जाती थीं। पतिके साथ जलनेवाली की मूर्ति पतिके घोड़ेके आगे खड़ी और कहीं पतिके सामने बैठी बनाई जाती थी। बेटे पोतोंके साथ जलनेवालियोंके चित्रमें वह मृत बालक उनकी गोदमें दिखाये जाते थे। ऐसे कितनेही चित्र अब भी महासती मासती और पोता सतियोंके पत्थरों पर खुदे हुए मारवाड़के कितनेही गांवोंमें मौजूद हैं। उनका हाल हमने एक अलग पुस्तकमें लिखा है।

(१) ईरानको अरब लोग ईराक कहते थे इसीसे ईरानी घोड़े का नाम इराकी होगया था।

जहांगीरकुलीको मृत्यु।

२० (जेठ बदी ७) मंगलको इसलामखांकी अरजीसे जहांगीर-कुलीखां सूबेदार बंगालेके मरनेका वृत्तान्त सुनकर बादशाहको रंज हुआ। यह उसका निजदास था और सुयोग्यतासे बड़े अमीरोंकी पांतिमें जा मिला था। बादशाहने बंगालेका शासन और शाहजादे जहांदारका संरक्षण इसलामखांको सौंपा और अफजलखांको उसकी जगह बिहारकी सूबेदारी पर भेजा।

करनाटकके बाजीगर।

हकीमअलीका बेटा बुरहानपुरसे करनाटकके कई बाजीगरोंको लाया जो १० गोलियोंका खेल करते थे। बड़ीसे बड़ी गोली नारङ्गीके और छोटी घूंघचीके समान थी। पर एक भी इधर उधर नहीं होती थी। ऐसेही और भी कई करतब करते थे जिनको देखकर बुद्धि चकित होजाती थी।

देवनक पशु।

ऐसेही सिंहलद्वीपसे एक फकीर देवनक नामका एक पशु लाया जिसकी सूरत बन्दरसे मिलती थी परन्तु पूंछ न थी। और काला बनमानसकीसी करता था। बादशाहने उसके कई चित्र खिचवाये जिनमें उसके कितनेही चरित्रोंको अङ्कित किया गया था।

फरङ्गी पर्दा।

मुकर्रबखांने खम्भात-बन्दरसे फरंगियोंका बनाया एक पर्दा भेजा। बादशाहने फरंगियोंका बनाया हुआ उतना कारीगरीका काम और कोई नहीं देखा था।

नजीबुन्निसा बेगम।

बादशाहको चची या फूफी (क्योंकि दोनोंके वास्ते अरबीका एकही शब्द है) ६१ वर्षकी अवस्थामें मर गई। बादशाहने उसके बेटे मिरजावालीको हजारी ज़ात और दोसौ सवारोंका मनसब दिया।

रूमका ज़ालिम दूत।

तूरानका अक़म नामका एक हाजी रूममें था वह अपनेको रूमके ख़ुांदगार(१) (सुलतान) का दूत बनाकर आगरेमें बादशाह की सेवामें उपस्थित हुआ। एक ऊलजलूल पत्र भी उसके पास था। दरगाहके बन्दोंने उसके स्वरूप और दशाको देखकर उसके दूत होनेमें सन्देह किया। जहांगीर लिखता है—"हजरत अमीर तैमूरने रूमको जीता था। वहांका हाकिम एलद्रुमबायजीद पकड़ा आया। अमीरने उससे भेट और रूमकी सालभरकी उपज लेकर वह देश पूर्ववत उसके अधिकारमें रहने दिया। एलद्रुम-बायजीद उन्हीं दिनोंमें मर गया और अमीर तैमूर उसके बेटे मूसा चिलपीको वहांका देशाधिपति करके लौट आये। जबसे अबतक ऐसे उपकारके होते हुए भी वहांके कैसरों(२) की तरफसे कोई नहीं आया न उन्होंने कोई दूत भेजा। अब क्योंकर प्रतीत होसके कि यह मावरुन्नहर (तूरान) का पुरुष ख़ुांदगारका भेजा हुआ है। यह बात मेरी समझमें नहीं आई और न किसीने उसकी साक्षी दी। इसलिये मैंने कह दिया कि जहां जाना चाहता हो चला जावे।"

बादशाहका ब्याह।

४ रबीउलअव्वल (अषाढ़ सुदी ६) को बादशाहका ब्याह राजा मानसिंहके बड़े बेटे जगतसिंहकी बेटीसे मरयममकानीके महलमें हुआ। राजा मानसिंहने जो दहेज दिया उसमें ६० हाथी भी थे।

राणा।

बादशाहको राणाका विजित करना अवश्य था इसलिये महाबतखांको इस लड़ाई पर नियत किया और निम्नलिखित सेना और रुपये उसे दिये—

(१) मुगलोंकी तवारीखमें सुलतान रूम ख़ुान्दगार लिखे जाते थे।

(२) रूमके सुलतानको कैसर भी कहते हैं।

सजे हुए सवार अनुभवी सरदारों सहित	१२०००
अहदी	५००
पियादा बंरकन्दाज (बन्दूकची)	२०००
गजनाल और शुतुरनाल तोपें	१७०
हाथी	६०
नकद रुपये	२० लाख

बुरहानपुरके आम।

बुरहानपुरके बख्शीने कुछ आम भेजे थे उनमेंसे एक ५२ तोले का हुआ।

सङ्गयशमका प्याला।

मुहतरखांके बेटे मूनसखांने यशम जातिके पत्थरका एक श्वेत और स्वच्छ प्याला भेट किया जो मिरजा उलगबेग गोरगांके वास्ते बनवाया गया था और जिस पर मिरजाका नाम साल सहित खुदा था। बादशाहने भी अपना और अपने पिताका नाम उसकी कोर पर खुदा दिया।

संग्रामका देश।

१६ रबीउस्सानी (भादों बदी ३) बुधवारको हुक्म हुआ कि संग्रामका देश जो एक सालके लिये इसलामखांको इनाममें दिया गया था। एक साल अफजलखां सूबेदार बिहारके इनाममें भी रहे।

राणाकी लड़ाई।

इसी दिन महावतखां तीन हजारी जात और अढ़ाई हजार सवारका मनसब सिरोपाव खासाहाथी और जड़ाऊ तलवार सहित पाकर भादों बदी १२ को बिदा हुआ। उसके साथ जफरखां, शुजा-अतखां, राजा बरसिंहदेव, मंगलीखां, नरायणदास कछवाहा, अलीकुली, बरमन, हुजब्रखां तुहमतन, बहादुरखां और मुअज्जुल मुल्क बख्शी आदि अमीर और सरदार उसके साथ गये। सबको यथायोग्य खासे सिरोपाव जड़ाऊ तलवारें और झंडे वगैरह मिले राजा बरसिंहदेवको खिलअत और खासेका घोड़ा मिला।

खानखानां।

इसी दिन पहरदिन चढ़े खानखानां जो बादशाहका अतालीक (शिक्षक) था बुरहानपुरसे आया उसके ऊपर हर्ष और उत्साह ऐसा छाया हुआ था कि पांवसे आता है या सिरसे यह कुछ नहीं जानता था और व्याकुलतासे बादशाहके चरणोंमें गिर पड़ा। बादशाहने भी दया करके उसका सिर उठाकर छातीसे लगाया और मुंह चूमा। उसने मोतियोंकी माला कई लाल और पन्ने भेट किये जिनका मोल तीन लाख रुपयेका हुआ। इसके सिवा और भी बहुतसी वस्तु अर्पण की।

बङ्गालका दीवान।

१७ जमादिउलअव्वल (द्वितीय भादों बदी ४) को वजीरखां बङ्गालके दीवानने ६० हाथी हथनियां और कई लाल कुतुबी(१) भेट किये उससे और इसलामखांसे नहीं बनती थी इसलिये बादशाहने उसको बुला लिया था।

आसिफखांकी भेट।

२२ (द्वितीय भादों बदी ९ तथा १०) को आसिफखांने ७ टंक भरका एक माणिक्य जो रंग ढंग और अंगमें अति सुन्दर था और ७५ हजार रुपयेमें खंभात बन्दरसे मंगाया था बादशाहको भेट किया। वह बादशाहकी जांचमें ६० हजार रुपयेसे अधिकका न था।

दलपत।

राय रायसिंहके बेटे दलपतने बड़े बड़े अपराध किये थे तोभी वह खानजहांकी सुफारिशसे जान बूझकर बख्श दिया गया।

खानखानांके बेटे।

२४ (द्वितीय भादों बदी १२) को खानखानांके बेटोंने बादशाह की सेवामें उपस्थित होकर पच्चीस हजार रुपये भेट किये और उसी दिन खानखानांने भी ९० हाथी नजर किये।

(१) लालकी एक जाति।

तुलादान।

१ जमादिउस्सानी (द्वितीय भादों सुदी २) गुरुवारको बादशाह को सौर वर्षगांठका तुलादान हुआ। उसका कुछ रुपया औरतोंको बांटा गया और बाकी रक्षित देशोंके दीन दरिद्रियोंके वास्ते भेजा गया।

दूध देनेवाली हरनी।

दूध देनेवाली एक हरनी भेटमें आई जो नित्य ४ सेर दूध देती थी उसका स्वाद गाय भैंसके दूधकासा था। कहते हैं कि यह दूध दमेकी बीमारीके लिये लाभदायक होता है।

राजा मानसिंह।

११ (द्वितीय भादों सुदी १२) को राजा मानसिंहने दक्षिण जानेकी आवश्यकतासे जहां उसकी नौकरी बोली गई थी सेना की सामग्री प्रस्तुत करनेके लिये अपने वतन आमेर जानेकी आज्ञा मांगी। बादशाहने हुशियार मस्त नाम खासेका हाथी उसको देकर बिदा किया।

१२ (द्वितीय भादों सुदी १३) को अकबर बादशाहको बरसी थी बादशाहने मामूली खर्चोंके सिवा चार हजार रुपये उनके रौजे में गरीबों और फकीरोंको बांट देनेके लिये भेजे।

खुसरोकी बेटी।

१७ (द्वितीय भादों सुदी १४) को बादशाहने खुसरोकी बेटीको मंगवाकर देखा। उसकी सूरत बापसे ऐसी मिलती थी कि वैसी किसीकी सूरत कभी मिलते नहीं देखी गई थी। ज्योतिषियोंने बादशाहसे कहा था कि उसका जन्म बापके वास्ते शुभ नहीं है पर आपके वास्ते शुभ है। ऐसाही हुआ। यह भी कहा था कि तीन वर्ष पीछे आप उसको देखें। अब तीन सालकी होजाने पर बादशाहने उसे मंगवाकर देखा।

खानखानांकी प्रतिज्ञा।

२१ (आश्विन बदी ८) को खानखानांने निजामुलमुल्कके राज्य

को जिसमें अकबर बादशाहके अरे पीछे बहुतसा उपद्रव उठ खड़ा हुआ था दो वर्षमें साफ कर देनेकी प्रतिज्ञा की और यह बात लिखदी कि जो दो वर्षमें यह काम न करदूं तो अपराधी समझा जाऊं। पर उस सेनाके सिवा जो दक्षिणमें है बारह हजार सवार और १२ लाख रुपये फिर मुझको मिलें। बादशाहने हुक्म दे दिया कि तुरन्त तय्यारी करके उसको बिदा करें।

पेशरौखां।

१ रज्जब (आश्विन सुदी २) को पेशरौखां मर गया। इसको शाह तुहमास्पने हुमायूं बादशाहको सेवा करनेके लिये दिया था।

इसका नाम तो आदत था पर अकबर बादशाहने फर्राशखाने का दारोगा बनाकर पेशरौखांका खिताब दिया था। इस काममें बहुत योग्य था ८० वर्षकी उमरमें १४ वर्षके जवानोंसे बढ़कर साहसी था। मरते समय तक दमभरके लिये भी मद्य पिये बिना नहीं रहता था। १५ लाख रुपये छोड़ मरा। बेटा सुपात्र न था इसलिये आधा फर्राशखाना उसके रहा और आधा "तहमाक" को मिल गया।

उसी दिन कमालखां भी मर गया। वह दिल्लीके कलालोंमेंसे था। बादशाहको उसका बहुत भरोसा था इसलिये बावरचीखाने का दारोगा बनाया था।

लालखां कलावत।

२ (आश्विन सुदी ३) को लालखां कलावत जो अकबर बादशाहकी सेवामें छोटेसे बड़ा हुआ था ६० वर्षका होकर मर गया। अकबर बादशाह हिन्दोके जो गान सुनता वह उसे याद करा देता था। उसकी एक लौंडी इस शोकमें अफीम खाकर मर गई। बादशाह लिखता है कि ऐसी वफादार स्त्री मुसलमानोंमें कम देखनेमें आई।

ख्वाजिसराओंका निषेध।

हिन्दुस्थान और विशेषकरके बङ्गालके जिले सिलहटमें बहुत

कालसे यह चाल पड़ गई थी कि वहांकी प्रजा अपने कुछ लड़कों को नपुंसक बनाकर मालगुजारीके बदले हाकिमोंको देदेती थी फैलते फैलते दूसरे देशोंमें भी यह चाल फैल गई। हर वर्ष कई हजार बालक नपुंसक बना दिये जाते थे। बादशाहने आज्ञादी कि अबसे यह खराब चाल बन्द हो। बालक ख्वाजेसराओंकी बिकरी रोकी जावे। इसलामखां और बङ्गालके सब हाकिमोंको लिखा गया कि अब जो कोई ऐसा कर्म्म करे उसे दण्ड दें और जिसके पास छोटे ख्वाजेसरा मिलें लेलिये जावें। जहांगीर लिखता है—"अबतक किसी बादशाहका इधर ध्यान नहीं गया था। जल्द यह कुरीति मिट जावेगी। जब ख्वाजेसराओंकी बिक्री बन्द हो गई तो कोई व्यर्थ बालकोंको नपुंसक क्यों बनावेगा?"

खानखानांको घोड़े हाथी।

समन्द घोड़ा जो शाह ईरानका भेजा हुआ था और उस समय तक उतना बड़ा और अच्छा कोई घोड़ा हिन्दुस्थानमें नहीं आया था बादशाहने खानखानांको दे दिया इससे वह बहुतही प्रसन्न हुआ। फिर फ़तूह नामक हाथी जो लड़नेमें अनुपम था २५ दूसरे हाथियों सहित उसको प्रदान किया।

किशनसिंह।

किशनसिंह महावतखांके साथ भेजा गया था उसने अच्छा काम दिया। रानाके २० मनुष्य मारे और तीनसौके लगभग पकड़े। उसके भी पांवमें बरछा लगा था इस लिये उसका मनसब दो हजारी जात और एक हजार सवारोंका होगया।

कन्धार।

१४ (कार्तिक बदी १) को मिरज़ा गाजीको कन्धार जानेका हुक्म हुआ। उसके भक्करसे कूच करतेही कन्धारके हाकिम सरदारखांके मरनेकी खबर पहुंची। वह बादशाहके चचा मिरजाहकीमके निज नौकरोंमेंसे था।

अकबर बादशाहका रौजा ।

१७ (कार्तिक बदी ४) चन्द्रवारको बादशाह अपने पिताके रौजेका दर्शन करने गया । वह लिखता है—"जो होसकता तो मैं इस मार्ग में मस्तक और पलकोंसे जाता । मेरे पिता तो मेरे वास्ते फतहपुरसे अजमेर तक १२० कोस पैदल ख्वाजे मुईनुद्दीनके दर्शनोंको गये थे । फिर मैं इस मार्गमें सिर और आंखोंसे जाऊं तो क्या बड़ी बात है ।"

इस रौजेकी जो इमारत बनी थी वह बादशाहको पसन्द न आई । क्योंकि उसका यह मनोरथ था कि यहां ऐसी इमारत बने जिसके समान पृथिवीके पर्य्यटन करनेवाले कहीं नहीं बता सकें । उक्त इमारतको जब जहांगीर खुसरोकी तलाशमें गया था तो उसके पीछेसे सिलावटोंने तीन चार वर्षमें अपनी समझसे बनाया था । बादशाहने उसको गिराकर नये सिरेसे बनानेका हुक्म शिल्प-निपुण सिलावटोंको दिया । बनते बनते एक विशाल भवन, बाग, ऊंची पौल और श्वेत पाषाणोंके मीनारों सहित बन गया जिसकी लागत पन्द्रह लाख रुपये बादशाहको सुनाई गई ।

हकीमअलीका हौज ।

२३ (कार्तिक बदी १०) रविवारको जहांगीर अकबर बादशाह के समयका बना हकीमअलीका हौज अपने उन मित्रों सहित देखने गया जिन्होंने उसको नहीं देखा था । यह छः गज लम्बा और उतनाही चौड़ा था और उसकी बगलमें एक कमरा बना था जिसमें खूब उजाला रहता था । इस कमरेका रास्ता भी पानीमें होकर था लेकिन पानी उस रास्तेसे भीतर नहीं जाने पाता था । इस कमरेमें १२ आदमी बैठ सकते थे ।

हकीमने अवसरके अनुसार धन माल बादशाहको नजर किया । बादशाह उसको दो हजारी मनसब देकर राजभवनमें आया ।

खानखानांका दक्षिण जाना ।

१४ शाबान (अगहन बदी २) रविवारको खानाखानां जड़ाऊ

परतला खिलअत और खासेका हाथी पाकर दक्षिणको बिदा हुआ। राजा सूरजसिंह भी उसके साथ भेजा गया और उसका मनसब तीन हजारी जात और दो हजार सवारोंका होगया।

गुजरात।

बादशाहने मुरतिजाखांके भाइयों और नौकरोंका प्रजा पर अन्याय करना सुनकर गुजरातका सूबा उससे छीन लिया और आजमखांको दिया। आजमखां तो हुजूरमें रहा और उसका बड़ा बेटा जहांगीरकुलीखां तीन हजारी जात और अढ़ाई हजार सवारों का मनसब पाकर बापकी नायबीमें गुजरातको गया। बादशाहने उसको मोहनदास दीवान और मसऊदखां बख्शीकी सलाहसे काम करनेका हुक्म दिया।

बलन्द अख्तर।

४ जिलहज्ज (फागुन सुदी ६) बुधवारको खुसरोके घरमें खान-आजमकी बेटीसे लड़का उत्पन्न हुआ। बादशाहने उसका नाम बलन्द अख्तर रखा।

६ (फागुन सुदी ८) को मुकर्रबखांने एक तसवीर भेजी जिसे फरंगी अमीर तैमूरकी बताते थे। जब उनकी फौजने रूमके बादशाह एलदुर्म बायजीदको पकड़ा तो अस्तम्बोलके ईसाई हाकिमने एक दूत सौगातसहित अमीरके पास भेजा था। उसके साथ एक चित्रकारभी था वह अमीरकी तसवीर खेंच लेगया था। बादशाह लिखता है—"जो यह बात कुछ भी सच होती तो कोई पदार्थ इस चित्रसे बढ़कर मेरे समीप नहीं था पर यह तो अमीर और उनके बेटों पोतोंकी सूरतसे कुछ भी नहीं मिलती इसलिये पूरी प्रतीत नहीं होती।"

चौथा नौरोज।

१४ (चैत बदी १) शनिवारको रातको सूर्य्य मेखमें आया। चौथा नौरोज हुआ।

पांचवां वर्ष।

सन् १०१८।

चैत सुदी २ संवत् १६६६ से चैत सुदी १ संवत् १६६७ तक।

५ मुहर्रम (चैत सुदी ७) शुक्रवार सं० १६६६ को हकीम अली मर गया। यह बड़ा हकीम था इसने अकबर बादशाहके समयमें बू अलीसीना(१) के कानूनकी टीका लिखी थी। बादशाह लिखता है कि यह दुष्टात्मा और दुर्बुद्धि था।

खान आलम।

२० सफर (जेठ बदी ७) को मिरजा बरखुरदारको खानआलम का खिताब मिला।

३३॥ सेरका तरबूज।

फतहपुरसे इतना बड़ा एक तरबूज आया कि बादशाहने वैसा अबतक नहीं देखा था तुलवाया तो ३३॥ सेरका हुआ।

सौमतुलादान।

१८ रबीउलअव्वल (आषाढ़ बदी ५) चन्द्रवारको बादशाहकी सौम वर्षगांठका तुलादान उनकी मा मरयममकानीके भवनमें हुआ। जो स्त्रियां वहां जुड़ गई थीं उनको बादशाहने उसमेंसे कुछ रुपये दिलाये।

दक्षिण पर चढ़ाई।

बादशाहने दक्षिणके कामों पर एक शाहजादेका भेजा जाना आवश्यक समझ कर परवेजको भेजने और उसके वास्ते सफरकी तय्यारी कर देनेका हुक्म दिया।

---

(१) बूअलीसीना मुसलमानोंमें बड़ा हकीम होगया है उसने जो पुस्तक वैद्यकविद्याकी बनाई है उसका नाम कानून बूअली है।

राना‌की लड़ाई ।

बादशाहने महाबतखांको कई कामोंकी सलाहके वास्ते बुला कर उसकी जगह अबदुल्लहखांको उस लशकरका अफसर किया जो रानाके ऊपर भेजा गया था और उसको फीरोज जंगका खिताब भी दिया। बखशी अबदुर्रज्जाकको सब मनसबदारोंसे यह कहला देनेके लिये भेजा कि फीरोजजंगकी आज्ञा भंग न करें और उसके अच्छे बुरे कहनेमें अपना भला बुरा समझें ।

दूध देनेवाला बकरा ।

४ जमादिउलअव्वल (सावन सुदी ६) को चरवाहे एक खस्सी बकरा लाये जिसके थन बकरीकेसे थे और वह प्रतिदिन एक प्याला दूध देता था ।

सूरतकी हुकूमत ।

६ (सावन सुदी ७) को बादशाहने खानआजमके बेटे खुर्रमको दो हजारी जात और पांचसौ सवारका मनसब देकर सूरतकी हुकूमत पर भेजा जो जूनागढ़के नामसे प्रसिद्ध है ।

राजा मानसिंह ।

१६ (भादों बदी २) को तलवारका जड़ाऊ परतला राजा मान सिंहके वास्ते भेजा गया ।

दक्षिण ।

१६ (भादों बदी ८) को बादशाहने २० लाख रुपये उस लशकरके खर्चके वास्ते जो परवेजकी अफसरीमें तय्यार हुआ था एक अलग खजानचीको सौंपे और पांच लाख रुपये परवेजके खर्चके लिये भी दिये ।

१ जमादिउस्सानी (भादों सुदी २) को अमीरुलउमरा भी उसी लशकरमें नियुक्त हुआ और उसको खिलअत और घोड़ा दिया गया ।

जगन्नाथका बेटा करमचन्द भी दो हजारी जात और डेढ़ हजार सवारका मनसब पाकर परवेजके साथकी सेनामें शामिल हुआ ।

रानाकी लड़ाई ।

४ (भादों सुदी ५) को २७० इक्के सवार उदयपुरके लश्करको सहायताके लिये अबदुल्लहखांको दिये गये । १०० घोड़े भी सरकारी तबेलोंसे भेजे गये कि अहदियों और मनसबदारोंमेंसे जिन जिनको अबदुल्लहखां उचित समझे देदे ।

लाल ।

१७ (आश्विन बदी ३) को बादशाहने एक लाल साठ हजार रुपयेका परवेजको, दूसरा लाल दो मोतियों सहित खुर्रमको दिया । इनका मूल्य चालीस हजार था ।

राजा जगन्नाथ ।

२८ (आश्विन सुदी १) चन्द्रवारको राजा जगन्नाथका मनसब ५ हजारी जाती और तीन सौ सवारोंका होगया ।

राय जयसिंह ।

८ रज्जब (आश्विन सुदी ८) को राय जयसिंहका मनसब चार हजारी जाती और तीन हजार सवारोंका होगया । वह भी दक्षिण की सेनामें भरती हुआ ।

शहरयार ।

९ रज्जब (आश्विन सुदी १०) गुरुवारको शाहजादा शहरयार गुजरातसे हुजूरमें आया ।

परवेजका दक्षिण जाना ।

१४ (आश्विन सुदी १५) मंगलवारको बादशाहने परवेजको खासा खिलअत, घोड़ा, खासा हाथी, जड़ाऊ पेटी और तलवार देकर दक्षिण जीतनेको भेजा । जो अमीर और सरदार उसकी सेवामें नियत किये गये थे इनको भी घोड़े सिरोपाव जड़ाऊ पेटियां और तलवारें मिलीं । एक हजार अहदी भी शाहजादेके साथ भेजे गये ।

रानाकी लड़ाई ।

अबदुल्लहखांकी अर्जी आई कि मैंने विकट घाटियोंमें रानाका

पीछा किया। कई हाथी और उसका असबाब हाथ आया। राना रातको भागकर निकल गया परन्तु शीघ्रही पकड़ा जायगा या मारा जायगा। बादशाहने प्रसन्न होकर उसका मनसब पूरा पांच हजारी कर दिया।

परवेज।

बादशाहने दस हजार रुपयेकी एक मोतियोंकी माला परवेज को दी। खानदेश और बरार तो पहिलेसे उसको दिये जाचुके थे अब आसेरका किला भी दिया गया और तीन सौ घोड़े भी मिले कि अहदियों और मनसबदारोंमेंसे जिसको योग्य समझे दिये जायें।

भङ्ग गांजेका निषेध।

२२ (अगहन बदी ८) शुक्रवारको बादशाहने हुक्म दिया कि भङ्गगांजा जो झगड़ेकी जड़ हैं बाजारमें न बेचें और जुएके अड्डे भी उठा देवें।

वृश्चिक संक्रांतिका दान।

बादशाहने वृश्चिक(१) संक्रांतिके दिन एक हजार तोले सोने चान्दी और एक हजार रुपये अपने ऊपर वार कर दान किये।

दक्षिण पर सेना।

बादशाहने एक और नई फौज जिसमें १६२ मनसबदार और ४६ अहदी बरकन्दाज थे परवेजके पास दक्षिणको बिदा की और पचास घोड़े भी भेजे।

खुर्रमकी सगाई।

१५ (पौष बदी ३) रविवारको बादशाहने पचास हजार रुपये खुर्रमकी सगाईकी रस्मके मिरजा मुजफ्फरहुसैनके घर भेजे। उसकी लड़कीसे खुर्रमका व्याह ठहरा था। यह बहराम मिरजा का पोता और ईरानके शाह इसमाईल सफवीका पड़पोता था।

---

(१) यह वृश्चिक संक्रान्ति अगहन बदी १० बुधवार सं० १६६६ को १८ घड़ी ५२ पल पर लगी थी।

दक्षिणका युद्ध ।

बादशाहने आगरेके कानूंगो बिहारीचन्दके भतीजेको आगरेके किसानोंमेंसे भरती किये हुए एक हजार पैदलों सहित परवेजके पास भेजा । पांच लाख रुपये और उसके पास खर्चके लिये भेजे ।

४ शव्वाल (पौष सुदी ५) गुरुवारको बादशाहने रुपये बांटे । उनमेंसे एक हजार रुपये पठान (१) मिश्रको मिले ।

नक्कारा देनेका प्रबन्ध ।

बादशाहने हुक्म दिया कि नक्कारा उन लोगोंको दिया जावे जिनका मनसब तीन हजारी या तीन हजारीके ऊपर हो ।

चन्द्रग्रहण ।

पौष सुदी १५ को चार घड़ी दिन रहे चन्द्रग्रहण लगा । गहते गहते सब चांद गहा गया । पांच घड़ी रात गये तक गहाही रहा । बादशाहने उसके दोष निवारणके लिये सोने चान्दी कपड़े और धानका तुलादान किया । घोड़ोंका दान भी किया । सब मिला कर १५ हजारका माल दानपात्रोंको बांटा गया ।

२५ (माघ बदी १२) को बादशाहने रामचन्द्र बुन्देलेकी बेटी उसके बापकी प्रार्थनासे अपनी सेवाके वास्ते ली ।

बिहारीचन्द ।

१ जीकाद (माघ सुदी ३) गुरुवारको बिहारीचन्दको पांच सदी जाती और तीन सौ सवारोंका मनसब मिला ।

दक्षिण ।

बादशाहने मुल्लाहयातीको खानखानांके पास भेजकर बहुतसी कृपासे भरी हुई बातें कहला भेजीं थीं । मुल्ला वहां होकर लौट आया । खानखानांके भेजे एक मोती और दो लाल लाया । उनका मूल्य बीस हजार कूता गया ।

---

(१) यह नाम फारसी लिपिमें भ्रमयुक्त होनेसे नहीं पढ़ा गया ।

(१) चण्डू पंचांगमें पौष सुदी १५ शनिवारको २५ घ० ४७ प० पर चन्द्र ग्रहण लिखा है ।

६ जीकाद (माघ सुदी ८) को परवेजके दक्षिण पहुंचनेसे पहले खानखानां और दूसरे अमीरोंकी यह अर्जी दक्षिणसे पहुंची कि दक्षिणी लोग फसाद किया चाहते हैं। बादशाहने परवेज और दूसरी सेनाओंके भेजे जाने पर भी अधिक सहायताकी आवश्यकता समझकर स्वयं दक्षिणकी तरफ जानेका विचार किया। आसिफखांकी अर्जी आई कि बादशाहका इधर पधारना बहुत आवश्यक है। बीजापुरके आदिलखांकी भी अर्जी पहुंची कि राजसभाके विश्वासपात्रोंमेंसे कोई आवे तो उससे अपने मनोरथ कहूं और वह लौटकर बादशाहसे कहे तो दासोंका कल्याण हो।

बादशाहने मन्त्रियों और शुभचिन्तकोंसे सलाह पूछी और प्रत्येककी सम्मति ली। खानजहांने कहा कि जब इतने बड़े बड़े सुभट दक्षिण जीतनेको जाचुके हैं तो हजरतका पधारना आवश्यक नहीं है। यदि आज्ञा हो तो मैं भी शाहजादेकी सेवामें जाऊं और इस कामको पूरा करूं।

बादशाहको उसका वियोग स्वीकार न था और युद्ध भी बड़ा था इस लिये शुभचिन्तकोंकी सम्मति स्वीकार करके उसको फरमाया कि फतहपुर होतेही लौट आना एक वर्षसे अधिक वहां न रहना। १७ फागुन सुदी ५) शुक्रवारको उसके जानेका मुहूर्त्त था। उस दिन बादशाहने उसको जरीका खासा खिलअत खासा घोड़ा जड़ाऊ जीनका, जड़ाऊ परतला, खासा हाथी, तूमान और तोग देकर बिदा किया। फिदाईखांको घोड़ा खिलअत और खर्च देकर खानजहांके साथ भेजा और उससे कह दिया कि जो किसी को आदिलखांके पास उसकी प्रार्थनाके अनुसार भेजनेकी आवश्यकता हो तो इसको भेजें। लंकू पण्डितको भी जो अकबरके समय में आदिलखांकी भेंट लेकर आया था घोड़ा सिरोपाव और रुपये देकर खानजहांके साथ कर दिया।

अबदुल्लहखांके पास जो अमीर रानाकी लड़ाईके वास्ते थे उनमें से राजा बरसिंह देव शुजाअतखां और राजा विक्रमाजीत आदिको

चार पांच हजार सवारोंसहित बादशाहने खानजहांको सहायतापर नियत किया। मोतमिदखांको उनके पास भेजा कि साथ जाकर उनको उज्जैनमें खानजहांके पास पहुँचा दे।

दरीखाने अर्थात दरबारमें रहनेवालोंमेंसे सैफखां आदि छः सात हजार सवारोंकी नौकरी भी खानजहांके साथ बोली गई। उनको भी मनसबकी वृद्धि मदद खर्च और सिरोपावसे सन्तुष्ट किया गया।

मुहम्मदी बेग इस लशकरका बखशी नियत हुआ और १० लाख रुपये उसको खर्चके वास्ते दिये गये।

शिकार।

बादशाह लशकरको विदा करके शिकार खेलनेके वास्ते शहरसे निकला। रबीकी फसल उस समय पक गई थी। इस लिये बादशाहने उसकी रक्षाके हेतु 'कोरियसावल(१)' को तो बहुतसे अहदियोंके साथ पहलेही भेज दिया था। अब कई मनुष्योंको हुक्म दिया कि हर कूचमें जितनी फसलकी हानि हो उसका अन्दाजा करके प्रजाको मूल्य देदिया जावे।

२२ (फागुन बदी ८) को जब कि बादशाह एक नीलगायको गोली मारना चाहता था अचानक एक जिलोदार (अर्दली) और दो कहार आगये। नीलगाय भड़ककर भाग गई। बादशाहने क्रोधमें आकर हुक्म दिया कि जिलोदारको इसी जगह मार डालें और कहारोंके पांव कटवाकर उनको गधे पर चढ़ावें और लशकरके आसपास फिरावें जिससे फिर कोई ऐसा साहस न करे।

पांचवां नौरोज।

१४ जिलहज्ज (फागुन बदी ११) रविवारको दो पहर तीनघड़ी दिन चढ़े सूर्य्यदेवताका रथ मेख राशि पर आया। बादशाह गांव बाकमल परगने बाड़ीमें पिताकी प्रथाके अनुसार सिंहासनपर बैठा। दूसरे दिन नौरोज था और पांचवें सनके फरवरदीन महीनेकी पहली तारीख थी। बादशाहने सवेरेही आमदरबार करके सब अमीरों और कर्म्मचारियोंका सलाम लिया। बाजे अमीरोंकी

(१) बादशाही हथियार रखनेवाला चोबदार।

भेट भी हुई । खानआजमने चार हजार रुपयेका एक मोती नजर किया । महावतखांने भेटमें फरंगियोंका बनाया हुआ एक सन्दूक दिया जिसके आसपास बिल्लौरके तख्ते लगे हुए थे । उनमेंसे भीतरकी वस्तु दिखाई देती थी ।

फतहउल्लह शरबतचीका बेटा नसरुल्लह भेटका भाण्डारी नियत हुआ ।

सारंगदेव जो दक्षिणके लशकरमें आज्ञापत्र पहुँचानेके लिये नियत हुआ था बादशाहने उसके हाथ परवेज और हरेक अमीरके वास्ते कुछ कुछ निजकी चीजें भेजीं ।

दूसरे दिन बादशाहने सवारी करके दो सिंह और सिंहनीका शिकार किया । अहदियोंको जो बहादुरी करके सिंहसे जा लिपटे थे इनाम दिया और उनके वेतन बढ़ाये ।

२६ (चैत बदी १३) को बादशाह रूपवास(१) में आकर कई दिन तक वहां हरनोंका शिकार खेलता रहा ।

---

(१) अब यह रूपवास भरतपुर राज्यमें है ।

छठा वर्ष।

सन १०१९।

चैत्र सुदी ३ संवत् १६६७ से चैत्र सुदी २ संवत् १६६८ तक।

---

१ मुहर्रम (चैत्र सुदी ३) शनिवारको रूपखवासने जिसका बसाया हुआ रूपवास था भेटकी सामग्री सजाकर बादशाहको दिखाई। बादशाहने उसमेंसे कुछ अपनी रुचिके अनुसार लेकर शेष उसीको देदी। सोमवारके दिन बादशाह मंडाकरके बागमें आगया जो आगरेके पास है।

बादशाहका आगरेमें आना।

मंगलवारको एक पहर दो घड़ी दिन चढ़े शहरमें प्रवेश होनेका मुहूर्त्त था। बादशाह बस्तीके प्रारम्भ होने तक घोड़े पर गया आगे इस अभिप्रायसे हाथी पर बैठकर चला कि जिसमें पास और दूरकी सब प्रजा देख सके। मार्गमें रुपये लुटाता चला। दोपहर बाद ज्योतिषियोंके नियत किये हुए समय पर सानन्द राजभवनमें सुशोभित हुआ जो नौरोजके निर्दिष्ट नियमोंके अनुसार अति सुन्दर और सुहावनी विधिसे सजाया गया था। बड़े बड़े भड़कीले दल बादल डेरे और तम्बू ताने गये थे। बादशाहने सब सजावट देखकर ख्वाजेजहांकी भेटमेंसे जवाहिर और दूसरे पदार्थ स्वीकार किये शेष उसीको बख्श दिये।

शिकारकी संख्या।

बादशाहने मृगयाके कर्मचारियोंको हुक्म दिया था कि जानेके दिनसे लौटनेको तिथि तक जितने पशु शिकार हुए हों उनकी संख्या बतावें। उन्होंने बताया कि पांच महीने छः दिनमें तेरहसौ बासठ पशु पक्षी और हिंसक जन्तु मारे गये हैं—

सिंह	७
नीलगाय	७०

काले हरन	५१
काली हरनी	५१
हरन, पहाड़ी बकरे और रोझ	८२
मछलियां	१०२३
कुलंग, मोर, सुर्खाब और सब पखेरू	१२९
जोड़	१३६२।

नौरोजका उपहार।

७ (चेत सुदी ९) शुक्रवारको मुकर्रबखां खम्भात और सूरतके बन्दरोंसे आया। जवाहिर, जड़ाऊ गहने, सोने चांदीके बासन फरंगियोंके बनाये हुए, हबशी लौंडी, गुलाम, अरबी घोड़े और दूसरे उत्तमोत्तम पदार्थ लाया। वह अढ़ाई महीने तक बादशाहके दृष्टिगोचर होते रहे।

ऐसी ऐसी भेटें १९ दिन मेख संक्रान्ति तक अमीरोंकी ओरसे अर्पण होती रहीं। बादशाहने भी कई अमीरोंको झंडे कईको हाथी घोड़े और खिलअत दिये।

ख्वाजा हुसैनको जो ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्तीके पोतोंमेंसे था एक हजार रुपये आधे वर्षको बख्शानके मिले।

खानखानांने बादशाहके लिये मुल्ला मीरअली(१) की लिखी हुई यूसुफ जलेखा जिसके पुट्ठों और चित्रोंमें सोनेका काम अति सूक्ष्म और स्वच्छ रीतिसे किया था अपने वकील मासूमके हाथ भेजी वह एक हजार मोहरोंकी थी।

१३ (चैत्र सुदी १५) गुरुवारको १९वीं तिथि फरवरदीन महीने की थी और मेख संक्रान्तिका दिन था बादशाहने सब प्रकारके मादक पदार्थ मंगाए और आज्ञा की कि प्रत्येक मनुष्य अपनी रुचिके अनुसार सेवन करे। बहुतोंने तो मदिरा पी, कइयोंने याकूती ली और कइयोंने अफीम खाई जिससे सभा खूब प्रफुल्लित हुई।

(१) यह फारसी अक्षर बहुत अच्छा लिखता था।

जहांगीरकुलीखांने गुजरातसे चान्दीका एक सिंहासन भेजा जिसमें पच्चीकारीका काम नये रंग ढंगसे किया गया था।

महासिंहको झण्डा मिला।

अपराधियोंको दण्ड।

अफजलखांने बिहारसे कई दुष्टोंको पकड़ कर भेजा जिन्होंने निषेध हो जाने पर भी ख्वाजासरा बनाने और बेचनेका अपराध किया था। बादशाहने उनको जन्म भरके लिये कैद कर दिया।

विचित्र घटना।

अगली रातको एक विचित्र घटना हुई। दिल्लीके कुछ गवैये हुजूरमें गारहे थे और सैदी शाहको अमीर खुसरोकी एक बेत पर जोश आरहा था जिसका यह आशय था—

हरेक कौमका एक पन्थ एक धर्म्म और एक धाम है।

मैंने तो एक टेढ़ी टोपीवालेको अपना इष्टदेव बनाया है।

बादशाह इसको कथा पूछ रहे थे कि मुल्ला अलीअहमद मोहर खोदनेवाला जिसके बापसे बादशाह बाल्यावस्थामें पढ़ा करता था और जोअपने काममें उस्ताद था आगे बढ़कर अर्ज करने लगा कि एक दिन जमनाके तट पर शेख निजामुद्दीन औलिया बांकी टोपी झुकाये किसी छतसे हिन्दुओंकी पूजा देख रहे थे। इतनेमें उनका शिष्य अमीर खुसरो आया शेखने फरमाया कि तूने इन लोगोंको देखा साथही फारसीमें यह कहा—

हरेक जातिका एक पन्थ एक धर्म्म और एक धाम है।

खुसरोने अति भक्तिसे अपने गुरुकी ओर देखकर फ़ारसीमें यह दूसरा चरण पढ़ा—

मैंने तो एक टेढ़ी टोपीवालेको अपना इष्टदेव बनाया है।

मुल्लाअली जब यह कथा कहता हुआ टेढ़ी टोपीवालेके शब्द तक पहुंचा तो उसका हाल बदल गया वह अचेत होकर गिर पड़ा। बादशाह घबराकर उसके पास गया। वैद्य हकीम जो सभामें थे मृगीका भ्रम करके नाड़ी देखने और दवा देने लगे। परन्तु उसका काम तो गिरतेही पूरा होगया था उसको उठाकर

घर ले गये। बादशाहने उसके बेटोंके पास रुपये भेजे। वह लिखता है कि ऐसा मरना मैंने आजतक नहीं देखा था।

उर्छा।

२१ (बैशाख बदी ८) शुक्रवारको किशवरखां दो हजारी जात और दो हजार सवारका मनसब, इराकी घोड़ा और जगजीत नाम खासा हाथी पाकर उर्छा देशकी फौजदारी पर नियत हुआ।

राजा मानसिंहको हाथी।

राजा मानसिंहके वास्ते बादशाहने खासा हाथी आलमकमान नाम हबीबुल्लहके हाथ भेजा।

केशवमारूको खासा घोड़ा।

केशवमारूके वास्ते खासा घोड़ा बंगालमें भेजा गया।

सन्यासीके चेलेको दण्ड।

कमरदीनखांका बेटा कौकब नकीबखांके लड़के अबदुललतीफ और शरीफ जो कौकबके चचेरे भाई थे तीनों एक सन्यासीके चेले होकर उसके धर्म पर चलने लगे थे। बादशाहने उनको बुलाकर कुछ पूछ ताछ की। कौकब और शरीफको तो पिटवाकर कैद कर दिया और अबदुललतीफको अपने सामने सौ कोड़े लगवाये।

अमीरों पर कृपा।

पास और दूरके अमीरोंको सिरोपाव दिये और भेजे गये राजा कल्याणके वास्ते इराकी घोड़ा भेजा गया।

आग।

१ सफर (बैशाख सुदी ३) चन्द्रवारकी रातको खिदमतगारोंकी भूलसे ख्वाजा अबुलहसनके घरमें आग लगी जिसमें बहुतसा माल असबाब जल गया। बादशाहने उसको सहायतके लिये चालीस हजार रुपये दिये।

न्याय।

एक विधवा स्त्रीने मुकर्रबखां पर यह पुकार की कि खंभात बन्दरमें उसने मेरी लड़की जबरदस्ती छीन ली। जब मैंने मांगी

तो कहा कि मर गई। बादशाहने बहुतसी छानबीनके पीछे मुकर्रबखांके एक नौकरको जो इस अन्यायका कारण हुआ था दण्ड दिया और आधा मनसब मुकर्रबखांका घटाकर उस बुढ़ियाकी जीविका करदी और रास्तेका खर्च भी दिया।

दान।

७ (बैशाख सुदी १०) रविवारको दो पापग्रहों(१) का जोग हुआ। बादशाहने चांदी सोने और दूसरी धातुकी बस्तुओं और पशुओंका दान करके कई देशोंके कंगालोंको बांटनेके वास्ते भेजा।

कन्धार।

२ लाख रुपये लाहोरके खजानेमे कन्धारके किलेकी सामग्रीके वास्ते गाजीबेगतरखांके पास भेजे गये।

बिहारमें उपद्रव।

१८ फरवरदीन(२) (जेठ बदी ?) को पटनेमें एक विचित्र घटना हुई वहांका हाकिम अफजलखां अपनी नई जागीर गोरखपुरमें जो पटनेसे ६० कोस है गया था। उसका विचार था कि जब कोई शत्रु नहीं है तो अधिक प्रबन्ध करनेकी आवश्यकता नहीं है किला और शहर शेख बनारसी तथा दीवान गयासजैनखानीको सौंपा गया था उस समय उरझाके लोगोंमेंसे कुतुब नाम एक अप्रसिद्ध पुरुष फकीर बना हुआ उज्जैनियों(३)के देशमें जो पटनेके पास

(१) चण्डूपञ्चाङ्गमें बैशाख सुदी १० को मंगल और शनि कुंभ राशि पर थे शनि बैशाख बदी ७ को कुंभ राशि पर आकर मंगलके शामिल हुआ था। बादशाही पञ्चांगमें बैशाख सुदी १० को आया होगा।

(२) तुजुकजहांगीरीमें १८ फरवरदीन ४ सफरको लिखा है पर ४ सफर तो ६ फरवरदीनको थी और १८ फरवरदीनको १४ थी पर आगे रविवारका दिन भी लिखा है सो रविवार १८ उर्दीबहिश्त को था इसलिये १८ और १४ ही सही है।

(३) उज्जैनियोंका देश वही गोरखपुरका प्रान्त जहां उज्जैनिया जातिके पंवार राजपूत रहते हैं।

है आया और वहांवालोंसे जो पक्के दंगई हैं मेलमिलाप करके बोला कि मैं खुसरो हूं बन्दीखानेसे भागकर आया हूं। जो तुम मुझे सहायता दोगे तो कार्य्यसिद्ध होनेके पीछे तुम्ही मेरे प्रधान कार्य्यकर्त्ता रहोगे।

उसने अपने खुसरो होनेका निश्चय करानेके लिये उन्हें अपनी आंखके पास घावका एक चिन्ह दिखाया। कहा कि कारागारमें मेरी आंख पर एक कटोरी बांधी गई थी उसका यह चिन्ह है। इस छलसे बहुतसे पैदल और सवार उसके पास जुड़ गये और अफजलखांके पटनेमें न होनेको अपना अहोभाग्य समझकर चढ़ दौड़े और गत रविवारको २।३ घड़ी दिन चढ़े पटनेमें जा पहुंचे। किसी बातका विचार न करके सीधे किलेको गये। शेख बनारसी घबरा कर द्वार पर आया। परन्तु किवाड़ बन्द करनेका अवकाश न पाकर दीवान गयास सहित खिड़कीसे बाहर निकला और नावमें बैठकर अफजलखांको समाचार देनेको गया।

उन दुराचारियोंने किलेमें घुसकर अफजलखांका धनमाल बादशाही खजाने सहित लूट लिया। शहरके भीतरी और बाहरी बदमाश सब उससे आमिले।

अफजलखांको गोरखपुरमें यह खबर लगतेही बनारसी और गयास भी जलमार्गसे वहां पहुंचे। शहरसे लिखा आया कि यह खुसरो नहीं है। तब अफजलखां रामभरोसे शत्रुसे लड़नेको चल कर पांचवें दिन पटनेके पास पहुंचा। यह सुनकर कुतुबने भी अपने एक विश्वासपात्रको किलेमें छोड़ा और चार कोस सामने आकर पुनपुन नदीके ऊपर अफजलखांसे लड़ाई की और शीघ्रही भागकर किलेमें घुस गया। पर अफजलखांके पीछे लगे चले आनेसे किवाड़ मूंदनेका औसान न पाकर उसीकी हवेलीमें जा बैठा और दोपहर तक लड़ता रहा। तीस आदमी तीरोंसे मारे। फिर जब उसके साथी मारे गये तो शरण लेकर अफजलखांके पास चला आया। अफजलखांने उपद्रव मिटानेके लिये उसको उसी दिन मार डाला और उसके साथियोंको पकड़ लिया।

बादशाहने जब यह समाचार सुने तो बनारसी गयास और दूसरे मनसबदारोंको जिन्होंने किलेकी रखवाली नहीं की थी बुलवाया उनके सिर और मूछें मुंडवाकर ओढ़नी उढ़वाई और गधे पर बैठाकर आगरेके बाहर और बाजारोंमें फिरवाया जिससे दूसरे लोगोंको डर हो।

दक्षिण।

१६ सफ़र (जेठ बदी ३) को बादशाहने परवेज और शुभचिन्तक अमीरोंके लिखनेसे मीर जमालुद्दीन हुसैन अनजूको आदिल खां और दूसरे दक्षिणी जमींदारोंके मनका सन्देह दूर करने और उनको बादशाही सेवामें लगानेके लिये दस हजार रुपये देकर दक्षिणको भेजा।

बांधों पर सेना।

बांधोंके जमींदार विक्रमाजीतको दण्ड देनेके लिये जिसने अधीनता छोड़ दी थी बादशाहने राजा मानसिंहके पोते महासिंह को भेजा और यह हुक्म दिया कि उधरके दुराचारियोंको विध्वन्स करके राजाकी जागीर पर अपना दखल करलें।

राणाको मुहिम।

२८ (जेठ बदी ३०) को अबदुल्लहखां फीरोजजंगकी अरजी कई साहसी सरदारोंकी सफारिशमें पहुंची। उन्होंने राणाकी लड़ाईमें अच्छे काम किये थे। बादशाहने उनमेंसे गजनीखां जालोरीकी सेवा सबसे अधिक देखकर उसके मनसब पर जो डेढ़ हजारी जात और तीनसौ सवारोंका था पांच सदी जात और चारसौ सवार और बढ़ा दिये। ऐसेही औरोंके भी मनसब बढ़ाये।

काले पत्थरका सिंहासन।

४ मेहर चन्द्रवार(१) (आश्विन सुदी १०) को दौलतखां इलाहा-

(१) तुजुक जहांगीरी (पृष्ठ ८५) में ४ मेहर बुधको लिखी है सो अशुद्ध है चन्द्रवारको चाहिये क्योंकि आगे १० आजर शुक्रको रातको ठीक लिखी है दिनको गुरु और रातको शुक्र मुसलमानो हिसाबसे होजाता है।

बादसे काले पत्थरका सिंहासन लाया उसे बादशाहने मंगवाया था। यह दो गिरह कम ४ गज लम्बा अढ़ाई गज और तीन तसू चौड़ा और ३ तसू मोटा बहुत काला और चमकदार था। बादशाहने उसकी कोरों पर कुछ कविता खुदवाकर पाये भी वैसेही पत्थरके लगवा दिये। बादशाह कभी कभी उस पर बैठा करता था।

दक्षिण।

१२ महर (कार्तिक बदी ३) को खानजहांकी अरजी पहुंची कि खानखानां, आज्ञानुसार महाबतखांके साथ दरबारको रवाने होगया और मीर जमालुद्दीनको आदिलखांके वकीलों सहित बीजापुरको भिजवा दिया है।

सूबेदारोंकी बदली।

२१ महर (कार्तिक बदी १३) मुरतिजाखां पंजाबकी सूबेदारी पर और ताजखां मुलतानसे काबुलकी सूबेदारी पर भेजा गया मुरतिजाखांको खासेका दुशाला मिला और ताजखांके मनसबमें पांच सौ सवार और बढ़कर तीन हजारी और दोहजार सवारोंका मनसब होगया।

राणा सगर।

अबदुल्लहखां फीरोजजङ्गके प्रार्थना करनेसे राणा सगरके बेटेका भी मनसब बढ़ गया।

खानखानां।

१२ आबान (अगहन बदी ३।४)(१) को खानखानांने जिसे लेने महाबतखां गया था बुरहानपुरसे आकर मुजरा किया। बादशाह लिखता है—"उसके विषयमें बहुधा शुभचिन्तकोंने यथार्थ और अयथार्थ बातें अपनी समझसे कही थीं और मेरा दिल उससे फिर गया था। इसलिये जो कृपा मैं सदासे उसपर करता था या अपने बापको करते देखता था वह इस समय नहीं की। ऐसा करनेमें मैं सच्चा था क्योंकि वह इससे पहिले दक्षिण देशके साफ करनेको

(१) इस दिन तिथि छेद था अर्थात् दोनों तिथियां एक दिन थीं।

अवधि नियत करके प्रतिज्ञापत्र देचुका था और सुलतान परवेजकी सेवामें दूसरे अमीरों सहित उस बड़े काम पर गया था। परन्तु बुरहानपुरमें पहुंचे पीछे समयानुसार रसद और दूसरी आवश्यक वस्तुओंका प्रबन्ध न किया। जब सुलतान परवेज घाटके ऊपर फौजें लेकर गया और सरदारोंकी फूटसे काम बिगड़ा तो अनाज का मिलना ऐसा कठिन हुआ कि एक मन बहुतसे रुपयोंमें नहीं मिलता था। घोड़े ऊंट और दूसरे पशु मर गये। सुलतान परवेजने देशकाल देखकर शत्रुओंसे सन्धि की और लशकरको बुरहानपुरमें लौटा लाया। इस दुर्घटनाका कारण सब शुभचिन्तकोंने खानखानांका विरोध और कुप्रबन्ध जानकर दरबारमें अर्जियां लिखीं। उन पर विश्वास तो न हुआ परन्तु दिलमें खटका पड़ गया। अन्तमें खानजहांकी अर्जी पहुंची कि यह सब खराबी खानखानांके अन्तरद्रोहसे हुई है। अब इस काम पर या तो उसी को स्वतन्त्रतासे रखना चाहिये या उसको दरगाहमें बुलाकर मुझ कृपापात्रको यह सेवा सौंपनी चाहिये और तीस हजार सवारोंकी सहायता भी देनी चाहिये। दो सालमें वह सब बादशाही मुल्क जो गनीमने लेलिया है कुड़ाकर कन्धार(१)का किला सीमाप्रान्तके दूसरे किलों सहित जीत लूंगा। बीजापुरका देश भी बादशाही राज्यमें मिला दूंगा। यह सब काम ऊपर कही अवधिमें न कर डालूं तो दरबारमें मुंह न दिखाऊंगा।

"जब सरदारोंमें और खानखानांमें यहांतक खिच गई तो मैंने उसका वहां रहना उचित न देखकर खानजहांको सेनापति क्रिया और खानखानांको दरगाहमें बुला लिया। अभी तो यह कारण कृपा नहीं होनेका है आगे जैसा कुछ प्रगट होगा वैसाही बरताव होगा।"

खानखानांके बेटे दाराबखांको हजारी जात और पांच सौ सवारकी नौकरी और गाजीपुरकी सरकार जागीरमें दीगई।

(१) मुसलमानी हिसाबसे शुक्रकी रात।

१७ आबान (अगहन बदी ८) मङ्गलवारको खुर्रमका व्याह मिरजा मुजफ्फरहुसैन सफवीको बेटीसे हुआ। बादशाह खुर्रमके घर गया। रातको वहीं रहा। बहुतसे अमीरोंको सिरोपाव मिले और कुछ कैदी भी गवालियरके किलेसे छोड़ गये। कुछ चांदी सोना और अन्न आगरेके फकीरोंको बांटा गया।

दक्षिण।

इसी दिन खानजहांकी अर्जी पहुंची कि खानखानांके बेटे एरज को शाहजादेकी आज्ञा लेकर दरबारमें भेजा है। अबुलफतह बीजापुरीके भेजनेका भी हुक्म था परन्तु वह कामका आदमी है और अभी उसके भेजनेसे दक्षिणी सरदारोंकी आशा भङ्ग होती है जिनको बचनपत्र दिये गये हैं, इसलिये रख लिया है। राय कल्ला के बेटे केशवदास मारूके वास्ते हुक्म हुआ कि उसके भेजनेमें ढील भी हो तोभी जैसे बने वैसे भेजदो। शाहजादेने यह बात जानते ही उसे छुट्टी देदी और कहा कि मेरी तरफसे अर्जीमें लिखना कि जब मैं अपना जीना पूज्यपिताकी सेवाहीके लिये चाहता हूं तो केशव-दासका होना न होनाही क्या जो उसे भेजनेमें ढील करूं? पर मेरे विश्वासपात्र नौकरोंके किसी न किसी प्रसङ्गसे बुला लेनेसे दूसरे आदमी निराश और हताश होते हैं इससे सीमाप्रान्तमें आपकी अप्रसन्नताका भ्रम फैलता है। आगे आपकी इच्छा।

अहमदनगरका छूटना।

जिस दिनसे अहमदनगर शाहजादे दानियालने लिया था अब तक ख्वाजाबेगमिरजा सफवीके संरक्षणमें था। यह मिरजा ईरानके शाहतुहमास्प सफवीके भाई बन्दोंमेंसे था। जब दक्षिणियोंने आकर उस किलेको घेरा तो मिरजाने उसके बचानेमें कोताही न की। खानखानां और दूसरे अमीर जो बुरहानपुरमें इकट्ठे हुए थे परवेज के साथ दक्षिणियोंसे लड़नेको गये परन्तु आपसके विरोधसे उस भारी लश्करको जो बड़े बड़े काम करनेको समर्थ था धान चारेका प्रबन्ध किये बिना औघट घाटों और बिकट पहाड़ोंमेंसे लेगये। इससे थोड़ेही दिनोंमें यह दशा होगई कि लोग रोटीके वास्ते जान

देने लगे। तब लाचार होकर रास्तेमेंसेही लौट आये और किले वाले जो इनके आनेका रास्ता देख रहे थे यह समाचार सुनतेही घबराकर निकलने लगे। ख्वाजाबेगमिरजाने उनको बहुत रोका। जब नहीं रुके तो निदान सन्धि करके अपनी सेना सहित निकला और बुरहानपुरमें शाहजादेके पास आगया। बादशाहको जब इस हालकी अर्जी पहुंची तो उन्होंने ख्वाजाबेगका कुछ कसूर न देखकर उसका मनसब जो पांच हजारी जात और सवारका था बना रखा और उसके वास्ते जागीर देनेका भी हुक्म चढ़ा दिया।

बीजापुर।

८ रमजान (अगहन सुदी ११) को दक्षिणसे कई अमीरोंकी अर्जी पहुंची कि मीर जमालुद्दीन २२ शाबान (अगहन बदी ८) को बीजापुर पहुंचा। आदिलखांने अपने वकीलको २० कोस अगवानीमें भेजा था तीन कोस तक आप भी आकर मीरको अपने स्थान पर लेगया।

शिकार।

१५ (पौष बदी २) गुरुवारको रात(१)को एक पहर छः घड़ी रात गये ज्योतिषियोंके बताये हुए मुहूर्तमें बादशाहने आगरेसे शिकारके वास्ते प्रयाण करके दहराबागमें डेरा किया। खेतीका बिगाड़ न होनेके अभिप्रायसे हुक्म दिया कि आवश्यक सेवकों और निज अनुचरोंके अतिरिक्त और सब लोग नगरमें रहें। नगरकी रक्षा ख्वाजेजहांको सौंपी।

२८ आजर २१ रमजान (पौष बदी ८) को ४४ हाथी जो कासिमखांके बेटे हाशिमखांने उड़ीसेसे भेटके लिये भेजे थे, पहुंचे। उनमेंसे एक हाथी बादशाहके बहुत पसन्द आया। वह खासेके हाथियोंमें बांधा गया।

सूरज गहन।

२८ रमजान (पौष बदी ३०) को सूरजगहन(१) हुआ।

(१) मुसलमानी हिसाबसे शुक्रको रात।

(१) चण्डू पञ्चांगमें यह गहन धन राशि पर १५ विश्वा लिखा है।

बादशाहने उसका भार निवारण करनेके वास्ते अपनेको सोने चांदी में तौला। अठारहसौ तोले सोना और उनचास सौ रुपये चढ़े। यह धन अनेक प्रकारके धान्य और हाथी घोड़े गाय आदि सहित आगरे तथा अन्य नगरोंमें भेजकर गरीबोंको बंटवा दिया।

दक्षिण और खानआजम।

दक्षिणमें परवेजके सेनापति, खानखानांके मुखिया, राजा मान-सिंह, खानजहां, आसिफखां, अमीरुलउमरा जैसे बड़े बड़े अमीरों तथा दूसरे सरदारों और मनसबदारोंके सहायक होनेसे भी कुछ काम नहीं निकला था बल्कि यह लोग अहमदनगर जाते हुए आधे रास्तेसे लौट आये थे जिसके विषयमें भरोसेके मनुष्यों और सच्चे खबरनवीसोंने बादशाहको अर्जियां लिखी थीं कि इस लशकरके तितर बितर होनेके और भी कई कारण हैं। परन्तु उनमें मुख्य अमीरोंकी फूट और विशेष करके खानखानांकी अन्तरदुष्टता है। इसपर बादशाहने उस गड़बड़की शान्तिके लिये खानआजमको नई सेनाके साथ भेजना स्थिर करके ११ दे (माघ बदी ३) को यह सेवा उसे सौंपी और दीवानोंसे शीघ्रही उसके जानेका प्रबन्ध कराके एक हजार मनसबदार सवारों दोहजार अहदियों और खानआलम आदि अमीरोंके साथ उसको बिदा किया। कई हाथी और तीस लाख रुपये दिये। भारी सिरोपाव जड़ाऊ तलवार जड़ाऊ जीनका घोड़ा और खासा हाथी देकर पांच लाख रुपये मददखर्चके लिये दिलाये जिनके वास्ते दीवानोंको उसकी जागीरसे भरा लेनेका हुक्म हुआ। उसके साथके अमीरोंको भी घोड़े और सिरोपाव मिले। महाबतखांके मनसबके चार हजारी जात और तीन हजार सवारों पर पांचसौ सवार और बढ़ाकर हुक्म दिया कि खानआजम और इस लशकरको बुरहानपुरमें पहुंचाकर खानआजमकी सरदारीका हुक्म वहांके सब अमीरोंको सुना दे और पहले भेजे हुए लशकर में जो गड़बड़ हुई है उसका निर्णय करके खानखानांको अपने साथ ले आवे।

अनूपरायका सिंहदलन होना।

४ शव्वाल (पौष सुदी ४) रविवारको बादशाह चीतेके शिकार में लगा हुआ था कि एक सिंह उठा और अनूपराय उससे लड़ा। इसका वृत्तान्त बादशाह यों लिखता है—"मैंने यह बात ठहराई है कि रविवार और गुरुवारको कोई जीव नहीं मारा जावे और मैं भी इन दोनो दिनोंमें मांस नहीं खाता हूं।"

"रविवारको तो इस हेतु कि मेरे पिता उस दिनको पवित्र जानकर मांस नहीं खाते थे। पशुहिंसाका भी निषेध था क्योंकि उस दिन रातको उनका जन्म हुआ था। वह फरमाया करते थे कि इस दिन उत्तम बात यही है कि जीव जन्तु कसाइयोंकेसे स्वभाववाले मनुष्योंकी दुष्टतासे बचे रहें।

गुरुवार मेरे राज्याभिषेकका दिन है। इस दिन मैंने भी जीवों के नहीं मारनेका हुक्म देरखा है। दोनों दिन शिकार भी मैं तीर और बन्दूकसे नहीं मारता हूं।

जब चीतेका शिकार होरहा था तो अनूपराय जो निज सेवकों मेंसे है, कई लोगोंको जो शिकारमें साथ रहते हैं मुझसे कुछ दूर छोड़कर आता था। एक वृक्ष पर कई चीलें बैठी देख कमान और कई तुक्के लेकर उधर गया तो एक अधखाई गाय पड़ी देखी और साथही एक बड़ा भयङ्कर सिंह भाड़ोंमेंसे निकल कर चला। उससमय दो घड़ीसे अधिक दिन नहीं था तोभी उसने उस सिंहको घेर कर मेरे पास आदमी भेजा। क्योंकि वह खूब जानता था कि मेरी रुचि सिंहके शिकार में कितनी अधिक है।

मेरे पास यह खबर पहुँची तो मैं तत्काल व्याकुलतासे घोड़ा दौड़ाता हुआ गया। बाबा खुर्रम, रामदास, एतमादराय, हयातखां तथा एक दो और मेरे साथ हुए। वहां पहुँचतेही मैंने देखा कि सिंह एक वृक्षकी छायामें बैठा है। मैंने चाहा कि घोड़े पर चढ़े ही चढ़े बन्दूक मारूं परन्तु घोड़ा एक जगह नहीं ठहरता था इस लिये मैं पैदल होगया और बन्दूक सीधी करके छोड़ी। सिंहके

लगी या नहीं इसका कुछ पता न लगा। क्योंकि मैं ऊंचे पर था और सिंह नीचे। क्षणभर पीछे मैंने घबराहटमें दूसरी बन्दूक चलाई। शायद यह गोली उसके लगी। वह उठा और दौड़ा। एक मीर शिकारी शाहीनको हाथ पर लिये उसके सामने पड़ा। वह उसको घायल करके अपनी जगह जा बैठा। मैंने दूसरी बन्दूक तिपाये पर रखकर तोली। अनूपराय तिपायेको पकड़े खड़ा था एक तलवार उसकी कमरमें थी और लाठी हाथमें। बाबा खुर्रम बाईं ओर कुछ फासिलेसे था और रामदास तथा दूसरे नौकर उसके पीछे थे। कमाल किरावल (शिकारी) ने बन्दूक भर कर मेरे हाथमें दी। मैं चलायाही चाहता था कि इतनेमें शेर गरजता हुआ हमारे ऊपर झपटा। मैंने बन्दूक मारी। गोली उसके मुंह और दांतोंमें होकर निकल गई। बन्दूककी कड़कसे वह और बिफरा। बहुतसे सेवक जो वहां आ भरे थे डरकर एक दूसरे पर गिर गये। मैं उनके धक्के से दो एक कदम पीछे जापड़ा। यह मुझे निश्चय है कि दो तीन आदमी मेरी छाती पर पांव रख कर मेरे ऊपरसे निकल गये। मैं एतमादराय और कमाल किरावल के सहारेसे खड़ा हुआ इस समय सिंह उन लोगों पर गया जो बाईं तरफ खड़े थे। अनूपराय तिपायेको हाथसे छोड़कर सिंहके सामने हुआ। सिंह जिस फुरतीसे आरहा था उसी फुरतीसे उसकी ओर लौटा। उस पुरुष सिंहने भी वीरतासे सम्मुख जाकर वही लाठी दोनों हाथोंसे दो बार उसके सिर पर मारी। सिंहने मुंह फाड़कर अनूपरायके दोनो हाथ चबाडाले। परन्तु उस लाठी और कई अंगूठियोंसे जो हाथमें थीं बड़ा सहारा मिला और हाथ बेकार न हुए। अनूपराय सिंहके धक्केसे उसके दोनो हाथोंके बीचमें चित गिर गया। उसका मुंह सिंहकी छातीके नीचे था। बाबा खुर्रम और रामदास अनूपरायकी सहायताको बढ़े। खुर्रम ने एक तलवार सिंहकी कमर पर मारी रामदासने दो मारीं। जिनमेंसे एक उसके कान्धे पर पूरी बैठी हयातखांके हाथमें

लाठी थी वही उसने कई बार उसके मस्तक पर दी। अनूपरायने बल करके अपने हाथ सिंहके मुंहसे छुड़ा लिये और दो तीन घूंसे जबड़े पर मारे और करवट लेकर घुटनेके बल उठ खड़ा हुआ। सिंहके दांत उसके हाथोंमें पार होगये थे इसलिये उसके मुंहसे हाथ खेंचे तो उस जगहसे फट गये और सिंहके नाखून भी उसके कन्धे से निकल गये थे।

अनूपरायके खड़े होतेही शेर भी खड़ा होगया और उसकी छाती पर नाखून और पंजे मारने लगा। जिनके घावोंने कई दिन तक उसको व्याकुल रखा। फिर वह दोनो दो मल्लोंके समान एक दूसरेसे लिपटकर उस ऊंची नीची धरतीमें लुढ़क गये। मैं जहां खड़ा था वह भूमि समान थी। अनूपराय कहता था कि परमेश्वरने मुझे इतना औसान दिया कि सिंहको मैं उधर लेगया और मुझे कुछ खबर नहीं है।

अब सिंह उसको छोड़कर चल देता है। अनूपराय उसी बेहोशी में तलवार सूंतकर उसके पीछे जाता है और उसके सिर पर मारता है। सिंह जो पीछेको मुंह फेरता है तो दूसरा हाथ फिर उस पर झाड़ता है जिससे दोनो आंखें उसकी कट जाती हैं और भंवोंका मांस कटकर आंखों पर आजाता है। उसी अवसर पर सालह नाम चरागची (नाई) घबराया हुआ आता है क्योंकि दीपक का समय होगया था सिंह एक ही तमांचेमें उसको गिरा देता है। गिरना और मरना एक था। दूसरे आदमियोंने पहुंचकर सिंहको मार डाला।

अनूपरायसे इस प्रकारजो सेवा बन आई और उसका ऐसा जान लड़ाना देखा गया। घाव भर जानेके पीछे अच्छा होकर जब वह मुजरा करनेको आया तो मैंने उसको अनीराय सिंहदलनका खिताब दिया और कुछ उसका मनसब भी बढ़ाया। अनीराय हिन्दी भाषामें फौजके सरदारको कहते हैं और सिंहदलनका अर्थ शेर मारनेवाला है।

शिकार।

२३ जीकाद (फागुन बदी ८) रविवार(१)को बादशाहने ७६६ मछलियां पकड़कर अपने सम्मुख अमीरों और दूसरे नौकरोंको बांटीं।

एक ऊंट जिस पर ५ नीलगायें ४२ मनकी लादी गई थीं उठ कर खड़ा होगया था। यह ऊंट शिकारके घरमें उत्पन्न हुए ऊंटों मेंसे था।

मुल्ला नजीरी जो फारसी भाषाका अच्छा कवि था गुजरातमें व्यापार करता था। बादशाहने प्रशंसा सुन कर उसे बुलाया। उसने आकर एक कविता सुनाई। बादशाहने एक हजार रुपये घोड़ा और सिरोपाव उसको दिया।

मुरतिजाखांने हकीम हमीद गुजरातीकी बहुत प्रशंसा की थी बादशाहने उसको बुलाया और हकीमोंसे अधिक उसमें सज्जनता देखी। परन्तु यह भी सुना कि गुजरातमें उसके सिवा कोई हकीम नहीं है और वह भी जाना चाहता था इसलिये एक हजार रुपये कई शाल दुशाले और एक गांव देकर बिदा किया।

बकरईद।

१० जिलहज्ज (फागुन सुदी १२) गुरुवारको पशुवध बन्द हो चुका था इसवास्ते बादशाहने शुक्रवारको ईदका बलिदान करनेकी आज्ञादी और तीन बकरियां अपने हाथसे वध कीं। फिर शिकार को गया एक नीलगायने बहुत थकाया जो कईबार गोली खाकर

---

(१) तुजुक जहांगीरीमें तारीख २ जीकाद रविवारको लिखी है वह पंचांगसे नहीं मिलती जिसके हिसाबसे तारीख २ मंगलको होती है यह तारीख २ मूलमें २३ होगी। लेखककी भूलसे २ लिखी रह गई। २३ को चण्डू पंचांगसे तो चन्द्रवार होता है पर बादशाही पंचांगमें रविवार होगा और शव्वालका महीना २९ दिनका माना गया होगा जो चण्डू पंचांगके हिसाबसे ३० दिनका होता है।

चली गई थी और अब भी तीन गोलियां खाचुकी थी। बादशाह उसके पीछे पीछे फिरता रहा। निदान यह संकल्प किया कि जो यह नीलगाय गिरेगी तो इसका मांस ख्वाजे मुईनुद्दीनके अर्पण कर के फकीरोंको बांट दूंगा एक मोहर एक रूपया अपने बापके भी भेट करूंगा।

ऐसा कहतेही वह नीलगाय थककर गिरी और बादशाहने उस का मांस तथा मोहर और रुपयेका शीरा पकवाकर अपने सामने भूखों और फकीरोंको खिला दिया।

दो तीन दिन पीछे फिर एक नीलगायके पीछे बादशाह कंधे पर बन्दूक रखे हुए शाम तक फिरता रहा परन्तु वह एक जगह नहीं ठहरती थी दिन छिपने पर उसके मारने से निराश होकर फिर बादशाहने कहा कि ख्वाजा यह नीली भी तुम्हारे नजर है यह कहना था कि वह बैठ गई और बादशाहने उसको बन्दूकसे मार कर उसका मांस भी उसी भांति फकीरों को खिला दिया।

चैत बदी ७ शनिवारको ३३० मछलियोंका शिकार हुआ।

१९ शनि (चैत बदी ३०) को रातको बादशाह रूपवासमें आगया। जो उसकी निज शिकारगाह थी और जिसके आसपास भी किसीको शिकार मारनेकी आज्ञा न थी। इससे वहां असंख्य हरन भर गये थे वह बस्ती में चले आते थे और सब प्रकारकी हानि से बचे रहते थे। बादशाहने दो तीन दिन वहां शिकार खेलकर बहुतसे हरन बन्दूकसे मारे और चीतोंसे मरवाये।

सातवां वर्ष।

सन् १०२०।

चैत्र सुदी ३ संवत् १६६८ से फागुन सुदी २ संवत् १६६८ तक।

राजधानीमें प्रवेशका मुहूर्त्त समीप आजानेसे बादशाह २ मुहर्रम (चैत्र सुदी ३) गुरुवारको अबदुर्रज्जाक मामूरीके बागमें आया। ख्वाजाजहां वगैरह आगरेसे वहां आगये। खानखानांके बेटे एरजने भी जो दक्षिणसे बुलाया गया था वहीं उपस्थित होकर मुजरा किया।

शुक्रको भी बादशाह उसी बागमें रहा। अबदुर्रज्जाकने अपनी भेट दिखाई।

शिकारकी संख्या।

तीन महीने बीस दिनमें १४१४ पशु पक्षी शिकार हुए थे—

सिंह	१२	खरगोश	६
गेंडा	१	नीलगाय	१०८
चिकारे	४४	मछलियां	१०८६
कोतापाचा	१	उकाब	१
हरनके बच्चे	२	तमदरी	१
काले हरन	६८	मोर	५
हरनी	३१	करवानक	५
लोमड़ी	४	तीतर	५
कोराहरन	८	सुरखाब	१
पातख	१	सारस	५
रीछ	५	ढींक	१
जरख	३	कुल	१४१४

आगरेमें प्रवेश।

४ मुहर्रम २८ असफंदार (चैत्र सुदी ५ संवत् १६६८) शनिवार

को बादशाह हाथीपर सवार हो अबदुर्रज्जाकके बागसे किलेके दौल-तखाने तक जिसका फासिला एक कोस और २० डोरी था पन्द्रहसौ रुपये लुटाता गया और ज्योतिषियोंके दिये हुए मुहूर्त्तमें नये राज-भवनमें पहुंचा जिसके बनानेका हुक्म शिकारको जाते हुए देगया था। उस राजभवनको ख्वाजेजहांने इतनी थोड़ी अवधिमें,अति परिश्र-मसे बनवाकर और रंग भरवाकर तैयार कर छोड़ा था और अपनी भेट भी उसीमें सजा रक्खी थी जिसमेंसे बादशाहने कुछ लेकर शेष उसको बख्श दी और भवनको पसन्द करके उसकी कार्य्यवाहीकी प्रशंसा की।

बाजार भी नौरोजके प्रसंगसे सजाये गये थे।

छठा नौरोज।

६ मुहर्रम (चैत सुदी ७) चन्द्रवारको दो घड़ी ४० पल दिन चढ़े सूरज भगवान अपने उच्चभवन मेख राशिमें आये। बादशाह के राज्याभिषेकका छठा नौरोज हुआ जिसकी मजलिसें जुड़ीं। बादशाह तख्त पर बैठा। अमीरों और सब चाकरोंने मुजरा किया, बधाई दी। मीरान सदरजहां, अबदुल्लहखां, फीरोजजंग और जहांगीरकुलीखांकी भेट स्वीकार हुई।

८ (चैत सुदी १०) बुधको राजा कल्याणकी भेट जो बंगालसे आई थी दृष्टिगोचर हुई।

९ (चैत सुदी ११) गुरुवारको शुजाअतखां और कई मनसबदार जो दक्खिणसे बुलाये गये थे हाजिर आये।

मुरतिजाखांकी भेटमें बहुत तरहके बहुतसे पदार्थ थे। बाद-शाहने सबको देखकर कुछ जवाहिर उत्तम कपड़े और हाथी घोड़े लेलिये बाकी उसीको देदिये।

शुजाअतखां बङ्गालमें इसलामखांके पास कायममुकामीका काम करनेको भेजा गया। ख्वाजाजहां आदि कई अमीरोंके मनसब बढ़े कईको शिरोपाव मिले। खुर्रमको आठ हजारी जात और पांच हजार सवारोंके मनसब पर दो हजारी जातकी वृद्धि हुई।

ईरानका एलची।

१८(१) फरवरदीन (बैशाख बदी १०) को संक्रांति(२)का उत्सव हुआ। ईरानके शाह अब्बासके एलची यादगारअलीने हाजिर होकर मुजरा किया। शाहका पत्र दिया सौगातें जो लाया था दिखाईं। उनमें अच्छे अच्छे घोड़े और कपड़ोंके थान थे। बादशाहने उसको भारी खिलअत और तीस हजार रुपये दिये। पत्रमें अकबर बादशाहके मरनेका शोक और जहांगीरके गद्दी पर बैठनेका हर्ष था।

खानखानांके बेटे एरजको शाहनवाजखांका खिताब मिला।

मोहरों और रुपयोंका तौल।

बादशाहने तख्त पर बैठतेही बाट और गज बढ़ा दिये थे। रुपये और मोहरका तौल तीन रत्ती अधिक कर दिया था। परन्तु अब यह बात जानकर कि प्रजाका हित मोहर और रुपयेका पुराना तौल रहनेहीमें है अपने तमाम देशोंमें हुक्म भेज दिया कि ११ उर्दीबहिश्त (जेठ बदी ४) से टकसालोंमें रुपये और मोहरें जैसे पहिले बनती थीं वैसीही बना करें।

२ सफर १०२० (बैशाख सुदी ४) शनिवारको अहदाद यह सुनकर कि काबुलमें कोई बड़ा सरदार नहीं है खानदौरां बाहर गया हुआ है केवल मुअज्जुलमुल्क थोड़ेसे आदमियोंसे है, बहुतसे सवार और पैदल लेकर काबुलपर चढ़ आया। उसके पठान अलग अलग टोलियां बांधकर शहरके बाजारों और कूचोंमें घुस गये। परन्तु मुअज्जुलमुल्क और पुरवासी काबुलियों और कजलबाशोंने लड़कर उनको भगा दिया और उनके मुखियाको जिसका नाम सकी था मार डाला। अहदाद यह दशा देखकर भाग गया उसके ८०० आदमी मारे और २५० घोड़े पकड़े गये।

(१) तुजुकमें इस दिन २४ मुहर्रम लिखी है, २२ चाहिये क्योंकि १ फरवरदीन ६ मुहर्रमको थी।

(२) चण्डूपञ्चाङ्गमें भी मेख संक्रान्ति इसी दिन लिखी है।

बादशाहने यह समाचार सुनकर मुअज्जुलमुल्क और जाहदखो के मनसब बढ़ाये और अहदादके दमन करनेमें खानदौरां और काबुलियोंको सुस्ती देखकर बेटों सहित खानखानांके भेजनेका विचार किया जो दरबारमें बेकार बैठा था। इतनेमेंही कुलीचखां जो पञ्जाबसे बुलाया गया था आगया और खानखानांके नियत होनेसे दिलमें दुखी हुआ। निदान जब उसने इस कामका स्पष्ट वचन दिया तो बादशाहने पञ्जाबका सूबा तो मुरतिजाखांको दिया और कुलीचखांको छः हजारी जात और पांच हजार सवारों का मनसब देकर काबुलकी संरक्षण तथा अहदाद और पहाड़ी चोरों के शासन पर नियत किया। खानखानांसे कहा कि सूबे आगरेसे सरकार कन्नौज और कालपीको जागीरको तनखाहमें लेकर उस देशके दुष्टोंका दमन करे। बिदा करते समय प्रत्येकको खासे खिलअत हाथी और घोड़े दिये।

महाबतखां जो दक्षिण सेनाके अमीरोंको आपसमें मेल मिलाप रखनेका हुक्म सुनानेके लिये गया था २१ रबीउस्सानी (द्वितीय असाढ़ बदी ८) को दक्षिणसे लौट आया।

इसलामखांके लिखनेसे इनायतखांका मनसब पांच सदी जात बढ़कर दो हजारी होगया और राजा कल्याण पांच सदी जात और तीन सौ सवार बढ़नेसे डेढ़ हजारी जात और आठ सौ सवारोंके मनसबको पहुंचा।

हाशिमखांको जो उड़ीसेमें था कशमीरको सूबेदारी दीगई। इसके वहां पहुंचने तक काम करनेके लिये इसका चचा ख्वाजगी मुहम्मदहुसैन कशमीरमें भेजा गया। हाशिमखांके बाप मुहम्मद कासिमने अकबर बादशाहके समयमें कशमीरको जीता था।

कुलीचखांके बेटे चीनकुलीचको खान पदवी मिली। उसके बापकी प्रार्थना तथा तिराहदेशके प्रबन्धको प्रतिज्ञा करने पर उसे पांच सदी जात और तीन सौ सवारोंकी तरक्की मिली।

१४ अमरदाद (सावन बदी १३) को एतमादुद्दौलाने पुराना

और स्वामिभक्त नौकर होनेसे समग्र राज्यकी दीवानीका महत् पद पाया।

गुजरात।

अबदुल्लहखां फीरोजजङ्गने गुजरातकी ओरसे दक्षिण पर जाने का बचन दिया। इसलिये बादशाहने उसको राणाकी लड़ाईसे बदलकर गुजरातका सूबेदार कर दिया और राजा बासूको पांच सौ सवार बढ़ाकर उसकी जगह राणाकी मुहिम पर भेजा।

मालवा।

खान आजमको गुजरातके बदले मालवेका सूबा दिया गया।

दक्षिण।

अबदुल्लहखांके साथ दक्षिणको एक लशकर नासिकके मार्गसे भेजना ठहरा था उसके खर्चके वास्ते चार लाख रुपये भेजे गये।

विचित्र चित्र।

एक बादशाही गुलामने जो हाथीदांतके कारखानेमें काम करता था फिन्दकके छिलके पर हाथीकी हड्डीसे कटे हुए चित्र जोड़कर चार विचित्र चित्र बनाये। पहिला चित्र मल्लोंका अखाड़ा था दो मल्ल कुश्ती लड़ रहे थे। एक हाथमें बरछा लिये खड़ा था दूसरेके हाथमें एक बड़ा पत्थर था एक और जमीन पर हाथ टेके बैठा था एक लड़का एक धनुष और एक बरतन आगे रखा था।

दूसरे चित्रमें एक सिंहासन बना था ऊपर शामियाना तना था। उस सिंहासन पर एक भाग्यवान पुरुष पांव पर पांव रखे बैठा था तकिया पीठसे लगा था पांच सेवक आगे पीछे खड़े थे और एक वृक्षकी शाखा उस सिंहासन पर छाया किये हुई थी।

तीसरे चित्रमें नटोंका नाटक होरहा था एक लकड़ी खड़ी थी तीन रस्से उससे बंधे थे एक नट उस पर दाहिने पांवको पीठके पीछे बायें हाथसे पकड़े खड़ा था और एक बकरा भी उस लकड़ी पर था। एक आदमी गलेमें ढोल डाले बजाता था दूसरा हाथ ऊंचा किये रस्सीको तक रहा था। पांच आदमी और खड़े थे जिनमेंसे एकके हाथमें लाठी थी।

चौथे चित्रमें एक वृक्ष था उसके नीचे पैगम्बर थे। उनके पांव पर सिर रखे हुए या। एक बूढ़ा उनसे बा था चार आदमी और खड़े थे।

बादशाह लिखता है—"ऐसी कारीगरी अबतक मैंने न देखी थी न सुनी इस वास्ते उसको इनाम दिया और वेतन बढ़ाया।"

३० शहरेवर (भादों सुदी १५) को मिरजा सुलतान दक्षिणसे बुलाया हुआ आया। ज़फ़रखांको मनसब बढ़ाकर उस सेनाकी सहायताके वास्ते भेजा जो राणाके ऊपर गई थी।

रामदास कछवाहा।

अबदुल्लहखां बहादुर फीरोजजंगने यह इरादा किया था कि नासिकके मार्गसे दक्षिणमें जावे। बादशाह लिखता है—मेरे मनमें यह आया कि रामदास कछवाहेको जो मेरे बापके स्वामि-भक्त सेवकोंमेंसे है उसके साथ करूं। वह सब जगह उसको हिफा-ज़त रखे। अनुचित साहस और जल्दी न करने दे। इसके लिये मैंने उस पर बड़ी कृपा की। उसे राजाकी उपाधि दी जिसका उसे ध्यान भी न था। उसे नक्कारा दिया और रणथम्भोरका प्रसिद्ध किला दिया। उत्तम खिलत और हाथी घोड़े देकर बिदा किया।

राजा कल्याण।

बादशाहने बंगालके सूबेदार इसलामखांके लिखनेसे सरकार उड़ीसाकी सरदारी राजा कल्याणको दी। दो सदी जात और दो हजार सवार भी उसके मनसबमें बढ़ाये।

तूरान।

तूरानमें गड़बड़ होनेसे बहुतसे उजबक सरदार और सिपाही बादशाहकी सेवामें आये बादशाहने सबको सिरोपाव घोड़े मनसब रुपये और जागीर देकर नौकर रख लिया।

दक्षिणकी लड़ाई।

२ आजर (अगहन बदी ५) को पांच लाख रुपये रूपखवास और शेख अंबियाके हाथ अहमदाबादकी उस सेनाकी सहायताके वास्ते

भेजे गये जो अबदुल्लहखां फीरोजजंगकी अफसरीमें दक्षिण जानेको नियत हुई थी।

शिकार।

१ दे (पौष बदी ३) को बादशाह समू नगरमें शिकार खेलने गया। दो दिन दो रात वहां रहकर रविवारको रातको शहरमें आगया।

बादशाहकी कविता।

बादशाहने फारसी भाषाका एक शेर बनाया और चराग-चियों तथा कहानी कहनेवालोंको याद कराकर फरमाया कि सलाम करने तथा कहानी कहते समय इसको पढ़ा करें। जिससे वह शेर बहुत प्रसिद्ध होगया। उसका यह आशय था—

जब तक आकाशमें सूरज चमकता है।
उसका प्रतिबिम्ब बादशाहके छत्रसे दूर न हो।

३ दे (पौष बदी ५) शनिवारको खानआजमकी अर्जीमें लिखा आया कि बीजापुरवाला आदिलखां अपने अपराधोंसे पछताकर पहलेसे अधिक आज्ञाकारी और शुभचिन्तक होगया है।

बादशाहकी धर्म्मनिष्ठा।

बादशाहने हुक्मदिया कि बादशाही शिकारके हरनोंके चमड़ेकी जानमाजें(१) बनाकर दीवान खास और आममें रख छोड़ें उन पर लोग नमाज पढ़ा करें। मीरअदल और काजीसे जो धर्म्माधिकारी थे धर्म्मकी प्रतिष्ठाके लिये फरमाया कि जमीन चूमकर मुजरा न किया करें। क्योंकि वह एक प्रकारकी दण्डवत है (२)।

शिकार।

समूनगरमें बहुतसे हरन इकट्ठे होगयेथे इससे बादशाहने ख्वाजेजहां

---

(१) जिसको बिछाकर नमाज पढ़ते हैं।

(२) मुसलमानी मतमें परमेश्वरके सिवा और किसीको दण्डवत करना मना है।

को हांकेका प्रबंध करनेके लिये भेजा था। उसने डेढ़ कोसमें कनातें और गुलालबारें(१) लगाकर हरनोंको हर तरफसे उनमें घेरा और बादशाहको खबर दी बादशाह २२ दे (पौष सुदी ९) गुरुवारको अलूनगर गया शुक्रवारसे शिकार शुरू हुआ। नित्य बेगमों सहित उन कनातोंमें जाकर मनमाने हरन तीर और बंदूकसे मारता। रविवार और गुरुवारको बंदूक नहीं चलाता था। जाल डालकर जीते हरन पकड़ता था। शुक्रवारसे गुरुवार तक ७ दिन में ९१७ हरनी और हरन शिकार हुए। उनमें ६४१ जीते पकड़े थे। जीतोंमेंसे ४०४ तो फतहपुर भेजकर वहांके रमनोंमें छुड़वा दिये। ८४ को नाकमें चांदीकी नथें पहनाकर उसीजगह छोड़ दिया। २७६ जो तीर बंदूक और चीतोंसे मारे गये थे नित्य बेगमों, महल की टहलनियों, अमीरों और ड्योढ़ीके चाकरोंको बांटे जाते थे। जब बादशाह बहुत शिकार करके उकता गया तो अमीरोंको हुक्म दे दिया कि जो बच गये हैं उन्हें वह मारलें और आप शहरमें आगया

पुण्यशालाएं।

१ बहमन (माघ बदी ३।४) को बादशाहने हुक्म दिया कि बादशाही देशोंके बड़े बड़े शहरोंमें अहमदाबाद, इलाहाबाद, लाहौर, आगरा और दिल्ली आदिके समान खैरातखाने बनावें। छः नगरोंमें पहलेसे थे। २४ नगरोंमें और नियत हुए।

राजा बरसिंहदेव।

४ (माघ बदी ६) को राजा बरसिंहदेवका मनसब बढ़कर चार हजारी जात और दो हजार सवारका होगया। बादशाहने उसको जड़ाऊ तलवार भी दी। दूसरी खासेकी तलवार जिसका नाम शेरबचा था शाहनवाजखांको इनायत की।

(१) गुलालबार लाल रंगकी बादशाही किनातेंके घेरेका नाम था।

आठवां वर्ष।

सन् १०२१।

फागुन सुदी ३ संवत् १६६८ से फागुन सुदी २ संवत् १६६९ तक।

राणाकी लड़ाई।

फागुन सुदी ३ को मिरजा शाहरुखका बेटा बदीउज्जमान राणाके लश्करमें नियत किया गया और उसके हाथ एक तलवार राजा बासूके वास्ते भेजी गई।

जहांगीरी आईन।

बादशाहको सुनाया गया था कि सीमाप्रांतके अमीर कुछ अयोग्य बर्ताव करते हैं उनके तौरे(१) तथा जाबतेका ध्यान नहीं रखते। बादशाहने बख्शियोंको हुक्म दिया कि सीमाप्रान्तके अमीरोंको लिख देवें कि अबसे फिर यह बातें जो विशेष करके बादशाहोंके करनेकी हैं न किया करें।

१ झरोखेमें न बैठें।

२ अपने सहायक सरदारों और अमीरोंको सलाम करने और चौकी देनेकी तकलीफ न दें।

३ हाथी न लड़ावें।

४ दण्ड देनेमें किसीको अन्धा न करें नाक कान न काटें।

५ किसी पर मुसलमान होनेके वास्ते दबाव न डालें।

६ अपने नौकरोंको खिताब न देवें।

७ बादशाही नौकरोंको कोर्निश(२) और तसलीम(३) करनेको न कहें।

---

(१) चङ्गेजखांके बांधे हुए प्रबन्धोंको तौरा कहते हैं।

(२) झुककर सलाम करना।

(३) गरदन आगे रखकर मुजरा करना।

८ गवैयोंको दरबारके ढङ्ग पर चौकी देनेका कष्ट न देवें।

९ बाहर नक्कारा न बजावें।

१० घोड़ा हाथी चाहे बादशाही नौकरोंको देवें चाहे अपने चाकरोंको, पर बाग और अंकुश उसके कंधे पर रखाकर तसलीम न करावें।

११ सवारीमें बादशाही नौकरोंको अपनी अरदलीमें पैदल न ले जावें और जो कुछ उनको लिखें तो उस पर मोहर न करें।

यह जाबते जहांगीरी आईनके नामसे प्रचलित होगये थे।

सातवां नौरोज।

१६ मुहर्रम (चैत्र बदी ४) मंगलवारको सातवें नौरोजका आगरेमें उत्सव हुआ। बादशाह चैत्र बदी ६ गुरुवारको ४ घड़ी रात गये ज्योतिषियोंके बताये हुए मुहूर्त्तमें सिंहासन पर बैठा। अफजलखांकी भेट बिहारसे पहुंची। तीस हाथी १८ गोट(१) बंगालके कुछ कपड़े अगर चन्दनके लट्ठे, कस्तूरीके नाफे तथा अन्यान्य बहुतसी चीजें थीं।

खानदौरांको भेटमें ४५ घोड़े ऊंट दो कतार, चीनी खताई बरतन, समूरके चमड़े और वह पदार्थ जो काबुल मण्डलमें मिल सकते थे आये।

ऐसेही और अमीरोंकी भेटें भी विधिपूर्वक उत्सवके दिनोंमें होती रहीं।

बङ्गालमें फतह।

१३ फरवरदीन (चैत्र बदी ३०) को इसलामखांकी अर्जी बंगाल से पहुंची उसमें उसमान पठानके मारे जानेका हाल लिखा था। पहिले बंगालमें पठानोंका राज्य था। वह अकबर बादशाहने छीन लिया था। केवल यह उसमान एक कोनेमें स्वतन्त्र रह गया था। इसलामखांने ढाकेसे शुजाअतखांको फौज देकर उसके ऊपर भेजा। जब यह उसमानके किलेके पास पहुंचा तो दूत भेजकर उसको

(१) एक जातिके घोड़े।

बादशाहके अधीन होजानेके वास्ते कहलाया परन्तु उसने नहीं माना। लड़ाईकी तैयारी की। ९(१) मुहर्रम रविवार (फागुन सुदी ११) को लड़ाई हुई उसमान बड़ी वीरतासे लड़ा। उसने बादशाही सेनाके हिरावल और दोनों भुजाओंको विध्वंस कर डाला। तीनों फौजोंके सरदार मारे गये। फिर बीचकी अनी पर भी धावा किया और गजपति नाम लड़ाईके हाथीको शुजाअत-खां पर छोड़ा। शुजाअतखां भी उस हाथीसे खूब लड़ा और कई घाव बरछे और तलवारके लगाकर उसको भगाया तब उसमानने दूसरा हाथी बादशाही झण्डे पर दौड़ाया जिसने झंडेके घोड़ेको गिरा दिया। शुजाअतखांने पहुंचकर झंडेवालेको बचाया और उसको दूसरा घोड़ा देकर फिर झंडा खड़ा कराया। इतनेमें एक गोली न जाने किसके हाथकी उसमानके ललाटमें आकर लगी जिससे वह शिथिल तो होगया परन्तु दोपहर तक फिर भी अपने आदमियोंको लड़ाता रहा। अन्तको भाग निकला। उसके भाई वली और बेटे ममरेजने अपने डेरों पर बादशाही फौजका जो उसमानके पीछे गई थी तीरों और बंदूकोंसे ऐसा सामना किया कि वह अन्दर न घुस सकी। आधीरात बीतनेपर उसमान मर गया। वह लोग उसकी लाश लेकर और माल असबाब वहीं छोड़कर अपने किलेमें आगये।

---

(१) तारीख ९ मुहर्रमको रविवार नहीं मंगलवार था रविवार को तो ७, १४, २१ और २८ थी इसमें दो दिनकी भूल है आगे ९ सफर चन्द्रवारको सही है पर इसमें यह शंका होती है कि बाद-शाहके पास १३ फरवरदीनको जिस दिन कि २८ मुहर्रम थी और बादशाह न मालूम क्योंकर २९ लिखता है ६ सफर २१ फरवरदीन चैत्र सुदी ८।९ तकको खबरें पहिलेही कैसे आगई थीं जो उसने १३ फरवरदीनके वृत्तान्तमें लिखी है यह तो २१ फरवरदीनके पीछे की तारीखोंमें लिखी जाना चाहिये थीं।

दूसरे दिन चन्द्रवारको शुजाअतखांने यह समाचार किरावलों से सुनकर पीछा किया। वलीने अब अधीन होजानाही उचित जानकर सन्धिका सन्देसा भेजा। शुजाअतखांने भी अपने साथियों को सम्मतिसे स्वीकार कर लिया।

दूसरे दिन वली और उसमानके भाई बेटे आकर मिले और ४८ हाथी भेटको लाये। शुजाअतखां कुछ लोगोंको यथार नाम उनके राज्य स्थानमें छोड़कर ६ सफर चन्द्रवार (चैत सुदी ८) को जहांगीरनगरमें इसलामखांके पास आगया और वली आदि पठानों को भी लेआया।

बादशाह इस विजयसे बहुत प्रसन्न हुआ विशेषकर इसलिये कि बंगालका सूबा निष्कण्टक होगया। बारम्बार परमात्माका धन्यवाद करके इसलामखांका मनसब बढ़ाकर छः हजारी करदिया और शुजाअतखांको रुस्तमजमांका खिताब देकर हजारी जात और हजार सवार उसके भी अधिक कर दिये। इसी तरह दूसरे अमीरों का भी जो इस लड़ाईमें थे; यथायोग्य मनसब बढ़ाया और उन्हें दूसरी कृपाओंसे सन्तुष्ट किया।

फ़रंगदेशके पदार्थ।

चैत सुदी ३ को मुकर्रबखां खंभात बन्दरसे आया। वह बादशाहकी आज्ञासे गोवा बन्दरमें जाकर वहां फरंगियोंसे बहुमूल्य पदार्थ मुँहमांगे दामों पर खरीद लाया था। बादशाह उनको देख कर आह्लादित हुआ। उसने कई विचित्र पक्षियोंके चित्र चितेरों से जहांगीरनामे(१) में खिंचवाये और तुजुकमें लिखा कि बाबर बादशाहने कई जानवरोंकी सूरत शकल तो अपने ग्रन्थमें लिखी परन्तु चित्रकारोंको उनकी तसवीर बनानेका हुक्म नहीं दिया।

(१) जहांगीरनामा अभी हमारे देखनेमें नहीं आया है जो लखनऊमें मुंशी नवलकिशोरप्रेससे छापा है वह जहांगीरनामा नहीं है इकबालनामे जहांगीरीका तीसरा भाग है इकबालनामा भी वहीं छपा है फिर न जाने यह कैसे भूल होगई है।

उसने एक पक्षीका (जिसे अब पोरू कहते हैं) और एक बन्दर का विशेष करके वर्णन किया है चकोरोंके वास्ते लिखा है कि मेरे पिताने इनके बच्चे लेनेका बहुत परिश्रम किया पर उस वक्त तो नहीं हुए। अब मेरे समयमें इनके अंडे लिये और मुर्गियोंके नीचे रखे गये तो दो वर्षमें ६०।७० बच्चे निकले ५०।६० बड़े भी होगये जो सुनता है इसका बड़ा अचम्भा करता है।

इन दिनोंमें महाबतखां, एतमादुद्दौला, एतकादखां आदि अमीरोंके मनसब बढ़े। महासिंहका मनसब पांच सदी जात और पांच सौ सवारोंके बढ़नेसे तीन हजारी और दो हजार सवारोंका होगया।

१८ फरवरदीन (चैत्र सुदी ६) को मेष(१) संक्रांतिका उत्सव हुआ खुर्रमका मनसब दस हजारीसे बारह हजारी होगया। ऐसेही और भी कई अमीरोंके मनसब नौरोजके प्रसंगसे बढ़े।

दलपत(२)।

इसी दिन दलपत दक्षिणसे आया उसका बाप रायसिंह मर चुका था इसलिये बादशाहने उसको राय पदवी देकर खिलअत पहनाया। रायसिंहके एक बेटा और भी सूरजसिंह नामका था जिसकी मासे रायसिंहको अधिक प्रेम था। दलपत टीकाई था तोभी वह सूरजसिंहको अपनी जगह बैठाना चाहता था। बादशाह लिखता है—"जिन दिनोंमें रायसिंहके मरनेकी बात चल रही थी सूरजसिंहने अल्पबुद्धि और अल्पावस्था होनेसे प्रार्थना की कि बापने मुझे अपनी जगह बिठाकर टीका दिया है। यह बात मुझको नहीं भाई। मैंने कहा कि जो बापने तुझे टीका दिया है तो हम दलपतको टीका देते हैं।" बादशाहने अपने हाथ से दलपतको टीका देकर उसके पिताकी जागीर और वतन उसको दे दिया।

(१) चण्डू पञ्चाङ्गमें भी मेष संक्रान्ति इसी दिन लिखी है।

(२) बीकानेरका राव।

एतमादुद्दौला ।

एतमादुद्दौलाको जड़ाऊ कलम दावात बादशाहने दी ।

गांव ।

कमाऊंका राजा लखमीचन्द पहाड़के मुख्य राजोंमेंसे था । उसका बाप राजा रुद्र भी अकबर बादशाहकी सेवामें आया था । आनेसे पहिले अर्ज कराई थी कि राजा टोडरमलका बेटा मेरा हाथ पकड़कर सेवामें लेजावे । बादशाहने वैसाही किया । इसी प्रकार लखमीचन्दने भी अर्ज कराई कि एतमादुद्दौलाका बेटा आकर मुझे दरबारमें लेजावे । बादशाहने शापूरको भेजा । राजा उसके साथ आया । गोट जातिके उत्तम घोड़े शिकारी पची बाज जुर्रे शाहीन कुतास(१) कस्तूरीके नाफे कस्तूरी हरनकी चमड़े जिसमें नाफे भी लगे थे तलवारें और खञ्जर जिनको वह लोग खांड़े और कटार कहते हैं और अनेक प्रकारकी चीजें भेटको लाया । पहाड़ी राजोंमें यह राजा इस बातके लिये अति प्रसिद्ध था कि इसके पास सोना बहुत है । लोग इसके देशमें सोनेकी खानें बताते थे ।

दक्षिणमें हार ।

दक्षिणके काम खानआजमको बेपरवाईसे नहीं सुधरे । अब-दुल्लहखांको हार हुई । बादशाहने इन बातोंका निरूपण करनेके लिये अबुलहसनको बुलाया था । बहुतसी पूछ ताछ करने पर विदित हुआ कि अबदुल्लहखां बारहकी हार तो उसीके घमण्ड दौड़ धूप और किसीको बात नहीं सुननेसे हुई पर इसमें अमीरोंकी ईर्षा और फूटका भी अंश मिला हुआ था । बात यह ठहरी थी कि इधर अबदुल्लहखां गुजरातके लशकर और उन अमीरोंके साथ जो उसकी सहायता पर नियत हुए थे नासिक त्रिम्बकके रास्तेसे दक्षिणको जावे । यह लशकर राजा रामदास खानआलम सैफखां अली मरदान बहादुर तथा दूसरे नामी और साहसी सरदारोंसे

(१) सुरागायकी पंछके बाल ।

सजा हुआ था इसकी संख्या भी दस हज़ारसे बढ़कर चौदह हजार तक पहुंची थी।

उधर बरासे राजा मानसिंह खानजहां अमीरुलउमरा और दूसरे अमीर चलें। दोनो दल एक दूसरेके कूच मुकामकी खबर रखें और एक दिन नियतकर गनीमको दोनो ओरसे जाघेरें। जो उस नियत दिनका ध्यान रहता, सबके दिल एक होते और आपाधापी न होती. तो आशा थी कि परमात्मा जय देता। अबदुल्लहखां जब घाटियोंसे उतर कर गनीमके देशमें गया तो उसने न तो हरकारोंको भेजकर उस फौजको खबर ली न ठहरावके अनुसार अपने कूचको उनके कूचसे मिलाया और न एकही दिन और समयमें मिलकर गनीमको मारनेका प्रबन्ध किया। बरञ्च उसने अपनेही बल और बूतेका विश्वास करके यह विचारा कि जो मुझहीसे फतह होजावे तो बहुत अच्छा हो। रामदासने बहुत चाहा कि वह धैर्य्यसे बढ़े और जल्दी न करे परन्तु कुछ फल न हुआ। गनीमने जो उससे डर रहा था बहुतसे सरदार और बरगी(१) भेज दिये थे जो दिनको तो लड़ते थे और रातको बाण तथा दूसरे अग्न्यस्त्र फेंका करते थे। यहां तक कि गनीमके पास तो पहुंच गये पर उस सेनाके कुछ समाचार नहीं पहुंचे। अम्बर चम्पूने जो दौलताबादमें बड़े जमावसे निजामुल्मुल्कके घरानेके एक लड़केको लिये बैठा था बारी बारीसे फौजें भेजीं। इस तरह दक्षिणियोंका बल बढ़ गया उन्होंने बाणों और दूसरे यन्त्रोंसे आग बरसाकर अबदुल्लहखां की नाकमें दम करदिया। राजहितैषियोंने यह दशा देखकर कहा कि उस फौजसे तो कुछ भी सहायता नहीं पहुंची और दक्षिणी सब हमारेही ऊपर चढ़े चले आते हैं इसलिये उचित यही है कि अभी तो लौट चलें फिर देख लेंगे। यह बात सबने स्वीकार की। तड़केही कूच कर दिया। दक्षिणी अपनी सीमा तक पीछा करते चले आये। रोज लड़ाई होती थी। कई कामके आदमी काम आये।

(१) लुटेरे।

थी मरदानखां बहादुर बहादुरीसे लड़ा और घायल होकर पकड़ा गया। जब राजा भुरजी(१)के राज्यमें पहुंचे जो बादशाहकी अधीनतामें था तो गनीम लौट गया। और अबदुल्लहखां गुजरातमें आया।

अबदुल्लहखांके लौटनेकी खबर सुनतेही राजा मानसिंह वगैरह भी रास्तेसे लौटकर परवेजके कम्पमें चले आये जो बुरहानपुरके पास आदिलाबादमें था।

बादशाह लिखता है—जब यह समाचार आगरेमें मेरे पास पहुंचे तो मेरा चित्त बहुत विक्षिप्त होगया। मैने यह विचार किया कि आप जाकर इन खुदाके मारे हुए नौकरोंका पाप काट दूं। परन्तु शुभचिन्तक लोग सहमत न हुए और ख्वाजा अबुलहसनने प्रार्थना की कि उधरके कामोंको जैसा कुछ खानखानांने समझा है और दूसरा कोई नहीं समझा सकता। उसीको भेजना चाहिये। इस बिगड़ी हुई बाजीको सम्भाल कर गनीमसे समयके अनुसार सन्धि करले। फिर जो यथार्थ करना है करे यह बात और हितैषियोंको भी जची और सबने यही सलाह दी कि खानखानांको भेजना चाहिये और अबुलहसन भी साथ जावे। निदान यह बात ठहर गई और दीवानोंने तय्यारी कर दी। खानखानां १७ उर्दीबिहिश्त रविवार (बैसाख सुदी ६) को बिदा हुआ शाहनवाजखां अबुलहसन और कई सरदार उसके साथ गये। बादशाहने खानखानांका मनसब छः हजारी, शाहनवाजखांका तीन हजारी और दाराबखांका दो हजारी कर दिया। छोटे बेटे रहमानदादको भी उसके योग्य मनसब मिल गया। खानखानांको सुन्दर सिरोपाव जड़ाऊ कटार खासा हाथी तलापर(२) सहित और इराकी घोड़ा मिला। उसके बेटों और साथियोंने भी यथायोग्य खिलअत और घोड़े पाये।

(१) यह बगलानेका राजा था।
(२) हाथीका गहना।

बंगश।

कुलीचखांके लिखनेसे बादशाहने श्यामसिंह और रायधर मंगत भदोरियेके मनसब बढ़ा दिये। यह बंगशमें बादशाही लश्करके साथ थे।

श्यामसिंह तो डेढ़ हजारीसे दो हजारी होगया और रायधर मंगतका भी मनसब बढ़ा।

आसिफखांकी मृत्यु।

आसिफखां जो अकबर बादशाहके समयसे वजीर रहता आया था और ५ हजारी मनसबको पहुंच गया था दक्षिणमें ६० वर्षका होकर मर गया यह बहुत बुद्धिमान और विचक्षण था कवि भी था। इसने बादशाहके नाम पर नूरनामा नामक एक ग्रन्थ फारसी भाषामें रचा था जिसमें शीरीं और खुसरोके प्रेमकी प्राचीन कथा है बादशाह लिखता है कि जितनी मैंने उसकी परवरिश की उतना उसको स्वामिभक्त नहीं पाया।

मिरजागाजीकी मृत्यु।

बैसाख सुदी १५ को मिरजा गाजीके मरनेकी खबर आई। यह ठट्टेके स्वामी मिरजा जानीका बेटा था जो अकबर बादशाहका अधीन होगया था इससे अकबरने ठट्टा उसीके पास रहने दिया था वह बुरहानपुरमें मरा तब उसके बेटे मिरजा गाजीको अकबर बादशाहने कन्धारकी हुकूमत पर भेज दिया वह वहीं मरा उसकी जगह अबुलबेग उजबक बहादुरखांका खिताब और तीन हजारी मनसब पाकर कन्धारका हाकिम हुआ।

रूपखवास।

रूपखवासको जो अकबरका निज सेवक था बादशाहने खवास खांका खिताब हजारी जात पांचसौका मनसब और सरकार कन्नौजकी फौजदारीका काम दिया।

खुर्रमका दूसरा व्याह।

बादशाहने एतमादुद्दौलाके बेटे एतकादखांकी बेटी(१) खुर्रमके

(१) यह ताज बीबी थी जिसका रौजा आगरेमें अति सुन्दर और सुरम्य बना है।

वास्ते मांगी थी और अब उसका व्याह था इस लिये १८ खुरदाद (जेठ बदी ९) गुरुवारको बादशाह खुर्रमके घर गया एक दिन और एक रात वहां रहा। खुर्रमने बादशाहको नजराने और बेगमों, अपनी माताओं और महलके सेवकोंको तोरे जोड़े और अमीरोंको सिरोपाव दिये।

ठट्ठा।

बादशाहने अबदुर्रज़ाकको जो ड्योढ़ीका बखशी था हाथी और परम नरम खासा देकर ठट्ठेकी रक्षाके वास्ते भेजा जो मिरजा गाजीके मर जानेसे बिना स्वामीके था। मुअज्जुलमुल्कको उसकी जगह बखूशी किया।

मिरजा ईसातरखां मिरजा गाजीके भाई बन्दोंमेंसे दक्षिणकी सेनामें था। बादशाहने उसको बुलाकर हजारी जात और पांचसौ सवारोंका मनसब दिया।

फसद लेना।

बादशाहको रक्त बिकार होगया था इस लिये बुधवारको हकीमोंकी सलाहसे फस्द खुलाकर सेर भर रक्त निकलवाया इससे शरीर हल्का होगया तो हुक्म दिया कि आगेसे फसद खुलानेको हलका होना कहा करें। सब ऐसाही कहने लगे।

मुकर्रबखांको जिसने फस्द खोली थी बादशाहने जड़ाऊ खपवा दिया।

राजा किशनदास।

किशनदास अकबर बादशाहके समयसे तबेले और हाथीखाने का कर्मचारी था और वर्षोंसे राजा पदवी तथा हजार मनसबकी उसको अभिलाषा थी सो पदवी तो पहले पाचुका था और हजारी मनसब अब देकर बादशाहने उसकी इच्छा पूर्ण की।

ताजखां।

भक्करका हाकिम ताजखां पुराने अमीरोंमेंसे था बादशाहने उसके मनसबपर पांचसौ सदी ज़ात और पांचसौ सवार बढ़ा दिये।

शुजाअतखांकी विचित्र मृत्यु।

शुजाअतखांको उसमान पर जीत पानेके पीछे इसलामखांने उड़ीसे जानेकी आज्ञा दी थी। वह एक रात चौखण्डीदार हथनी पर सवार हुआ और एक बालक नाजिरको पीछे बैठा लिया जब अपने डेरेसे निकला तो रास्तेमें एक मस्त हाथी बंधा था वह घोड़ोंकी टापोंसे भड़ककर सांकलें तुड़ाने लगा जिससे बड़ा कोलाहल मचा। शुजाअतखां उस समय या तो नींदमें था या शराबके नशेमें अचेत था नाजिरने घबराकर उसको जगाया और कहा कि मस्त हाथी खुल गया है इधर आता है। शुजाअतखां व्याकुल होकर चौखण्डीमेंसे कूदा पांवकी उंगली एक पत्थर पर लग कर फूट गई बस इसी चोटसे दो तीन दिनमें वह मर गया।

बादशाहको सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसा पुरुष सिंह जो जंगी हाथियोंसे लड चुका था एक बालककी बातसे घबराकर हाथी परसे कूद पड़ा।

हाथी।

इसलामखांने बंगालसे १६० हाथी भेजे थे वह खासेके हाथियों में दाखिल किये गये।

कमाऊंका राजा।

कमाऊंके राजा टेकचन्दने बिदा चाही। उसके बापको अकबर बादशाहके समय एक सौ घोड़े दिये गये थे उसी मर्य्यादासे बादशाहनेभी उसे घोड़े दिये एक हाथीभी दिया। जबतक यहां रहा सिरोपाव पाये जड़ाऊ कटार भी मिला। उसके भाइयोंको भी खिलअत और घोड़े मिले। उसका देश उसीके पास रहा और वह सब प्रकारसे प्रसन्न और पूर्णकाम होकर गया।

अबुलफतह दक्खिणी।

१० अमरदाद (सावन सुदी ५) को अबुलफतह दक्खिणी जो आदिलखांके मुख्य सरदारोंमेंसे था बादशाहकी सेवामें उपस्थित

हुआ यह दो वर्ष पहले भी आया था बादशाहने खिलअत शाही घोड़ा और खांडा दिया।

ठट्ठा।

२ अक्टोबर (भादों सुदी १३) को बादशाहने मिरजा रुस्तम सफावीको खासेका हाथी जड़ाऊ जीनका घोड़ा जड़ाऊ तलवार भारी सिरोपाव और पांच हजारी मनसब देकर ठट्ठे (१)की सूबेदारी पर भेजा और उसके बेटे भतीजोंको भी मनसब बढ़ाकर और हाथी घोड़े खिलअत देकर उसके साथ किया।

राय दलपत।

राय दलपतको बादशाहने मिरजा रुस्तमके सहायकोंमें इस हेतुसे नियत किया कि इसका देश उसी दिशामें है अच्छी सेना सेवाके वास्ते देगा। दलपतका मनसब पांच सदी जात और पांचसौ सवारोंके बढ़नेसे दो हजारी जात और दो हजार सवारोंका होगया।

नागपुर।

अबुलफतह दक्षिणीको नागपुरमें जागीर मिली।

तुलादान।

१७(२) रज्जब २२ अक्टोबर (आश्विन बदी ३) बादशाहकी सौर वर्षगांठका तुलादान मरयममकानीके महलमें हुआ।

उसमान पठानके भाई बन्द।

बंगालका दीवान मोतिकिदखां पदच्युत होकर आया। उसके साथ इसलामखांने उसमानके भाई बेटों और कुछ सेवकोंको भेजा था बादशाहने एक पठानको अपने एक विश्वासपात्र चाकरको चौकसीमें रख दिया।

---

(१) छापेकी तुजुक जहांगीरीमें ठट्ठेकी जगह भूलसे पटना छप गया है।

(२) पञ्चांगकी गणितसे १६।

मोतक़िदखां।

मोतक़िदखांने बादशाहको भेट दी जिसमें २५ हाथी दो लाख जड़ाऊ फूल कटारे विश्वास योग्य नाजिर और बंगाली कपड़ोंके थान थे।

११ महर (आश्विन सुदी ८) को बादशाहने उसको बख्शीका उच्च पद दिया उसका मनसब हजारी जात और तीनसौ सवारका नियत हुआ।

राय मनोहर।

बादशाहने खानखानांके लिखनेसे राय मनोहरका मनसब हजारी जात और आठसौ सवारोंका कर दिया।

राजा बरसिंहदेव।

राजा बरसिंह देवका मनसब भी खानखानांकी सिफारिशसे ४ हजारी जात और बाइस सौ सवारोंका होगया।

भारत बुंदेला।

रामचन्द्र बुंदेलेके मरनेसे बादशाहने उसके पोते भारतको राजाका खिताब दिया।

अमीरुलउमराकी मृत्यु।

६ आजर ३ शव्वाल (अगहन सुदी ५) को बुरहानपुरसे खबर आई कि अमीरुलउमरा २७ आबान (अगहन बदी १०।११) को परगने निहालपुरमें मर गया उसके कोई बेटा न था।

बिहार।

बादशाहने जफरखां कोकाको बिहारकी सूबेदारी दी और उसका मनसब बढ़ाकर तीन हजारी जात और दो हजार सवारका करदिया।

शिकार।

२ जीकाद ४ दे मंगल (पौष सुदी ३) को बादशाह शिकारके वास्ते आगरेसे कूच करके चार दिन तक दहराबागमें रहा।

सलीमा सुलतानकी मृत्यु।

१० (पौष सुदी ११) को सलीमा सुलतान बेगमके मर जानेको

जन्म आई यह बाबर बादशाहकी नवासी गुलरुख बेगमकी बेटी थी। बापका नाम मिरजा नूरुद्दीन था। हुमायूं बादशाहने अपनी यह भानजी अति कृपासे बैरामखांको दी थी बैरामखांके मारे जाने पर अकबर बादशाहने सलीमा सुलतानसे निकाह कर लिया था।

बादशाह लिखता है—"जितने अच्छे गुण और लक्षण इसमें थे उतने सब स्त्रियोंमें नहीं होते हैं।"

बादशाह एतमादुद्दौलाको उसके उठाने और उसीके बनाये मन्दाकरबागमें उसको रखनेका हुक्म देकर दहराबागसे कूच कर गया बेगमकी अवस्था ६० वर्षकी थी।

काबुल।

७ दे (पौष सुदी ५) को ख्वाजाजहांने काबुलसे आकर १२ मोहरें और १२ रुपये नजर किये। बादशाहने कुलीचखां सूबेदार काबुल और खानआलमके परस्पर मेल न होनेके समाचार सुनकर इसको इस बातका निर्णय करनेके लिये कि किसका कसूर है भेजा था काबुल जाने और आनेमें इसको ३ महीने ११ दिन लगे थे।

राजा रामदास।

इसी दिन राजा रामदासने दक्षिणसे आकर १०१ मोहरें भेट कीं। बादशाहने इसको घोड़ा खिलअत और तीस हजार रुपये देकर कुलीचखां और दूसरे अमीरोंके समझानेके वास्ते भेजा जिनमें अनबन होगई थी।

दक्षिण।

१५ बहमन (माघ सुदी १३) को शाहनवाजखां दक्षिणसे खानखानांका भेजा हुआ आया एक सौ मोहरें और एक सौ रुपये नजर किये।

जब दक्षिणके मामले अबदुल्लहखांकी भागदौड़ और अमीरों की फूटसे ठीक नहीं हुए तो दक्षिणियोंने अवसर पाकर अमीरोंसे सन्धिकी बात छेड़ी और आदिलखाने कहलाया कि जो यह काम मेरे ऊपर छोड़ाजावे तो ऐसा करूं कि जो देश बादशाही अधीनता

से निकल गये हैं फिर अधीन होजावें। शुभचिन्तकोंने समयका रंग ढङ्ग देखकर इस बातकी अर्जी भेजी एक प्रकारकी संधि होगई और खानखानांने वहांके कामोंको ठीक करदेनेका जिम्मा कर लिया तो बादशाहने खानआजमको जो पुण्य(१) की प्राप्तिके लिये सदा राणासे लड़नेको जानेकी प्रार्थना किया करता था हुक्म भेजा कि अपनी जागीर मालवेमें जाकर बाद तैयारीके राणाके ऊपर जावें।

---

(१) कट्टर मुसलमान हिन्दुओंसे लड़ने उनको मारने या उनके हाथसे मरनेको पुण्य समझते हैं।

नवां वर्ष ।

सन् १०२२ ।

फागुन सुदी ३ संवत् १६६९ से फागुन सुदी २ संवत् १६७० तक ।

बादशाह आगरेमें ।

बादशाह दो महीने बीस दिन शिकारमें रहकर नौरोजके समीप आजानेसे २४ असफंदार (चैत बदी ११) को बागदहरेमें लौट आया और २७ (चैत बदी १४) को आगरेमें आया ।

इस बार इतना शिकार हुआ था—

हरन आदि	२२३	करवानक आदि पक्षी	३६
नीलगाय	९५	मछलियां	४५७
सूअर	२		

आठवां नौरोज ।

२७ मुहर्रम १ फरवरदीन (चैत बदी ३०) गुरुवारको साढ़े तीन घड़ी रात गये सूर्य्य भगवान मीनसे मेख राशिमें पधारे। दूसरे दिन आठवें नौरोजका उत्सव हुआ पिछले दिनसे बादशाह तख्त पर बैठा। अमीरों और वजीरोंने नजर और न्योछावर की ।

बादशाह रोज आमदरबार करता था लोगोंकी अर्ज सुनता था और चाकरोंकी भेट लेता था ।

४ फरवरदीन (चैत्र सुदी ८) शुक्रवारको अफजलखांने बिहारसे आकर एक सौ मोहरें और एक सौ रुपये नजर किये दूसरे दिन एक और चौथे दिन १० हाथी उसके हाथियोंमेंसे भेट हुए ।

मोतकिदखां एक जगह मोल लेकर कई दिन उसमें रहा तो उस पर लगातार कई दुःख और कष्ट आपड़े। यहां बादशाह लिखता है—"हमने सुना है कि १ स्त्री २ गुलाम ३ घर और ४ घोड़ेमें शुभाशुभ कहा जाता है। घरके शुभाशुभ देखनेकी यह विधि है जो लिखती भी है कि थोड़ी धरतीको खोदकर मट्टी

निकालें और उस मट्टीको उसमें भरें जो बराबर होजावे तो सम, घटे तो नष्ट और बढ़े तो श्रेष्ठ।"

मग जातिके लोग।

इसलामखांका बेटा होशंग बङ्गालसे आया। मग(१) जातिके लोगोंको भी साथ लाया था उनका देश(२) पेगू, दारजीलिङ्गके पास है बल्कि इन दिनों यह प्रदेश भी उनके अधिकारमें था।

बादशाह लिखता है कि इनके धर्म्मपन्थकी बातें निर्णय कीगई। सारांश यह है कि यह मनुष्य आकृतिके पशु हैं। जल और स्थल के सब जीवोंको भक्षण करते हैं। कोई वस्तु इनके धर्म्म निषिद्ध नहीं है। प्रत्येक मनुष्यके साथ खालेते हैं अपनी सौतेली बहनको ग्रहण करलेते हैं इनकी शकलें किराकअलमाक(३) जातिके तुर्कों से मिलती हुई हैं परन्तु बोली तिब्बतकी है जो तुरकीसे कुछ भी नहीं मिलती है। यहां एक पहाड़ है जिसका एक सिरा तो काशगरसे जामिला है दूसरा पेगूमें है। इनका कोई ठीक मत नहीं है कि जिसकी किसी मतसे तुलना कर सकें। मुसलमानी मतसे भी दूर हैं और हिन्दूधर्म्मसे भी विमुख।

बादशाह खुर्रमके घर।

मेख संक्रान्तिके दो तीन दिन रहे थे कि बादशाह खुर्रमकी प्रार्थनासे उसके घर चला गया। एक दिन एक रात रहा वहीं नौरोजकी भेंटें होती रहीं। खुर्रमने भी भेट की जिसमेंसे कुछ बादशाहने चुनकर ले ली।

मेख संक्रान्ति।

१४ फरवरदीन (वैशाख बदी ४)(४) चन्द्रवारको मेख संक्रान्ति

---

(१) ब्रह्माके लोग मग कहलाते हैं।

(२) यह वृत्तान्त ब्रह्मदेशका है जो आजकल ब्रटिश गवर्नमेण्ट के अधिकारमें है।

(३) तुर्कोंकी एक जाति।

(४) चण्डूपञ्चाङ्गमें मेख संक्रान्ति वैशाख बदी ३ को लिखी है।

को बड़ा भारी उत्सव हुआ बादशाह राजसिंहासन पर बैठा। सब प्रकारके मादक पदार्थ मंगाये और सब लोगोंको अपनी अपनी रुचिके अनुसार खाने पीनेकी आज्ञा दीगई। प्रायः सब लोगोंने शराब कबाबका सेवन किया। ईरानके दूत यादगारअलीको सौ तोलेकी एक मोहर जिसका नाम कौकबेताला था दीगई। मजलिसका रंग खूब जमा। उठते समय बादशाहने हुक्म दिया कि सब सामग्री और सजावट लाद लावें।

मुकर्रबखांकी भेटमें बारह इराकी और अरबी घोड़े थे जो जहाजमें आये थे और फरंगियोंका बनाया हुआ एक जड़ाऊ जीन था।

मोमयाई।

बादशाहने मुहम्मदहुसैन चिलपीको जो जवाहिर खरीदने और अनोखे पदार्थोंके ढूंढ़ निकालने में प्रवीण था कुछ रुपये देकर ईरानके मार्गसे अस्तंबोलके उत्तम द्रव्य खरीद लानेके वास्ते भेजा था और उसको मार्गमें ईरानके शाह अब्बाससे मिलना पड़ता इस लिये एक पत्र उसके नाम भी लिखदिया था। वह मशहदके पास शाहसे मिला। शाहने पूछा कि किन किन वस्तुओंके खरीदनेका हुक्म है उसने बहुत आग्रहसे सूची दिखाई। शाहने उसमें फिरोजे और मोमयाईका नाम देखकर कहा कि यह चीजें मोल नहीं मिलती हैं मैं उनके वास्ते भेजता हूं। यह कहकर छः थैलियां जिनमें तीस सेर फिरोजोंकी मट्टी थी चौदह तोले मोमयाई और चार घोड़े इराकी जिनमें एक अबलक था उसको सौंपे और एक पत्र भी लिखदिया जिसमें मट्टीके तुच्छहोने और मोमयाईके कम होनेकी क्षमा मांगी थी।

जब यह चीजें बादशाहके पास पहुंचीं तो बहुत निकम्मी निकलीं बेगड़ियों और नग बनानेवालोंने बहुत छान बीन की पर एक फीरोजा भी अंगूठीके लायक नहीं निकला जैसे फिरोजे शाह तुहमास्पके समयमें निकले थे वैसे खानमें नहीं रहे थे यही शाहने भी अपने पत्रमें लिखा था।

मोमयाईके गुणकी बाबत बादशाह लिखता है कि जो बातें मैंने हकीमोंसे सुनी थीं जब परीक्षा की गई तो कुछ भी प्रकट नहीं हुई मैं नहीं जानता कि हकीमोंने मोमयाईके विषयमें अत्युक्ति की है या पुरानी होजानेसे वह गुणही नहीं रहा है।

मैंने हकीमोंके ठहराये हुए सिद्धान्तोंके अनुसार मुर्गेकी टांग तोड़कर उसको उनकी कही हुई मात्रासे अधिक मोमयाई खिलाई और टांग पर भी लगाई तथा तीन दिन तक रखवाली कराई। वह तो प्रातःकालसे सायंकाल तककाही समय बहुत बताते थे यहां तीन दिन पीछे देखा तो कुछ चिन्ह उस गुणका नजर नहीं आया टांग वैसीही टूटी हुई थी।

सलामुल्लह अरब।

शाह ईराननें सलामुल्लह अरबकी सुफारिश की थी बादशाहने उसी क्षण उसका मनसब और वेतन बढ़ा दिया।

अबदुल्लहखां।

अबदुल्लहखांके वास्ते बादशाहने एक खासा हाथी तलवार सहित भेजा और उसकी बिरादरीके बारह हजार सवारोंको दुअस्पे और तिअस्पेके जाबतेसे तनखाह देनेका हुक्म दिया।

सौम सालगिरह।

२७ उर्दीबहिश्त २६ रबीउलअव्वल (जेठ बदी १२) गुरुवारको बादशाहकी सौर वर्षगांठका तुलादान उसकी माताके भवनमें हुआ। जिसमेंसे कुछ रुपये उन दीन स्त्रियोंको बांटे गये जो वहां जुड़ गई थीं।

मुरतिजाखांका मनसब छः हजारी जात और पांच हजार सवारका होगया।

चीते और सिंहके बच्चे।

अकबर बादशाहने एक हजार तक चीते पाले थे और बहुत चाहता था कि उनकी वंशवृद्धि हो परन्तु यह बात नहीं हुई। फिर कईबार उनके जोड़े भी पट्टे खोल खोलकर बागमें छोड़े तो वहां

वह अलग अलग ही रहे। पर इन दिनोंमें एक चीता पट्टा तुड़ा कर मादा पर जापड़ा। अढ़ाई महीने पीछे तीन बच्चे जन्मे और बड़े हुए।

इसी प्रकार एक सिंहनी भी गर्भवती हुई और तीन महीने पीछे बच्चा जना। बादशाह लिखता है कि मेरे समयमें पशुओंकी चमक निकल गई है सिंह ऐसे हिल गये हैं कि झुण्डके झुण्ड लोगोंमें खुले फिरते हैं और किसीको नहीं सताते। यह कभी नहीं हुआ था कि जङ्गली शेर पकड़े जानेके पीछे सिंहनीसे संग करे और बच्चे हों। हकीमोंसे सुना गया था कि सिंहनीका दूध आंखोंकी ज्योति के वास्ते बहुत गुण करता है मैंने बहुत परिश्रम किया कि उस ब्याई हुई सिंहनीका दूध हाथ लगे पर उसके बच्चेको पकड़वाकर थनोंमें हाथ डाला तो क्रोधसे उसका दूध सूख गया।

बादशाह खरबूजोंकी बाडीमें।

ख्वाजाजहांने शहरके पास खरबूजे बोये थे। बादशाह १० खुरदाद (जेठ सुदी ११) गुरुवारको नावमें बैठकर वहां गया महल के लोग भी साथ थे। दो तीन घड़ी रात गये वहां पहुंचा। रात बड़ी भयङ्कर थी। आंधी आई डेरे तम्बू उड़ गये बादशाहने नाव में रात बिताई। शुक्रवारको खरबूजे खाकर शहरमें आगया।

अफजलखांकी मृत्यु।

अफजलखां जो बहुत दिनोंसे फोड़े फुंसियोंका कष्ट भोग रहा था मर गया।

राजा जगमन।

राजा जगमनसे दक्षिणकी नौकरीमें कुछ चूक होगई थी इस लिये बादशाहने उसकी जागीर छीनकर महाबतखांको देदी।

दीवानखानेके कटहरे।

दीवानखाने खास और आममें दो कटहरे लकड़ीके लगाये जाते थे। पहले कटहरेमें तो अमीर, एलची और आबरूवाले लोग रहते थे इसमें बिना आज्ञा कोई नहीं जासकता था। दूसरा

पहिलेसे अधिक चौड़ा था उसमें तमाम नौकर और वह लोग जिन पर नौकरीका नाम लगा हुआ था जगह पाते थे। इस कट-हरेके बाहर अमीरों और सब लोगोंके नौकर जो दीवानखानेमें आते थे खड़े रहते थे।

पहिले और दूसरे कटहरेमें कोई विशेषता नहीं थी इसलिये बादशाहने पहिले कटहरेको और उस नालको जो इस कटहरेमेंसे झरोखे पर लगाई गई थी और उन दोनों हाथियोंको जो झरोखे की बैठकके दोनों ओर कारीगरोंने बनाये थे चान्दीसे मढ़ देनेका हुक्म दिया। जब यह काम बन चुका तो बादशाहको सुनाया गया कि इसमें १२५ मन चान्दी लगी है। बादशाह लिखता है कि इससे बड़ी शोभा होगई और ऐसाही होना भी चाहता था।

पागल कुत्ता।

एक शाही हाथी और एक हथनीको पागल कुत्तेने काटा। कुत्ते को हाथीने मारडाला था तोभी एक महीने पांच दिन पीछे हथनी बादलकी गर्ज सुनकर चिल्लाई कांपी गिरी फिर खड़ी हुई। सात दिनतक उसके मुंहसे पानी बहता रहा। आठवें दिन मरगई। कोई दवा नहीं लगी। इससे एक महीने पीछे हाथीको पानीके किनारे जंगलमें लेजाते थे कि इतनेमें बादल उमड़ा और गरजने लगा हाथी उस समय मस्तीमें था तोभी कांपकर बैठ गया महावत लोग बड़ी कठिनतासे उठाकर स्थान पर लाये ७ दिन पीछे यह भी उसी प्रकारसे मर गया।

बादशाह बड़े अचरजसे लिखता है कि इतने बड़े डीलडौलका जन्तु इतने छोटे जीवके काटनेसे मर गया।

दक्षिण।

खानखानांने शाहनवाजखांको बुलाया था इसलिये बादशाहने सावन सुदी ११ को उसे दक्षिण जानेकी आज्ञादी।

राखी।

बादशाह लिखता है—"हिन्दुओंके चार वर्ण ठहराये गये हैं

और हरेक निजधर्म पर चलता है। हरेक सालमें एक दिन अपना त्यौहार मनाता है। पहला ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मको जाननेवाला उसके छः धर्म हैं—

१ विद्या पढ़ना २ दूसरोंको पढ़ाना

३ आग पूजना ४ दूसरोंसे पुजाना

५ दान लेना ६ दान देना

इनका त्यौहार सावनके अन्तमें होता है जो बरसातका दूसरा महीना है। इस दिनको पवित्र समझकर पुजारी लोग नदियों और तालाबों पर चले जाते हैं और मन्त्र पढ़कर डोरों और रंगे हुए तागों पर फूंकते हैं। दूसरे दिन जो नये साल(१) का पहिला दिन होता है उन डोरोंको राजों और बड़े लोगोंके हाथोंमें बांधते हैं और शकुन समझते हैं। इस डोरेको राखी यानी रक्षा कहते हैं। यह दिन तीरके महीनेमें आताहै। जब सूर्य्य कर्कराशिपर होता है।

दूसरा क्षत्रिय वर्ण है जो खत्री भी कहलाता है। क्षत्रिय वह है जो अन्याय करने वालोंसे दीनोंकी रक्षा करे। इसके तीन धर्म हैं।—

१ आप पढ़े दूसरोंको न पढ़ावे

२ आप आग पूजे दूसरेको न पुजवावे।

३ आप दान दे दूसरेका दान न ले।

इसका त्यौहार विजयादशमी है इस दिन सवारी करना और शत्रु पर चढ़कर जाना इसकी समझमें शुभ होता है। रामचन्द्रने जिसको यह लोग पूजते हैं इसी दिन चढ़ाई करके अपने वैरीको जीता था। इस दिनको उत्तम समझते हैं हाथी घोड़ोंको सजाकर पूजते हैं।

यह दशहरेका दिन शहरेवरके महीनेमें आता है जब सूर्य्य

(१) इस लेखसे जाना जाता है कि ढूंढ़ार और मेवाड़की भांति आगरेमें भी उस समय लौकिक संवत्सर भादों बदी १ से बदला जाता था।

कन्या राशि पर होता है। हाथी घोड़ोंके रक्षकोंको पारितोषिक देते हैं।

तीसरा वैश्य वर्ण है यह ऊपर लिखे दोनों वर्णोंकी सेवा करता है। खेती लेन देन व्याज और सौदा इनका कर्तव्य है। इनका भी एक त्यौहार है उसको दीवाली कहते हैं यह दिन महर महीनेमें आता है, जब सूर्य्य तुला राशि पर होता है। इस दिनकी रातको दीपमाला कहते हैं। मित्र और बांधव एक दूसरेके घरमें जुड़कर जुआ खेलते हैं। इन लोगोंका धन्धा व्याज और लेन देनका है इसलिये इस दिन हारने जीतनेको शकुन जानते हैं।

चौथा शूद्र वर्ण हैं। यह हिन्दुओंका सबसे नीचा जथा है। यह सबकी सेवा करताहै। जो ऊपरके वर्णोंके अधिकार हैं उससे इसको कुछ प्रयोजन नहीं है। इसका त्यौहार होली है जो इसके निश्चय में वर्षका अन्तिम दिन है। यह दिन असफन्दार महीनेमें आता है जब सूर्य्य मीन राशिमें होता है। इस दिनकी रातको रास्तों और गलियोंमें आग जलाते हैं जब दिन निकलता है तो पहर भर तक एक दूसरे पर राख डालते हैं। फिर नहाकर कपड़े पहिनते हैं बागों और जङ्गलोंमें विचरनेको चले जाते हैं।

हिन्दुओंमें मुर्दा जलानेकी रीति है इसलिये इस रातको आग जलानेसे यह अभिप्राय है कि पिछला वर्ष जो मरेके समान होगया है उसे जलाते हैं।

मेरे पिताके समयमें हिन्दू अमीरों और दूसरे लोगोंने ब्राह्मणों की देखादेखी राखीको रीति इतनी फैलादी थी कि रत्न मोतियों और जड़ाऊ फूलोंको डोरोंमें पिरोकर उनके हाथमें बांधा करते थे। कई वर्ष तक ऐसा होता रहा। फिर जब यह आडम्बर बहुतही बढ़ गया तो उन्होंने उकता कर बन्द कर दिया। ब्राह्मण अपने डोरों और रेशमके धागोंको निज नियमानुसार शकुनके वास्ते बांधते रहे। मैंने भी इस वर्ष उन्हींके शिष्टाचरणका बरताव करके हुक्म दिया कि हिन्दू अमीर और हिन्दुओंके मुखिया मेरे हाथोंमें

राखी न बांधें। परन्तु राखीके दिन जो ९वीं(१) अमरदादको था और वही दस्तूर हुआ दूसरे लोगोंने वह देखादेखीकी बात छठसे नहीं छोड़ी। तब मैंने इसी वर्षके लिये स्वीकार करके कहा कि ब्राह्मण लोग उसी प्राचीन रीतिसे डोरे और रेशम बांधा करें।"

इसी दिन अकबर बादशाहका उर्स(२) था बादशाहने खुर्रमको उसके रौजे पर उर्स करनेको भेजा और दस हजार रुपये अपने दस विश्वासपात्रोंको फकीरोंके लिये दिये।

इसलामकी भेट।

२४ अमरदाद (भादों बदी ७) को इसलामखांकी भेट बादशाह की सेवामें उपस्थित हुई उसने बङ्गालसे २८ हाथी ४० टांगन ५० नाजिर और पांच सौ उत्तम वस्त्र खितारगांवके भेजे थे।

समाचारपत्र।

यह प्रवन्ध किया गया था कि सब सूबों और विशेषकरके सीमा प्रान्तके समाचार कर्णगोचर होते रहें और इस काम पर दरबारसे वाकआनवीस (समाचार लिखनेवाले) भेजे जाते थे। बादशाह लिखता है कि यह जाबता मेरे बापका बांधा हुआ है। मैं भी

---

(१) ९ अमरदादको भादों बदी १ थी।

(२) हिन्दुस्थानके मुसलमानोंमें यह रीति है कि जिस दिन कोई बड़ा या प्यारा पुरुष मरता है तो सालभरके बाद उसी दिन मौलवियों और दूसरे लोगोंको बुलाकर खाना खिलाते हैं। सुगन्ध लगाते हैं गानाबजाना करते हैं खैरात बांटते हैं इसीको उर्स कहते हैं। कहीं कहीं एक सप्ताह तक भी उर्सकी मजलिसें होती रहती हैं। परन्तु ९ अमरदादको अकबर बादशाहका उर्स कैसे हुआ? वह तो ३ आबानकी रातको मरा था यह कुछ समझमें नहीं आता। हां १९ अमरदादको १३ जमदिउस्सानी थी और उसके देहान्तके दिन भी यही तारीख थी इसलिये इस साल ९ अमरदादको हुआ होगा।

उसीका अनुसरण करता हूं। इसमें बहुतसे लाभ देखे जाते हैं। संसारकी और मनुष्योंके वृत्तान्त विदित होते हैं। जो इसके गुण सविस्तर लिखे जावें तो बात बढ़ती है। उन दिनोंमें लाहोरके विकायानवीसने लिखा था कि तीर(१) महीनेके अन्तमें दस आदमी शहरसे अमनाबादको गये जो १२ कोस है। जब लू चलने लगी तो एक वृक्षकी छायामें ठहर गये। फिर ऐसी हवा चली कि उसके लगतेही कांपकर नौ तो वहीं मर गये और दसवां बहुत दिनों तक कष्ट पाकर अच्छा हुआ। पक्षी जो उस वृक्ष पर बैठे थे सब गिरकर मर गये। उस प्रान्तमें इस वायुसे ऐसी हानि हुई कि जंगलके जन्तु खेतोंमें आकर घास पर लोटे और मर गये।

शिकार।

३१ अमरदाद गुरुवार (भादों सुदी ७) को बादशाह नावमें बैठकर समूनगर गया।

२ शहरेवर (भादों सुदी ११) को खानआलमने दक्षिणसे आकर एक सौ मोहरें नजर कीं। बादशाहने इसको ईरान भेजनेके लिये बुलाया था।

समूनगर महाबतखांकी जागीरमें था और उसने नदीके तट पर एक सुरम्य स्थान बनाया था, वह बादशाहको प्रिय लगा। महाबतखांने एक हाथी और एक पन्नेकी अंगूठी भेट की।

६ (भादों सुदी १४) तक बादशाहने शिकार किया। ४७ हरन आदि पशु मारे।

सौर तुलादान।

२० (आश्विन बदी १३) गुरुवारको मरयममकानीके महलमें बादशाहके सौर जन्मदिवसका तुलादान हुआ। वह लिखता है कि इस बरस मेरा ४४वां सौरवर्ष पूरा हुआ।

ईरानके दूतकी बिदाई।

इसी दिन शाह ईरानका एलची यादगारअली और खानआलम

---

(१) यह महीना सावन सुदी ६ को समाप्त हुआ था।

ईरानको बिदा हुआ। बादशाहने उसे जड़ाऊ जीनका घोड़ा जड़ाऊ परतला चार कुब्ब सुनहरी कलंगी पर तथा जीगे सहित और तीस हजार रुपये दिये। सब माल चालीस हजार रुपयेका होगा। खानआलमको जड़ाऊ खपवा फूल कटारे सहित जिसमें मोतियोंकी लड़ी लगी थी मिला।

पितृदर्शन।

२२ (आश्विन बदी ३०)को बादशाह पांच हजार रुपये लुटाता हुआ हाथी पर सवार हो अपने पिताके दर्शनको बहिश्तावाद(१)में गया और पांच हजार रुपये ख्वाजाजहांको फकीरोंको बांटनेके लिये दिये। एतमादुद्दौलाके घर रहा जो जमनाके तट पर था। दूसरे दिन एतकादखांके नये बनाये मकानमें बेगमों सहित ठहरा। उसने जवाहिर और दूसरी उत्तम चीजें भेट कीं जिनमेंसे बादशाह कुछ अपनी रुचिके अनुसार लेकर सायंकालको राजमन्दिरमें आगया।

अजमेरको कूच।

२(२) आबान २४ शहरेवर (आश्विन सुदी २) चन्द्रवारको सात घड़ी रात गया बादशाहने आगरेसे अजमेरको कूच किया। वह लिखता है कि इस यात्रासे मेरे दो मनोरथथे—एक ख्वाजामुईनुद्दीन चिश्तीके दर्शन करना जिनकी आत्माके प्रतापसे इस घरानेका बहुत कल्याण हुआ है, और मैं तख्त पर बैठनेके पीछे यह पुण्य प्राप्त न कर सका था, दूसरे राणा अमरसिंहका सर करना, जो हिन्दुस्थानके मुख्य राजोंमेंसे है और जिसकी सरदारी और बड़ाईको इस विलायतके राजा और राव सब मानते हैं। बहुत दिनसे राज्य और ऐश्वर्य्य इसके घरानेमें चला आता है। पहले पूर्व दिशामें

(१) सिकन्दरा जहां अकबरको समाधि है।

(२) चण्डूपञ्चांगकी गणितसे १ आबान, मगर मुसलमानी मत से रातको २ हो थी।

इनका राज्य था और राजा कहलाते थे फिर दक्षिणको चले गये और वहांकी अधिक भूमिको जीतकर राजाके बदले रावल कहलाने लगे। वहांसे मेवात(१)के पहाड़ोंमें आये और होते होते चित्तौड़गढ़के मालिक होगये। उस दिनसे आजतक (आठवां साल मेरे राज्य पर बैठनेका है) १४७१ वर्ष होते हैं। इस वंशके २६ पुरुष जिनका राज्य १०१० वर्ष रहा रावल कहलाते रहे। रावल(२) से जो पहिला पुरुष इस पदवीका हुआ है राना अमरसिंह तक जो आज राना है—२६ राना ४६१ वर्षमें हुए हैं और इतने लम्बे समयमें हिन्दुस्थानके किसी बादशाहके आगे नहीं झुके हैं, बल्कि बहुधा सिर उठाते और सामना करते रहे हैं बाबर बादशाहके समय में राणा सांगाने इस देशके सब राजा राव और जमीन्दारोंको एकत्र करके एक लाख अस्सी हजार सवारों और कई लाख पैदलों से बयानेके पास मैदानकी लड़ाई कीथी। ईश्वरकी कृपा और भाग्य के बलसे मुसलमानोंको काफिरों पर जीत हुई जिसका वृत्तान्त तवारीखके विश्वासी ग्रन्थों और विशेष करके बाबर बादशाहके वाकेआतमें जो उन्हींके लिखे हुए हैं सविस्तर लिखा है। मेरे पूज्य पिताने इन दंगई लोगोंके दबानेमें पूरा परिश्रम किया और कई बार इनके ऊपर सेना भेजी अपने राज्यशासनके बारहवें वर्षमें आप चित्तौड़गढ़ जीतनेको गये जो दुनियाभरके सुदृढ़ दुर्गोंमेंसे है और ४ महीने एक दिन तक उसको घेरे रहे। फिर उसको राणा अमर-सिंहके पिता(३) के मनुष्योंसे बल पूर्वक छीनकर और नष्टभ्रष्ट करके चले आये। जब जब बादशाही फौजें उसको(४) घेरकर ऐसा कर देती थीं कि या तो पकड़ा जाय या मारा जाय तबही कोई ऐसी बात होजाती थी कि जिससे यह श्रम सफल नहीं होने पाता था। निदान अपने राज्यके पिछले समयमें आप तो

(१) मेवाड़ चाहिये। (२) महाराना चाहिये।

(३) पिता नहीं दादा।

(४) राणा प्रतापसिंह अमरसिंहके पिताको।

दक्षिण जीतनेको गये और उसी मुहूर्तमें मुझे भी विशाल सेना और मुख्य मुख्य अमीरोंके साथ राणाके ऊपर भेजा। दैवयोगसे यह दोनो काम नहीं बने यहांतक कि मेरा समय आया और यह लड़ाई मेरीही अधूरी छोड़ी हुई थी इसलिये मैंने अपने पहिले वर्ष में जो सेना अपने राज्यकी सीमा पर भेजी वह वही थी जिस पर परवेजको सेनापति किया था। बड़े बड़े अमीरोंको जो राजधानीमें उपस्थित थे उसमें नियत करके प्रचुरद्रव्य और तोपखाना साथ दिया। परन्तु प्रत्येक कार्यके सिद्ध होनेका एक समय होता है उसी अवसर पर दुर्बुद्धि खुसरोका उपद्रव उठ खड़ा हुआ और मुझे उसके पीछे पंजाबको जाना पड़ा। राज्य और राजधानीके सूने रहनेसे मैंने परवेजकोलिखा कि कुछ अमीरों सहित लौट आवे और आगरेकी रखवाली करे। सारांश यह है कि उस समयभी राना का झगड़ा जैसा चाहिये था वैसानहीं निबड़ा। जब खुसरोके बखेड़े से चित्तको शांति हुई और मैं उर्दू सहित आगरेमें आया तो महावत खां, अबदुल्लह खां और दूसरे सरदारोंके साथ फिर फौजें भेजीं। उस तिथिसे मेरे अजमेरको प्रस्थान करनेके वक्त तक उसके देश तो लशकरोंके पैरोंमें रौंदे गये पर लड़ाईका रूप मेरी पसन्दके योग्य नहीं बंधा। मैंने सोचा कि आगरेमें कोई काम नहीं है और यह भी मुझको निश्चय होगया था कि जबतक मैं आप नहीं जाऊं इस लड़ाईमें सफलता नहीं होती इसलिये निर्दिष्ट समयमें आगरेके किलेसे निकलकर दहराबागमें मुकाम किया।

दूसरे(१) दिन दशहरेका उत्सव था बादशाहने नियमानुसार हाथी घोड़ोंको सजवाकर देखा।

खुसरोका छूटना।

खुसरोकी मा बहनें बादशाहसे कहा करती थीं और बादशाह को भी पुत्रमोहसे करुणा आई तो खुसरोको बुलाया और कहा कि सलाम करनेको आया करे।

(१) आश्विन सुदी ३ को दशहरेका उत्सव न जाने कैसे हुआ!

राजा रामदासकी मृत्यु।

२८ (आश्विन सुदी ७) को खबर आई कि राजा रामदास जो बंगश और काबुलकी सीमामें कुलीचखांके साथ था मर गया।

दहरेबागसे कूच।

१ महर (आश्विन सुदी ११) को दहरेबागसे कूच हुआ ख्वाजजहांको आगरेकी, महलोंकी और खजानोंकी रखवाली पर छोड़ा गया।

राजा बासूकी मृत्यु।

२ (आश्विन सुदी १२) को खबर पहुंची कि राजा बासू थाने शाहबादमें जो अमरारासाकी विलायतकी सीमा पर था मर गया।

रूपवास।

१० (कातिक बदी ४) को रूपवासमें जिसका नाम अब अमनाबाद होगया था डेरे हुए। पहिले रूपवास रूपखवासकी जागीर में था फिर बादशाहने महाबतखांके बेटे अमानुल्लहकी जागीरमें देकर फरमा दिया था कि अब इसको अमनाबादके नामसे पुकारा करें। यहां ११ दिन डेरे रहे यह शिकारकी जगह थी इसलिये बादशाह रोज शिकार खेलनेको जाया करता था। १५८ हरन और दूसरे पशु शिकार हुए।

अमनाबादसे कूच।

२५ (कार्तिक सुदी ५) को अमनाबादसे कूच हुआ।

३१ महर ८ रमजान (कार्त्तिक सुदी १०) को ख्वाजा अबुलहसन दक्षिणसे बुलाया हुआ आया। ५० मोहरें १५ जड़ाऊ पदार्थ और एक हाथी नजर किया।

कुलीचखांकी मृत्यु।

२ आबान १० रमजान (कार्तिक सुदी १२) को कुलीचखांके मरनेकी खबर पहुंची। वह पुराना नौकर था ८० वर्षका होकर परशावर(१)में मरा जहां पठानोंके प्रबन्धके वास्ते ठहरा हुआ था। उसका मनसब छः हजारी जात और पांच हजार सवारोंका था।

(१) पेशावर।

मुरतिजाखां दक्खिणी ।

बादशाहने मुरतिजाखां दक्खिनीको जिससे वर्षों तक उन्होंने पटेबाजी सीखी थी वरजिशखांका खिताब दिया ।

पालन ।

दीन दरिद्र और पालन करनेके योग्य लोग बादशाहकी आज्ञानुसार रात्रिमें उनके सम्मुख लाये जाते थे और वह प्रत्येककी दशा देखकर जमीन रुपये और कपड़े देता था ।

अजमेरमें प्रवेश ।

५ शव्वाल २६ आबान (अगहन सुदी ७) चन्द्रवारको अजमेरमें प्रवेश करनेका मुहूर्त्त था इसलिये बादशाह इस दिन तड़केही सवार हुआ । जब किला और ख्वाजाजीका रौजा नजर आनेलगा तो एक कोससे पैदल चलने लगा विश्वासपात्र नौकर आज्ञानुसार दोनों ओरसे मांगनेवालोंको रुपये देते जाते थे । चारघड़ी दिन चढ़े शहरमें पहुंचा और पांचवीं घड़ीमें जियारत करके दौलतखानेको लौट आया ।

दूसरे दिन हुक्म दिया कि इस पुण्यस्थानके सब रहनेवालों और रास्ते चलनेवालोंको लावें और हरेककी योग्यताके अनुसार दान दिया जावे ।

पुष्कर ।

७ आजर (पौष बदी २) को बादशाह हिन्दुओंके तीर्थ पुष्करके देखनेको जो अजमेरसे तीन कोस है गया और जलमुरगियां मारीं । तालावके तट पर नये पुराने मन्दिर भी देखे जिनमें अमराराणाके चचा राणा सगरने जो बादशाही दरबारका बड़ा अमीर था लाख रुपये लगाकर एक भड़कीला मन्दिर बनवाया था । बादशाह उसमें गया और वहां बाराह अवतारकी मूर्त्ति देखकर हुक्म दिया कि इसको तोड़कर तालावमें डाल देवें । फिर एक पहाड़ीपर सफेद बुर्ज और उसमें हर तरफसे आदमियोंको जाते हुए देखकर हाल पूछा तो लोगोंने कहा कि वहां एक योगी रहता है, जो सूर्य

लोग उसके पास जाते हैं उनके हाथमें मुट्ठीभर आटा देकर उस जानवरकी बोली बोलनेको कहता है जिसको उसने कभी सताया हो। ऐसा करनेसे पापकी निवृत्ति होजाती है।

बादशाहने उस स्थानको गिरवाकर योगीको निकलवा दिया और मूर्त्ति जो वहां थी तुड़वा डाली। फिर यह सुनकर कि तालाब की गहराईका पता नहीं है निर्णय किया तो कहीं भी बारह गज से अधिक गहरा नहीं निकला। उसके घेरेको भी नपवाया तो डेढ़ कोसका हुआ।

शिकार।

१६ (पौष बदी १२) को खबर पहुंची कि शिकारियोंने एक सिंहनीको घेर रखा है। बादशाह गया और उसको बन्दूकसे मार कर आगया।

फरंगियोंका अत्याचार।

इस महीनेमें खबर पहुंची कि गोवा बन्दरके फरंगियोंने बचन छोड़कर सूरत बन्दरके आनेवाले जहाजोंमेंसे चार परदेशी जहाजों को लूटा और बहुतसे मुसलमानोंको पकड़कर उनके जहाजोंका सब मालभी लेलिया। यह बात बादशाहको बुरी लगी। १६ आजर (पौष बदी १४) को उसने लुटेरोंको दण्ड देनेके लिये मुकर्रबखांको हाथी घोड़ा और सिरोपाव देकर बिदा किया।

खुर्रमका राना पर जाना।

बादशाहका मूल अभिप्राय इस यात्रासे रानाको अधीन करने का था इस लिये आप तो अजमेरमें ठहर गया। और खुर्रमको आगे भेजनेका बिचार करके ६ दे (पौष सुदी १५) का मुहूर्त्त निकलवाया। उस दिन उसको जरीकी सिली हुई जड़ाऊ फूलोंकी कबा(१) जिन फूलोंकी कोरों पर मोती टंके हुए थे, जरीका चीरा मोतियोंकी लड़ियोंदार जरीका पटका, मोतियोंकी झालरका, फतहगज नाम खासेका हाथी तलापर सहित,

(१) अचकन।

खासेका घोड़ा, जड़ाऊ तलवार, जड़ाऊ खपवा, फूल कठारे सहित देकर बिदा किया अगले सिपाहियोंके सिवा जो पहलेसे खानआजमकी सरदारीमें इस मुहिम पर लगे हुए थे बारह हजार सवार और दिये। उनके अफसरोंको खासेके घोड़े खासेके हाथी और श्रेष्ठ सिरोपावोंसे सुशोभित करके उसके साथ दिया। फिदाईखां इस लशकरका बखशी नियत हुआ।

काशमीर।

उसी मुहूर्त्तमें सफ़दरखांको हाशिमखांकी जगह काशमीरकी की सूबेदारी पर घोड़ा खिलअत देकर भेजा।

बखशीकुल।

११ दे (माघ बदी ५।६) बुधवारको ख़ाजा अबुलहसन बखशीकुल अर्थात् मीरबखशी हुआ।

देग।

बादशाहने ख़ाजाजीकी दरगाहके वास्ते एक बड़ी देग(१) आगरेमें बनवाई थी। वह इन दिनोंमें आई तो उसमें खाना पकवाकर पांच हजार फकीरोंको अपने सामने खिलाया और सबको रुपये भी दिये।

---

(१) यह देग अबतक मौजूद है इसमें कई मन चावल खांड़ और घी डालकर रातको पकाते हैं और तड़केही लुटा देते हैं। साल भरमें दोचार देगें चढ़ा करती हैं। उर्सके मेलेमें बड़े आदमी अपने नामके वास्ते देग चढ़ाते और लुटाते हैं।

दशवां वर्ष ।

सन् १०२३

फागुन सुदी ३ संवंत् १६७० से माघ सुदी १ संवंत् १६७१ तक ।

---

१ असफंदार १०(१) मुहर्रम (फागुन सुदी १०) को बादशाह अजमेरसे नीलगायोंके शिकारको गया। नवें दिन लौट आया। फिर हाफिज जमालके चश्मे पर गया जो शहर से दो कोस है जुमेकी रातको वहां रहा।

इसलामखांकी मृत्यु।

३ (फागुन सुदी १२)को इसलामखांके मरनेकी खबर आई कि वह ५रज्जब (गुरुवार भादों(२) सुदी७)को मरगया। बंगालमें इसने बादशाही राज्यको खूब बढ़ाया था इसका मनसब भी छः हजारी जात और छः हजार सवारका था।

खानआजम पर कोप।

बादशाहने खानआजमकी शाहजादेसे अनबन सुनकर इब्राहीम हुसैनको उसके समझानेके वास्ते भेजा और कहलाया कि जब तू बुरहानपुरमें था तो तूने मुझसे यह काम मांगा था। तू इसमें अपना कल्याण समझता था और लोगोंमें बैठकर कहा करता था कि जो इस लड़ाईमें मारा जाऊंगा तो शहीद हूंगा और जीतूंगा तो गाजी कहलाऊंगा। फिर तूने लिखा कि बादशाही सवारीके आये बिना यह फतह होनी मुशकिल है और तेरी सलाहसे हमारा अजमेरमें आना हुआ। अब तूने शाहजादेको बुलाया। मैंने बाबा खुर्रमको जिसे कभी अलग नहीं किया था, तेरे भरोसे पर भेजा। यह सब काम तेरीही सलाहसे हुए हैं।

---

(१) पञ्चाङ्गके गणितसे ८।

(२) यह खबर न जाने क्यों छः महीने पीछे आई थी।

फिर क्या सबब है कि तू अब इस लड़ाईसे अपना पांव खेंचता है। चाहिये कि शुभचिन्तक और स्वामिभक्त रहकर शाहजादेकी रात दिन सेवा करता रहे अगर इसके विरुद्ध किया तो याद रख कि अपना बिगाड़ तू आपही करेगा।

इब्राहीमने जाकर यह सब बातें खानआजमसे कहीं परन्तु कुछ लाभ न हुआ। वह अपनी हठसे नहीं हटा। तब खुर्रमने उसको पहरेमें रखकर बादशाहसे अर्ज कराई कि इसका यहां रहना अच्छा नहीं है। क्योंकि यह खुसरोके संबंधसे काम बिगाड़नेकी चेष्टामें है। बादशाहने महाबतखांको हुक्म दिया कि जाकर उदयपुरसे उसको लेआवे और उसके बालबच्चोंको मंदसोरसे अजमेरमें लानेके लिये वयूतात(१) के दीवान मुहम्मद तकीको भेजा।

दलपतरायका मारा जाना।

११ (चैत्र बदी ६) को पहले खबर पहुंची कि रायसिंहका बेटा दलपत जो दुष्ट स्वभाव था अपने भाई सूरजसिंहसे जिसे बादशाहने उसके ऊपर भेजा था लड़ाई हारकर सरकार हिसारके एक किलेमें घिरा हुआ है और इसके साथही वहांके फौजदार हाशिम और उस जिलेके जागीरदारोंने दलपतको पकड़कर भेज दिया। बादशाहने उसको मरवा(२) डाला क्योंकि उसने कई बार बुराई की थी। इस कामके इनाममें सूरजसिंहके मनसबमें पांच सदी जात और दो हजार सवारकी वृद्धि हुई।

आलमकमान हाथी।

१४ (चैत्र बदी ८) को खुर्रमकी अर्जी पहुँची कि आलमकमान हाथी जिस पर राणाको बड़ा घमण्ड था सतरह दूसरे हाथियों

(१) कारखानों।

(२) दलपतसे क्या क्या अपराध हुए थे इसका कुछ ब्योरा ऊपर नहीं आया है और न इस बातका कुछ उल्लेख है कि सूरजसिंह दलपतके ऊपर कब और क्यों भेजा गया था।

सहित फौजमें पकड़ा आया है और उसका स्वामी भी शीघ्रही पकड़ा जायगा।

नवां नौरोज।

९ सफर (चैत्र सुदी १०) गुरुवारको दोपहर एक घड़ी रात जाने पर सूर्य्य मेख राशि पर आया। दूसरे दिन नवां नौरोज हुआ। अजमेरमें सभा जुड़ी। राजभवन दिव्य वस्त्रों रत्नों और जड़ाऊ पदार्थोंसे सजाया गया। बादशाह राजसिंहासन पर बैठा। उसीसमय खुर्रम बाबाके भेजे हुए आलमकमान हाथी और सतरह दूसरे हाथी हथनियोंके आनेसे सभाकी शोभा बढ़ गई। बड़ा आनन्दमंगल हुआ।

दूसरे दिन बादशाहने शुभशकुन समझकर उस हाथी पर सवारी की। उस समय बहुतसे रुपये न्यौछावर हुए।

तीसरे दिन एतकादखांका मनसब दोहजारीसे तीनहजारी हो गया और उसको आसिफखांका खिताब मिला जो पहले भी उसके घरानेके दो पुरुषोंको मिल चुका था। उसके बाप एतमादुद्दौलाका भी मनसब बढ़कर पांच हजारी जात और दो हजार सवारोंका होगया।

खुर्रमके लिखनेसे सैफखांके बारह और दिलावरखांके पांच पांच सदी जात तथा दो दो सौ सवार और किशनसिंहके पांचसौ सवार बढ़े।

इसी तरह और अमीरोंके मनसबोंमें भी वृद्धि हुई।

१५ फरवरदीन (बैसाख बदी ११) को महाबतखां खानआजम और उसके बेटे अबदुल्लहको लेकर आगया। बादशाहने खानआजमको, यह सोचकर कि कहीं खुसरोके पक्षपातसे राणाकी फतहमें विघ्न न डाले आसिफखांके हवाले किया और कहा कि गवालियरके किलेमें आरामसे नजरबन्द रखे।

खुसरो।

१८ उर्दी बहिश्त (प्रथम जेठ बदी ३०) को खुसरोकी छोड़ी

बन्द होगई क्योंकि वह दरबारमें तो आता था परन्तु उदास रहा करता था।

मिरजा रुस्तम।

मिरजा रुस्तम(१) सफवीके अन्यायसे ठट्ठेकी प्रजाने पुकार की। बादशाहने उसे बुलाया वह २६ उर्दीबहिश्त (प्रथम जेठ सुदी ७) को आया तो वह अनीराय सिंहदलनको सौंप दिया गया कि निर्णय होने तक कुछ दुःख पावे और दूसरे लोग भी सहम जावें।

अहदादकी हार।

मोतकिदखां पोलमको घाटीमें जो परशावरके पास है और खानदौरां काबुलके पास अहदादका रास्ता रोके हुए थे। इतनेमें अहदाद बहुतसे सवारों और पैदलोंके साथ जलालाबादसे आठ कोस कोटतिराहमें आकर ठहरा और वहांके जो लोग अधीन होगये थे उनमेंसे कुछको मार और कुछको पकड़कर जलालाबाद और पेशबुलागके ऊपर आनेका विचार करने लगा।

मोतकिदखांने यह सुनकर ६ फरवरदीन (बैसाख वदी १) बुधवारको उसपर चढ़ाई की। वह खानदौरांके सिवा और किसी सेनाके उस प्रान्तमें विद्यमान होनेकी सूचना न होनेसे निश्चिन्त बैठा था, तो भी खूब लड़ा। अन्तको बन्दूकोंकी मारसे घबराकर भाग निकला। मोतकिदखांने तीन चार कोस तक पीछा करके उसके पन्द्रह सौ आदमी मारे। शेष हथियार डालकर भाग गये। मोतकिदखां रातको तो रणभूमिमें रहा और तड़के छः सौ सिर पठानोंके लेकर परशावरमें आया और वहां उनका बुर्ज(२) कोट बनवाया। पांचसौ गाय बैल बकरी घोड़े और बहुतसा धन माल

(१) यह ईरानके शाह तुहमास्प सफवीके भतीजे सुलतान हुसैन मिरजाका बेटा था इसका बाप कन्धार और ज़मीनदावरका हाकिम था मगर तूरानके बादशाह अबदुल्लहखां उजबकके डरसे अपना मुल्क अकबर बादशाहको देकर हिन्दुस्थानमें आगया था।

(२) बैरियोंके मस्तकोंका स्तम्भ।

हाथ आया। तिराहके जो बन्दी थे वह भी छूट गये। इधरसे कोई बड़ा आदमी नहीं मरा। बादशाहने मोतकिदखांको लश्करखांका खिताब दिया।

शिकार।

१ खुरदाद (प्रथम जेठ सुदी १४) गुरुवारकी रातको बादशाह शिकारके वास्ते पुष्करको गया और शुक्रवारको दो शेर बन्दूकसे मारे।

नकीबखांकी मृत्यु।

इसी दिन नकीबखांके मरनेकी अर्जी हुई। उसकी स्त्री दो महीने पहले मर गई थी दोनो मियां बीबीमें बड़ा प्यार था। इस लिये बादशाहने इसको भी बीबीके पास ख्वाजाजीकी दरगाहमें गाड़नेका हुक्म दिया।

रानाकी लड़ाई।

बादशाहने दियानतखांको उदयपुरमें खुर्रमके पास हुक्म पहुंचाने के वास्ते भेजा था उसने आकर खुर्रमके साहस और प्रबन्धकी बड़ी तारीफ की।

फिदाईखांकी मृत्यु।

फिदाईखां जो खुर्रमके लश्करका बख्शी था १२ (द्वितीय जेठ बदी १०) को मर गया। यह बादशाहका लड़कपनका नौकर था।

मिरजा रुस्तम।

मिरजा रुस्तम अपने कुकर्मोंसे लज्जित होकर पछताने लगा था इसलिये बादशाहने उसका अपराध क्षमा करके उसको सम्मुख बुलाकर खिलअत पहनाया और दरबारमें आनेको आज्ञा दी।

हथनीका बच्चा देना।

११ तीर (आषाढ़ बदी ३०) रविवारकी रातको शाही हथनीने बादशाहके सम्मुख बच्चा दिया। बादशाहने गर्भकी अवधि निर्णय की तो विदित हुआ कि जो बच्चा नर हो तो डेढ़ सालमें और मादा हो तो उन्नीस महीनेमें जनती है। आदमीका बच्चा तो

विशेष करके सिरकी ओरसे जन्मता है और हथनीका टांगोंकी ओरसे ।

बच्चेके जन्मतेही हथनी उस पर धूल डालकर प्यार करने लगी और बच्चा भी क्षण भर पीछे उठकर दूध पीने लगा।

राजा मानसिंहकी मृत्यु ।

५ अमरदाद (सावन वदी ७) को दक्षिणसे राजा मानसिंहके मरनेकी खबर आई । बादशाहने भावसिंहको जो उसके बेटोंमेंसे बहुत सुशील था बुलाया। राज्यका अधिकारी तो हिन्दुओंकी रीति और इस घरानेकी मर्य्यादासे राजा मानसिंहके बड़े बेटे जगतसिंहका बेटा महासिंह था क्योंकि जगतसिंह बापके जीतेजी मर चुका था। परन्तु भावसिंह बादशाहकी सेवामें लडकपनसे बहुत रहा था इसलिये बादशाहने उसको चार हजारी जात तीन हजार सवारका मनसब मिरजा राजाका खिताब और अजमेरका राज्य दिया। इसके बदलेमें महासिंहको गढ़ेका राज देकर पांच सदी मनसब भी उसका बढ़ाया घोड़ा सिरोपाव और जड़ाऊ कमरपट्टा भी उसके लिये भेजा।

बादशाहकी बीमारी ।

८ अमरदाद (सावन वदी १०) को बादशाहकी तबीयत खराब हुई। माथा दुखने और ज्वर आने लगा। परन्तु राज्यमें विघ्न पड़नेकी आशंकासे नूरजहां(१) बेगमके सिवा और किसीको अपनी दशा नहीं कही। खुराक घट गई थी तो भी नित्य नियमानुसार खास, आम, दीवानखाने, झरोखे और गुसलखानेमें जाता आता रहा। निदान जब थक गया तो हकीमोंसे कहा और ख्वाजाजीकी दरगाहमें जाकर परमेश्वरसे अपने अच्छे होनेकी प्रार्थना की। प्रसाद और मन्नत मानी तब आराम हुआ। सिरका कुछ दर्द बाकी था वह हकीम अबदुलशकूरकी दवासे जाता रहा।

---

(१) बादशाहने नूरजहांका नाम पहले पहल यहां लिखा है महलमें तो वह तीन वर्ष पहलेही आगई थी।

बादशाह लिखता है कि नौकर चाकर क्या प्रजाने भी इस प्रसन्नतामें दान पुण्यके लिये बहुतसा द्रव्य देना चाहा परन्तु मैंने किसीका कुछ नहीं लिया। सबसे कह दिया कि अपने अपने घरों में जो चाहें फकीरोंको बांटें।

कर्ण छेदन।

१२ शहरेवर २८(१) रज्जब (भादों बदी ३०) गुरुवारको बादशाहने दोनो कान छिदवाकर मोती पहने। क्योंकि बीमारीमें यह मन्नत मानी थी कि जो ख्वाजाजीके प्रभावसे अच्छा होजाऊंगा तो जैसे अन्तःकरणसे उनकी भक्ति करूंगा वैसेही प्रत्यक्षमें कान छिदवा कर उनके दासोंमें मिल जाऊंगा।

बादशाहको कान छिदाते देख कर बहुत लोगोंने भी क्या दूर क्या हजूरमें अपने कान छिदवा लिये। बादशाहने भी अपने रत्न-भाण्डारसे उनको मोती दिये। होते होते सर्वसाधारणमें भी कान छिदवानेकी चाल चल पड़ी।

२२ गुरुवार १० शाबान (भादों सुदी ११) को बादशाहकी सौर वर्षगांठका तुलादान हुआ। इसी दिन मिरजा राजा भावसिंह कृतार्थ और पूर्णकाम होकर अपने देशको गया। दो तीन महीने से अधिक न ठहरनेकी प्रतिज्ञा करने पर उसको छुट्टी मिली थी।

६ आबान (कार्त्तिक बदी ११) को किरावलोंने छः कोस पर तीन सिंहोंकी खबर दी। बादशाह दोपहर ढलतेही गया और तीनोंको बन्दूकसे मार लाया।

८ (कार्त्तिक बदी १३) को दिवालीका द्वन्द मचा। दरबारी लोग बादशाहकी आज्ञासे उनके समक्ष दो तीन रात जुआ खेलते रहे। खूब हार जीत हुई।

---

(१) चंडूपञ्चाङ्गकी गणित से २७।

२) तु० ज० पृ० १३१ में २२ शहरेवर १० शबान गुरुवारको तुलादान होना लिखा है इसमें इतनी भूल है कि २२ शहरेवर तो गुरुवारको नहीं रविवारको थी और शाबानकी ९वीं तारीख थी।

१८ (कार्त्तिक सुदी ११) को सिकन्दर मकीन किरावलकी लाश उदयपुरसे जहां खुर्रमके डेरे थे अजमेरमें आई। यह पुराना नौकर था इसलिये बादशाहने हुक्म दिया कि सब किरावल साथ जाकर आना सागर(१)के तट पर गाड़ देवें।

१२ आजर (अगहन सुदी ३) को २ लड़कियां (जो इसलामखां ने कोचके जमींदारोंसे, जिनको विलायत पूर्वके अन्तिम सीमा पर है ली थीं) और ८४ हाथी भेट हुए और उसके बेटे होशंगने दो हाथी सौ मोहर और एक सौ रुपये नजर किये।

सपना।

बादशाहने एक रात अपने पिताको सपनेमें यह कहते हुए देखा कि बाबा खानआजम अजीजखांके गुनाह मेरी खातिरसे बख्श दे।

नूर चश्मा।

अजमेरकी तलहटीमें हाफिज जमालके नामसे एक दरा और चश्मा प्रसिद्ध है बादशाहने उस सुरम्य स्थानको पसन्द करके वहांके योग्य राजभवन बनानेका हुक्म दिया था। एक वर्षमें ऐसा उत्तम भवन बना कि पृथ्वी पर्य्यटन करनेवाले उसके समान कोई स्थान नहीं बताते थे। वहां ४० गज लम्बा और उतनाही चौड़ा एक झालरा निर्माण हुआ था जिसमें चश्मेका पानी फव्वारेसे डाला गया था। इसका पानी १०।१२ गज ऊंचा उछलकर गिरता था। झालरेके ऊपर बैठकें बनी थीं। ऐसेही ऊपरके खण्डमें भी जहां तालाब और चश्मा था मनोहर मन्दिर सुखद सदन और ऊंचे झरोखे झुके थे कईएकमें तो चतुर चित्रकारोंने विचित्र चित्रकारी की थी। बादशाहने उस स्थानका नाम नूरचश्मा रखा जो उसके नाम नूरुद्दीनसे मिलता हुआ था। वह लिखता है—"इसमें यही दोष है कि किसी बड़े नगरमें या ऐसी जगह पर न हुआ

(१) आना सागरका नाम राना शंकर तु० ज० में लेखकके दोषसे लिखा गया है।

जहां वहुत लोग आते जाते। बन जानेके पीछे मैं गुरुवार और शुक्रवारको वहुधा वहीं रहता हूं। मैंने कवियोंको प्रशस्ति लिखनेकी आज्ञा की तो भूषणागारके कर्मचारी सईदाय गीलानीने जो प्रशस्ति भेट की वही मैंने पत्थर पर खुदवाकर नीचेके भवन पर लगवादी।(१)

अनार और खरबूजे।

माव महीनेके लगतेही विलायतके व्यापारी आये और यज्द(२) के अनार और कारेज(३) के खरबूजे लाये जो खुरासानके देशमें सर्वोत्तम होते हैं। बादशाह लिखता है—"दरगाहके सब बन्दों और सीमा प्रान्तके अमीरोंने इस मेवेका हिस्सा पाकर परमेश्वरका धन्यवाद किया। अबतक मुझको उत्तम अनार और खरबूजे नहीं मिले थे। यों तो वर्षभर बदख्शांसे खरबूजे और काबुलसे अनार आया करते हैं पर वह यज्दके अनार और कारेजके खरबूजोंके समान नहीं होते। मेरे पिताको मेवेकी बहुत रुचि थी मुझे बड़ा अफसोस हुआ कि यह मेवे उनके समयमें नहीं आये। आते तो वह बहुत प्रसन्न होते।

जहांगीरी अतर।

ऐसाही अफसोस मुझे अतर जहांगीरीका भी है कि जो उनके सूंघनेमें नहीं आया। यह अतर मेरे राज्यमें नूरजहां बेगमकी माके

(१) यह स्थान प्रशस्ति सहित नूरचश्ममें अब भी है। झालरा और फव्वारा टूट गया है। तीस वर्ष पहले अंगरेजी सरकार से कुछ मरम्मत हुई थी पर न अब वैसी छटा है न वह पानी है। न फव्वारा चलता है न चादर गिरती है। सब मकान सूने और उजड़े पड़े हैं। नूरचश्मेकी जामनें मशहूर थीं अब कई वर्षसे अच्छी वर्षा न होनेसे वह भी वैसी नहीं होतीं।

(२) 'यज्द' ईरानमें एक पुराना प्रदेश है।

(३) कारेज, हिरातमें खरबूजोंके खेत हैं हिरात अब काबुलके राज्यमें है।

परिश्रमसे नया निकला है। जब गुलाबका जल निकालते हैं तो उस के ऊपर कुछ चिकनाई आजाती है। उसको थोड़ा थोड़ा लेकर यह अतर बनाया गया है इसमें इतनी अधिक सुगन्ध होती है कि एक बूंद हथेलीमें मल लीजाय तो मजलिसभर महकउठती है और ऐसा मालूम होता है कि बहुतसे गुलाबके फूल खिलगये हैं। इसका तीव्र सौरभ ऐसा सुन्दर और सुरम्य होता है कि जिससे मुरझाया हुआ हृदय कमलसा प्रफुल्लित होजाता है। मैंने इस अतरके इनाममें एक माला मोतियोंकी उसको इनायत की। सलीमा सुलतान बेगम उस समय जीती थी उसने इस तेलका नाम जहांगीरी अतर रखा।

हिन्दुस्थानकी विचित्रता।

बादशाह लिखता है—"हिन्दुस्थानकी हवामें बहुत विचित्रता देखी जाती है लाहोर जो हिन्दुस्थान और विलायतके बीचमें है वहां इस ऋतुमें तूत बहुत फला। और वैसाही मीठा और रसीला हुआ जैसा कि अपनी ऋतु गरमी में होता है।

कई दिन लोग उनके खानेसे प्रसन्न रहे। यह बात वहांके अखबार लिखनेवालोंने लिखी थी।

बखतरखां कलावंत।

बखतरखां कलावंत जिसको आदिलखांने अपनी बेटी व्याही थी और जो ध्रुपद गानेमें उसका मुख्य शिष्य था फकीरी भेषमें प्रगट हुआ। बादशाहने उसको बुलाकर हाल पूछा। बहुत आदर किया। दस हजार रुपये सब प्रकारके ५० पदार्थ और एक मोतियों की माला देकर आसिफखांके घरमें ठहराया। बादशाहकी समझ में यह आदिलका भेजा हुआ भेद लेनेको आया था और इस बात का पुष्टि मीर जमालुद्दीनकी अर्जीसे भी हुई जो आदिलखांके पास गया हुआ था। उसने अर्जीमें लिखा था कि आदिलखांने कहा है कि जो कुछ मान मर्य्यादा बखतरखांकी हुई है वह मेरीही हुई है। यह जानकर बादशाहने और भी उस पर कृपा की। वह

रातोंको सेवामें रहता था और आदिलखांके बनाये हुए ध्रुपद जिनका नाम उसने नवरस* रखा था सुनाया करता था।

एक विचित्र पक्षी।

इन दिनोंमें जेरबाद देशसे एक पक्षी बादशाहके पास लाया गया जिसका रंग तोतेकासा था परन्तु आकारमें उससे छोटा था। उसमें विशेष बात यह थी कि जिस लकड़ी या वृक्षकी शाखा पर उसे बैठाते उसको वह एक पांवसे पकड़कर औंधा लटक जाता और सारी रात गाया करता। जब दिन निकलता तो फिर उस शाखा पर जा बैठता। बादशाह लिखता है कि लोग पशु पक्षियोंकी भी एक तपस्या बताते हैं। पर इसका यह काम स्वाभाविक जाना जाता है।

वह पक्षी पानी नहीं पीता था जो और सब जीवोंके वास्ते जीवनका मूल है वह इसके लिये विष था।

राणाका अधीन होना।

इन्हीं दिनोंमें बादशाहको लगातार कई बधाइयां पहुंचीं जिनमें मुख्य राणा अमरसिंहके अधीन होजानेकी थी। खुर्रमने जगह जगह और विशेष करके उन कई स्थानोंमें जहां जल वायुके विकार और विकट घाटियोंकी कठिनतासे लोग थानोंका बैठना संभव नहीं समझते थे थाने बैठाने शिशिर ग्रीष्म और पावस ऋतुमें भी सेनाके पीछे सेना दौड़ाने तथा वहांकी अधिक प्रजाके बालबच्चे पकड़ लेनेसे रानाको ऐसा कायर कर दिया था कि उसको यह निश्चय होगया कि जो इस दशामें कुछ दिन और बीतेंगे तो या तो मैं अपने देशसे निकाला जाऊंगा या पकड़ा जाऊंगा।

* नवरस इब्राहीम आदिलखांके ग्रन्थका नाम है जिसमें संगीत का विषय है। जहूरी नाम मुसलमान कविने इसकी व्याख्यामें एक काव्य फारसी भाषाका रचा है आदिलखां गानविद्यामें निपुण था।

उसने और कुछ उपाय न देखकर अधीन होनाही स्वीकार करके अपने मामा शुभकरणको हरदास झालाके साथ जो उसका एक बुद्धिमान सचिव था खुर्रमके पास भेजा और यह कहलाया कि जो आप बादशाहसे प्रार्थना करके मेरे अपराध क्षमा कर देवें और मेरे चित्तकी शान्तिके लिये बादशाहके पंजेकी छाप मंगवा देवें तो मैं आपके पास आऊं और टीकाई बेटे कर्णको बादशाहकी सेवामें भेजूं वह दूसरे सब राजोंकी रीतिके अनुसार सेवा किया करेगा। मुझे बुढ़ापेके कारण दरगाहकी हाजिरीसे माफी दीजावे।

खुर्रमने उनको अपने दीवान शुक्रुल्लह और मीर सामानसुन्दरके साथ बादशाहके पास भेजा। बादशाह लिखता है कि मेरी नियत शुरूसे यथासाध्य पुराने घरानोंके बिगाडनेकी नहीं रही है मुख्य मन्तव्य यही था कि राणा अमरसिंह और उसके बाप दादोंने अपने बिकट पहाड़ों और सुदृढ़ स्थानोंके घमण्डसे न तो हिन्दुस्थानके किसी बादशाहको देखा है और न सेवा की है। मेरे राज्यमें उनकी वह बात न रहे। मैंने लड़केकी प्रार्थनासे राणाके अपराध क्षमा करदिये। उसको शांतिके लिये प्रसादपत्र और अपनी हथेलीकी छाप भी भेजी और खुर्रमको लिखा कि तुम ऐसा करो जो यह काम बन जावे। जिससे यह प्रगट हो कि तुमने मेरे एक मनचाहे कामको पूरा किया।

खुर्रमने भी उनको मुल्ला शुक्रुल्लह और सुन्दरदासके साथ राणाके पास भेजा। उसने उनको बादशाही दयापात्र करके वह कृपापत्र और पंजेका चिन्ह दिया और यह बात ठहराई कि २६ बहमन (फागुन बदी २) रविवारको राणा अपने बेटों सहित आकर खुर्रमसे भेट करे।

बहादुरका मरना।

दूसरी बधाई यह थी कि बहादुर जो गुजरातके अगले बादशाहोंके वंशमें था और वहां उपद्रव किया करता था मरगया।

मीरजाई।

तीसरी बधाई मीरजाई[1]की हार थी यह सूरत बन्दर लेने को बड़े ठसमेसे आया था। उससे और अंगरेजोंसे जो इस बन्दरके शरणागत आये थे लड़ाई हुई। उसके बहुतसे जहाज अंगरेजों के गोलोंसे जल गये। तब वह भाग गया और बन्दरोंके हाकिम मुकर्रबखांके पास आदमी भेजकर सन्धि करली। कहलाया कि मैं लड़नेके विचारसे नहीं आया था मिलाप करनेको आया था अङ्गरेजोंने यह लड़ाई खड़ी करदी।

अंबर चम्पू।

कई राजपूतोंने अंबरके मारनेका बीड़ा उठाया था वह अवसर पाकर उसके ऊपर गये और एक राजपूतने उसके एक चोट भी दी परन्तु जो मनुष्य अंबरके साथ थे वह उन राजपूतोंको मारकर अंबरको बचा लेगये नहीं तो उसके मारेजानेमें कुछ कसर न थी।

---

[1] यह कोई फरंगी मालूम होता है।

ग्यारहवां वर्ष ।

सन् १०२४ ।

माघ सुदी २ संवत् १६७१ ता० २१ जनवरी सन् १६१५ से माघ सुदी २ सं० १६७२ ता० १० जनवरी १६१६ तक ।

रानाका खुर्रमके पास आना ।

इस महीनेके अन्तमें बादशाह अजमेरके बाहर शिकार खेल रहा था कि खुर्रमका नौकर मुहम्मदबेग उसकी अर्जी लेकर आया । उसमें लिखा था कि रानाने बेटों सहित आकर मुजरा किया । इस बातके ज्ञात होतेही बादशाहने खुदाकी दरगाहमें शुक्रका सिजदा किया और मुहम्मद बेगको हाथी घोड़ा तथा जुलफिकार खांका खिताब दिया ।

रानाके अधीन होनेका वृत्तान्त ।

अर्जीमें यह लिखा था कि २६ बहमन (फागुन बदी २) रविवारको रानाने जिस अदबसे बादशाही तावेदार मुजरा करते हैं उसी तौरेश¶ से खुर्रमको मुजरा किया । एक बड़ा प्रसिद्ध माणिक्य जो उसके घरमें था कुछ जड़ाऊ पदार्थ, अपने पासके शेष सात हाथी और ८ घोड़े नजर किये । खुर्रमने भी उसके ऊपर कृपा दिखाई । राना जब उसका पांव पकड़ कर अपने अपराधोंकी क्षमा मांगने लगा तो शाहजादेने उसका सिर बगलमें उठा उसको ऐसी तसल्ली की जिससे उसको शान्ति होगई । फिर बढ़िया खिलअत जड़ाऊ तलवार जड़ाऊ सजाईका घोड़ा और चान्दीकी सौंजका हाथी उसको दिया । उसके साथके मनुष्योंमें सिरोपाव पानेके योग्य एक सौसे अधिक नहीं थे इस लिये सौ सिरोपाव पचास घोड़े और १२ जड़ाऊ खपवे उनको दिये । जमींदारोंकी यह चाल है कि बाद-

---

¶ कायदा ।

शाहोंकी सेवामें टीकाई बेटा बापके साथ नहीं आता है उसीके अनुसार राना भी अपने बड़े बेटे कर्णको साथ नहीं लाया था परन्तु खुर्रमके कूच कर जानेका मुहूर्त उसीदिन सायंकालको था इससे उसने रानाको कर्णके भेजनेके लिये शीघ्रही बिदा करदिया।

रानाके जानेके बाद कर्णने मुजरा किया। उसको भी खुर्रम ने उत्तम सिरोपाव जड़ाऊ तलवार, कटार, सोनेकी जीनका घोड़ा और खासेका हाथी दिया और उसीदिन उसको साथ लेकर अजमेरको प्रस्थान किया।

शिकार।

३ असफंदार (फागुन बदी ८) को बादशाह शिकारसे लौटकर अजमेरमें आया। १७ बहमन माघ सुदी ८ को गया था। १६ दिन में एकसिंहनी तीन बच्चों सहित और तेरह नीलगायका शिकार हुआ।

खुर्रमका सम्मान।

१० (फागुन सुदी १) शनिवारको खुर्रमके डेरे देवरानीगांव* में हुए जो अजमेरके पास है। बादशाह ने हुक्म दिया कि सब अमीर अगवानीको जावें और यथायोग्य शाहजादेको भेट दें।

खुर्रमका दरबारमें आना।

११ (फागुन सुदी २ रविवार) दूसरे दिन खुर्रमने बड़े दबदबे से सब सेनाओंके साथ खासोआम दौलतखाने में प्रवेश किया। दो पहर पर दो घड़ी दिन आये उसके मुजरा करनेका मुहूर्त था। उसने बादशाहकी सेवामें उपस्थित होकर बार बार सिजदे किये। १०००) और १००० मोहरें नजर तथा इतनेही रुपये और मोहरें न्योछावर कीं।

बादशाहने उसको पास बुलाकर छातीसे लगाया। उसका सिर और मुंह चूमा। उसने प्रार्थना की कि हुक्म हो तो कर्ण मुजरा करनेको आवे। बादशाहने फरमाया कि हां उसको लावें। बख्शियोंने नियमानुसार लाकर उसको खड़ा किया। उसने मुजरा

करके सिर झुकाया। खुर्रमको अर्जसे हुक्म हुआ कि उसको दहने हाथकी श्रेणीमें सबके ऊपर खड़ा करें।

फिर बादशाहने खुर्रमसे फरमाया कि जाकर अपनी माताओंसे मिलो। खिलअत खासा जो चार जड़ाऊ कुब्बका था, जरीकी बनी हुई कबा और एक मोतियोंकी माला उसको इनायत हुई। खिलअतका मुजरा करनेके पीछे खासेका घोड़ा जड़ाऊ जीनका, और खासेका हाथी उसको दिया। कर्णको भी उत्तम खिलअत और जड़ाऊ तलवार मिली।

जो अमीर साथ गये थे उनपर भी यथायोग्य कृपा हुई।

कर्ण पर कृपा।

बादशाह लिखता है कि कर्णका मन लगाना जरूर था वह पशु प्रकृति था कभी सभा नहीं देखी थी और पहाड़ोंमें रहा आया था इसलिये मैं नित्य नई कृपा उसके ऊपर करता था। मुजरा करनेके दूसरे दिन जड़ाऊ कटार और तीसरे दिन जड़ाऊ जीनका खासा इराकी घोड़ा उसको दिया। इसी दिन वह जनानी ड्योढ़ी पर गया तो नूरजहां बेगमकी ओरसे भी उत्तम सिरोपाव जड़ाऊ तलवार घोड़ा और हाथी उसे मिले। फिर मैंने बहुमूल्य मोतियोंकी माला दी। दूसरे दिन खासेका हाथी तलायर सहित दिया। मैं चाहता था कि उसको अनेक प्रकारके पदार्थ दिये जावें। इस लिये तीन बाज तीन जुर्रे एक शाही तलवार इक्कीस बखतर एक शाही कवच एक अंगूठी लालकी और एक पन्नेकी उसे दी। महीनेके अन्तमें मैंने सब भांतिके कपड़े कालीन नमद तकिये सब जातिकी सुगन्ध सोनेके बर्तन २ गुजराती बहल मंगाये। इन सब पदार्थोंको अहदी लोग सौ थालोंमें सिरों और कन्धों पर उठाकर दीवान-खाने खासोआममें लाये और मैंने सब कर्णको बख्श दिये।"

बादशाहका दान।

बादशाहने यह नियम बांधा था कि जो लोग कुछ मांगनेको दरबारमें आते थे उनको दोपहर रात व्यतीत होने पर बादशाहकी

सेवामें लेजाते थे। इस वर्ष ऐसे लोगोंको बादशाहने नीचे लिखे अनुसार दान दिये थे।

नकद ५५०००)	खेत २६ हल
जमीन १८०००० बीघे	धान ११००० गोन
पूरे गांव १४	मोती ७३२ नग ३६०००) के कान छिदानेवालोंको।

पोता।

इन्ही दिनोंमें बधाई आई कि ११ असफन्दार (फागुन सुदी २) रविवारको बुरहानपुरमें शाह मुरादकी बेटीसे परवेजको ईश्वरने बेटा दिया है। बादशाहने उसका नाम सुलतान दूरन्देश रखा।

दसवां नौरोज।

१ फरवरदीन २० सफर (चैत्र बदी ७) को ५५ घड़ी दिन चढ़े सूर्य्य मीन राशिसे मेखमें आया। बादशाह तीन घड़ी रात गये नौरोजकी सभामें सिंहासन पर बैठा। सब लोगोंने मुजरा किया। एतमादुद्दौलाके पांच हजारी जात और दो हजार सवारोंके मनसब पर हजारी जात और एक हजार सवार बढ़े। कुंवर कर्ण, जहांगीर कुलीखां और राजा बरसिंह देवको शाही घोड़े मिले।

आसिफखांकी भेट रत्नों और रत्नजड़ित सोनेके पदार्थोंकी थी। दूसरे दिन बादशाहने उसमें पचासी हजारकी चीजें पसन्द करके ले लीं। इसी दिन जड़ाऊ तलवार परतले सहित कर्णको दी।

मांडों (मंडू)।

बादशाहका विचार दक्षिण जानेका था इसलिये अबदुर्रहीम मामूरीको हुक्म हुआ कि मांडोंमें जाकर नया राजभवन बनावें और अगले बादशाहोंके स्थानोंका भी जीर्णोद्धार करें।

तीसरे दिन राजा बरसिंह देवकी भेट हुई। बादशाहने उसमेंसे एक लाल कई मोती और एक हाथी लेलिया।

चौथे दिन मुरतिजाखांका मनसब पांच सदी जात और दो सौ सवारोंके बढ़ानेसे दो हजारी जात और अढ़ाईसौ सवारोंका

होगया । पांचवें दिन एतमादुद्दौलाको नक्कारा और झण्डा मिला साथही नक्कारा बजानेकी आज्ञा होगई ।

आसिफखांका मनसब बढ़कर चार हजारी जात और दो हजार सवारोंका होगया ।

राजा वरसिंहदेवके सात सौ सवार बढ़े और घर जानेकी छुट्टी नियत समय पर उपस्थित होजानेके इकरार पर मिली ।

उसी दिन इब्राहीमखांकी भेट हुई ।

किशनचन्दको जो नगरकोटके राजोंकी सन्तानमें था राजाकी पदवी दी गई ।

छठे दिन गुरुवारको एतमादुद्दौलाकी भेट नूरचश्मेमें हुई । बादशाहने एक लाख रुपयेके जवाहिर और जड़ाऊ पदार्थ लेकर शेष उसके वास्ते छोड़ दिये । इस दिन बड़ा उत्सव हुआ था ।

सातवें दिन किशनसिंहका मनसब हजारी जात बढ़कर तीन हजारी जात और डेढ़ हजार सवारका होगया । इसी दिन नूर चश्मेकी तलहटीमें एक सिंह शिकार हुआ ।

आठवें दिन (चैत्र बदी १४) को बादशाहने कर्णको पांचहजारी जात और पांच हजार सवारोंका मनसब देकर हीरों और मोतियों की एक छोटी माला दी जिसमें मोतियोंकी सुमरनी लगी थी ।

राजा श्यामसिंहका मनसब पांच सदी जातके बढ़नेसे अढ़ाई हजारी जात और चौदहसौ सवारोंका होगया ।

सूर्यग्रहण ।

दसवें दिन (चैत्र बदी ३०) रविवारको १२ घड़ी दिन बीतने पर पश्चिमसे सूर्य ग्रहण लगा । पांच भागमेंसे चार भागका ग्रास हुआ । आठघड़ीमें मोक्ष हुआ । बादशाहने नाना प्रकारके दान दिये ।

इसी दिन राजा सूरजसिंहकी भेट हुई । उसमेंसे जो माल बादशाहने लिया वह तेतालिस हजार रुपयेका था ।

चौदह हजार रुपयेकी भेट कन्धारके हाकिम बहादुरखांकी भी पहुंची ।

दाराशिकोहका जन्म।

२४ सफर (चैत्र सुदी १) चन्द्रवार संवत् १६७२ को आधीरात गये धन लग्नमें खुर्रमके घरमें आसिफखांकी बेटीसे पुत्र जन्मा। बादशाहने उसका नाम दाराशिकोह रखा।

इसी दिन एतबारखांकी भेंटमेंसे चालीस हजार रुपयेका माल लिया गया।

ग्यारहवें दिन मुरतिजाखांकी भेटसे सात लाल एक मोतियोंकी माला और २७० मोती एक लाख ४५ हजार रुपयेके खोलात हुए।

बारहवें दिन मिरजा राजा भाऊसिंह और रावतशंकर (राना* सगर) की भेट हुई।

तेरहवें दिन ख्वाजा अबुलहसनने बत्तीस सौ रुपयेके रत्न भेट किये।

चौदहवें दिन अबुलहसनका मनसब चार हजारी जात और बारहसौ सवारोंका होगया।

ईरानका दूत।

इसी दिन ईरानका वकील मुस्तफा बेग आया। उसको शाहने गुर्जिस्तान फतह करके भेजा था। कई घोड़े ऊंट और कुछ हलब देशके कपड़े जो रूमसे शाहके वास्ते आये थे और नौ बड़े फरंगी कुत्ते फाड़नेवाले (जो मंगाये गये थे) उसके हाथ पहुंचे।

कांगड़े पर सेना।

इसीदिन (चैत्रसुदी ५ शुक्रवार)को मुरतिजाखां किले कांगड़ेको फतह करनेके लिये विदा हुआ। उक्त किला संसारके सुदृढ़ दुर्गोंमेंसे था और मुसलमानी राज्य होनेके समयसे अबतक किसी बादशाहने उसको नहीं जीता था। एक बार अकबर बादशाहके हुक्मसे पञ्जाबकी सेनाने उसको घेरा भी था परन्तु फतह न हुआ।

मुरतिजाखांको जाते समय हाथी तलापर समेत मिला और

---

* यह वही सगर है जिसको पहले रानाकी पदवी मिली पर रानासे सन्धि होजाने पर यह रावतही रह गया।

राजा बासूका बेटा सूरजमल भी जिसका देश इस किलेसे मिला हुआ था वहां भेजा गया। उसके मनसबमें पांच सदी जात और पांचसौ सवार बढ़ाये गये।

राय सूरजसिंहने अपनी जगह और जागीर* से आकर सौ मोहरें भेट कीं।

सतरहवें दिन मिरजा रुस्तमने अपनी भेट दिखाई उसमेंसे पन्द्रह हजार रुपयेका और एतकादखांकी भेटमेंसे अठारह हजार रुपयेका माल बादशाहने लिया।

अठारवें दिन पन्द्रह हजार रुपयेका माल जहांगीरकुलीखांकी भेटमेंसे पसन्द हुआ।

बीसवें दिन चैत्र सुदी ११ गुरुवारको दोपहर साढ़े चार घड़ी दिन बीतने पर मेख संक्रान्ति† लगी। बादशाहने दरबार किया। जब पहर भर दिन रहा तो नूरचश्मेको चला गया। महाबत खांकी भेट वहां हुई जो बड़ी कीमती थी। बादशाहने एक लाख अड़तालिस हजार रुपयेका माल उसमें लेलिया एक लाख रुपयेका तो एक जड़ाऊ खपवाहो था जिसे उसकी प्रार्थनासे सरकारी सुनारोंने बनाया था।

ईरानके दूत मुस्तफा बेगको दस हजार रुपये और बीस हजार दरब दिये गये।

२१ (चैत्र सुदी १२) को अबदुलगफूरके हाथ दक्षिणके पन्द्रह अमीरोंको सिरोपाव भेजे गये।

राजा विक्रमाजीत अपनी जागीरको बिदा हुआ। परम नरम खासा उसको मिला।

२३ (चैत्र सुदी १४) को इब्राहीमखां बिहारका सूबेदार हुआ। जफरखांको दरबारमें आनेका हुक्म गया।

---

* जोधपुर।

† चण्डू पञ्चांगमें मेख संक्रान्ति चैत्र सुदी ८ को ४६ घड़ी ३४ पल पर लिखी है।

खुर्रमकी भेट।

वैशाख बदी ३ गुरुवारको पिछले दिनसे बादशाह खुर्रमके घर गया। उसने दूसरी भेट फिर दिखाई। पहले जब उसने मेवाड़ से आकर मुजरा किया था तो एक प्रसिद्ध माणिक्य जो रानाने मुजरा करते समय उसको भेटमें दिया था बादशाहको नजर किया उसका मूल्य जौहरियोंने साठ हजार बताया था परन्तु जैसी उसकी तारीफ होती थी वैसा नहीं था। तौलमें ८ टंक था। यह लाल पहले राव मालदेवके पास था जो राठौड़के कौमका सरदार और हिन्दुस्थानके बड़े राजोंमेंसे था। उससे उसके बेटे चन्द्रसेनको मिला। चन्द्रसेनने विपदमें राना उदयसिंहको बेच दिया। उससे राना प्रताप ने पाया। प्रतापसे राना अमरसिंहको मिला था। इसके घरमें इससे बढ़कर कोई पदार्थ नहीं था। इसलिये इसने जब राना खुर्रमसे मेल किया तो इस माणिक्यको अपने सारे हाथियों समेत खेचार* (भेट)में दिया था। बादशाहने उस पर यह लेख खुदवाया "सुलतान खुर्रमको रानाने भेट किया।"

उसी दिन और पदार्थ भी खुर्रमकी भेटमेंसे बादशाहने लिये थे। उनमें फरंगियोंका बनाया हुआ एक बहुत सुन्दर बिल्लौरी सन्दूकचा, कई पन्ने, तीन अंगूठियां, चार इराकी घोड़े और दूसरी फुटकर चीजें अस्सी हजार रुपयेकी थीं।

इस दिन बादशाह उसके घर गया तो उसने बहुत बड़ी भेट चार पांच लाख रुपयेकी सजाई थी। जिसमेंसे बादशाहने एक लाख रुपयेके पदार्थ उठा लिये।

कुंवर कर्ण।

बादशाह लिखता है—"कुंवर कर्णके बिदा होनेका मुहूर्त समीप आगया था और मैं चाहता था कि उसको अपने बन्दूक लगानेसे भी कुछ परिचित करूं। इतनेहीमें शिकारी लोग एक सिंहनीकी खबर लाये। मेरा यह नियम है कि शेरके सिवा औरको नहीं

* यह शब्द योंही लिखा है।

मारता हूं तोभी इस विचारसे कि कदाचित कुँवरके जाने तक सिंह न मिले, उसी सिंहनीके ऊपर गया। कर्ण भी साथ था। उससे कहा कि जिस जगह तू कहे मैं उसी जगह उसके गोली मारूं। उसने आंख पर मारनेको कहा। जहां वह सिंहनी घेरी हुई थी वहां पहुंचे तो पवन प्रचण्ड वेगसे चलने लगा और मेरी हथिनी भी सिंहनीके भयसे एक जगह नहीं ठहरती थी। इन दोनों बड़ी बाधाओंके होते हुए भी मैंने उसकी आंखको ताककर बंदूक चलाई। परमेश्वरने अपनी कृपासे मुझे उस राजकुमारके सामने लज्जित नहीं किया क्योंकि मैंने उसको आंखमें गोली मारकर गिरा दिया।

कर्णने इसी दिन खासेकी बंदूक मांगी तो मैंने अपनी रूमी बंदूक उसको इनायत की।"

८ उर्दबहिश्त (बैशाख सुदी १) को बादशाहका सौम तुलादान हुआ।

९ (बैशाख सुदी २) को खानआजम बादशाहके हुक्मसे आगरेसे (जहां वह गवालियरसे छूटकर आगया था) दरबारमें लाया गया। उसने कई अपराध किये थे तोभी बादशाह ही उसको देखकर लज्जित हुआ। उसने अपनी शाल उसको ओढ़ादी और उसके सब अपराध क्षमा कर दिये।

कर्णको एक लाख दरब इनायत हुए।

इसी दिन राजा सूरजसिंहने रणरावत नामक एक बड़ा हाथी जो उसके खासे हाथियोंमेंसे था लाकर नजर किया। बादशाहने उसको बड़ा अनोखा देखकर अपने निजके हाथियोंमें रखवा लिया।

१२ (बैशाख सुदी ५) को राजा सूरजसिंहने फिर सात हाथी भेट किये। वह भी शाही हाथियोंमें शामिल किये गये।

बख्तरखां चार महीने तक बादशाहकी सेवामें रहकर विदा हुआ। बादशाहने आदिलखांको कहनेके लिये उससे बहुतसी

बातें मित्रताके लाभ और शत्रुताकी हानिकी कहीं और इस समय भी उसको बहुत कुछ माल दिया। उसको बादशाह, शाहजादों और अमीरोंकी सरकारोंसे जिन्होंने आज्ञानुसार उसकी मनुहार की थीं सब मिलाकर एक लाख रुपया मिला था।

१४ (बैशाख सुदी ६) को खुर्रमके मनसब और इनामका निरूपण हुआ। उसका मनसब १२ हजारी जात और छः हजार सवारका और परवेजका १५ हजारी जात और आठ हजार सवारका था। बादशाहने खुर्रमका मनसब भी परवेजके बराबर कर दिया। उस पर भी एक सवाई इनामकी बढ़ाई। पंछीगज नामक खासेका हाथी उसको दिया जो सामान सहित बारह हजार रुपयेका था।

१७ (बैशाख सुदी ८) को राजा सूरजसिंहका मनसब जो चार हजारी जात और तीन हजार सवारोंका था एक हजारी जातके बढ़नेसे पांच हजारी होगया।

खानआजमका बेटा अबदुल्लह जो रणथम्भोरके किलेमें कैद था खानआजमकी प्रार्थनासे बुलाया गया और पांवकी बेड़ी कटवाकर बापके घर भेजा गया।

२४ (जेठ बदी १२) को राजा सूरजसिंहने फिर एक हाथी फौज सिंगार नामक बादशाहके भेट किया। वह शाही हाथियों में बंध गया परन्तु अगले हाथीके समान न था। मूल्य बीस हजार कूता गया।

कजलबाशखां जिसकी नौकरी गुजरातमें थी सूबेदार की आज्ञा बिनाही वह दरबारमें आगया। बादशाहने अहदी को हुक्म दिया कि उसको पकड़कर फिर सूबेदारके पास पहुंचादे।

२६ (जेठ बदी ७) को बादशाहने एक लाख रुपये खानआजम को दिलाये और डासना तथा कासनाके परगने जिनकी जमा पांच हजारी मनसबके बराबर थी उसकी जागीरमें लगा दिये।

३१ (जेठ बदी ८) को बीस घोड़े परम नरम खासेकी काबा बारह हरन और दस ताजी कुत्ते बादशाहने कर्णको दिये।

१ खुरदाद (जेठ बदी १०) को ४०, जेठ बदी ११ को ४१ और १२ को २० कुल १०१ घोड़े तीन दिनमें कर्णको फिर मिले।

बादशाहने फौजसिंगार हाथीके बदलेमें दस हजार रुपयेकी कीमतका एक शाही हाथी राजा सूरजसिंहको दिया।

५ (जेठ बदी १४) को १० चीरे १० कवा और १० कमरबन्द कर्णको इनायत हुए। जेठ सुदी १० को एक और हाथी उसको मिला।

करमसेनका मनसब दो सदी जात और पचास सवारोंकी वृद्धि से एक हजारी जात और तीनसौ सवारोंका होगया।

१२ (जेठ सुदी ६) को कलगी जो दो हजार रुपयेकी थी कर्ण को इनायत हुई।

१४ (जेठ सुदी ८) को बादशाहने सरबुलन्दरायको खिलअत देकर दक्षिणको बिदा किया।

गोयन्दास और किशनसिंहका मारा जाना।

बादशाह लिखता है—"१५ (जेठ सुदी ९) शुक्रवारको रातको एक अजीब बात हुई। मैं उस रात दैवसंयोगसे पुहोकरॐ में था। राजा सूरजसिंहका सगा भाई किशनसिंह राजाके वकील गोयन्दास पर अपने जवान भतीजे गोपालदासके मारे जानेसे बहुत नाराज था। गोपालदास मुद्दत पहले गोयन्दासके हाथसे मारा गया था। इस झगड़ेकी कथा बहुत लम्बी है। किशनसिंहको यह भरोसा था कि गोपालदास राजाका भी भतीजा लगता है इस लिये वह गोयन्दासको उसके बैरमें मार डालेगा। राजा गोयन्दासकी कार्य्यकुशलता और योग्यतासे भतीजेका बदला लेनेमें टालटूल करता था। किशनसिंहने जब राजाकी ओर से आनाकानी देखी तो अपने दिलमें यह ठानी कि मैंही भतीजेका बदला लूंगा और इस खूनको योंही नहीं जाने दूंगा। यह बिचार बहुत दिनोंसे उसके दिलमें था निदान इस रातमें अपने भाइयों सहायकों और नौकरोंको एकत्र करके कहा कि आज गोयन्दासको

मारने चलें चाहे जो हो। उसका यह मनोरथ न था कि राजाको कुछ हानि पहुंचे। उधर राजा भी इस घटनासे अज्ञात था। किशन-सिंह बड़े तड़केही अपने भतीजे कर्ण और दूसरे साथियोंको लेकर चला जब राजाको हवेलीके दरवाजे पर पहुंचा तो अपने कई अनुचरोंको घोड़ोंसे उतारकर गोयन्दासके घर भेजा। जो राजाके घरके पास था। वह आप वैसाही घोड़े पर चढ़ा हुआ ड्योढ़ीमें खड़ा रहा। वह प्यादे गोयन्दासके घरमें घुसकर पहरेवालों पर तलवार चलाने लगे। गोयन्दास इस मारा मारीसे जाग उठा और तलवार लेकर, घबराया हुआ घरके एक कोनेसे बाहर निकला। प्यादे जब उन पहरेवालोंको मार चुके तो गोयन्दासको ढूंढ़ने लगे। सामने पाकर उसका काम पूरा कर दिया। किशनसिंह गोयन्दासके मारे जानेका निश्चय होनेके पहले ही घबराहटमें घोड़ेसे उतरकर हवेलीके भीतर गया। उसके साथियोंने बहुतेरा कहा कि इस समय पैदल होना ठीक नहीं है परन्तु उसने कुछ नहीं सुना। यदि कुछ देर ठहरता और शत्रुके मारे जानेके समाचार पहुंच जाते तो सम्भव था कि वैसाही घोड़े पर सवार अपना काम करके कुशलपूर्वक लौट जाता परन्तु भाग्यमें कुछ औरही लिखा था। उसके पैदल होकर अन्दर जातेही राजा जो अपने महलमें था बाहरवालोंके कोलाहलसे जाग गया और नंगी तलवार हाथमें लेकर अपने घरके दरवाजे पर आया। लोग हर तरफसे सावधान होकर उन पैदलोंके ऊपर दौड़े। पैदल थोड़ेसे थे और राजाके आदमियोंको कुछ गिनती न थी। किशनसिंहके एक एक आदमीके सम्मुख दस दस आगये। जब कर्ण और किश-नसिंह राजाके घर पहुंचे तो उसके आदमियोंने उनको घेरकर मार डाला। किशनसिंहके ७ और कर्णसिंहके ८ घाव लगे थे। इस बखेड़ेमें ६६ आदमी दोनों पक्षके मारे गये। राजाके तीस और किशनसिंहके छत्तीस मरे। जब दिन निकला तो इस झगड़े

* पुष्कर।

का पता लगा। राजाने अपने भाई भतीजे और प्रिय पारिषदों को मरा देखा। बाकी लोग बिखरकर अपनी अपनी जगह पर चले गये थे।

यह खबर पहोकरमें मेरे पास पहुंची तो मैंने हुक्म दिया कि जो लोग मारे गये हैं उनको उनकी रीतिके अनुसार जला देवें और इस झगड़ेका पूरा पूरा निर्णय करें। पीछे प्रगट हुआ कि बात वही थी जो लिखी गई।

राय सूरजसिंह।

२०* (जेठ सुदी १४) को राय सूरजसिंह दक्षिणको बिदा हुआ। बादशाहने उसको कानोंके वास्ते एक जोड़ी मोतियोंकी और एक परम नरम खासा इनायत किया। खानजहांके वास्ते भी एक जोड़ी मोतियोंकी उसके हाथ भेजी।

कर्णकी बिदाई।

२५ (आषाढ़ बदी ४।५) को कर्ण अपनी जागीरको बिदा हुआ। बादशाहने शाही हाथी घोड़े पचास हजार रुपयेकी मोतियोंकी कण्ठी और दो हजार रुपयेकी जड़ाऊ कटार उसको बिदाईमें दी। मुजरा करनेके दिनसे बिदा होने तक जो कुछ नकद माल जवाहिर और जड़ाऊ पदार्थ बादशाहने उसको दिये थे वह सब इस प्रकार थे

रुपये २ लाख, हाथी ५ और घोड़े ११०।

खुर्रमने जो कुछ दिया था वह इससे अलग था।

बादशाहने मुबारकखां सजावलको हाथी घोड़ा देकर उसके साथ किया और कुछ बातें राणाको भी कहला भेजीं।

राजा सूरजसिंहकी छुट्टी।

राजा सूरजसिंहने भी घरजानेके वास्ते दो महीनेकी छुट्टी ली।

शाह ईरानका अपने बेटेको मारना।

बादशाहको यह खबर सुनकर बड़ा विस्मय हुआ कि ईरानके

* असल पोथीमें लेखकके दोषसे ८ लिखी है।

शाहने अपने बड़े बेटे सफी मिरजाको मरवा डाला है। वह ८ मुहर्रम सन् १०२४ (पौष सुदी १२ संवत् १६७१) को हम्मामसे निकलते समय वहबूद नामके एक दासके हाथसे मारा गया। बादशाहने ईरानके आनेवालोंसे इसका कारण बहुत पूछा परन्तु किसीने कोई सन्तोषदायक बात नहीं कही।

३ तीर (आषाढ़ सुदी ८) को पानी छिड़कनेका त्योहार हुआ। बादशाही सेवकोंने एक दूसरे पर गुलाबजल डालकर खुशी मनाई।

१८ (आषाढ़ सुदी १५) को खानखानां और शाह नवाजखांकी भेट बादशाहके पास पहुंची। खानखानांकी भेटमें इतने पदार्थ थे—

लाल ३, मोती १०३, याकूत १०२, जड़ाऊ कटार २, कलगी जड़ाऊ याकूत और मोतियोंकी १, जड़ाऊ सुराही १, जड़ाऊ तलवार १, तरकश मखमलका मढ़ा हुआ १, कब्जन जड़ाऊ १, अंगूठी हीरेकी १।

यह सब एक लाख रुपयेके हुए। इनके सिवा यह चीज भी थीं—

दक्खिणी कपड़े सादे और जरीके, कर्नाटकके कपड़े सादे और जरीके, ५ हाथी और एक घोड़ा जिसकी गरदनके बाल जमीन तक पहुंचते थे।

शाह नवाजखांकी भेटमें ५ हाथी और ३०० थान नाना प्रकारके कपड़ोंके थे।

राजा रोजअफजूं।

राजा संग्राम बादशाही अमीरोंसे लड़कर मारा गया था। उसका बेटा बचपनसे बादशाहके पास रहता था। बादशाहने उसको मुसलमान करके राजा रोजअफजूंकी पदवी दी। उसके बापका राज्य भी उसको देदिया और एक हाथी इनायत करके घर जानेकी छुट्टी दी।

जगतसिंहका आना।

२४ (सावन बदी ६) को कुंवर कर्णके बेटे जगतसिंहने जो १२

वर्षका था आकर बादशाहसे मुजरा किया। अपने पिता और दादा राणा अमरसिंहकी अर्जी पेश की। बादशाह लिखता है कि कुलीनता और बड़े घरमें जन्मनेके चिन्ह उसके चेहरेसे पाये जाते हैं। मैंने सिरोपाव और मधुर वाक्योंसे उसका चित्त प्रसन्न किया।

राजा नथमल।

५ अमरदाद (सावन सुदी ३) को राजा नथमलके मनसब पर जो डेढ़ हजारी जात और ग्यारह सौ सवारोंका था पांच सदी जात और एक सौ सवार बढ़ाये गये।

केशव मारू।

७ (सावन सुदी ५) को केशव मारूने आकर मुजरा किया। ४ हाथी नजर किये। इसको सरकार उड़ीसेमें जागीर दीगई थी परन्तु वहांके सूबेदारने शिकायत लिखी थी इसलिये बादशाहने उसे बुला लिया।

खानजहां लोदी।

८ (सावन सुदी ६) शुक्रवार*को खानजहां लोदीने दक्खिनसे उपस्थित होकर एक हजार मोहर एक हजार रुपये नजर और चार लाल, एक पन्ना जड़ाऊ फूल कटारा और २० मोती भेट किये। यह सब चीजें पचास हजार रुपयेकी थीं।

सावन सुदी ८ रविवारको रातको बादशाह ख्वाजाजीके उर्समें गया। आधीरात तक रहा। छः हजार रुपये कुछ कुरते मोती मूंगे और कहरुबा‡की ७० मालायें अपने हाथसे मुजावरोंको दे आया।

---

* असल पोथीके पृष्ठ १४५ में मंगल ८ तिथिको गलत लिखा है शुक्र चाहिये। क्योंकि आगे उर्स रविवार (६ रज्जब) को लिखा है वह सही है।

‡ एक प्रकारकी मणि।

महासिंहको राजाकी पदवी।

राजा मानसिंहके पोते महासिंहको बादशाहने राजाका खिताब नक्कारा और झण्डा दिया।

केशव मारू।

२० (भादों बदी ४) को केशवमारूके मनसब पर जो दोहजारी जात और एक हजार सवारका था दो सौ सवार बढ़े और खिलअत भी मिला।

मिरजा राजा भावसिंह।

२२ (भादों बदी ६) को मिरजा राजा भावसिंहने अपने घर आमेर जानेकी छुट्टी ली। बादशाहने पहुपम[1] काश्मीरीका शाही जामा इनायत किया।

गिरधर।

१ शहरेवर (भादों बदी ३०) को दक्षिण जानेवाले अमीरोंके मनसब बादशाहने बढ़ाये। उनमें राय साल दरबारीके बेटे गिरिधरका मनसब आठ सदी जात और सवारोंका होगया।

इतनाही मनसब अलफखां क्यामखानीका भी हुआ।

नूरजहानी मोहर।

८ (भादों सुदी ७) को नूरजहानी मोहर जो ६४०० रुपये की थी बादशाहने ईरानके दूत मुस्तफा बेगको दी।

शबरातकी दीपमालिका।

आश्विन बदी १ की रातको शबरातका त्योहार था। बादशाहके हुक्मसे आनासागरके किनारों और उसके आसपासके पहाड़ों पर दीपमालिका की गई। बादशाह भी देखनेको गया था और बड़ी रात तक बेगमों सहित आनासागरके तट पर रहा। चिरागों का प्रतिबिम्ब पानीमें पड़कर अनोखी शोभा दिखाता था।

आदिलखांकी भेंट।

१७ (आश्विन बदी २) को मिरजा जमालुद्दीन ———

[1] एक प्रकारका कपड़ा।

वकील होकर बीजापुरको गया था वहांसे आकर तीन जड़ाऊ अंगूठियां नजर कीं। एकमें बहुत बढ़िया अकीक, यमन देशकी खानका जड़ा था। आदिलखांने भी सैयद कबीर नामके एक मनुष्यको अपनी तरफसे भेंट सहित भेजा था।

२४ (आश्विन बदी ८) को आदिलखांकी भेंट बादशाहके दृष्टिगत हुई। चांदी सोनेकी झोंजके हाथी, इराकी घोड़े, जवाहिर, जड़ाऊ पदार्थ और अनेक प्रकारके कपड़े थे जो उस देशमें होते हैं।

इसी दिन बादशाहने सौरपक्षकी वर्षगांठका तुलादान किया।

ईरानके दूतकी बिदाई।

२६ (आश्विन बदी ११) को ईरानका दूत मुस्तफाबेग बिदा हुआ। बादशाहने उसको बीस हजार रुपये और सिरोपाव देकर शाह ईरानके प्रेमपत्रका उत्तर प्रीतिपूर्वक लिख दिया।

दक्षिण पर सेना।

५ महर (आश्विन सुदी ६) को महाबतखां और १० (आश्विन सुदी ११) को खानजहां दक्षिणको बिदा हुआ। बादशाहने दोनोंको हाथी घोड़े हथियार और खिरोपाव दिये। महाबतखांके सतरहसौ सवारोंको दुअस्पा और तिअस्पाकी तनखाह देनेकी आज्ञा दी।

इसबार इतनी सेना दक्षिणको ओर भेजी गई—

मनसबदार ३३० अहदी ३००० उबेसाक* ७०० सवार दिलाजाक पठान ३०० सवार तोपखान जंगीहाथी और ३० लाख रुपये।

सरबुलन्दराय।

सरबुलन्दराय†का मनसब पांच सदी जात और २६० सवारोंके बढ़नेसे दो हजारी जात और पन्द्रहसौ सवारोंका होग

राजा किशनदासके मनसबमें पांच सदी जातको इ

* एक जातिके तुर्क।

† राव रतन हाडा।

राजा सूरजसिंह।

१८ (कार्तिक बदी ६) को राजा सूरजसिंहने जो अपने पुत्र गजसिंह सहित घरको गया था वापस आकर मुजरा किया। सौ मोहर और एक हजार रुपये नजर किये।

आदिलखांके वकील सैयद कबीरको एक नूरजहानी मोहर पांचसौ तोले सोनेकी इनायत हुई।

२३ (कार्तिक बदी ८) को नव्वे हाथी कासिमखांके भेजे हुए पहुंचे जो उसने कोच और मगके देशोंको जीतकर तथा उड़ीसेके जमींदारोंसे लेकर भेजे थे।

बीजापुर।

२६ (कार्तिक बदी १२) को सैयद कबीर हाथी घोड़ा और सिरोपाव पाकर बीजापुरको बिदा हुआ यह आदिलखांका भेजा हुआ दक्षिणके दुनियादारों*के अपराध क्षमा कराने और किले अहमदनगर और दूसरे बादशाही मुल्कोंके छुड़ा देनेकी प्रतिज्ञा करनेको आया था जो बादशाही अधिकारसे निकल गये थे।

रामदास कछवाहा।

उसी दिन राजा राजसिंह कछवाहा (जो दक्षिणमें मारा गया था) के बेटे रामदासको बादशाहने एक हजारी जात और चार हजार सवारका मनसब दिया।

राजा मान।

४ आबान (कार्तिक सुदी ५) को राजा मान जो गवालियरके किलेमें कैद था मुरतिजाखांकी जमानत पर छोड़ा गया। वह अपने मनसब पर बहाल होकर मुरतिजाखांके पास कांगड़ेकी लड़ाईमें भेजा गया।

राजा सूरजसिंह।

१६ (अगहन बदी ३) को राजा सूरजसिंह भी दक्षिणकी मुहिम पर भेजा गया। उसका मनसब तीनसौ सवारके बढ़नेसे पांच

---

* दक्षिणके बादशाहोंको दिल्लीके बादशाह दुनियादार कहते थे।

हजारी जात और तेतीससौ सवारोंका होगया। घोड़ा और सिरोपाव भी मिला।

राजा सारंगदेव।

अगहन सुदी ७ को दाराबखांको जड़ाऊ खञ्जर इनायत हुआ और राजा सारंगदेवके हाथ दक्षिणके अमीरोंको खिलअत भेजेगये।

काश्मीर।

बादशाहने सफदरखांको ऐसी कुछ बातें सुनीं थीं कि जिससे उसको कश्मीरको सूबेदारीसे हटाकर अहमदबेगखांको उसकी जगह पर भेजा।

बङ्गाल।

बङ्गालेके सूबेदार कासिमखां और वहांके अमीरोंके वास्ते एहतमामखांके हाथ जड़ावल* भेजी गई।

सूअरका शिकार।

७ दे (पौष सुदी ८) को पोहकरसे अजमेरको आते हुए बादशाहने रास्तेमें बयालीस सूअर मारे।

खुर्रमको मद्य पिलाना।

२५ (माघ बदी ११) शुक्रवारको खुर्रमका तुलादान हुआ। बादशाह लिखता है कि २४ वर्षका होगया है कई विवाह होगये हैं बच्चे भी जन्म गये हैं तोभी अबतक इसने कभी मद्यपान नहीं किया था। इस तुलादानको सभामें मैंने इससे कहा कि बाबा, तू बेटोंका बाप होगया है बादशाह और शाहजादे शराब पीते रहे हैं, आज तेरे तुलादानका उत्सव है मैं तुझे शराब पिलाता हूं और आज्ञा देता हूं कि उत्सवके दिन नौरोजके उत्सवों और बड़े बड़े त्योहारोंमें तू शराब पिया कर। परन्तु कम पीनेका ध्यान रखना। बुद्धिमानोंने इतनी पीनेकी आज्ञा नहीं दी है कि जो बुद्धिको भ्रष्ट करदे। इसके पीनेसे गुण और लाभकी इच्छा रखना चाहिये। बूअलीसीनाने जो एक बड़ा भारी हकीम होगया है कहा है—

* जाड़ेमें पहननेकी पोशाकें।

"मद्य मतवालेका तो शत्रु है और सावधानका मित्र है। थोड़ा तो औषधि है और ज्यादा सांपका विष। बहुत पीनेमें थोड़ी हानि नहीं है और थोड़ीमें बहुत लाभ है।"

निदान बहुत हठसे उसको शराब दीगई।

जहांगीरके शराबीपनकी कहानी।

इतना लिखनेके पश्चात् बादशाह अपने शराबी होनेकी कहानी इस प्रकार लिखता है—

"मैंने १५ वर्षकी अवस्था होजाने तक शराब नहीं पी थी परन्तु बचपनमें दो तीन बार मेरी मा और दाइयोंने दूसरे बच्चोंको देनेके बहाने मेरे पितासे अर्क मंगवाकर उसमेंसे एक तोला गुलाबजलमें मिलाकर और खांसीकी दवा कहकर मुझे पिलाया था। जब मेरे बापका उर्दू यूसुफजई पठानोंका दंगा दबानेके लिये नीलाब नदीके तट पर अटकके किलेमें था। तब एक दिन मैं शिकारको गया। श्रम बहुत करना पड़ा था इससे बड़ी थकावट आगई थी। उस्ताद शाहकुली नामक तोपचीने जो मेरे चचा मिरजा हकीमके तोपचियोंका नायक था मुझसे कहा कि आप एक प्याला शराब पीलें यह थकावट जाती रहेगी।

वह जवानीके दिन थे और चित्तमें ऐसी बातोंका चाव था। मैंने महमूद आबदारसे कहा कि हकीमअलीके घर जाकर नशेका शरबत लेआ।

हकीमने पीले रङ्गकी डेढ़ प्याला मीठी शराब छोटे शीशेमें भेजी। मैंने उसको पी लिया। उसका नशा सुहावना लगा। फिर तो मैं शराब पीने लगा। यहांतक कि अंगूरी शराबका नशा नहीं आने लगा तब अर्क पीना शुरू किया। नौ वर्षमें यह भी इतना बढ़ गया कि बीस प्याले तक दुआतिशा अर्कके पीजाता था। चौदह प्याले दिनमें और ६ रात्रिमें पीता था जिनमें हिन्दुस्थानकी तौलसे ६ सेर और ईरानकी तौलसे डेढ़ मन शराब समाती थी। मैं उन दिनोंमें एक मुर्गेका मांस रोटी और मूलीके साथ खालेता था।

किसीको मना करनेकी सामर्थ्य नहीं थी। मेरी यह दशा होगई थी कि जब नशा उतरता तो वदन कांपने लगता। हाथमें प्याला नहीं ठहर सकता था। दूसरे लोग मुझको अपने हाथसे पिलाते थे। निदान मैंने पिताके मन्त्री हकीम अबुलफतहके भाई हकीम हमामको बुलाकर अपना हाल कहा। उसने अत्यन्त करुणा और भक्तिभावसे स्पष्ट कह दिया कि साहिबेआलम*! इस प्रकार जो आपको शराब पीते हुए ६ महीने और निकले तो फिर यह रोग असाध्य होजावेगा। यह बात उसने हितकी कही और जान प्यारी होती है इस वास्ते मैंने मान ली। उस दिनसे मैं अर्क घटाने और फलोनिया‡ खाने लगा। जितनी शराब घटाता था उतनीही फलोनिया बढ़ती जाती थी। तब मैंने कहा कि अर्कको अंगूरी शराबमें मिला दिया करें। दो भाग तो शराब हो और एक भाग अर्क रहे। मैं इसीको पीता था और कुछ कुछ घटाता भी जाता था। सात वर्षमें ६ प्याले पर आरहा। एक प्यालेमें १८। मिसकाल† शराब होती है अब पन्द्रह वर्ष होगये इसी ढंगसे शराब पीता हूं न कम होती है न अधिक। रातको पीता हूं परन्तु गुरुवारके दिन जो मेरे राज्याभिषेकका दिन है पिछले पहरसे पी लेता हूं, रातको नहीं पीता। क्योंकि यह रात जो सप्ताह भरकी रातोंमें पवित्र है और एक पवित्र दिन (शुक्र) की लानेवाली है, मैं नहीं चाहता कि मतवालेपनमें व्यतीत हो और सुख सम्पत्ति देने वाले प्रभुके भजन और स्मरणमें चूक पड़ जावे।

मैं गुरुवार और रविवारको मांस भी नहीं खाता। गुरुवार तो

---

* जैसे बादशाहोंको जहांपनाह कहते थे वैसेही शाहजादोंको साहिबे आलम कहते थे।

‡ फलोनिया भंग और अफीमसे बनी हुई माजून।

† एक मिसकाल ४॥ माशेका होता है १८ मिसकालके ६ तोले ९ माशे होते हैं ६ प्यालेके ४०॥ तोले हुए।

मेरे राज्यतिलकका और रविवार मेरे पिताका जन्मदिन है। यह उनको बहुत प्रिय था वह इसको पर्वके समान मानते थे।

कुछ दिनों पीछे मैंने फलोनियाको अफीमसे बदल दिया। अब मेरी आयु सौर पक्षसे ४६ वर्ष ४ महीनेकी और सौम पक्षसे ४७ वर्ष ८ मासको होगई है। आठ रत्ती अफीम पांच घड़ी दिन चढ़े और छः रत्ती एक पहर रात गये खाता हूं।

बारहवां वर्ष ।

सन् १०२५ ।

माघ सुदी ३ सं० १६७२ ता० ११ जनवरी १६१६ से पौष सुदी १ सं० १६७३ ता० २९ दिसम्बर सन् १६१६ तक ।

ईरानकी सौगात ।

८ बहमन (माघ सुदी ११) को ईरानके बादशाहको भेजी हुई एक अकीककी माला और कारबन्दीकाम† की एक रकेबी जो बहुत सुन्दर और उत्तम थी ख्वाजा अबदुलकरीम व्यापारीके हाथ बादशाहके पास पहुंची ।

भंवर जगतसिंहकी बिदा ।

१० बहमन (फागुन सुदी ११) को कुंवर कर्णका बेटा जगतसिंह अपने घरको बिदा हुआ। बादशाहने बीस हजार रुपये एक घोड़ा एक हाथी खिलअत और शाही दुशाला उसको दिया और उसके रक्षक हरदास झालाको भी पांच हजार रुपये घोड़ा और सिरोपाव इनायत किया। उसके हाथ सोनेकी छः परीणा¶ रानाके वास्ते भेजीं ।

राजा सूरजमल ।

२० (चैत बदी ६) को राजा बासूका बेटा सूरजमल बादशाहकी सेवामें उपस्थित हुआ। इसका राज्य कांगड़ेके पड़ोसमें था इस लिये मुरतिजाखांके साथ कांगड़ा फतह करनेको भेजा गया था परन्तु मुरतिजाखांको इससे कुछ सन्देह होगया था और उसने इसके वहां रहनेमें हानि देखकर बादशाहको कई अर्जियां भेजी थीं इससे बादशाहने इसे बुलाया था ।

---

† एक प्रकारका जड़ावका काम ।

¶ इस वस्तुका कुछ ब्योरा नहीं मिला ।

अहदाद पठानकी हार।

अकबर बादशाहके समयसे अबतक अहदादका उपद्रव काबुलके पहाड़ोंमें चला जाता था। दस वर्षसे लगातार फौजें उसके ऊपर जारही थीं जिनसे वह लड़ लड़कर अन्तको जरखी नामक एक पहाड़ीमें जा बैठा था। उसको भी खानदौरांने घेर रखा था। अहदाद रातको अनाज और चारा लानेके वास्ते निकला करता था। कभी कभी उसके साथी मवेशी चरानेको पहाड़ीसे उतरते थे। एक रात जरखीकी तराईमें अहदादसे और खानदौरांसे मुठभेड़ होगई। अहदाद दोपहर तक लड़कर भागा। परन्तु जरखीमें जानेका अवसर न पाकर कन्धारकी ओर निकल गया। बादशाही फौजने जरखीमें प्रवेश करके उसके घर जला दिये तीनसौ पठान मारे गये और एकसौ कैद हुए।

अम्बरकी हार।

बहुतसे बरगी जो दक्षिणमें उपयुक्त और मजबूत लोग हैं अंबरसे रूठकर बालापुरमें शाह नवाजखांके पास चले आये थे। शाह नवाजखांने आदमखां, याकूतखां, जादूराय बापूकाटिया आदि उनके सरदारोंको हाथी घोड़े रुपये और सिरोपाव देकर शाही नौकरीमें लगा लिया और फिर इनको साथ लेकर अंबरके ऊपर कूच किया। उधरसे दक्षिणी सरदार महलदार, दानिश, दिलावर, बिजली और फीरोज सेना लेकर आये। परन्तु लड़ाईमें परास्त होकर अंबरके पास लौट गये। अंबरने बड़े अभिमानसे लड़नेका उद्योग करके बादशाही छावनी पर चढ़ाई की। कुतुबुलमुल्क और आदिलखांकी सेनाएं भी एक तरह तोपखाने सहित उसके साथ थीं। २५ बहमन (फागुन वदी १२) रविवारको पिछले दिनसे अन्धेरे और उजालेके दो दलोंमें दंगल हुआ। पहले बाण और गोले चले। फिर दाराबखांने जो अगली सेनाका अफसर था राजा बरसिंहदेव रायचन्द अलीखां तातारी और जहांगीरकुली आदि सरदारोंके साथ तलवारें सूंतकर शत्रुकी अगली सेनापर धावा

किया और उसको हराकर गोल अर्थात् बीचकी सेनाको जा दबाया। वहां दो घड़ी तक ऐसा घमासानका युद्ध हुआ कि देखने वाले दङ्ग होगये। लाशोंके ढेर लग गये अंबर सम्मुख ठहर न सका भागा। जो अन्धेरी रात उसके बचानेको बीचमें न आजाती तो वह और उसके साथियोंमेंसे कोई न बचता। बादशाही सवार दोतीन कोसतक तो पीछे गये फिर घोड़ोंके थक जानेसे आगे न जा सके। शत्रुका पूरा तोपखाना तीनसौ ऊंटबानोंसे भरे हुए जंगी हाथी ताजी घोड़े और बहुतसे हथियार हाथ आये। बहुतसे सरदार पकड़े गये। जो कटकर या घायल होकर पड़े थे उनकी कुछ गिनती न थी। फिर बादशाही सेना करकी पर गई जहां शत्रुकी छावनी थी। परन्तु वहां किसीको न देखा क्योंकि सब लोग खबर पाकर भाग गये थे। सेना कई दिन करकीमें रही और शत्रुओंके घर जलाकर रोहनखंडेकी घाटीसे उतर आई।

बादशाहने इस सेवाके बदलेमें अपने नौकरोंके मनसब बढ़ाये।

खोखरा और हीरेकी खान।

तीसरी बधाई बादशाहको यह पहुंची कि खोखरेकी विलायत और हीरेकी खान इब्राहीमखांके परिश्रमसे फतह हुई। बादशाह लिखता है—"यह विलायत तथा खान बिहार और पटनेके अन्तर्गत है। वहां एक नदी बहती है। जब उसका पानी कम होता है तो उसमें खड्डे और गढ़े निकल आते हैं उनमेंसे जिसके नीचे हीरे होते हैं उस पर बहुतसे झींगे उड़ा करते हैं। इस पहचानसे वह लोग जो इस कामको जानते हैं नदी तक उन गढ़ोंके किनारों में पत्थर चुन देते हैं और फिर उनको कुदाल फावड़ोंसे दो डेढ़ गज गहरा खोदते हैं और वहां जो रेत और कंकर निकलते हैं उसमें ढूंढ़कर छोटे बड़े हीरे निकालते हैं। कभी कभी ऐसे हीरे भी निकलते हैं जिसका मूल्य एक लाख रुपये तक होता है।

यह भूमि और खान दुर्जनसाल नामक एक हिन्दूके अधिकार में थी। बिहारके हाकिम उसके ऊपर बहुत सेना भेजते थे और आप

भी जाते थे परन्तु रास्ता विकट था जंगल बहुत पड़ते थे। इस लिये दो तीन हीरोंके लेने पर सन्तोष करके चले आते थे। जब यह सूबा जाफरखांसे उतरकर इब्राहीमखांको मिला तो मैंने बिदा करते समय उससे कहा कि उस विलायत पर जाकर उसको उस अधम पुरुषसे छीन ले। इब्राहीमखां बिहारमें पहुँचतेही सेना सजकर उस जमीन्दारके ऊपर गया और उसने पूर्ववत् अपने आदमी भेजकर कई हीरों और हाथियोंके देनेकी प्रार्थना की। पर खांमने स्वीकार न करके शीघ्रतासे उसके देशमें प्रवेश किया और उसकी सेनाके तय्यार होनेसे पहलेही धावा किया। उसको समाचार पहुँचते पहुंचते उस घाटीमें जा पहुँचा जहां उसका घर था। घाटीको घेरकर उसकी खोजमें आदमी भेजे वह एक गुफामें छिपा हुआ मिला और अपनी सगी तथा सौतेली दो माता और एक भाईके साथ पकड़ा गया। जो हीरे उसके पास थे वह सब लेलिये गये। २३ हाथी हथिनी भी हाथ आये।

इस सेवाके बदलेमें इब्राहीमखांका मनसब बढ़कर चार हजारी जात और सवारोंका होगया और उसको फतहजंगकी पदवी मिली। जो लोग साथ थे उनको भी वृद्धि हुई। अब वह विलायत राज पारिषदोंके अधीन है। लोग उस नदीमें काम करते हैं। जितने हीरे निकलते हैं दरगाह में आते हैं। इन्हीं दिनोंमें एक बड़ा हीरा पचास हजार रुपयेका मिला था। जब कुछ और काम होगा तो आशा है कि अच्छे अच्छे हीरे मेरे निजके रत्न भाण्डारमें आने लगेंगे।

ग्यारहवां नौरोज।

१ रबीउलअव्वल (चैत्र सुदी ३) रविवार संवत् १६७३ को सूर्य्य मीनसे मेख राशिमें आया। दीवानखाने खासोआमका आंगन बहुमूल्य डेरों तम्बुओं और फरंगी परदों तथा जरीके दिव्य वस्त्रोंसे सजाया गया था बादशाह वहीं राज्यसिंहासन पर बैठा। शाहजादों अमीरों मन्त्रियों और सब नौकरोंने झुकाकर सलाम किया और बधाई दी।

हाफिज नादअली कलावत पुराने सेवकोंमेंसे था इसलिये बादशाहने हुक्म दिया कि सोमवारको जो भेट आवे वह सब इसको दीजावे।

चौथे दिन खानजहांकी भेट आगरेसे आई उसमें हीरे मोती एक हाथी और कुछ जड़ाऊ पदार्थ पचास हजार रुपयेके थे।

पांचवें दिन कुंवर कर्णने अपने देशसे आकर मुजरा किया। एक सौ मुहरें और एक हजार रुपये नजर तथा एक हाथी सांज सहित और चार घोड़े भेट किये।

सातवें दिन आसिफखांके मनसब पर जो चार हजारी जात और दो हजार सवारका था हजारी जात और दो हजार सवार और बढ़ाये गये। उसको नक्कारा और झण्डा भी इनायत हुआ।

इसी दिन मीर जमालुद्दीनको भेंट हुई वह सबही बादशाहको पसन्द आगई। उसमें एक खञ्जरकी जड़ाऊ मूठ पचास हजार रुपये की थी जिसमें हीरे मोतियोंके सिवा पीलेरङ्गका एक बड़ा अपूर्व याकूत* जड़ा हुआ था वह मुर्गीके अंडेके बराबर था। बादशाहने उसके मनसब पर एक हजार सवार बढ़ा दिये जो पांचहजारी जात और साढ़े तीन हजार सवारोंका होगया।

नवें दिन अबुलहसनकी भेटमें चालीस हजार रुपयेके जवाहिर जड़ाऊ चीजें और उत्तम कपड़े लिये गये।

तातारखां बकावलबेगी (बावरचीखानेके दारोगा) की भेट हुई उसमें लाल, याकूत, एक जड़ाऊ तखती और कपड़े थे।

दसवें दिन दक्षिणसे तीन हाथी राजा महासिंहके और लाहोर से एक सौ कई जरीके थान मुरतिजाखांके भेजे हुए पहुंचे।

दियानतखांने भी दो मोतियोंकी माला दो लाल छः बड़े मोती और सोनेका थाल भेट किया। सब २८ हजार रुपयेके थे।

११ फरवरदीन (चैत्र सुदी १२) गुरुवारको पिछले दिनसे बाद-

* याकूत एक प्रकारका रत्न है जिसका रङ्ग पीला नीला और सफेद होता है।

शाह एतमादुद्दौलाके घर गया और उसकी भेटका एक एक पदार्थ देखकर दो मोती तीस हजार रुपयेके एक लाल बाइस हजार रुपये का तथा और भी कई लाल और मोती एक लाख दस हजार रुपये के और पन्द्रह हजार रुपयेके कपड़े पसन्द करके लेलिये। भेंट लेनेके पीछे बादशाह पहर रात गये तक वहां बैठा। सुन्दर सभा जुड़ी थी जो अमीर और अनुचर सेवामें थे उनको प्याले देनेका हुक्म हुआ। महलके लोग भी साथ थे।

सभा विसर्जन होने पर बादशाह एतमादुद्दौलासे बिदा होकर राजभवनमें आगया।

नूरमहलसे नूरजहां बेगम।

इन्हीं दिनोंमें बादशाहने हुक्म दिया कि नूरमहल बेगमको नूरजहां बेगम कहा करें।

१२ (चैत्र सुदी १४) को एतबारखांकी भेट हुई उसमेंसे बादशाहने छप्पन हजार रुपयेके जवाहिर और जड़ाऊ पदार्थ लिये। जिनमें मछलीके आकारका एक जड़ाऊ बर्तन बहुत सुन्दर और सुडौल बादशाहके नित्यप्रति पीनेकी मदिराके अन्दाजका था।

कन्धारके हाकिम बहादुरखांके भेजे हुए सात इराकी घोड़ और नौ थान कपड़ोंके पहुंचे।

१३ (चैत्र सुदी १४) को इरादतखां और राजा बासूके बेटे सूरजमलकी भेंट आई।

१५ (बैशाख बदी २) को ठट्ठेकी सूबेदारी शमशेरखांसे उतरकर मुजफ्फरखांको मिली।

१६ (बैशाख बदी ३) को एतमादुद्दौलाके बेटे एतकादखांकी भेट बादशाहको दिखाई गई उसमेंसे बत्तीस हजार रुपयेकी चीज़ें बादशाहने उठाई।

१७ (बैशाख बदी ४।५) को तरबीयतखांकी भेट बादशाहने देखी। उसमेंसे सतरह हजार रुपयेके जवाहिर और कपड़े पसन्द किये।

१८ (बैशाख बदी ६) को बादशाह आसिफखांके घर गया जो दौलतखानेसे एक कोस था। आसिफखांने आधे रास्तेमें सादे और जरीके मखमल बिछा दिये थे जिनका मूल्य दस हजार रुपये बादशाहको सुनाया गया। बादशाह उस दिन आधीरात तक बेगमों सहित वहां रहा। उसने जो भेंट सजाई थी वह सब अच्छी तरह बादशाहने देखी। एक लाख चौदह हजार रुपयेके जवाहिर जड़ाऊ पदार्थ, कपड़े, एक ऊंट और चार घोड़े पसन्द करके लिये।

मेख संक्रान्ति।

१९ (बैशाख बदी ७) को सूर्य्यकी मेख संक्रान्ति*का उत्सव था। दौलतखानेमें बड़ी भारी मजलिस जुड़ी। बादशाह मुहूर्त्तके अनुसार अढ़ाई घड़ी पिछले दिनसे सिंहासन पर बैठा। उसी समय बाबा खुर्रमने ८०००० का एक लाल भेट किया। बादशाहने भी उसका मनसब बढ़ाकर बीस हजारी जात और दस हजार सवारोंका कर दिया।

इसी दिन बादशाहके सौर जन्मदिवसका तुलादान¶ हुआ।

एतमादुद्दौलाकी पदवृद्धि।

उसी दिन बादशाहने एतमादुद्दौलाका मनसब सात हजारी जात और पांच हजार सवारोंका करके उसको तुमन और तोग भी इनायत किया और यह हुक्म दिया कि खुर्रमके नक्कारेके पीछे उसका नक्कारा बजे।

पोता।

२१ (बैशाख बदी ९) को मुहतर फाजिल रकाबदारकी बेटे मुकीमकी बेटीसे खुसरोके घरमें पुत्र जन्मा।

अलहदाद पठानका अधीन होना।

अलहदाद पठान अहदादसे फटकर दरबारमें आया। बाद-

---

* चंडूपञ्चाङ्गमें यह मेख संक्रान्ति बैशाख बदी ६ को लिखी है।

¶ यह तुलादान १७ रबीउलअव्वल अर्थात् बैशाख बदी ३ को होना चाहिये था सप्तमीको मुहूर्त्तसे हुआ होगा।

शाहने २००००) दरब उसको इनायत किये और कुछ दिन पीछे एक जड़ाऊ खपवा भी दिया।

रायमनोहरकी मृत्यु।

२५ (बैशाख बदी १२) को दक्षिणसे राय मनोहरकी मृत्युका समाचार पहुंचा। बादशाहने उसके बेटेको पांच सदी जात और तीनसौ सवारोंका मनसब देकर बापकी जागीर भी देदी।

काबुलमें उपद्रव।

कादम नाम अफरीदी पठान खैबरकी घाटिका मार्गरक्षक था। उसने थोड़ेसे सन्देहमें सेवा छोड़कर सिर उठाया और अपने आदमी प्रत्येक थाने पर भेज दिये जिन्होंने थानेवालोंको मारकर लूट मार मचा दी। नये सिरसे काबुलके पहाड़ोंमें अशान्ति फैल गई। जब यह समाचार बादशाहको सुनाया गया तो उसने कादमके भाई हारून और बेटे जलालको जो दरबारमें हाजिर थे पकड़वाकर ग्वालियरके किलेमें कैद रखनेके लिये आसिफखांको सौंपा।

भुजबन्ध।

खुर्रमने ६००००) का एक लाल रानाका दिया हुआ बादशाह को भेट किया था। बादशाह उसको अपने हाथमें बांधना चाहता था परन्तु उसके आसपास पिरोनेके लिये वैसेही उत्तम मोतियोंकी जोड़ी भी दरकार थी। एक मोती तो मुकर्रबखांने बीस हजार रुपयेमें लेकर नौरोजकी भेंटमें अर्पण कर दिया था उसीके समान एक और मोतीकी आवश्यकता थी। खुर्रम जो बचपनमें रातदिन अकबर बादशाहके पास रहता था उसने उतनीही तौल और आकृति का मोती पुराने सरपेचमें बताया। बादशाहने सरपेच मंगाया तो वैसाही मोती निकल आया। मानो दोनो एकही सांचेमें ढाले हुए थे। इससे सब लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। बादशाहने इस बातको ईश्वरकी कृपा समझकर बहुत धन्यवाद किया और

उन मोतियोंको उस लालके दोनों ओर पिरोकर प्रसन्नतापूर्वक अपने हाथमें बांधा ।

देशान्तरकी सौगातें ।

५ उर्दीविहिश्त (वैशाख सुदी ८) को तीस इराकी और तुर्की घोड़े लाहोरसे मुरतिजाखांके भेजे हुए पहुंचे ।

खानदौरांने जो काबुलसे भेंट भेजी थी उसमेंसे तिरसठ घोड़े पन्द्रह ऊंट ऊंटनी, कलगीके परोंका एक दस्ता आकरी* ९, चीनी खताई† ९, मछलीके दांत जौहरदार ९ और तीन बन्दूकें बादशाह को पसन्द आईं ।

एक छोटा हाथी जो हबश देशसे जहाजमें आया था मुकर्रबखां ने भेंटमें भेजा । हिन्दुस्थानके हाथियोंसे उसके कान बड़े थे सूंड और पूंछ भी लम्बी थी ।

अकबर बादशाहके समयमें एतमादखांने गुजरातसे हाथीका एक बच्चा भेजा था । वह जब बड़ा हुआ तो बहुत क्रूर और बद-माश निकला ।

पठानोंका उपद्रव ।

पगाना और बंकाना जातिके अफरीदी पठानोंने जो दङ्गा मचाया था उसमें खानआजमका भाई अबदुल सुबहान जो एक थाने पर था वीरता पूर्वक उन लोगोंसे लड़कर मारा गया । खानआलम ईरानमें गया हुआ था । इसलिये बादशाहने वहीं उसके वास्ते शोकनिवारक पत्र और सिरोपाव भेजा ।

अलहदाद पठान ।

२१ (जेठ बदी १०) को अलहदाद पठान खानका खिताब मिलनेसे अलहदादखां होगया और उसका मनसब भी बढ़कर दो हजारी जात और एक हजार सवारों तक पहुंचा ।

---

* आकरीका अर्थ कोशमें नहीं मिला ।

† चीनकी मट्टीके उत्तम पात्र ।

खानदौरां।

खानदौरांने पठानोंका बलवा मिटानेमें बड़ा परिश्रम किया था इसलिये उसको लाहोरके खजानेसे तीन लाख रुपये इनाम और मदद खर्चके दिलाये गये।

कुंवर कर्णकी बिदाई।

२८ (जेठ सुदी २) को कुंवर कर्ण अपना विवाह करनेके वास्ते बिदा हुआ। बादशाहने खिलअत खासा इराकी घोड़ा जीन सहित, हाथी और जड़ाऊ परतला तलवारका उसको दिया।

मुरतिजाखां और सैफखांकी मृत्यु।

३ खुरदाद (जेठ सुदी ७) को मुरतिजाखांके मरनेकी खबर पहुंची। बादशाह सुनकर दुःखी हुआ क्योंकि वह अकबर बादशाहके समयका नौकर था। खुसरोके पकड़नेका बड़ा काम इसीने किया था। छः हजारी जात और पांच हजार सवारके मनसब को पहुंचा था। इन दिनोंमें किले कांगड़ेके फतह करनेमें लगा हुआ था।

७ (जेठ सुदी ११) को सैफखां बारहके भी मरनेकी खबर दक्खिणसे पहुंची, वह हैजेसे मरा था। उसने भी खुसरोंके पकड़नेमें परिश्रम करके तरक्की पाई थी। बादशाहने उसके बेटे अलीमुहम्मद और बहादुरको मनसब दिया और भतीजे सय्यदअलीका मनसब बढ़ाया।

शहबाजखां कम्बोके बेटे खूबउल्लहको रणबाजका खिताब मिला।

राजा विक्रमाजीत।

८ (जेठ सुदी १२) को बांधोंगढ़के राजा विक्रमाजीतने खुर्रमके वसीलेसे दरबारमें आकर मुजरा किया। बादशाहने इसके अपराध क्षमा कर दिये। इसके बाप दादे हिन्दुस्थानके नामी राजाओं मेंसे थे।

कल्याण जैसलमेरी।

९ (जेठ सुदी १३) को कल्याण जैसलमेरीने जिसके लानेके लिये

राजा किशनदास गया था आकर मुजरा किया। एक हजार मोहरें और एक हजार रुपये नजर किये। उसका बड़ा भाई राव भीम था। जब वह मरा तो उसका लड़का दो महीनेका बालक था। वह भी ज्यादा न जिया। बादशाहने पिछली पीढ़ियोंके उंवंवसे इसको बुलाकर राजतिलक और रावलका खिताब दिया।

राजामान।

बादशाहको खबर पहुंची कि मुरतिजाखांके मरने पर राजा मानने कांगड़ेके किलेवालोंको ढारस देकर वहांके राजकुमारको जो २८ वर्षका था दरबारमें लेआनेकी बात ठहराई है।

बादशाहने इस उत्साहके बदलेमें उसका मनसब जो हजारी जात और आठ सौ सवारोंका था बढ़ाकर डेढ़ हजारी जात और एक हजार सवारोंका कर दिया।

पोतीकी मृत्यु।

बादशाह लिखता है कि इस¶ तारीखको एक दैवघटना हुई। उसके लिखनेको मैंने बहुत चाहा परन्तु हाथ और हृदयने साथ नहीं दिया। जब लेखनी पकड़ता था औरही दशा होजाती थी। विवश होकर एतमादुद्दौलाको लिखनेका हुक्म दिया।

एतमादुद्दौलाका लेख।

बूढ़ा भक्त गुलाम एतमादुद्दौला हुक्मसे इस तेजमय ग्रन्थमें लिखता है कि ११ तारीख खुरदाद (जेठ सुदी १४) को श्रीमान् शाह खुर्रमकी श्रीमती राजकुमारीको जिसे बादशाह बहुत प्यार करते थे बुखार चढ़ा। तीन दिन पीछे छाले निकल आये और २६ बुधवार २८ जमादिउलअव्वल (आश्विन सुदी १) को उसका प्राणपच्छी पंचभूतके पींजरेसे स्वर्गको उड़ गया। इसलिये हुक्म हुआ कि अब चारशंबे (बुधवार) को कमशंबा लिखा करें। मैं क्या लिखूं कि इस हृदयदाहक दुर्घटनासे हजरतको कितना दुःख हुआ।

¶ तारीखका अङ्क नहीं दिया है।

दूसरे लोगोंके शोकका तो कहनाही क्या है जिनके प्राण श्रीमान को पवित्रतासे बंधे हुए हैं। दो दिन तक किसीका मुजरा न हुआ। जिस घरमें राजकुमारीका उठना बैठना था उसके आगे दीवार उठा देनेका हुक्म हुआ जिससे दिखाई न दे। तीसरे दिन बादशाह बड़ी व्याकुलतासे शाहजादेके घर पधारे। वहां सब बन्दे मुजरा करके निहाल हुए। रास्तेमें हजरतने अपनेको बहुत रोका तोभी आंसू आंखोंसे चले आते थे और बहुत दिनों तक यही दशा रही कि जब कोई दुःखसूचक अक्षर सुननेमें आता तो अधीर होजाते थे।

शाहजादेके घर कई दिन रहे। फिर सोमवार (६) तीर* को आसिफखां‡के घर पधारे। वहांसे लौटकर नूरचश्मेमें गये। दो तीन दिन वहां दिल बहलाया। परन्तु जबतक अजमेरमें डेरे रहे अपनेको सम्हाल न सके। जब कभी राजकुमारीके नामको भनक कानमें पड़ती तो सहसा आंसू टपकने लगते थे और राज-भक्तोंका कलेजा टुकड़े टुकड़े होजाता था। जब दक्षिणको कूच हुआ तो कुछ शान्ति हुई।

राय पृथ्वीचन्द।

इस† तारीखमें राय मनोहरके बेटे पृथ्वीचन्दको राय पदवी, पांच सदी जात चार सौ सवारका मनसब और जागीर वेतनमें मिली।

---

* मूलमें तारीखका अङ्क नहीं लिखा है पर सोमवार ६ तीरको था इसलिये हमने कोष्टमें ६ बना दिया है।

‡ वह लड़की आसिफखांकी दौहित्री और एतमादुद्दौलाकी परदौहित्री थी।

† मूलमें तारीखका अङ्क नहीं है यहांसे तु० जहांगीरीमें फिर बादशाहका लेख है।

सावन बदी ३ शनिवारको बादशाह नूरचशमेसे अजमेरके राज-भवनमें आया।

शुजाका जन्म।

१२ तीर (सावन बदी ७) रविवारको २७ पल रात गये जबकि हिन्दू ज्योतिषियोंके मतसे धन लग्न २७ अंश और यूनानियोंके मत से मकर लग्न १५ अंश था आसिफखांकी बेटीसे खुर्रमके घर फिर एक लड़का हुआ। बादशाहने सोच विचार कर उसका नाम शाह शुजा रखा इसके जन्मसे सबलोग हर्षित हुए।

रावल कल्याण।

इसी दिन बादशाहने राव कल्याणको जड़ाऊ मूठकी एक तलवार और एक हाथी दिया।

राय कुंवर।

गुजरातके दीवान राय कुंवरको हाथी दिया गया।

राजा महासिंह।

२२ (सावन बदी ३०) को राजा महासिंहका मनसब पांच सदी जातकी वृद्धि होनेसे चार हजारी जात और तीन हजार सवारोंका होगया।

सोनेका कटहरा।

बादशाहने कई मनोरथोंकी सिद्धिके लिये ख्वाजाजीकी कबर पर सोनेका कटहरा चढ़ानेका संकल्प किया था। वह एक लाख दस हजार रुपयेमें बनकर तय्यार हुआ और सावन सुदी ४ को बादशाहके हुक्मसे वहां लेजाकर लगाया गया।

परवेजका बुलाया जाना।

परवेजसे दक्षिणकी मुहिम बादशाहके मन मुआफिक नहीं सुधरी थी। बादशाहने खुर्रमका उत्साह देखकर उसको वहां भेजने और पीछेसे आप भी कूच करनेका विचार करके परवेजको इलाहाबाद जानेका हुक्म इस आशयसे लिखा था कि जबतक हम सफरमें रहें वहांकी रक्षा करे। २८ तीर (सावन सुदी ६) को

बिहारीदास वाकानवीसकी अर्जी बुरहानपुरसे आई जिसमें लिखा था कि शाहजादेने २० तीर (सावन बदी १३*) को यहांसे इलाहाबादको कूच कर दिया है।

राजा भावसिंह।

१ अमरदाद (सावन सुदी ८) को बादशाहने राजा भावसिंह को जड़ाऊ तुर्रा दिया।

कन्नौज और सम्भल।

खवासखांके मरनेसे कन्नौजकी हुकूमत सम्भलके फौजदार सय्यद अबदुल वहाबको मिली थी। अब मीर मुगल उसकी जगह सम्भलका फौजदार नियत हुआ और फौजदार रहने तक उसका मनसब पांच सदी जात और सवारका होगया।

रावल कल्याण।

२१ (भादों बदी ३०) को रावल कल्याणने बादशाहको तीन सौ मोहरें ८ घोड़े २५ ऊंट और १ हाथी भेंट किया।

महामारी।

इस साल हिन्दुस्थानके शहरोंमें महामारी फैल रही थी जो पिछले वर्ष पंजाबके परगनोंमें प्रगट हुई थी। बढ़ते बढ़ते लाहोर में जा पहुंची। जिसमें बहुतसे हिन्दू मुसलमान मर गये। फिर सरहिन्द होकर दिल्ली तक फैल गई और उसकी तलहटीमें बहुतसे गांव और परगने उजड़ गये। बड़ी उमरके आदमियों और पुरानी तवारीखोंसे विदित हुआ कि यह रोग इस देशमें कभी नहीं आया था। उसका कारण हकीमों और विद्वानोंसे पूछा गया तो किसी किसीने कहा कि दो वर्ष लगातार सूखे निकले और मेह कम बरसा। कोई बोला कि सूखा पड़ने और बरसात कम होनेसे हवा

---

* यह खबर १० दिनमें आई थी शायद पहिले ही आगई हो। बादशाहके पास कागज पेश होनेमें भी कुछ देर लगतीही रही होगी।

बिगड़कर यह रोग फैला है। कुछ लोगोंने और और बातें कहीं। पूरा ज्ञान परमेश्वरको है।

शाह ईरानकी बेटी।

५ शहरेवर (भादों सुदी १५ तथा आश्विन बदी १) को पांच हज़ार रुपये मीरमीरांकी माके वास्ते जो ईरानके शाह दूसरे इसमाईलकी बेटी थी व्यापारियोंके हाथ ईरानमें भेजे गये।

अबदुल्लहखां पर कोप।

६ (आश्विन बदी २) को अहमदाबादके बखशी और वाकआ नवीसकी अर्जी आई। उसमें लिखा था कि अबदुल्लहखां फीरोज जङ्गकी इच्छाके विरुद्ध मैंने कई समाचार, समाचारपत्रमें लिख दिये थे इस पर उसने मुझसे बुरा मानकर कुछ सिपाही मेरे ऊपर भेजे और अपने घर बुलाकर मेरा अपमान किया।

बादशाहने पहले क्रोधमें आकर उसको मरवा डालना चाहा परन्तु फिर दियानतखांको अहमदाबाद भेजा और उससे कहा कि वहांके निष्पक्ष पुरुषोंसे निर्णय करे। जो सच्ची बात हो तो अबदुल्लहखांको अपने साथ ले आवे और अहमदाबादका शासन उसके भाई सरदारखांके अधिकारमें रहे।

दियानतखांके जानेके पहलेही यह समाचार अबदुल्लहखांको पहुंच गये और वह डरके मारे अपनेको अपराधी ठहराकर पैदलही राजद्वारको चल दिया। दियानतखां मार्गमें उसको मिला और उसकी यह अद्भुत दशा देखकर सवार होनेकी आज्ञा दी क्योंकि पैदल चलनेसे उसके पांव घायल होगये थे।

मुकर्रबखांको गुजरात।

मुकर्रबखां पुराना सेवक था और बादशाहको युवराजावस्थासे ही गुजरात देशके लिये प्रार्थना किया करता था। अब जो अबदुल्लहखांसे ऐसा अपराध बन आया तो बादशाहने अपने पुराने सेवककी आशा पूरी करके उसको गुजरातकी सूबेदारी देदी।

आनन्दखां तमूरची।

शौकी तमूरा बजानेवालेको बादशाहने आनन्दखांकी उपाधि दी। बादशाह लिखता है—यह तमूरा बजानेमें अजीब है और हिन्दी फारसी गतोंको ऐसा बजाता है कि दिलोंके दुःख दूर कर देता है। इस लिये मैंने इसको आनन्दखांका खिताब दिया। हिन्दी भाषामें आनन्दका अर्थ खुशी है और खुशीके दिन हिन्दुस्थान में तीर महीने (बैशाख जेठ) से आगे नहीं होते।

राना और कर्णकी मूर्ति।

बादशाहने राना और उसके बेटे कर्णकी सर्वाङ्ग मूर्त्तियां सफेद पत्थरों से गढ़नेकी सिलावटोंको आज्ञा दी थी। वह तैयार होकर १०(प्र० आश्विन बदी ४) को बादशाहके पास आईं। बादशाहने देखकर हुक्म दिया कि आगरे में लेजाकर दर्शनके झरोखेके नीचे बाग में खड़ी कर देवें ❋।

तुलादान।

२६ (प्रथम आश्विन सुदी ६)को बादशाहके सौर पचीय जन्म दिवसका पहिला तुलादान सोनेका दूसरा पारेका तीसरा रेशमका चौथा अम्बर कस्तूरी चन्दन और लोबान आदि सुगन्धित द्रव्यका हुआ। इसी प्रकार १२ तुलादान बहुमूल्य पदार्थोंके होते थे जिन का मूल्य एक लाख रुपयेसे कम नहीं होता था। इसके सिवा बादशाह बकरे और मुरगे अपनी उमरके वर्षोंके बराबर छू छू कर फकीरोंको देता।

महाबतखांकी भेंट।

उसी दिन महाबतखांने एक लाल जो ६५०००) में अबदुल्लह खांसे बुरहानपुरमें खरीदा था बादशाहकी भेंट किया।

खानआजम और दियानतखां।

खानआजमका मनसब सात हजारी हुआ और उसके अनुसार

❋ आगरेमें अब यह मूर्त्तियां नहीं हैं होतीं तो चीजें बहुत अनोखी थीं।

जागीर देनेका हुक्म दीवानोंको दिया गया। दियानतखांका मनसब पिछली बदचलनियोंसे घट गया था। एतमादुद्दौलाके कहनेसे पूरा होगया।

रावल कल्याण जैसलमेरी।

रावल कल्याणका मनसब दो हजारी जात और दो हजार सवारोंका हुआ। उसका वेतन भी उसीके देशमें लगाया गया। उसको बिदाका मुहूर्त्त भी उसी दिन था इसलिये हाथी, घोड़ा, जड़ाऊ खपवा, परम नरम खासा और खिलअत उसको मिला और राजी खुशी अपने देशको गया।

मुकर्रबखां।

२१ (प्रथम आश्विनसुदी १३) को मुकर्रबखां पांच हजारी जात पांच हजार सवारका मनसब, खासा खिलअत, नादरी और मोती के तुकमें सहित एक खासेके हाथी और खासेका घोड़ा पाकर आनन्दपूर्वक अहमदाबादको बिदा हुआ।

जगतसिंह।

द्वितीय आश्विन बदी ८ को कुंवर कर्णका बेटा जगतसिंह स्वदेशसे आया।

कुतुबुलमुल्ककी भेंट।

११ महर (द्वितीय आश्विन सुदी ३) को गोलकुंडेके शाह कुतुबुलमुल्ककी भेंट बादशाहके सामने पेश हुई।

मिरजा अलीबेग अकबरशाही।

मिरजा अलीबेग अपनी जागीरसे जो अवधमें थी १६ (द्वितीय आश्विन बदी १३) को आया उसने एक हाथी जिसे वह शाही आज्ञानुसार वहांके किसी जागीरदारसे लाया था भेंट किया। उसकी उमर ७५ वर्षकी थी और अच्छे काम करनेसे चार हजारी मनसबको पहुंचा था। २२ (द्वितीय आश्विन सुदी ४) शुक्रवार को रातको वह ख्वाजा साहिबकी जियारतको गया था। वहीं मर गया और वहीं बादशाहके हुक्मसे गाड़ा गया।

पहलवान "पाये तख्त"।

बादशाहने बीजापुरके दूतोंको विदा करते समय कहा था कि तुम्हारे यहां कोई नामी पहलवान या खांडेत हो तो आदिलखांसे कहकर हमारे वास्ते भिजवाना। बहुत दिन पीछे दूत फिरकर आये तो शेरअली पहलवान और कई खांडेतोंको साथ लाये। खांडेत तो कुछ योंहीसे निकले पर शेरअलीने कुश्तीमें बादशाही पहलवानोंको पछाड़ दिया। बादशाहने उसको एक हजार रुपये सिरोपाव, हाथी, मनसब जागीर सहित देकर अपने पास रखलिया और पहलवान "पाये तख्त" का खिताब दिया।

दियानतखां।

२४ (द्वितीय आश्विन सुदी ६) को दियानतखां अबदुल्लहखां को लेकर आया और एकसौ मोहरें भेंट कीं।

रामदास।

इसी दिन राजा राजसिंहके बेटे रामदासको हजारी जात और पांच सौ सवारोंका मनसब मिला।

अबदुल्लहखां फीरोजजङ्ग।

२६ (द्वितीय आश्विन सुदी ८) को बाबा खुर्रमकी सिफारिशसे अबदुल्लहखांका मुजरा हुआ। बहुत सङ्कोच और पछतावेके साथ उसने एकसौ मोहरें और एक हजार रुपये भेंट किये।

बीजापुरके दूत।

बादशाहने बीजापुरके दूतोंके पहुँचनेसे पहले निश्चय कर लिया था कि खुर्रमको आगे भेजकर आप भी दक्षिणको प्रयाण करें और बिगड़े हुए कामको सम्हालें। यह भी हुक्म दे रखा था कि दक्षिणके दुनियादारोंको बात खुर्रमके सिवा और कोई न करे। इसलिये शाहजादा खुर्रम उस दिन बीजापुरके दूतोंको हुजूरमें लेगया। वह लोग जो प्रार्थनापत्र लाये थे वह भी बादशाहको दिखाये।

राजा मान और कांगड़ेकी मुहिम।

मुरतिजाखांके मरे पीछे राजा मान और दूसरे सहायक सरदार

दरगाहमें आगये थे। बादशाहने एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे राजा मानको कांगड़ा जीतनेके वास्ते भेजा और उन सब सहायकोंको उनके साथ कर दिया। सबको यथायोग्य हाथी, घोड़े, सिरोपाव और रुपये दिये।

अबदुल्लहखां।

बादशाहने खुर्रमकी प्रार्थनासे अबदुल्लहखांको फिर अगला मनसब देकर शाहजादेके साथ दक्षिण जानेवाली सेनामें भरती कर दिया।

खुसरो।

खुसरो अनीराय सिंहदलनके पहरेमें था उसे ४ आबान (कार्त्तिक बदी २) को बादशाहने किसी कारण विशेषसे आसिफखां को सौंपा और एक खासेका शाल भी दिया।

ईरानका दूत।

१ आबान १७ शव्वाल (द्वितीय आश्विन सुदी ५) को ईरानका दूत मुहम्मद रजा अपने बादशाहका प्रेमपत्र घोड़े और दूसरे पदार्थ लेकर आया। बादशाहने उसको जड़ाऊ मुकुट और सिरोपाव प्रदान किया। उस पत्रमें ईरानके शाहने बहुत कुछ प्रीति और एकता दरसाई थी इसलिये बादशाहने उसको अपनी 'तुजुक' में लिख लिया। उसके सुललित पदोंमेंसे एक पद यह भी था—हम तुम ऐसे एक होगये हैं कि मुझे यह सुध नहीं रही है कि तुम हो सो मैं हूं या मैं हूं सो तुम हो—दोनोंमें कुछ भेद भाव इस लोकमें क्या परलोकमें भी नहीं रहा है।

खुर्रमका दक्षिण जाना।

१८ शव्वाल २० आबान (कार्त्तिक बदी ६) रविवारको बाबा खुर्रमका पेशखीमा अजमेरसे दक्षिण भेजनेके वास्ते बाहर निकाला गया।

(कार्त्तिक बदी ७) सोमवारको ३ घड़ी दिन चढ़े बादशाहका दौलतखाना (कपड़ोंका राजभवन) भी उसी दिशाको रवाने हुआ।

१८।८ (कार्त्तिक बदी ८) को राजा सूरजमलका मनसब दो हजारी जात और दोसौ सवारोंका होगया। वह शाहजादेके साथ भेजा गया था।

उल्लूका शिकार।

१८ आबान (कार्त्तिक सुदी १) को छः घड़ी रात गये एक उल्लू महलकी ऊंची छत पर आकर बैठा जो बहुत कम दिखाई देता था। बादशाहने बन्दूक मंगाकर जिधर लोग उसको बताते थे छोड़ी। उल्लूके टुकड़े टुकड़े उड़ गये। इस पर सब लोगोंने जिनमें ईरानका दूत रजाबेग भी था बड़ा आनन्द-घोष किया।

शाह ईरानका बेटेको मारनेका कारण।

इसी रातको बादशाहने बातोंही बातोंमें सफीमिरजाके मारनेका कारण पूछा तो रजाबेगने कहा कि वह बापके मारनेके विचारमें था। उन दिनोंमें वह न मारा जाता तो शाहको मार डालता। यही जानकर शाहने उसको मरवा डाला।

२० शुक्रवार (कार्त्तिक सुदी २) को खुर्रमके बिदा होनेका मुहूर्त्त था इस लिये वह अपने सजे हुए सेवकोंको लेकर राजभवनमें मुजरा करने आया। बादशाहने अति अनुग्रहसे उसको इतनी चीजें दीं—

१—शाह सुलतान खुर्रमका खिताब।

२—खिलअत जड़ाऊ चार कुब्बका जिसके दामन और गिरेबानमें मोती टंके हुए थे।

३—एक इराकी घोड़ा जीन सहित।

४—एक तुरकी घोड़ा।

५—खासेका बंसीबदन नामक एक हाथी।

६—रथ अङ्गरेजी चालका बैठकर चलनेके लिये।

७—जड़ाऊ तलवार खासेके परतले सहित जो अहमदनगरकी पहली फौजमें हाथ आई थी और जिसका परतला बहुत उमदा और नामी था।

८—जड़ाऊ कटार।

इस प्रकार खुर्रमने बड़ी धूमसे दक्षिणके देशोंके जीतनेको प्रयाण किया।

उसके साथियोंको भी यथायोग्य घोड़े और सिरोपाव मिले। अबदुल्लह फीरोजजङ्गको बादशाहने अपनी कमरसे तलवार खोल कर इनायत की।

चोरोंको दण्ड और नवलका हाथीसे लड़ना।

कई धाड़ी कोटवालीके चबूतरे पर धाड़ा डालकर बादशाही खजाना लूट लेगये थे उनमेंसे सात आदमी कुछ रुपयों सहित पकड़े आये। बादशाहने सबको तरह तरहका दण्ड दिया। जब उनके सरदार नवलको हाथीके पांवोंमें डालने लगे तो उसने अर्ज की कि हुक्म हो तो मैं हाथीसे लड़ूं। बादशाहने कहा ठीक है। एक मस्त हाथी मंगाकर नवलके हाथमें कटार दिया और हाथीके सामने किया। हाथीने कई बार उसको गिराया तो भी वह निडर बीर अपने साथियोंको भांति भांतिके कष्टोंसे मरते देखकर भी पांव रोपकर दृढ़तासे मरदाना हाथीके सूंड पर कटारें मारता रहा। हाथीको ऐसा बेबस कर दिया कि वह उसपर हमला करनेसे रुककर खड़ा होगया। बादशाहने उसकी बहादुरी और मरदानगी देखकर पहरेमें रखनेका हुक्म दिया। परन्तु थोड़ेही दिनोंमें वह दुष्टतासे अपने घरको भाग गया। बादशाहने इस बातसे अप्रसन्न होकर उधरके जागीरदारोंको उसे ढूंढ़कर पकड़नेका हुक्म लिखा। दैवयोगसे वह फिर पकड़ा आया। बादशाहने उसका सिर उड़वा दिया।

बादशाहका अजमेरसे कूच।

१ जीकाद २१ आबान (कार्त्तिक सुदी ३) शनिवार[1] को दो पहर पर ५ घड़ी दिन आये बादशाहने चार घोड़ोंके फरंगी रथ

[1] तुजुक पृष्ठ १६८ में भूलसे मंगल लिखा है।

(बग्घी) में बैठकर अजमेरसे प्रस्थान किया। अमीरोंको भी रथोंमें बैठकर साथ आनेका हुक्म दिया।

पौने दो कोस चलकर ग्रामको गांव दोराईमें मुकाम हुआ।

बादशाह लिखता है—"हिन्दुस्थानियोंने ऐसा स्थिर कर रखा है कि जो राजा और बादशाह पूर्वको ओर जावें तो दन्तीले हाथी पर सवार हों। पश्चिमको जावें तो इकरंगे घोड़े पर बैठें, उत्तरको जावें तो पालकी या सिंहासन पर और दक्षिणको जावें तो रथ पर सवारी करें।

अजमेर।

बादशाह पांच दिन कम तीन वर्ष अजमेरमें रहा। अजमेरके वास्ते लिखा है कि "यहां ख्वाजा मुईनुद्दीनकी पवित्र समाधि है यह दूसरी इकलीम*में गिना जाता है। हवा यहांकी समभावकी है। पूर्वमें आगरा, उत्तरमें दिल्लीके परगने, दक्षिणमें गुजरात और पश्चिममें मुलतान तथा देपालपुर है। यह सूबा तमाम रेतीला है। खेती बरसातके पानीसे होती है। जाड़ा समभावका और गरमी आगरेसे कम है। ८६००० सवार और ३०४००० पैदल राजपूत लड़ाईके समय इस सूबेसे निकलते हैं। इस बस्तीमें दो बड़े तालाब हैं, एक बीसल ताल और दूसरा आनासागर। बीसल ताल सूखा है और उसका बान्ध टूट गया है। मैंने बांधनेका हुक्म दिया है आनासागर जिस पर इतने दिनों तक रहना हुआ था हमेशा पानीसे भरा रहा, यह डेढ़ कोस और पांच डोरीका है।

अजमेर ठहरनेके दिनोंमें ९ बार ख्वाजाजीकी जियारतको गया और १५ बार पुष्कर देखने। ३८ बार नूरचश्मेमें जाना हुआ। ५० बार शिकारको गया। १५ सिंह १ चीता १ स्याहगोश ५३ नील गायें ३३ गेंडे ९० हरन २४० मुरगाबी और ८० सूअर शिकार हुए।"

* दुनियाकी बस्तीका सातवां टुकड़ा।

दोराई।

दोराईमें सात दिन डेरा रहा। २८ (कार्त्तिक सुदी १२) को दोराईसे कूच होकर सवा दो कोसपर गांव दाम्नावलीमें डेरा हुआ। ३ आजर (अगहन बदी १) को फिर सवा दो कोस पर गांव मावलमें मुकाम हुआ।

रामसर।

४ आजर (अगहन बदी २) को डेढ़ कोस चलकर बादशाह रामसरमें आठ दिन रहा। उक्त गांव नूरजहांबेगमकी जागीरमें था। छठे दिन कुंवर कर्णका बेटा जगतसिंह हाथी और घोड़ा पाकर अपने घरको बिदा हुआ। केशव मारूको भी घोड़ा इनायत हुआ। इन्ही दिनोंमें राजा श्यामसिंहके मरनेकी खबर सुनी गई जो बंगशके लशकरमें तेनात था।

आतिथ्यसत्कार।

गुरुवारको नूरजहां बेगमने बादशाहका आतिथ्यसत्कार किया। रत्नों, जड़ाऊ आभूषणों, दिव्य वस्त्रोंसे सिले हुए जोड़ों और नाना प्रकारके पदार्थोंसे सजी हुई भेंट दी। रातको वहांके विशाल तालाब पर रोशनी हुई बहुत अच्छी मजलिस जुड़ी थी। बादशाह ने अमीरोंको बुलाकर प्याले दिये।

बादशाहके साथ खुश्कीमें भी कई नावें रहा करती थीं जिनको मल्लाह लोग गाड़ियों पर लादे चलते थे। शुक्रवारको बादशाह उन्हीं नावों पर बैठकर रामसरके तालाबमें मछलियां पकड़ने गया और एकही जालमें २०८ मछलियां पकड़ लाया। उनमें आधी रोहू मछलियां थीं। वह सब रातको अपने सामने नौकरोंको बांट दीं।

१३ (अगहन बदी ११) रामसरसे कूच होकर चार कोस पर गांव बलोदेमें और १६ (अगहन बदी १४) को सवा तीन कोस चल कर गांव निहालमें डेरे हुए। १८ (अगहन सुदी १) को सवादो कोस पर गांव जोंसेमें मुकाम हुआ। वहां बादशाहने ईरानके दूतको एक हाथी दिया।

सारसोंकी पुकार।

२७ (अगहन सुदी २) को बादशाह शिकार खेलता सवा तीन कोस चलकर देवगांवमें उतरा। यहां यह विचित्र बात उसके देखनेमें आई कि सवारी आनेसे पहले एक खोजा तालावसे दो बच्चे सारसके पकड़ लाया था। रातको दो सारस गुसलखानेके पास जो उसी बड़े तालाव पर लगाया गया था चिल्लाते हुए आये और निर्भय होकर फरयादीकी भांति पुकारने लगे। बादशाहने अपने दिलमें कहा कि अवश्य इनके ऊपर अन्याय हुआ है। शायद कोई इनके बच्चे पकड़ लाया होगा। जब इस बातकी खोज की गई तो उस खोजेने वह दोनो बच्चे लाकर भेंट किये। ज्योंही सारसोंने बच्चोंकी बोली सुनी दौड़कर उनके ऊपर आगिरे और भूखा समझकर अपनी चोंचसे चुग्गा उनके मुंहमें देने लगे। फिर उनको बीचमें लेकर पर फटकारते हुए प्रसन्नतापूर्वक चले गये।

२३ (अगहन सुदी ६) को देवगांवसे कूच होकर सवातीन कोस पर गांव भालूमें दो दिन तक सवारी ठहरी।

२६ (अगहन सुदी १०) को दो ही कोसकी मञ्जिल हुई बादशाह दो दिन गांव काकलमें ठहरा।

२८ (अगहन सुदी १२) को (उस दिन त्रयोदशी भी थी) पौने तीन कोस सवारी चली और गांव लासेमें पड़ाव हुआ। इसी दिन बकराईद भी थी।

३० (अगहन सुदी १४) को "आजर"का महीना पूरा हुआ। बादशाहने अजमेर छोड़नेके पीछे इस महीनेमें ६७ नील गायें तथा हरन और २७ मुर्गाबियां और जलकव्वे मारे थे।

२६ (पौष बदी १) को लासेसे डेरे उखड़े। तीन कोस दस जरीब पर गांव कानड़ेमें लगे।

४ (दूसरी तीज) को कूच होकर सवा तीन कोस गांव सूरठमें मुकाम हुआ। चौथ को साढ़े चार कोस पर गांव बरदड़ामें सवारी उतरी।

राणाकी हाजिरी।

पौष बदी ५ को मोतमिदखांकी अर्जी आई जिसमें लिखा था कि जब शाह खुर्रम राणाकी विलायतके पास पहुँचा और उधरका कुछ उद्योग नहीं था तोभी राणा बादशाही सेनाकी धाकसे उदय-पुरमें आकर पूरा पूरा आदाब बजा लाया।

शाहखुर्रमने भी उसका पूरा सत्कार किया। खिलअत, चारकुब्ब जड़ाऊ तलवार, जड़ाऊ खपवा, तुरकी और इराकी घोड़े तथा हाथी देकर बड़े मानसे बिदा किया। उसके बेटे और पास वालों को भी सिरोपाव दिये। राणाने जो पांच हाथी २४ घोड़े जवाहिर और जड़ाऊ पदार्थ एक थालमें भरकर भेट किये थे उसमेंसे केवल तीन घोड़े लेकर बाकी उसीको देदिये और यह बात ठहरी कि उसका बेटा पन्द्रह सौ सवारोंसे इस दिग्विजयमें साथ रहे।

राजा महासिंहके बेटे।

१० (पौष बदी ८) को राजा महासिंहके बेटोंने अपने वतनसे आकर रणथम्भोरके पास बादशाहको मुजरा किया। तीन हाथी और ८ घोड़े भेट किये। बादशाहने उनको यथायोग्य मनसब दिये।

बादशाह रणथम्भोरमें।

जब बादशाह रणथम्भोरमें पहुंचा तो उस किलेके बहुतसे कैदी छुड़वा दिये। यहां दो दिन डेरे रहे। बादशाह रोज शिकारको जाता था ३८ मुर्गाबियां और जलकव्वे शिकार हुए।

१२ (पौष बदी १०) को चार कोस चलकर गांव क्वोयखेमें सवारी ठहरी १४ (१२) को सवा तीन कोस पर गांव एकटोरेमें मुकाम हुआ। यहांका तालाब जिस पर बादशाही दौलतखाना खड़ा हुआ था बादशाहके पसन्द आगया। इससे दो दिन मुकाम रहा। रणथम्भोर महावतखांकी जागीरमें था उसका बेटा बहरेवर किलेमें रहता था। उसने आकर दो हाथी भेट किये दोनोंही खासेके हाथियोंमें रखे गये।

१७ (पौष बदी ३०) को बादशाह साढ़े चार कोस चलकर गांव ससायेमें और सुदी २ को सवा दोकोसकी मंजिल करके गांव कोरांमें चम्बल नदीके ऊपर उतरा। यह रमणीक स्थान भी बादशाहको पसन्द आगया था इसलिये तीन दिन वहां ठहरा। रोज नावोंमें बैठकर शिकार और जलबिहार करनेको जाया करता। २२ (पौष सुदी ६) को वहांसे प्रयाण करके साढ़े चार कोस तक शिकार खेलता गया और सुलतानपुर और चीलामीलामें उतरा। २५ (पौष सुदी ८) को साढ़े तीन कोस पर गांव मानपुरमें ठहरा। यहांसे मर्य्यादा पूर्वक एक दिन मुकाम और दूसरे दिन कूच करना निश्चय हुआ।

तेरहवां वर्ष ।

सन् १०२६ हिजरी ।

अगहन सुदी २ संवत् १६७३ से पौष सुदी २ सं० १६७४ तक ।

ता० ३ दिसम्बर सन् १६१६ से ता० १८ नवम्बर १६१७ तक ।

२० (पौष सुदी ११) को सवा चार कोस चलकर गांव वरधामें दो मुकाम हुए पौष सुदी १३ को दे का महीना पूरा हुआ। इस महीनेमें ४१६ पशु पची शिकार हुए थे।

तीतर	८७	सारस	१
जल कव्वे	१८२	कारवानक	७
मुरगावी	११८	खरगोश	१

१२ मुहर्रम १ वहमन (पौष सुदी १४) को बादशाह बेगमों सहित नावोंमें बैठकर एक घड़ी दिन रहे गांव रूपहेड़ेमें उतरा। चार कोस पन्द्रह डोरी चला था। यह भी बहुत रोचक और सुरम्य स्थान था।

इन दिनोंमें बादशाहने "कीजगना" नाम सेवकके हाथ दक्षिण में २१ अमीरोंको जड़ावल भेजी और उसकी बधाईमें उनसे दो हजार रुपये लेनेकी आज्ञा हुई।

३ (माघ बदी १) को फिर बादशाह नावोंमें बैठकर सवा दो कोस पर गांव काखावासमें उतरा। यहां एक विचित्र घटना देखनेमें आई। बादशाहने रास्तेमें एक तीतरके पकड़नेका हुक्म दिया था और दूसरा तीतर बाज द्वारा पकड़वाया था। जब डेरे पर पहुंचा तो पहला तीतर भी पकड़ा आया। उसको देखकर फरमाया कि इसे तो बाजको खिलादो और दूसरेको रहने दो क्योंकि वह जवान है। परन्तु इस हुक्मके पहुंचनेसे पहलेही वह तीतर बाजको खिला दिया गया था। तब इस तीतरके लिये घड़ी भर पीछेही शिकारीने अर्ज की कि जो इसे मैं नहीं मारूंगा तो यह

आप मर जावेगा। बादशाहने कहा कि जो ऐसाही है तो जिबहकर डालो। पर जब उसके गले पर छुरी रखी गई तो वह फारसे उड़ गया। फिर जब बादशाह नावसे उतरकर घोड़े पर बैठा तो एक चिड़िया हवाके झोंकेसे एक शिकारीके बरछे पर गिरी और उसकी भालमें छिद कर मर गई। बादशाहने दैवगतिकी इस विचित्रता से अति आश्चर्य करके कहा "वहां तो मृत्युविहीन तीतरको थोड़े ही समयमें वैसे तीन संकटोंसे बचाया और यहां मृत्युवश चिड़ियाको इस प्रकार भालेमें पिरोकर मारा।" जलवायु और स्थलकी उत्तमता देखकर यहां भी दो दिन बादशाहने विश्राम किया।

रावत सगरके मनसब पर इब्राहीमखां फीरोजजंगकी प्रार्थनासे पांच सदी जात और एक हजार सवारकी वृद्धि हुई।

६ (माघ बदी ४) को कूच हुआ। बादशाह डेढ़ पाव चार कोस चलकर चांदाके घाटेसे गांव अमजारमें पहुंचा। यह घाटा हरे भरे वृक्षोंसे बहुत शोभायमान था। वहां तक अजमेरकी सीमा ८४ कोस थी। अब इस गांवसे मालवेका सूबा लगता था। यहां नूरजहांने एक कुरीशा (पक्षी) बन्दूकसे मारा था। अबतक वैसा बड़ा और सुरंग कुरीशा बादशाहने नहीं देखा था तुलवाया तो १९ तोले ५ माशेका उतरा

सूबा मालवा।

बादशाह लिखता है—"मालवा दूसरी इकलीममें है इसकी लम्बाई विलायत "करने" (गढ़)के नीचेसे बांसवाड़ेकी विलायत तक २४५ कोस और चौड़ाई चंदेरीसे नंदखार परगनेतक २३० कोसकी है। इसके पूर्वमें बांधोंकी विलायत उत्तरमें नरवरका किला दक्षिणमें बगलाना और पश्चिममें गुजरात तथा अजमेरके सूबे हैं। यह बहुत सजल विलायत है जलवायु अच्छा है नहरों नदियों और झरनोंके सिवा इसमें पांच बड़े दरिया बहते हैं—१ गोदावरी २ भीमा ३ कालीसिन्ध ४ नीरा (बेतवा) ५ नर्मदा। यहां वायु समभाव रहता है भूमि

पास पड़ोसके कुछ ऊंची है। दाखको बेलें एक वर्षमें दोबार फलती है—एक बार मीनकी संक्रान्ति लगनेके समय और दूसरे सिंह संक्रान्तिके प्रारम्भमें। परन्तु पहली ऋतुका अंगूर अधिक मीठा है। मालवेकी जमा चौबीस करोड़ सात लाख दामकी है और काम पड़ने पर नौ हजार तीन सौ कई सवार चार लाख सत्तर हजार तीन सौ पैदल और एक सौ हाथी इस सूबेसे निकलते हैं।

८ (माघ वदी ५) को ४ कोस अढ़ाई पाव रास्ता काटकर बादशाह गांव खैराबादके पास उतरा। फिर तीन कोसतक शिकार खेलता हुआ गांव सिवारिमें पहुंचा और माघ वदी ८ को वहीं रहा।

१२ (माघ वदी ६) को गांव बछयाड़ीमें ठहरा। यहां राना अमरसिंहके भेजे हुए कई टोकरे अंजीर पहुंचे। बादशाह लिखता है—"सच तो यह है कि अच्छा मेवा है। अबतक मैंने हिन्दुस्थानके अंजीर ऐसे सरस नहीं देखे थे परन्तु थोड़े खाने चाहियें बहुत खानेमें हानि है।"

१४ (माघ वदी ११) को कूच हुआ। डेढ़पाव चार कोस चलकर गांव बलबलीमें पड़ाव पड़ा। राजाने जो उसप्रान्तके बड़े जमीन्दारोंमेंसे था दो हाथी बादशाहके नजरको भेजे थे वह यहां देखे गये और यहीं हिरातके खरबूजे भी आये। पचास ऊंट भरकर खान-आलमने भी भेजे थे। पिछले वर्षोंमें कभी इतने अधिक खरबूजे नहीं आये थे। एक थालमें कई प्रकारके मेवे लगकर आये जैसे—

हिरात बदखशां और काबुलके खरबूजे।

समरकन्द और बदखशांके अंगूर।

समरकन्द, बदखशां, कशमीर, काबुल और जलालाबादके सेब।

अनन्नास जो फरङ्गदेशके टापुओंका मेवा है और आगरेमें उसकी पौद लगाई गई थी। हरसाल कई हजार वहांके सरकारी बागोंमें फलता है।

कोला जो नारङ्गीसे छोटा, बहुत मीठा और बङ्गालमें अच्छा होता है।"

बादशाह लिखता है—"इन न्यामतोंका शुक्र मैं किस जबानसे अदा करूं। मेरे बापको मेवेका बहुत शौक था खासकरके खरबूजे अनार और अंगूरका। उनके समयमें हिरातके उत्तम खरबूजे यज्दके अनार, जो जगत प्रसिद्ध हैं और समरकन्दके अंगूर हिन्दुस्थानमें नहीं आये थे। यह मेवे देखकर अफसोस होता है, कि उस समयमें आते तो वह भी इनका स्वाद लेते।"

१६ (माघ बदी १३।१४) को कूच होकर डेढ़ पाव चार कोस पर गांव गिरीमें बादशाहको सवारी ठहरी। यहां बादशाहने बंदूकसे एक शेरबबर मारा। इस सिंहकी वीरता बहुत मानी जाती है इसलिये बादशाहने उसका पेट चिरवाकर देखा। और सब पशुओंका पित्ता तो कलेजेके बाहर होता है पर इसका कलेजेके भीतर था इससे उसने अनुमान किया कि इसकी वीरता इसी कारणसे होती है।

१८ (माघ सुदी १) को २॥ कोस पर गांव अमरियामें डेरा हुआ दूसरे दिन बादशाह शिकारको गया तो दो कोस पर एक गांव बहुत सुन्दर और सुथरा मिला। एक बागमें आमके एक सौ पेड़ इतने बड़े और डहडहे थे कि वैसे कम देखे गये थे उसी बागमें एक बड़ भी बहुतही बड़ा था। बादशाहने उसको नपवाया तो वह जमीनसे ७४ गज ऊंचा और १७५॥ गज चौड़ा निकला। तनेकी गोलाई ४४॥ गजकी थी।

एतमादुद्दौलासे परदा न करनेका हुक्म।

२० (माघ सुदी ३) को कूच और ४ को मुकाम हुआ। एतमादुद्दौलाके घरमें ख्वाजा खिजरका उत्सव था। बादशाह भी वहां गया और खाना खाकर एक पहर रात गये लौट आया। एतमादुद्दौलासे कुछ भेद भाव नहीं रहा था। इसलिये बादशाहने बेगमोंको उससे मुंह न छिपानेकी आज्ञा देकर उसकी और प्रतिष्ठा बढ़ाई।

दुधारिया ।

२२ (माघ सुदी ५) को तीन कोस आध पाव चलकर बादशाह नवलखेड़ेमें ठहरा। २३(७) को पांच कोस चलकर कासिमखेड़ेमें उतरा। एक सफेद जानवर मारा जिसके सिर पर चार सींग थे। दो तो आंखोंके पिछले कोयोंके पास दो दो उङ्गल ऊंचे थे। बाकी दो जो पहलेसे चार उङ्गल पीछेको थे चार चार उङ्गल ऊंचे थे। हिन्दुस्थानी इसको दुधारिया कहते हैं। नरके चार सींग होते हैं मादाके सींग नहीं होते।

लोग कहते थे कि इसके पित्ता नहीं होता। बादशाहने चिरवा कर देखा तो पित्ता था। लोगोंका कहना झूठ निकला।

कुलीचखां ।

२५ (माघ सुदी ८) को बादशाहने कुलीचखांके भतीजे मालजू को दो हजारी जात दो हजार सवारका मनसब और कुलीचखां का खिताब देकर अवधसे जहां उसकी जागीर थी बङ्गालमें भेज दिया।

२६ (माघ सुदी ९) को सवारी ४॥ कोस चलकर काजियोंके गांवमें उतरी जो उज्जैनके पास था। यहां बहुतसे हच आमोंके बौराये हुए थे और डेरा नदीके तट पर बहुत सुन्दरतासे लगाया गया था।

पहाड़ जालौरीको प्राणदण्ड ।

गजनीखांका बेटा पहाड़ इस स्थान पर मारा गया। बादशाह लिखता है—"इस कुपात्रको मैंने उसके बापके मरे पीछे कृपाकरके जालौरका किला और इलाका जो इसके बाप दादाका संस्थान था इनायत किया था। यह बालक था। इसकी माता इसे कई बुराइयोंसे बचानेकी चेष्टा करती थी। इससे इस कलङ्कीने एक रात कई नौकरोंके साथ अपनी जननीके घरमें जाकर उसे अपने हाथसे मारा। यह खबर जब मुझे मिली तो मैंने उसे बुलाया और अपराध साबित होने पर प्राणदण्डका हुक्म दिया।"

खजूरका पेड़ ।

यहां बादशाहने एक विचित्र खजूरका पेड़ देखा। जड़में उसका तना एक था। ६ गज ऊपर जाकर वह दोहरा होगया था। एक तरफ दस गज ऊंचा था दूसरी तरफ ९॥ गज। बीचमें ४॥ गजका अन्तर था। जमीनसे फल पत्तों तक एक तनेकी ऊंचाई १६ गज और दूसरेकी १५॥ गज थी। पत्तोंसे चोटी तक अढ़ाई गज ऊंचाई थी। गोलाई पौने तीन गज थी। बादशाहने उसके नीचे तीन गज ऊंचा एक चबूतरा बनवाकर चित्रकारोंको आज्ञा दी कि जहांगीरनामेमें उसका चित्र खेंचलें।

२७ (माघ सुदी १०) को कूच होकर आधपाव दो कोस पर गांव हिन्दुवालमें सवारी ठहरी।

२८ (माघ सुदी ११) को बादशाह दो कोस चलकर कालिया-दहमें ठहरा।

कालियादह ।

कालियादह एक राजभवन है जो मालवेके सुलतान महमूद खिलजीके पोते सुलतान गयासुद्दीनके बेटे सुलतान नासिरुद्दीनने उज्जैनमें बनवाया था। कहते हैं कि गरमी उसके मिजाजमें बहुत बढ़ गई थी। इससे पानीमें रहा करता था और इस भवनको नदीमें बनवाकर पानीकी नहरें हर तरफसे अन्दर लाया था। उचित स्थानों पर छोटे छोटे हौज बनवाये थे उनमें वह नहरें गिरती थीं।

बादशाह लिखता है—"यह बहुत मनोहर और आनन्दप्रद विलासस्थान है। हिन्दुस्थानके उत्तमोत्तम विशाल भवनोंमेंसे एक भवन यह भी है। मैंने अपने आनेसे पहिले सिलावटोंको भेजकर इस स्थानको सुधरवा दिया था। मैं इसकी शोभा पर मोहित होकर तीन दिन तक वहां ठहरा रहा।"

उज्जैन ।

उज्जैनके विषयमें बादशाह लिखता है—"उज्जैन पुराने शहरों

मैंने है हिन्दुओंके पूज्य स्थानोंमें एक यह भी है। राजा विक्रमा-जीत जिसने खगोलका शोधन कराया था इसी नगर और देशमें हुआ है। उस समयसे अबतक कि हिजरी सन् १०२६ है और ११ वर्ष मेरे राज्याभिषेकको हुए हैं १६७५ वर्ष बीते हैं। हिन्दु-स्थानके ज्योतिषियोंका आधार उसी शोधन पर है।

सपरा नदी।

यह नगर सपरा नदी पर बसा है हिन्दुओंका ऐसा विश्वास है कि साल भरमें एक बार जिसका कोई दिन निश्चित नहीं है इस नदीका पानी दूध होजाता है। मेरे पिताके समयमें शेख अबुल-फजल मेरे भाई शाहमुरादको सम्हालके वास्ते यहां भेजा गया था। तब उसने इस शहरसे अर्जी लिखी थी कि बहुतसे हिन्दू मुसलमानों ने साक्षी दी है कि मेरे आनेसे पहिले एक रातको यह पानी दूध होगया था। उस रात्रिमें जिन लोगोंने उस पानीको भरा था तड़के उनके घड़ोंमें दूध था, परन्तु मेरी बुद्धि इस बातको नहीं मानती है।"

जदरूप सन्यासी।

बादशाह लिखता है—"२२ असफन्दार (श्राव सुदी १५) को नावमें बैठकर मैंने कालियादहसे प्रयाण किया। यह बात अनेक बार सुनाई गई थी कि जदरूप नाम एक तपस्वी सन्यासी कई वर्षों से उज्जैनसे कुछ दूर जङ्गलमें भगवत् भजन करता है। मुझे उसके सत्सङ्गकी बड़ी इच्छा थी। जब मैं आगरेमें था तो चाहता था कि उसको बुलाकर मिलूं परन्तु उसको तकलीफका विचार करके नहीं बुलाया था। अब उज्जैन पहुंचकर नावसे उतरकर आधपाव कोस पैदल उसके देखनेको गया। वह एक गुफामें रहता है जो एक गज लम्बी दस गज चौड़ी एक टेकरीमें खुदी हुई है। पहला द्वार उसमें जानेको महराबके आकारका है। यहांसे उस गढ़े तक कि जिसमें वह बैठता है दो गज पांच गिरह लम्बाई और सवा ग्यारह गिरह चौड़ाई है और ऊंचाई धरतीसे छत तक एक गज

तीन गिरह है। जो सुरङ्ग उस खोहमें जाती है वह साढ़े पांच गिरह लम्बी और साढ़े तीन गिरह चौड़ी है। उसमें एक दुबला पतला पुरुष भी बड़े परिश्रमसे प्रवेश कर सकता है और उसकी लम्बाई चौड़ाई भी इसी प्रमाणकी होगी। न उसमें चटाई है न कोई घासका बिछौना है। वह अकेला उसी अन्धेरे गढ़ेमें रहता है। निपट नङ्गा होकर भी जाड़े और शीतल वायुमें कभी सिवा एक लंगोटीके और कोई कपड़ा नहीं रखता। न आग जलाता है जैसा कि मौलवी रूमने किसी एक तपस्वीका वाक्य लिखा है—

'हमारा वस्त्र दिनमें धूप है, रात्रि बिछौना और चान्दनी ओढ़ना है।'

वही गति इसकी भी है। इस विश्रामस्थानके पासही पानी बहता है वह उसमें नित्य दोबार जाकर नहाता है और एकबार बस्तीमें आकर सात ब्राह्मणोंके घरोंमेंसे जो उसने अङ्गीकार कर रखे हैं तीन घरोंसे पांच ग्रास भोजनके (जो उन्होंने अपने वास्ते बनाया हो) हथेलीपर लेकर बिना चबाये और स्वाद लियेही निगल जाता है। यह ब्राह्मण भी गृहस्थ हैं और उसके भक्त हैं पर इसके साथ यह कई नियम भी हैं कि उन तीन घरोंमें शोक और सूतक न लगा हो न कोई स्त्री रजस्वला हुई हो। उसकी यही जीवनवृत्ति है। वह लोगोंसे नहीं मिलना चाहता है परन्तु बहुत विख्यात होजानेसे लोग आपही उसके दर्शनको आते हैं। बुद्धिसे शून्य नहीं है वेदान्तविद्यामें निपुण है। मैं छः घड़ी तक उसके पास रहा उसने अच्छी अच्छी बातें कहीं जिनका मुझ पर बड़ा प्रभाव हुआ और उसको भी मेरा मिलना अच्छा लगा। मेरे पिता भी जबकि वह आसेरगढ़ और खानदेश जीतकर आगरेको लौटे थे उससे इसी जगह पर मिले थे और उसे सदा याद किया करते थे।"

ब्राह्मणोंकी वर्णव्यवस्था।

हिन्दुस्थानके विद्वानोंने हिन्दुओंमें उत्तम वर्ण ब्राह्मणके जीवनके चार आश्रम नियत किये हैं। ब्राह्मणोंके घरमें जो बालक जन्म

होता है उसको सात वर्ष तक ब्राह्मण नहीं कहते न कोई बन्धन उसके वास्ते है। जब आठवां वर्ष लगता है तो एक सभा रचकर ब्राह्मणोंको बुलाते हैं जो मन्त्र पढ़कर मूंजकी सवादो गज लम्बी एक रस्सीमें तीन गांठें अपने पूज्य तीन देवताओंके नामकी लगाते हैं और उस लड़केकी कटिमें बांधते हैं। फिर कच्चे सूतका जनेऊ बटकर उसके दहने कन्धेमें बद्धीकी भांति डालते हैं और एक गजसे कुछ अधिक लम्बी लकड़ी और एक कमण्डल आत्मरक्षा और पानी पीनेके लिये उसके हाथमें देकर उसे किसी विद्वान ब्राह्मणको सौंप देते हैं। वह बारह वर्ष तक उसके घरमें रहकर वेद पढ़ता है। उस दिनसे वह ब्राह्मण कहलाता है उसका यह कर्तव्य है कि भूलकर भी विषयवासनामें न पड़े। जब आधा दिन बीत जावे तो किसी दूसरे ब्राह्मणके घरमें जाकर जो कुछ भिक्षा मिले गुरुके पास ले आवे और उसकी आज्ञासे (आप भी) भक्षण करे और सिवा एक लङ्गोटी और दो तीन गज गजीके और कुछ कपड़ा अपने पास न रखे। इस अवस्थाको ब्रह्मचर्य्य अर्थात् वेदपाठ कहते हैं। इसके पीछे गुरु और पिताकी आज्ञासे विवाह करे और जबतक पुत्र न हो पांचों इन्द्रियोंका सुख भोगे। पुत्र न होनेकी दशामें ४८ वर्ष की उमर तक पांचों इन्द्रियोंके सुख भोगनेका निषेध नहीं है। इस दशाको गृहस्थाश्रम कहते हैं। इसके पीछे भाई बन्धु इष्ट मित्र तथा भोग विलासको छोड़कर घरसे निकल जाना और जङ्गलमें रहना पड़ता है इसका नाम वाणप्रस्थ है। हिन्दुओंमें यह भी विधान है कि धर्म्मका कोई काम बिना स्त्रीके जिसको अर्द्धांगिनी बोलते हैं सिद्ध नहीं होता है और वाणप्रस्थाश्रममें भी कई कृत्य करने पड़ते हैं इसलिये स्त्रीको साथ लेजाना आवश्यक है। पर वह गर्भवती हो तो घर रहे। जब बालक जन्मे और पांच वर्षका होजावे तो उसे बड़े पुत्र या कुटम्बियोंको सौंपकर सपत्नीक वाणप्रस्थमें होजावे और ऐसाही स्त्रीके रजस्वला होनेपरभी करे जब तक कि वह पवित्र न होजावे। वाणप्रस्थ हुए पीछे स्त्रीका सङ्ग न

करे और रातको अलग सोवे इस प्रकार बारह वर्ष जंगलमें रहे और कन्द मूल खाकर उदर पूर्ण करे। जनेऊ पहने रहे और अग्निहोत्र भी करे, नख और दाढ़ी मूछ तथा मस्तक के बाल लेनेमें वृथा समय न खोवे। जब इस आश्रमकी भी अवधि ऊपर लिखे विधानसे पूरी होजावे तो फिर अपने घरमें आवे और स्त्रीको बेटों वा भाई बन्धुओंके पास छोड़कर सतगुरुकी सेवामें जावे और उसके आगे जनेऊ और जटा आदिको आगमें जलाकर कहे कि मैंने सब बंधन और जप तप अपने मनसे अलग कर दिये। ऐसा करके फिर कोई वासना चित्तमें न रखे सदा परमेश्वरके ध्यानमें लगा रहे और जो किसी विद्याकी भी बात करे तो वह भी वेदान्तविद्याकीही हो जिसका तात्पर्य "बाबा फुगानी" ने इस प्रकार कहा है।

'इस घरमें एकही दीपक है कि जिसके प्रकाशसे जिधर देखता हूं उधरही एक समाज बनाया हुआ है।'

और इस दशाको सर्वविनाश और उसके स्वामीको सर्वविनाशी कहते हैं।

जदरूपके मिलापके पीछे मैं हाथी पर चढ़कर उज्जैनके बीचमें से निकला और साढ़े तीन हजार रुपये दायें बायें लुटाये। फिर सवा कोस चलकर दाऊदखेड़ेमें जहां लश्कर पड़ा था उतरा।

२ (फागुन बदी १) को मुकामका दिन था। फिर जदरूपसे मिलनेकी इच्छा हुई। दोपहर पीछे उसके दर्शनको गया और ६ घड़ी तक उसके सत्संगसे अपने चित्तको प्रसन्न करता रहा। इस दिन भी अच्छी अच्छी बातें हुईं। संध्या समय राजभवनमें लौट आया।

आगेको कूच।

फागुन बदी ३ को बादशाह सवातीन कोस चलकर गांव जराव के पास बाग परानियामें पहुंचा। यह पड़ाव भी बहुत सुरम्य और हरा भरा था।"

फागुन बदी ३ को साढ़े तीन कोस पर देपालपुरमें भेरिये तालाव पर डेरे हुए। यह जलस्थल और सरस स्थान था इसलिये बादशाह चार दिन तक यहां रहकर जलजन्तुओंका शिकार खेलता रहा। यहां अहमदनगरके बढ़िया अंगूर आये जो बड़ाईमें तो काबुलके बढ़िया अंगूरोंको नहीं पहुंचते थे परन्तु रसमें उनसे कम न थे।

एक बड़ा वटवृक्ष।

११ (फागुन बदी १०) को कूच होकर सवातीन कोस पर दौलताबादके परगनेमें डेरे हुए। ११ को मुकाम रहा। बादशाह शिकारको गया। गांव शेखोपुरेकी सीमामें उसने एक बटवृक्ष देखा जो बहुतही बड़ा था। मोटाई १८॥ गज और ऊंचाई जड़से डालियोंकी चोटी तक १२८। गजकी थी। शाखाएं जो उसमें फूटी थीं उनका फैलाव २०३॥ गजमें था। उनमेंसे एक शाखा जो हाथी दांतके आकारमें थी चालीस गज लम्बी थी। अकबर बादशाह जब इधर होकर निकला था तो उसने एक जड़के डालेमें सवा तीन गजके ऊपर अपना पञ्जा स्मृतिके वास्ते खुदवा दिया था। अब इस बादशाहने भी दूसरी जड़की शाखामें ८ गजके ऊपर अपनी हथेली का चिन्ह खुदवा दिया और चिरस्थायी रहनेके लिये दोनों पञ्जोंको संगमरमर पर भी खुदवाकर उस बड़की जड़में लगा देनेका हुक्म फरमाया। फिर उसके नीचे एक सुन्दर चबूतरा बना देनेका हुक्म दिया। बादशाह जब युवराज था तो मीर जियाउद्दीन कजवीनी (मुस्तफाखां) से मालदह*का परगना देनेकी प्रतिज्ञा की थी अब इस स्थान पर उसका आलतमगा‡ कर दिया।

केशव मारू कमालपुरा।

यहांसे लश्कर तो १३ (फागुन बदी ११) को कालछमें गया और बादशाह कुछ बेगमों, पारिषदों और निज सेवकों सहित बन

* मालदह एक प्रसिद्ध परगना बंगालमें है जहांके आम बहुत विख्यात हैं।

‡ लाल मोहरका पट्टा।

बिहार और शिकारके लिये हासिलपुरको कूच करके गांव सांगोर में पहुंचा। वहांकी हरियाली और आमोंकी छटाने उसको ऐसा मोहित किया कि तीन दिन तक वहीं रह गया। यह गांव केशो मारूसे छीनकर कमालखां किरावलको देदिया और फरमाया कि आजसे इसको कमालपुरा कहा करें।

शिवरात्रि।

यहीं शिवरात्रि हुई। बहुतसे योगी जमा होगये थे। बादशाहने इस रात्रिका विधान और विद्वान योगियोंका सत्संग किया।

राजा मानका मारा जाना।

राजा मानको बादशाहने कांगड़े पर भेजा था। जब लाहोरमें पहुंचा तो सुना कि संग्राम जो पञ्जाबके पहाड़ी राजोंमेंसे था उसके राज्यमें आकर कुछ विभाग उसका दबा बैठा है।

राजा मान पहिले संग्राम पर चढ़कर गया। संग्राममें उससे लड़नेकी शक्ति न थी। इसलिये उसके परगनोंको छोड़कर विकट पहाड़ोंमें जाछिपा। मान अभिमानसे आगे पीछेका विचार न करके उसकी तलाशमें गया और थोड़ेसे सैनिकोंसे उस पर जापहुंचा। वह भी बच निकलनेका मार्ग न पाकर लड़नेको आया। दैवसंयोग से एक पत्थर राजा मानके लगा जिससे उसके प्राण निकल गये। उसके साथी बहुतसे तो मारे गये और जो बाकी बचे वह घोड़े और हथियार छोड़कर बड़े कष्टसे निकल भागे!

बादशाहका कूच।

१७ (फागुन बदी ३०)को बादशाह सांगोरसे तीन कोस चलकर हासिलपुरमें पहुंचा जो मालवेका प्रसिद्ध परगना है। वहां अंगूर और आमके वृक्षोंकी सीमा न थी। नदियां बह रही थीं अंगूर विलायतकी ऋतुसे विरुद्ध इस ऋतुमें भी यहां इतने आए हुए थे कि एक "पाजी„ भी जितने चाहता उतने मोल ले सकता था। अफीमकी क्यारियां भी खूब खिली हुई थीं। जिन में रंग

रंगके फूल देखकर बादशाह प्रसन्न होगया। अपने रोजनामचे में यह बात लिखे बिना न रहा कि ऐसी शोभाका गांव कम होता है।

२१ (फागुन सुदी ४।५)को बादशाह हासिलपुरसे चलकर दो कूचमें बड़े उर्दू (लशकर) से जामिला।

सिंहका शिकार।

२२ (फागुन सुदी ६) रविवारको बादशाह लालचेसे कूच करके मांडोगढ़के नीचे एक तालाबके ऊपर ठहरा। शिकारियों ने आकर तीन कोस पर एक सिंहके होनेकी खबर दी। बादशाह लिखता है कि मैं रविवार और गुरुवारको बन्दूकका शिकार नहीं करता हूं तो भी यह सोचकर कि सिंह हिंसक जन्तु है मारनाही चाहिये, उसके ऊपर गया। वह एक वृक्षकी छायामें बैठा था। मैंने हाथी पर से उसके अधखुले मुंहको ताककर बन्दूक मारी। गोली उसके मुंहमें लगकर जबड़े और सिरमें बैठ गई और उसका काम तमाम होगया। जो आदमी साथ थे उन्होंने इसबातकी बहुतही खोज की कि गोली कहां लगी। परन्तु कुछ पता न लगा, क्योंकि उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग पर कहीं भी गोली लगनेका चिन्ह न था। तब मैंने कहा कि इसके मुंहमें देखो। मुंह देखा तो गोली मुंहमें लगी थी और उसीसे वह मरा।"

भेड़ियेका पित्ता।

इतने में मिरजा रुस्तम एक भेड़ियेको मारकर लाया। बादशाह यह देखना चाहता था कि उसका पित्ता भी सिंहकी भांति कलेजेके भितर होता है या बाहर जैसा कि और पशुओंका होता है। देखने से पाया गया कि उसका पित्ता भी कलेजेके अन्दरही होता है।

माड़ोंगढ़में प्रवेश।

२३(फागुन सुदी ७) सोमवारको शुभ घड़ीमें बादशाह मांड़ोमें

प्रवेश करनेको हाथी पर सवार हुआ और एक पहर २ घड़ी दिन चढे वहां पहुंचकर उस राजभवन में उतरा जो उसके वास्ते बना था। डेढ़ हजार रुपये रास्तेमें लुटाये। मांडो अजमेरसे १५९ कोस है बादशाह चार महीने दो दिनमें ४६ कूच और ७८ विश्राम करके वहां पहुंचा था। इन ४६ कूचोंमें डेरा भी दैवयोग से सुरम्य स्थानों तालावों नदियों और बड़ी बड़ी नहरोंके तट पर होता था जहां हरेभरे वृक्ष, लहलहाते खेत और अफीमकी फूलीहुई क्यारियां मिलती थीं। कोई दिन शिकारसे खाली नहीं गया। बादशाह लिखता है कि मैं तमाम रास्ते हाथी और घोड़े पर बैठा बनविहार करता और शिकार खेलताहुआ आता था। यात्रामें कुछ कष्ट नहीं मालूम हुआ मानो एक बागसे दूसरे बागमें बदली होती थी। इन शिकारोंमें आसिफखां, मिरजा रुस्तम, मीरमीरां, अनीराय, हिदायतउल्लह, राजा सारंगदेव, सय्यद कासू और खवासखां हमेशा मेरी अर्दलीमें रहते थे।

मांडोंके राजभवन।

बादशाहने अजमेरसे अबदुलकरीम मामूरीको मांडोंमें अगले हाकिमोंकी इमारतोंके सुधारके वास्ते भेजा था। उसने बादशाह के अजमेरमें रहने तक कई पुराने मकानोंकी मरम्मत करादी थी और कई स्थान नये बनवाये थे। बादशाह लिखता है—"उस ने ऐसा निवासस्थान प्रस्तुत करदिया था कि उस समय किसी जगह वैसा सुन्दर और सुरम्य भवन न था। तीनलाख रुपये इसमें लगे थे। ऐसी विशाल इमारत उन बड़े शहरोंमें होना चाहिये थी जो हमारे निवास करनेको योग्यता रखते हैं।"

मांडोंगढ़का विवरण।

बादशाह लिखता है—"यह गढ़ एक पहाड़के ऊपर बना है। इसका घेरा दस कोस नापा गया। बरसातके दिनोंमें इस गढ़ के समान कोई स्थान स्वच्छवायु और सुन्दरतासे पूर्ण नहीं होता। यहां सिंह संक्रान्तिमें रातको ऐसी ठण्ढ पड़ती है कि रजाई ओढ़े

बिना निर्वाह नहीं होता। दिनको पंखेकी आवश्यकता नहीं पड़ती।"

कहते हैं कि राजा विक्रमाजीतसे पहिले जयसिंहदेव नामका एक राजा था उसके समयमें एक मनुष्य घास काटनेको जङ्गलमें गया। दैवसंयोगसे उसका हंसवा सुनहरा होगया उसने मांडन नाम लुहारको दिखाया। लुहारने पहिलेसे सुन रखा था कि इसदेशमें पारस पत्थर है जिसके छूजानेसे लोहा और तांबा सोना होजाता है। इसलिये वह उस घसियारेके साथ उस जगह गया और उस पारसको ढूंढ़कर राजाके पास लाया। राजाने उससे बहुतसा सोना पैदा करके किला बनवाया और उस लुहारकी प्रार्थनासे बहुतसे पत्थर अहरनके आकारके तरशवाकर कोटमें लगाये। अन्तावस्थामें संसारको त्यागकर नर्मदाके निकट एक बड़ी सभा की और ब्राह्मणोंको बुलाकर धनमाल दिया। पारस पत्थर अपने पुराने पुरोहितको दिया परन्तु उसने अज्ञतासे तड़ककर नदीमें फेंक दिया। पर जब यथार्थ बात जानी तो उमरभर पछताता और ढूंढ़ता रहा पर वह कहीं न मिला।

यह कथा लिखी नहीं है जबानी सुनी गई है मेरी बुद्धि इसको स्वीकार नहीं करती मेरी समझमें यह गप्प जान पड़ती है।

मालवेकी बड़ी सरकारोंमेंसे एक सरकार मांडोकी है। इसकी जमा १ करोड़ ३९ लाखकी है। यह बहुत वर्षों तक इस देशके बादशाहोंका राजस्थान रहा है जिनकी बहुतसी इमारतें और निशानियां यहां हैं। उनमें कुछ टूटा फूटा नहीं है।

२४ असफंदार (फागुन सुदी ८) को मैं पिछले बादशाहोंके स्थान देखनेको सवार हुआ। पहिले सुलतान होशंग गोरीकी बनाई हुई 'जामेमसजिद' में गया जिसकी इमारत बहुत बड़ी है। इसको बने हुए १८० वर्ष बीत गये हैं तोभी ऐसा मालूम होता है कि मानो आजही मेमार काम करके गये हैं।

फिर मैं खिलजी हाकिमोंकी कबरें देखने गया। इस लोक

और परलोकमें जिसका काला मुंह हुआ ऐसे नसीरुद्दीनकी कबर भी वहीं थी। यह प्रसिद्ध है कि इस कपूतने अपने ८० वर्षके बूढ़े बाप सुलतान गयासुद्दीनको दोबार विष दिया जो उसने अपने भुजबन्दके जहरमोहरेसे मार दिया। तीसरी बार फिर उसने शरबतमें जहर मिलाकर अपने हाथसे बापको दिया कि इसको पी जाना चाहिये। बापने जब उसका यह आग्रह उस काममें देखा तो जहरमोहरा भुजासे खोलकर उसके आगे डाल दिया और परमेश्वरको दण्डवत करके कहा कि हे प्रभो! मैं ८० वर्षका होगया हूं मैंने अपनी अवस्थाको बड़े ऐश्वर्य और सुखचैनमें बिताया है वैसा सुख किसी बादशाहको प्राप्त नहीं हुआ। अब मेरा अन्तिम समय आ पहुंचा है इसलिये यह प्रार्थना करता हूं कि नसीरको मेरे खूनमें न पकड़ना और मेरी मृत्युको स्वाभाविक मानकर उसको दण्ड न देना। यह कहकर उसने वह विष मिश्रित शरबत पीलिया और प्राण देदिया।

इस बातके कहनेसे कि मैंने अपने राजत्वकालको ऐसे सुख और विलासमें व्यतीत किया है जो किसी बादशाहके भाग्यमें नहीं था उसका यह अभिप्राय था कि जब वह ४८ वर्षकी अवस्थामें सिंहासनारूढ़ हुआ तो अपने मित्रोंसे कहा कि मैंने बापके राज्यमें तीस वर्ष खूब लड़ाइयां की हैं और परिश्रम करनेमें कुछ कसर नहीं रखी है। अब मुझे राज्य मिला है मेरा विचार किसी मुल्कके लेनेका नहीं है। मैं चाहता हूं कि शेषावस्था सुख चैनमें व्यतीत करूं।

कहते हैं कि उसने पन्द्रह हजार स्त्रियां अपने रनवासमें भरती करके उनका एक गांव बसा दिया था। उसमें हाकिम पेशकार काजी कोतवाल आदि कर्म्मचारी जो एक नगरीके प्रबन्धके लिये आवश्यक होते हैं सब स्त्रियोंमेंसेही नियत किये थे। वह जहां कहीं सुन्दरदासी सुनता जबतक उसको हस्तगत न कर लेता निश्चिन्त न बैठता। उसने नानाप्रकारकी विद्या और कलाएं उन दासियोंको

सिखादी थीं। उसको शिकारकी बड़ी लत थी। एक शिकारखाना बनवाया था जिसमें अनेक प्रकारके पशु एकत्र किये थे। वह बहुधा स्त्रियों सहित वहां जाकर शिकार खेलता था। उसने जैसा स्थिर किया था उसीके अनुसार अपने राज्यशासनके ३२ वर्षों में कभी किसी शत्रुके ऊपर चढ़ाई नहीं की और अपने समयको बड़ी मौज में बिताया। वैसेही और कोई शत्रु भी उसके ऊपर चढ़कर नहीं आया।

लोग कहते हैं कि जब शेरखां पठान अपने समयमें नसीरुद्दीन की कबर पर पहुंचा था तो स्वयं पशुप्रकृति होने पर भी उसने नसीरकी बुरी करनीके वास्ते अपने साथियोंको हुक्म दिया कि इस कबरको लकड़ियोंसे पीटो।

मैंने भी उसकी कबरपर पहुंच कर कई लातें मारीं और मेरे सेवकोंने भी मेरी आज्ञासे लातें लगाईं। तोभी मुझे सन्तोष न हुआ और कहा कि कबरको खोदकर उसमें जो अपवित्र हड्डियां हों उनको आगमें जलादें। फिर यह विचारा कि आग तो परमेश्वरका रूप है उसके मलिन शरीरके जलानेसे यह दिव्य पदार्थ अपवित्र हो तो बड़े खेदकी बात है और ऐसा न हो कि कहीं इस जलानेसे उसके परलोकके सन्तापमें कमी हो जावे। इसलिये मैंने यह हुक्म दिया कि इसकी गलीज अस्थियों और मट्टीमें मिले हुए अवयवोंको नर्मदा नदीमें डालदें।

यह प्रसिद्ध है कि नसीरुद्दीनकी प्रकृतिमें गर्मी बहुत भरी हुई थी इसलिये वह हमेशा पानीमें रहा करता था। कहते हैं कि एक बार वह उन्मत्ततासे कालियादहके टांकेमें जो बहुत गहरा था कूद पड़ा था। अन्तःपुरके सेवकोंने बड़े परिश्रमसे उसके बाल पकड़े और बाहर निकाला। जब कुछ सुध आई और लोगोंने कहा कि ऐसी घटना हुई थी तो बाल पकड़कर निकाले जानेका नाम सुनतेही ऐसा क्रोधित हुआ कि उस सेवकके हाथ कटवा डाले जिसने बाल पकड़े थे।

दूसरी बार जब फिर वैसी दशा हुई तो किसीने उसको पानीसे निकालनेका साहस नहीं किया और वह डूबकर मर गया। अब दैवकोपसे १९० वर्ष बाद उसको देहके गले हुए टुकड़े भी पानीमें मिल गये।"

२८ (फागुन सुदी १२) को बादशाहने मांडोंकी इमारतें तैयार करनेकी खुशीमें अबदुलकरीमका मनसब आठ सदी जात और चारसौ सवारोंका करके उसको मामूरखांकी पदवी दी।

सुलतान खुर्रम और दक्षिणकी व्यवस्था।

जिस दिन बादशाहने मांडोंमें प्रवेश किया उसी दिन सुलतान खुर्रम भी बुरहानपुरमें जो खानदेशके सूबेका मुख्य स्थान है पहुंचा था। कई दिन पीछे अफजलखां और रायरायांकी अर्जियां पहुंचीं। वह खुर्रमके अजमेरसे प्रस्थान करने पर आदिलखांके प्रतिनिधिके साथ बिदा हुए थे। इन अर्जियोंमें लिखा था कि जब हमारे आनेकी खबर आदिलखांको पहुंची तो सात कोस फरमान और निशान* की अगवानीको आया। दरबारमें सिजदा करनेकी जो रीति बरती जाती है उसमें उसने जरा भी कसर न की। उसी मुलाकातमें बड़ी सेवा और अधीनता दिखाकर यह प्रतिज्ञा की कि जो देश बादशाही अधिकारसे निकल गये हैं उन सबको अभागे अम्बरसे छीनकर राजकीय अनुचरोंके अधिकारमें कर दूंगा और यह भी स्वीकार किया कि एक उत्तम भेट बड़े ठाठसे अपने दूतोंके साथ दरबारमें भेजूंगा। यह कहकर राजदूतों को अति आदर सत्कारसे योग्य स्थानोंमें लेजाकर उतारा और उसी दिन अम्बरके पास आदमी भेजकर उचित सन्देसा उसको कहलाया।

शिकारकी संख्या।

अजमेरसे मांडों पहुंचनेतक चार मासमें बादशाहने जो शिकार किया उसका व्यौरा यह है—

---

* बादशाहका आज्ञपत्र फरमान कहलाता था और शाहजादों का निशान।

सिंह	२	हरन	६०
नीलगाय	२७	खरगोश और लोमड़ी	२३
चीतल	६	जलमुर्गी और दूसरे जन्तु	१२००

बादशाह लिखता है कि जिन रातोंमें मैं पिछले शिकारों और उसकी रुचिकी बातें उन लोगोंसे कह रहा था जो राजसिंहासनके नीचे खड़े थे, तो मेरे मनमें आया कि क्या होश सम्हालनेसे अबतक अपने शिकारकी संख्या हस्तगत कर सकता हूं। इसके वास्ते मैंने समाचार लिखनेवालों, मृगयाध्यक्षों, शिकारियों और इस खातेके कर्मचारियोंको हुक्म दिया कि निर्णय करके जितने जानवर शिकार हुए हों वह सब मुझको सुनावें। मालूम हुआ कि मेरी १२ वर्षकी अवस्थासे जबकि हिजरी सन् ९८८ (संवत्१६३७) था इस वर्षके समाप्त होने तक जो ११वां वर्ष मेरे राज्याभिषेकका है और मेरी अवस्था ५० वर्षकी चांद्रमासके लेखेसे हुई है २८५३२ जानवर मेरे सामने शिकार हुए हैं जिनमेंसे १७१६७ जानवर मैंने बन्दूक आदि शस्त्रोंसे इस प्रकार मारे हैं—

वनचर पशु ३२०३ जिनका व्यौरा यों है।

सिंह	८६
रीछ, चीते, लोमड़ी, ऊदबिलाव. जरख	९
नीलगाय	८८९
म्हा—जो गेंडेकी जातिसे नीलगायके बराबर होता है	३५
हरन चिकारे चौतल पहाड़ी बकरे आदि	१६७०
मेढ़े और लालहरन	२१५
भेड़िये	६४
जंगली भैंसे	३६
सूर	९०
जंग	२६
पहाड़ो मेढ़े	२२
अरगली	३२

गोरखर	६
खरगोश	२३

पच्ची १३८६४ जिनका ब्यौरा यों है।

कबूतर	१०३४८
खगड़भगड़	३
उकाब	२
कलेवाज (चील)	२३
चुगद	३९
कौतान	१२
मूषजोज	५
चिड़ियां	४१
फाखता	२५
उल्लू	३०
मुर्गाबी कुजं करवानक आदि	१५०
काग	३२७६
मगरमच्छ	१०

बारहवां नौरोज।

३० असफंदार १२ रबीउलअव्वल १०२६ (फागुन सुदी १३) सोमवारको एक घड़ी दिनसे सूर्य्य मीन राशिसे मेखमें आया। बादशाह उसी शुभमुहूर्त्तमें सिंहासन पर बैठा। आमखास दीवानखाना कीमती कपड़ोंसे सजाया गया था अधिकांश अमीर और बड़े बड़े आदमी खुर्रमके पास दक्षिणमें थे तोभी ऐसी मजलिस जुड़ गई थी कि पिछले वर्षोंसे कुछ न्यूनता नहीं रही थी मंगलवारको भेंट आनन्दखांको देनेका हुक्म हुआ।

इसी दिन शाह खुर्रमकी अर्जी पहुंची कि लोग सफर और लड़ाईमें हैं इसलिये वर्षभरकी भेंटें माफ होजाना चाहिये। इस पर बादशाहने हुक्म देदिया कि इस नौरोजमें कोई कुछ भेंट न करे।

तम्बाकूका निषेध।

बादशाह लिखता है—"तम्बाकूके अवगुण देखकर मैंने हुक्म दिया था कि कोई आदमी उसका सेवन न करे और मेरे भाई शाहअब्बासने भी उसकी बुराइयोंको जानकर ईरानमें मनाही करदी थी। परन्तु खानआलमको तम्बाकूका व्यसन था इसलिये ईरानके दूत यादगारअली सुलतानने शाहसे प्रार्थना की कि खान-आलम दम भर भी तम्बाकू विना नहीं रह सकता है। शाहने उसकी अरजी पर पद्यमें हुकम लिखा—"जो दोस्तका दूत तम्बाकू पीना चाहता है तो उसको दोस्तीसे आज्ञा देता हूं।"

३ फरवरदीन (चैत्र बदी १) को बंगालेके दीवान हुसैनबेगने मुजरा करके १२ हाथी भेट किये और वहांके बखशी ताहिरने भी जिस पर कई क़सूरोंके कारण बादशाहका कोप था २१ हाथी भेट दिये उनमेंसे १२ पसन्द होकर रख लिये गये।

४ (चैत्र बदी २) को बादशाहने किलेके शक्कर तालाब पर एक बड़ा सिंह जिसने १२ अहदियों और अरदलीवालोंको घायल किया था तीन गोलियोंमें मारा।

८ (चैत्र बदी ७) को शाह खुर्रमकी अर्जीसे खानजहांका मनसब छः हजारी जात और छः हजार सवारोंका होगया ऐसेही और भी कई अमीरोंके मनसब बढ़ाये गये।

ईरानका दूत।

११ (चैत्र बदी ८) को ईरानका दूत हुसैनबेग तबरेजी जिसे शाहने गोलकुंडेके हाकिमके पास भेजा था और जो दाजलबाशों और फरंगियोंमें झगड़ा होनेके कारण समुद्रका मार्ग बन्द होनेसे वापिस न जासका था। गोलकुंडेके वकीलके साथ बादशाहकी सेवा में आया। दो घोड़े और कुछ कपड़े दक्षिण तथा गुजरातके उसने भेट किये।

१५ (चैत्र बदी १२) को एक हजारी जातके बढ़ जानेसे मिरजा

राजा भावसिंहका मनसब पांच हजारी और तीन हजार सवारोंका होगया।

अनीरायके मनसबमें भी पांच सदी जात और एक सौ सवार बढ़े जिससे वह डेढ़ हजारी जात और पांच सौ सवारोंका मनसबदार होगया।

१९ (चैत्र सुदी ३) शनिवारको तीन घड़ी दिन रहे मेख संक्रांति लगी। बादशाहने फिर राजसिंहासन पर सुशोभित होकर उत्सव किया।

कैदीका भागना।

जब शाह नवाजखांने अंबरको लड़ाईमें हराया तो उसकी सेनाके बाईस सिपाही पकड़ आये थे। उनमेंसे एक जो एतकादखां को सौंपा गया था पहरेवालोंकी गफलतसे भाग गया। बादशाहने जमादारको सजा देकर तीन महीनेसे एतकादखांकी ड्योढ़ी बन्द कर रखी थी। अब वह एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे मुजरा करनेको आने पाया।

सूबेदारोंकी बदली।

बंगालेका हाल और कासिमखांका चलन ठीक नहीं सुना गया था और बिहारके सूबेदार इब्राहीमखां फतहजंगने अच्छा प्रबन्ध करके हीरेकी खान भी बादशाही अधिकारमें करदी थी इस लिये बादशाहने जहांगीरकुलीको उसकी जागीर सूबे इलाहाबादसे बिहारमें और इब्राहीमखांके बिहारसे बङ्गालमें जाने और कासिमखांके दरबारमें आनेके हुक्म लिखकर सजावलोंके हाथ भेज दिये।

२१ (चैत्र सुदी ५) को ईरानका एलची मुहम्मदरज्जाक बिदा हुआ। उसको साठ हजार दरब * जो तीस हजार रुपयेके थे मिले। एक लाख रुपयेकी सौगात जो दक्षिणके दुनियादारोंके भेजे हुए जड़ाऊ पदार्थों और उत्तम वस्त्रोंसे सज्जित कीगई थी उसके साथ शाह अब्बासके वास्ते भेजी गई।

* अठन्नीका नाम दरब था।

पहले शाहने एक बिल्लौरी प्याला इस अभिप्राय
कि मेरे भाई इसमें शराब पीकर उसे लौटादें तो बड़ा ...
बादशाहने दूतके सामने कई बार उसमें शराब पीकर उसको भा
रक्खावी और ढकने सहित सौगातमें रख दिया था। यह दोनों
चीजें नई बनी थीं। ढकनेके ऊपर मीनाका काम हुआ था।

२१ (चैत्र सुदी ६) को बादशाहने एक सिंह बन्दूकसे मारा।

२५ (चैत्र सुदी ९) को एतमादुद्दौलाकी फौजकी हाजिरी दर्शन के झरोखेके मैदानमें हुई। दो हजार अच्छे घुड़सवार जिनमें बहुधा मुगल थे पांच सौ तीरन्दाज तोपची और चौदह हाथी थे। बख्शियोंने गिनती करके बादशाहसे कहा कि सब सेना ठीक सजी हुई है।

चैत्र सुदी १५ गुरुवारको मुकर्रबखांका भेजा हुआ एक हीरा जो २३ रत्ती था जौहरियोंने तीस हजार रुपयेका कूता। बादशाह ने पसन्द करके अंगूठीमें जड़वाया।

नूरजहांका चार शेर मारना।

१ उर्दीबहिश्त (बैशाख वदी ६) को किरावलोंने अर्ज कराई कि हमने चार शेर घेर रखे हैं। बादशाह दो पहर तीन घड़ी दिन चढ़े राजमहिषियों सहित शिकार खेलने गया। जब शेर दिखाई दिये तो नूरजहां बेगमने बादशाहसे अर्ज की कि आज्ञा हो तो मैं इन शेरोंको बन्दूकसे मारूं। बादशाहने कह दिया कि मारो। बेगम ने दोको बन्दूकसे और दोको दो दो तीरोंसे मारकर गिरा दिया। बादशाह लिखता है—"अबतक ऐसी निशानेबाजी नहीं देखी गई थी कि हाथीके ऊपर अम्मारीमेंसे छः तीर मारे जावें जिनमेंसे एक भी खाली न जावे और ४ सिंह हिलने चलने और उछलनेका अवकाश भी न पावें। मैंने इससे प्रसन्न होकर एक हजार मोहरें नूरजहांके ऊपरसे न्योछावर कीं और एक लाख रुपयेके हीरोंकी पहुंचियां उसे दीं।

२६२ ~~~ र

५ खुरदाद (जेठ बदी५) को मिरजाहुसैन, केशवकी जगह गुजरातका दीवान हुआ।

नाई गवैया।

उस्ताद मुहम्मद नाई गवैयेको सुलतान खुर्रमने बादशाहके पास भेजा था बादशाहने कई मजलिसोंमें उसके बाजे सुने। उसने बादशाहके नामकी रागनियां गजलमें बनाई थीं। वह भी गाईं। १२ (जेठ बदी १३) को बादशाहने उसे रुपयोंमें तुलवाया। पैंसठसौ रुपये और हौदे सहित हाथी देकर फरमाया कि हाथी पर बैठकर रुपये दायें बायें रखले और लुटाता हुआ अपने डेरेको चला जा।

मुल्ला असद कहानी कहनेवाला।

मुल्ला असद कहानी कहनेवाला जो मिरजागाजीके नौकरोंमें से था इन्हीं दिनोंमें ठट्ठेसे बादशाहके पास आया। उसकी मीठी कहानियों और मीठी बातोंमें बादशाहका मन लग गया। इसलिये उसे महजूजखांका खिताब देकर एक हजार रुपये हाथी घोड़ा पालकी और सिरोपाव दिया। कई दिन पीछे उसे रुपयोंमें तोलकर दो सदी जात और बीस सवारका मनसब भी बखशा और फरमाया कि हमेशा "गप"की मजलिसमें हाजिर रहा करे। वह तोलमें चार हजार चार सौ रुपये भरका हुआ।

महासिंहकी मृत्यु।

२४ (जेठ सुदी १०) को खबर पहुंची कि राजा मानसिंहका पोता महासिंह जो बड़े अमीरोंमेंसे था बालापुर बराड़में शराब ज्यादा पीनेसे मर गया। उसका बाप भी ३२ वर्षकी अवस्थाहीमें अधिक मद्य पान करनेसे मरा था।

आमोंकी परीक्षा।

इन दिनोंमें बहुतसे आम दक्षिण गुजरात बुरहानपुर और मालवेसे बादशाही मेवेखानेमें आये थे। बादशाह लिखता है—"ये सब देश अच्छे आमोंके वास्ते प्रसिद्ध हैं मिठास, बड़ापन और रेशा कम निकलनेमें थोड़े ही स्थानोंके आम इन देशोंके आमोंको

मुलजा कर सकते हैं। कई बार मैंने अपने सामने यहांके आम तुलवाये तो सवा सवा सेरसे अधिक हुए। पर सच यह है कि रस स्वाद मिठास और कम गुठियल होनेमें छपरामऊ जिले आगरेके आम यहांके और हिन्दुस्थानके दूसरे स्थानोंके आमोंसे बढ़कर हैं।

नादिरी (सदरी)।

२८ (जेठ सुदी १३) को खासेकी नादिरी जिसके समान जरीकी दूसरी नादिरी बादशाही सरकारमें नहीं मिली थी बादशाहने खुर्रमके वास्ते भेजी और लेजानेवालेको जबानी कहलाया कि इस नादिरीमें यह विशेषता है कि मैं दक्षिणदेश जीतनेके विचारमें अजमेरसे कूच करनेके दिन इसको पहिने हुए था।

इसी दिन बादशाहने अपनी पगड़ी वैसीकी वैसी बंधी हुई एत-मादुद्दौलाको पहिनाकर भारी इज्जत दी।

तीन पन्ने, एक जड़ाऊ उर्बसी और एक अंगूठी याकूती महा-बतखांकी भेजी हुई बादशाहकी नजर हुई। यह सब माल सात हजार रुपयेका था।

इसी दिन वर्षा हुई। मांडोंमें जल कम होजानेसे प्रजा दुःखित थी। बादशाहने ईश्वरसे प्रार्थना की। उसकी कृपासे इतना जल बरसा कि नदी नाले तालाब सब भर गये।

१ तीर (आषाढ़ बदी ४) को राणाके भेजे हुए दो थोड़े गुज-राती कपड़े और कई घड़े अचार तथा मुरब्बेके बादशाहकी सेवा में पहुंचे।

२ (आषाढ़ बदी ६) को अबदुल्लतीफके पकड़े जानेकी खबर आई जो गुजरातके पिछले हाकिमोंकी सन्तानमेंसे था और वहां सदा उपद्रव करता रहता था। बादशाहने उसके पकड़े जानेसे प्रजाको सुखी होता देखकर परमेश्वरका धन्यवाद करके मुकर्रबखां को लिखा कि उसको किसी मनसबदारके साथ राजद्वारमें भेजदे।

मांडोंकी तलहटीके बहुधा भूपति भेटें लेकर आये।

८ (आषाढ़ बदी ११) को बादशाहने राजा राजसिंह कछवाहे के बेटे रामदासको राजतिलक देकर राजाकी पदवी दी।

कन्धारके हाकिम बहादुरखांने नौ घोड़े, नौ थान कपड़ोंके और दो चमड़े काली लोमड़ियोंके भेटमें भेजे।

इसी दिन गढ़ेके राजा पेमनारायणने आकर सात हाथी भेट किये।

१३ (आषाढ़ सुदी २) को गुलाब छिड़कनेका त्योहार हुआ।

१४ (आषाढ़ सुदी ३) को बांसवाड़ेके रावल उदयसिंहके बेटे रावल समरसिंहने आकर तीस हजार रुपये तीन हाथी एक जड़ाऊ पानदान और एक जड़ाऊ कमरपट्टा भेट किया।

१५ (आषाढ़ सुदी ४) को बिहारके सूबेदार इब्राहीमखां फतहजंगने ९ हीरे वहांकी खानसे निकले हुए तथा वहांके जमीन्दार के संग्रह किये हुए भेजे। उनमें एक हीरा १४॥ टांकका था वह एक लाख रुपयेका आंका गया।

दक्षिणमें सफलता।

२९ (सावन बदी २) गुरुवारको बारहका सैयद अबदुल्लह सुलतान खुर्रमकी अर्जी लेकर आया जिसमें लिखा था कि दक्षिणके सब दुनियादार अधीन होगये। अहमदनगर आदि किलोंकी कुञ्जियां आगईं। बादशाहने खुदाका शुक्र करके टोड़ेका परगना जिसकी उपज दो लाख रुपयेकी थी नूरजहां बेगमको दिया। क्योंकि यह बधाई उसके द्वारा उसके पास पहुंची थी। इससे २५ दिन पहले एक रातको बादशाहने दीवानेहाफिजमें फाल देखी थी तो काम बन जानेकी बात निकली थी। बादशाह लिखता है— "मैंने बहुत कामोंमें दीवानेहाफिजको देखा है। जो उसमें निकला वही हुआ।

दोपहर बाद बादशाह बेगमों सहित "हफ्तमंजर" महलको देखने गया संध्याको लौट आया। यह सतखण्डा प्रासाद सुलतान महमूद खिलजीका बनाया हुआ है। प्रत्येक खण्डमें चार चार

झरोखे हैं। ५४॥ गज ऊंचा और ५०गज चौड़ा है। नीचेसे सातवें खण्ड तक १७१ सीढ़ियां हैं। बादशाहने आनेजानेमें चौदह सौ रुपये लुटाये।

३१ (सावन बदी ४।५) को बादशाहने तीस हजार रुपयेका एक लाल जो अपने सिर पर बांधा करता था सुलतान खुर्रमके वास्ते भेजा।

५* अमरदाद (सावन बदी १०) गुरुवारको बादशाह रनवास सहित नीलकुंडके देखनेको गया जो मांडोगढ़में एक सुरम्य स्थान है। अकबर बादशाहके समयमें शाह सदाकखांने जब कि यह प्रान्त उसकी जागीरमें था यहां एक मनोहर महल बनाया था बादशाह दो तीन घड़ी रात तक वहां ठहर कर राजभवनमें आगया।

राणा अमरसिंहको हाथी।

७ (सावन बदी १२) को आदिलखांके भेजे हुए हाथियोंमेंसे एक मस्त हाथी बादशाहने राणा अमरसिंहके वास्ते भेजा।

शिकार।

११ (सावन सुदी १) को बादशाह शिकारके वास्ते किलेसे उतरा था। परन्तु मेह और कीचड़से रास्ता बन्द था इसलिये आदमियों और जानवरोंके सुखके विचारसे गुरुवारको बाहर रहकर शुक्रकी रातको लौट आया।

अति वर्षा।

इस बरसातमें इतना पानी बरसा कि बूढ़े बूढ़ोंने वैसी वर्षा न देखी थी। ४० दिन बादल घिरे रहे। सूर्य कभी कभी दिखाई दिया। आंधी पानीके जोरसे बहुतसे नये पुराने मकान गिर गये। पहली रातको वर्षा होते समय बिजली ऐसी कड़ककर गिरी कि बीस स्त्री पुरुष मरे। कई दृढ़ मकान टूट गये। आधे सावन तक जल वायुका जोर रहा। फिर धीरे धीरे कम होगया।

* असलमें तारीख रह गई है परन्तु गुरुवार लिखा है। गुरुवारको ५ तारीख थी।

मांडोंकी हरियाली और फुलवार।

बादशाह लिखता है—"हरयाली और बनस्पतिकी बात क्या लिखी जाय सब पहाड़ और जंगल उससे छिप गये हैं। मालूम नहीं कि पृथ्वी पर शीतल वायु और सुन्दर छटावाली कोई जगह मांडोंके समान हो। विशेषकर बरसातमें रातको रजाई ओढ़नी पड़ती है और दिनमें पंखे या स्थान बदलनेकी जरूरत नहीं पड़ती। इस विषयमें जितना लिखा जाय, उसकी उत्तमताको देखते हुए थोड़ा है। यहां दो वस्तु ऐसी देखी गई जो हिन्दुस्थानमें मैंने कहीं नहीं देखी थीं। एक जङ्गली केले जो इस किलेके पासके जंगलों में उगे हुए हैं, दूसरे ममोले (खंजन) के घोंसले जिनका पता किसी चिड़ीमारने भी नहीं दिया था—जहां मैं रहता था वहीं उसका घोंसला था और दो बच्चे भी उसमें थे।

एतमादुद्दौलाको हाथी।

१८ (सावन सुदी ८) को तीसरे पहर बादशाह बेगमों सहित शक्करतालावके महल देखने गया जो पिछले पृथ्वीपतियोंके बनाये हुए हैं। रास्तेमें जगजोत नाम एक खासेका हाथी एतमादुद्दौलाको दिया। उसे पञ्जाबकी सूबेदारी पहले मिल गई थी पर हाथी नहीं मिला था जो सूबेदारको मिला करता था।

खास बादशाही कपड़े।

जहांगीर लिखता है—"नीचे लिखे कईएक कपड़े मैंने शाही पोशाकमें दाखिल कर दिये थे और हुक्म देदिया था कि वैसे कपड़े बनवाकर कोई न पहने। केवल वही लोग उन कपड़ोंको पहनने पावें जिनको मैं इनायत करूं—

१—दगला नादिरी—यह कबा * के ऊपर पहना जाता है। यह कमरसे नीचे जांघों तक लम्बा होता है। इसके आस्तीनें नहीं होतीं और इसका आंगा तुकमोंसे बांधा जाता है। विलायतमें इसका नाम करदी था मैंने नादिरी रखा।

* अचकन।

२—तूसी† शालका जामा जिसे मेरे पिताने शाही लिबासमें दाखिल किया था।

३—पट्टूकी कबा, जिसके गले और आस्तीनोंमें चिकनका काम हो। इसको भी मेरे पिताने अपने लिये रखा था।

४—हाशियेदार कबा, जिसके पल्लों गले और आस्तीनोंमें महरमात¶ के कपड़ोंकी धज्जियां काट काटकर सीगई हों।

५—गुजराती अतलसकी कबा।

६—रेशमी चीरे और पटके, जो चान्दी और सोनेके कलाबतून से बने हों।

सवारोंकी तनखाह।

महाबतखांके कुछ सवारोंका महीना दोअस्पा और तिअस्पाके नियमसे दक्षिणमें चाकरी देनेके वास्ते बढ़ाया गया था। वह काम उससे नहीं बना इसलिये बादशाहने दीवानोंको हुक्म दिया कि तनखाहकी बढ़तीके वह रुपये महाबतकी जागीरसे काटलिये जावें।

उत्सव और दीपमालिका।

२६ (भादों बदी १*) गुरुवार १४ शाबानको शबबरात थी। बादशाहने नूरजहां बेगमके एक महलमें जो बड़े बड़े तालाबोंके बीचमें था नूरजहांकी सजाई एक बड़ी मजलिसके लिये अमीरों और मुसाहिबोंको बुलाया। हुक्म दिया कि जिसे जो नशा पसन्द हो उसे वही दिया जावे। बहुत लोगोंने शराबके प्यालोंकी प्रार्थना की। बादशाहने फरमाया कि जो प्याले पियें वह अपने मनसब और दरजेसे बैठ जावें और उनके आगे नाना प्रकारके कबाब और

† तूस खुरासानके एक शहरका नाम है।

¶ महरमातके दो अर्थ हैं एक पूज्य स्त्रियां दूसरे पूज्य स्थान मक्के मदीने आदिमें बरता हुआ कपड़ा।

* गुरुवारको भादों बदी १ चण्डू पञ्चाङ्गसे हमने लिखी है। बादशाही पञ्चाङ्गसे तो इस दिन सावन सुदी १५ थी।

मेवे गज़क* के वास्ते रख दिये जावें। रात झोलेकी तालाबों और मकानों पर चिराग और फानूस लगा दिये गये थे। बड़ी सुन्दर दीपमालिका होगई थी। बादशाह लिखता है—"जबसे यह चाल चली है कहीं ऐसी दीपमालिका नहीं हुई होगी। सब चिरागों और फानूसोंका प्रतिबिम्ब पानीमें पड़नेसे ऐसा प्रतीत होता था कि मानों सारा तालाब अग्निका एक आंगन बन गया है। मजलिस खूब खिली हुई थी। प्याले पीनेवालोंने अपनी रुचिसे अधिक प्याले पिये। तीन चार घड़ी रात जाने पर मैंने सब लोगोंको बिदा करके रनवासको बुलाया और एक पहर रात तक इस सरस स्थानमें मौज उड़ाई।"

गुरुवार और बुधवारके शुभाशुभ नाम।

इस गुरुवारको कई विशेष बातें एकत्र होगई थीं जैसे कि—

एक तो मेरे राज्यसिंहासनारूढ़ होनेका दिन था। दूसरे शब-बरात थी। तीसरे राखी थी।

इसलिये मैंने इसका नाम मुबारकशंबा रखा और जैसा गुरुवार मेरे वास्ते शुभ हुआ वैसेही बुधवार अशुभ हुआ इससे उसका नाम कमशंबा रख दिया जिससे उस वार पृथिवीमें न्यून रहे।

महासिंहके बेटे जयसिंहका आना।

बादशाहने महासिंहके बेटे जयसिंहको बुलाया था वह इन्हीं दिनोंमें आया और हाथी नजर किया। यह बीस वर्षकी अवस्था में था।

नीलकुण्डकी शोभा।

२ शहरेवर गुरुवार (भादों बदी ८।९) को बादशाह एक पहर तीन घड़ी दिनसे नीलकुंडको गया वहांसे ईदगाहके टीलेपर आया। चम्पा और दूसरे जङ्गली फ़ूल खूब खिले हुए थे जिधर नजर पड़ती थी उधरही हरियाली और फुलवार दिखाई देती थी। एक पहर रात गये राजभवनमें आगया।

* मद्यपानके साथ साथ खानेकी चटपटी चीजें।

केलेकी मिठाई।

बादशाह सुना करता था कि जङ्गली केलेसे एक प्रकारकी मिठाई निकलती है जिसको साधु और गरीब लोग खाया करते हैं। बादशाहने उसको खोज की तो पता लगा कि जहांसे केला निकलता है वहां एक काड़ी गांठ बंधी हुई होती है जिसका स्वाद फालूदेके समान फीका होता है लोग उसे खाकर उसके स्वाद से सन्तुष्ट होते हैं।

पत्र पहुंचानेवाले कबूतर।

बादशाह लिखता है—"पत्र पहुंचानेवाले कबूतरोंके विषयमें भी बहुत कुछ सुना गया था। अब्बासी खलीफाओंके समयमें बगदादी कबूतरोंको जो नामाबर कहलाते थे और जङ्गली कबूतरोंसे ओछे होते थे यह काम सिखाया जाता था। मैंने कबूतरबाजोंसे कहा कि इन जङ्गली कबूतरोंको भी सिखावें। उन्होंने कई जोड़ोंको ऐसी सिखादी कि जब हम उनको मांडोंसे उड़ाते थे तो बरसातमें दोपहरमें बुरहानपुर पहुंचते थे और जो बादल नहीं होते तो बहुधा कबूतर एक पहर और कोई कोई तो चार घड़ीहीमें पहुँच जाते थे।*

आदिलखांको पुत्र पदवी।

२ (भादों बदी १०) को शाह खुर्रमकी अर्जी पहुँची कि अफजलखां रायरायां और आदिलखांके दूत आये रत्नोंके जड़ाऊ पदार्थों और हाथियोंकी भेट लाये। वसी भेट भी नहीं आई थी। आदिलखांने अच्छी सेवाकी और अपने वचनको पूरा किया अब उसके लिये पुत्र पदवी और वह कृपा होनी चाहिये जो अबतक नहीं हुई थी। बादशाहने शाह खुर्रमकी बात मान कर मुंशियोंको आदिलखांका अलकाब

* सुना है कि जोधपुर और नागोरमें भी महाराजा बख्तसिंहजी और विजयसिंहजीके हुक्मसे उपाध्या जातिके पुष्करना ब्राह्मण कबूतरोंसे यह काम लेते थे।

सवाया करके पुत्रकी उपमासे फरमान लिखनेकी आज्ञा दी और उसके सिरे पर अपनी लेखनीसे लिखा—"तू शाह खुर्रमकी प्रार्थना से हमारा पुत्र होकर जगतमें विख्यात हुआ।

४ (भादों बदी ११) को यह फरमान लिखाकर नकल सहित खुर्रमके पास भेजा गया कि वह नकल देखकर असल आदिलखांके पास भेज दे।

आसिफखांके डेरे पर जाना।

८ गुरुवार (भादों बदी ३०) को बादशाह बेगमों सहित आसिफ खांके डेरे पर गया जो एक स्वच्छ और सुहानी घाटीमें था। उसके पास और भी कई घाटियां थीं जहां पानीके झरने थे और आम आदि हरे भरे वृक्षोंकी छाया थी। दो तीन सौ केवड़े भी एक घाटीमें फूले हुए थे। यह दिन बड़ी प्रफुल्लतामें निकला। मद्य-पानकी मजलिस भी जड़ी। बादशाहने अमीरों और मुसाहिबों को प्याले दिये। आसिफखांने भेट दिखाई। उसमेंसे कुछ चीजें बादशाहने पसन्द करके लेलीं शेष फेर दीं।

राजा पेमनारायणको मनसब।

गढ़के जमींदार राजा पेमनारायणको हजारी जात और पांच सौ सवारोंका मनसब मिला। और जागीरकी तनखाह भी उसीके वतनमें लगाई गई।

राजा सूरजमलकी प्रतिज्ञा।

१२ (भादों सुदी ३) को खुर्रमकी अर्जी पहुंची कि राजा बासू का बेटा सूरजमल जिसका राज्य कांगड़ेके पास है प्रतिज्ञा करता है कि मैं एक वर्षके अन्दर कांगड़ेका किला बादशाही अधिकारमें करा दूंगा। शाहजादेने उसका प्रतिज्ञापत्र भी लिखाकर भेज दिया था। बादशाहने जवाबमें लिखा कि उसकी बातोंको समझकर उसे यहां भेज दो। वह अपने मनोरथोंका साधन करके उस काम पर चला जावे।

रौशनआरा ।

इसी दिन रमजानकी पहली ¶ तारीख और रविवार था । चार घड़ी ७ पल दिन चढ़े आसिफखा की पुत्रीसे खुर्रमके एक लड़की पैदा हुई जिसका नाम रौशनआरा रखा गया ।

जमीन्दार जैतपुर पर चढ़ाई ।

जैतपुरका जमीन्दार मांडौके पास रहने पर भी बादशाहकी सेवामें नहीं आया था इसलिये बादशाहने फिदाईखांको कई मनसबदारों और चार पांच सौ बन्दूकचियों सहित उसके देश पर धावा करनेकी आज्ञा दी ।

जयसिंहको मनसब ।

१६ (भादों सुदी ७) को राजा महासिंहके बेटे जयसिंहको जो १२ वर्ष* की अवस्थामें था हजारी जात और पांचसौ सवारोंका मनसब मिला ।

भोज भदौरिया ।

राजा विक्रमाजीत भदौरियाके बेटे भोजने बापके मरे पीछे दक्षिणसे आकर मुजरा किया और एकसौ मोहरें भेट कीं ।

राजा कल्याण ।

भादों सुदी ८ को अर्ज हुई कि राजा कल्याण उड़ीसासे आकर मुजरा करनेके विचारमें है । परन्तु उसकी कुछ बुरी बातें बादशाहके सुननेमें आई थीं इसलिये वह पुत्रसहित आसिफखांको उन बातोंका निर्णय करादेनेके लिये सौंपा गया ।

¶ चण्डू पञ्चाङ्गके अनुसार १ रमज़ान शनिको थी ।

* तुजुकके पृष्ठ १८१ में जयसिंहकी उमर बीस वर्षकी और यहां १२ वर्षकी लिखी है दोनोंमें कौन सच्ची है इसका निर्णय प्राचीन जन्मपत्रियोंके संग्रहमें किया गया तो जयसिंहका जन्म आषाढ़ बदी १ सं० १६६१ को होना पाया गया । इस लेखसे उसकी अवस्था बारह वर्षकी ही थी । बीस वर्ष लिखना भूल है ।

जयसिंहको हाथी।

१९ (भादों सुदी १०) को बादशाहने जयसिंहको हाथी दिया।

केशव मारू।

२० (भादों सुदी ११) को केशव मारूका मनसब बढ़कर दो हजारी जात और बारह सौ सवारोंका होगया।

अहदाद पठान।

२३ (भादों सुदी १४) को बादशाहने अहदाद पठानको रशीद-खांका खिताब और खासा परम नरम दिया।

राजा कल्याणको हाथी।

राजा कल्याणसिंहकी ओरसे १८ हाथी नजर हुए जिनमेंसे सोलह तो बादशाहने निज गजशालामें भेजे और दो उसीको लौटा दिये।

जैतपुर पर चढ़ाई।

२५ (आश्विन बदी २) को फिदाईखां सिरोपाव पाकर अपने भाई रुहुल्लह और दूसरे मनसबदारोंके साथ जैतपुरके जमीन्दारको दण्ड देनेको बिदा हुआ।

नर्मदाको जाना।

२८ (आश्विन बदी ५) को बादशाह बेगमों सहित किलेसे उतर कर नर्मदाको देखने और शिकार खेलनेको गया। दो मञ्जिलोंमें वहां पहुंचा। परन्तु मच्छरों और खटमलोंके मारे एक रातसे अधिक न रह सका। दूसरे दिन ताराएुरमें आगया और आश्विन बदी ८ शुक्रवारको लौट आया।

राजा कल्याणकी भेंट।

राजा कल्याण आसिफखांकी तहकीकातमें निर्दोष निकला इसलिये २ महर (आश्विन बदी १०) को उसका मुजरा हुआ उसने इतने पदार्थ भेंट किये।—

१ मोतियोंकी एक लड़ जिसमें ८० मोती थे।

२ लाल दो।

२ एक लाल और दो मोतियोंकी पहुंची।
३ जवाहिरातका एक जड़ाऊ घोड़ा।

जैतपुरमें जीत।

फिदाईखांकी अर्जी पहुंची कि जैतपुरका जमींदार बादशाही फौजके सामने न ठहर सका भाग गया। उसकी विलायत लुट गई। अब वह अपने कियेको पछताकर सेवामें उपस्थित हुआ चाहता है। रूहुल्लह उसके पीछे गया है। या तो उसको पकड़ कर दरगाहमें ले आवेगा या नष्ट करदेगा। उसकी स्त्रियां जो पड़ौसके जमींदारोंके यहां चली गई थीं पकड़ी जाचुकी हैं।

मोखा बन्दरके अनार।

८ (आश्विन सुदी १) को ख्वाजा निजाम १४ अनार मोखाबंदर के लाया जो चौदह दिनमें सूरत पहुंचे थे और आठ दिनमें वहांसे मांडोमें आये थे। बादशाह लिखता है—"यह अनार ठट्ठेके अनारों से बड़े हैं ठट्ठेके अनारोंमें गुठली नहीं होती इनमें है। कोमल हैं रस ठट्ठेके अनारोंसे अधिक है।"

जैतपुर।

६ (आश्विन सुदी २) को समाचार मिला कि रूहुल्लह एक गांव में पहुंचकर और यह सुनकर कि जैतपुरवालोंकी स्त्रियां और कुछ संबंधी यहां हैं वहां ठहर गया और गांव वालोंको बुलाया। वह हथियार खोलकर कुछ लोगों सहित एक गलीचे पर बैठा था कि एक घातकने उसके पीछे आकर बरछा मारा जो उसकी छातीके पार होगया। बरछेके खेंचतेही रूहुल्लहकी रूह भी खिंच गई जो लोग वहां थे उन्होंने उस घातकको भी मार डाला। फिर सब हथियार बांधकर उस गांवमें गये और शत्रुओंको रखनेके अपराधमें सबको घड़ी भरमें काट छांटकर स्त्रियों तथा लड़कियोंको पकड़ लाये। गांवमें आग लगादी जिससे राखकी ढेरीके सिवा और कुछ न रहा। फिर रूहुल्लहकी लाश लेकर फिदाईखांके पास आये। रूहुल्लहकी वीरतामें तो कुछ कसर न थी पर गफलतसे मारा गया।

जब उस विलायतमें कुछ बस्ती न रही तो वहांका जमीन्दार पहाड़ों और जंगलोंमें जाछिपा और दूत भेजकर फिदाईखांसे अपराध क्षमा करा देनेको कहलाया। बादशाहने हुक्म दिया कि उसको बचन देकर दरगाहमें ले आवें।

हरभान जमीन्दार चन्द्रकोटा।

मुरव्वतखांने चन्द्रकोटेके जमीन्दार हरभानको नष्ट करनेकी प्रतिज्ञा की जो मुसाफिरोंको सताया करता था। इस पर उसका मनसब दो हजारी जात और पन्द्रह सौ सवारोंका होगया।

राजा सूरजमल।

१३ (आश्विन सुदी ५) को राजा सूरजमलने खुर्रमके बखशी तकीके साथ उपस्थित होकर अपने मनोरथ निवेदन किये उनका साधन उस सेवाके वास्ते जो उसने स्वीकार की थी अच्छी तरहसे होगया और खुर्रमकी प्रार्थनाके अनुसार उसको झण्डा और नक्कारा दिया गया। तकीको भी जो उसके साथ जानेके लिये नियत हुआ था जड़ाऊ खपवा मिला। हुक्म हुआ कि अपने काम का प्रबन्ध करके शीघ्रही कूच कर जावे।

सूरजमलका कांगड़े जाना।

१७ (आश्विन सुदी १०) को बादशाहने राजा सूरजमलको हाथी सिरोपाव जड़ाऊ खपवा और तकीको सिरोपाव देकर कांगड़ेको बिदा किया।

खुर्रमका दक्षिणसे कूच।

शाह खुर्रमके दूत आदिलखांके वकीलों और उसकी भेजी हुई भेटको लेकर बुरहानपुरमें आये और उसका चित्त दक्षिणके कामों से निश्चिन्त होगया तो उसने बराड़, खानदेश और अहमदनगरको सूबेदारी सेनापति खानखानांके वास्ते बादशाहसे मांगकर उसके बेटे शाहनवाजखांको जो जवान खानखाना था बारह हजार सवारोंसे नये जीते हुए देशोंकी रक्षाके लिये भेजा। प्रत्येक ठौर और स्थानोंको विश्वासपात्र पुरुषोंको जागीरमें देकर वहांका प्रबन्ध

जैसा उचित था कर दिया। जो सेना उसके साथ थी उसमेंसे तीस हज़ार सवारों और सात हजार बन्दूकची पदातियोंको वहां छोड़ कर शेष पच्चीस हजार सवारों और दो हजार तोपचियोंके साथ पिताकी सेवामें उपस्थित होनेके लिये कूच किया।

खुर्रमका दक्षिण विजय करके आना।

बादशाह लिखता है—"मेरे राज्यशासनके बारहवें वर्ष २० महर गुरुवार ११ शव्वाल सन १०२६ हिजरी (आश्विन सुदी १३ संवत् १६७३) को तीन पहर एक घड़ी दिन व्यतीत होने पर मांडोके किलेमें खुर्रम कुशल और विजय पूर्वक पन्द्रह महीने ग्यारह दिन का वियोग रहनेके पीछे सेवामें उपस्थित हुआ। जब "कोरनिश" और "जमीं बोस" विधि पूर्वक कर चुका तो मैंने उसको झरोके पर बुलाया। अति स्नेह और अनुराग वश अपनी जगहसे उठकर छातीसे लगाया। वह जितना कुछ विनय और नम्रतामें अग्रह करता था उतनाहीमें कृपा और अनुग्रहमें बढ़ता जाता था। मैंने उसको अपने पास बैठनेका हुक्म दिया। उसने एक हजार मोहरें और १०००) रुपये नजर तथा एक हजार मोहरें और १०००) रुपये न्योछावर किये। उस समय इतना अवकाश न था कि वह अपनी सारी भेंट दिखाता। इसलिये "सर-नाक" नामक हाथी जो आदिलखांकी भेटके हाथियोंमें शिरोमणि था, उत्तम रत्नोंकी पेटीके साथ भेट किया। फिर बख्शियोंको हुक्म हुआ कि जो अमीर उसके साथ आये हैं वह मनसबोंके क्रमसे सेवामें आवें। पहले खानजहां उपस्थित हुआ। मैंने उसको ऊपर बुलाकर पद्मकमलोंके चूमनेका मान प्रदान किया। उसने एक हजार मोहरें २०००) रुपये रत्नों और जड़ाऊ पदार्थोंकी पेटी सहित भेट किये। उसमेंसे जो मैंने स्वीकार किये उनका मूल्य ४५०००) था।"

फिर अबदुल्लहखांने चौखट चूमकर एक हजार मोहरें नजर कीं उसके पीछे महावतखांने जमीन चूमकर एक सौ मोहरें एक हजार रुपये और एक गठड़ी रत्नों तथा जड़ाऊ पदार्थोंकी भेट की। वह

एक लाख २४ हजार रुपयेके आंके गये। उनमें एक लाल ११ मिसकाल (४९॥ रत्ती) का है जिसको पिछले वर्ष अजमेरमें एक फरंगी लाया था। दो लाख मूल्य मांगता था जौहरी ८० हजार देते थे इससे सौदा नहीं बना था। फिर वह बुरहानपुरमें गया और महाबतखांने एक लाख रुपयेमें उसको लेलिया।

फिर राजा भावसिंहने सेवामें आकर १ हजार रुपये कुछ रत्न और कुछ जड़ाऊ पदार्थ भेट किये।

ऐसेही खानखानांका बेटा दाराबखां, अबदुल्लहखांका भाई, सरदारखां, शुजाअतखां अरब, दियानतखां, मोतमिदखां बखशी, और उदाराम, जो निजामुलमुल्कके श्रेष्ठ सरदारोंमें थे और खुर्रमके वचन देनेसे शुभचिन्तकोंकी श्रेणीमें प्रविष्ट हुए थे और दूसरे अमीर अपने अपने मनसबोंके क्रमसे मुजरा करनेको आये।

इनके पीछे आदिलखांके वकीलोंने जमीन चूमकर उसकी अरजी पेश की।

इससे पहिले रानाको विजय करनेके प्रसादमें बीस हजारी जात और १० हजार सवारोंका मनसब इस उग्रभागी पुत्रको मैंने प्रदान किया था और जब दक्षिण जीतनेको जाता था तो शाह की पदवी दी थी अब इस उत्तम सेवाके बदलेमें मैंने तीस हजारी जात और बीस हजार सवारोंका मनसब और शाहजहांका खिताब इनायत फरमाया और हुक्म दिया कि अबसे दरबारमें एक चौकी सिंहासनके पास रखदी जाय जिस पर यह पुत्र बैठा करे। यह एक कृपा इसीके वास्ते कीगई जो पहिले हमारे वंशमें प्रचलित न थी।

५० हजार रुपयेका एक खासा खिलअत जिसमें ४ कुब्ब (पान) जरीके सिले हुए थे और जिसके गले, बांहों, और पल्लोंमें, मोती टके हुए थे, जड़ाऊ तलवार जड़ाऊ परतला और जड़ाऊ कटार उसको दिया और उसका मान बढ़ानेके लिये झरोकेसे नीचे आकर एक थाल जवाहिरातका और एक मोहरोंका उसके ऊपर

न्यौछावर किया। "सरनाक" हाथीको पास मंगाकर देखा निस्संदेह उसके जो गुण सुने थे सब ठीक थे। डीलडौल सुंदरता और सजीलेपनमें पूरा था। ऐसी छबिका हाथी कम देखा था। मेरी आंखोंको बहुतही भला लगा। इसलिये मैं स्वयं सवार होकर उसे खास दौलतखानेके भीतर तक लेगया और कुछ रुपये भी उस पर न्यौछावर किये। हुक्म दिया कि दौलतखानेमेंही बंधा करे। उसका नाम नूरबख्त रखा गया।

बगलाणेका भरजीव।

"कार्तिक बदी २ चन्द्रवार¹को बगलाणेके जमींदार भरजीवने आकर प्रणाम किया बादशाह लिखता है—"इसका नाम प्रताप है। जो कोई वहांका राजा होता है उसको भरजीव कहते हैं। बगलाणेकी विलायत गुजरात खानदेश और दक्षिणके बीचमें है। इस देशमें पानीके झरने अच्छे हैं। पानी बहुत बहता है। यहां आम अत्यंतरसीले और बड़े होते हैं। ८ महीने तक मिलते है। अंगूर भी बहुत होते हैं परन्तु उत्तम नहीं होते। यह राजा गुजरात दक्षिण और खानदेशके हाकिमोंसे मेल तो रखता था पर आज तक किसी के पास नहीं गया था। जब गुजरात दक्षिण और खानदेशमें स्वर्गवासी हजरत†का अधिकार हुआ तो यह बुरहानपुरमें उपस्थित होकर सेवकोंमें शामिल हुआ था। उसे तीन हजारी जातका मनसब मिला था। अब जो शाहजहां बुरहानपुरमें पहुंचा तो ११ हाथी भेट करके मिला और उसीके साथ दरबारमें आकर अपनी भक्तिके अनुसार राजकीय कृपासे सन्मानित हुआ। जंडाऊ खङ्ग, हाथी, घोड़ा और खिलअत तो मिलाही था कई दिन पीछे तीन अंगूठियां लाल हीरे और याकूतकी भी मैंने उसको दीं।"

नूरजहांका उत्सव।

२७ (कार्तिक बदी ५) गुरुवारको नूरजहां बेगमने दक्षिणकी विजयका उत्सव करके शाहजहांको इतने दिव्य पदार्थ दिये—

¹ मूलमें इस दिन शुक्रवार लिखा है सो गलत है।

† अकबर बादशाह।

बहुमूल्य सिरोपाव नादिरी सहित जिसमें रत्नों और मोतियोंके फूल टके थे, रत्नोंका जड़ाऊ सरपेच मोतियोंके तुर्रेको पगड़ी मोती की लड़ियोंका पटका, तलवार जड़ाऊ परतलेको फूलकटारे सहित, दो घोड़े जिनमेंसे एक जड़ाऊ जीनका था एक खासा हाथी दो हथ-नियां, इसीप्रकार बहुतसे सुनहरी सजावटोंके जोड़े और कपड़े उसको स्त्रियोंको भी दिये। भड़कीले वस्त्र और रत्न जड़ित शस्त्र इसके प्रधान पारिषदोंको प्रदान किये। इस महोत्सवमें सब मिला कर ३ लाख रुपये लगे थे

महाबतखांको काबुल।

खांनदौरां बहुत बूढ़ा हो गया था इस लिये बादशाहने इसको ठट्ठेमें बदल कर महाबतखांको काबुल और बंगशकी सूबेदारी दी। वहां सदा पठानोंका उपद्रव रहनेसे बराबर दौड़ धूप करना पड़ती थी।

४८ हाथियोंकी भेट।

इब्राहीमखां फतहजंगने बिहारसे ४८ हाथी भेजे थे वह भेट हुए।

मोनकेले।

बादशाह लिखता है—"इन दिनों मोनकेले मेरे वास्ते आये जो आज तक मैंने कभी नहीं खाये थे। लंबाईमें एक उंगलके लगभग हैं कुछ मीठे और मजेदार हैं। अन्य प्रकारके केलोंसे इनकी कुछ तुलना नहीं है पर बादी हैं। मैंने दो खाये थे पेटमें बोझ मालूम हुआ। लोग तो कहते हैं कि ७।८ तक खाना चाहिये। वास्तवमें केला खाने योग्य नहीं है, परन्तु उसकी अनेक जातियोंमेंसे अगर कुछ खाने लायक है तो यही मोनकेला है।

गुजरातके आम।

मुकर्रबखां गुजरातके आम २३ महर (कार्तिक बदी १) तक डाकचौकीमें भेजता रहा।

ऊदाराम दक्षिणी।

३[1] आबान (कार्तिक बदी १२) गुरुवारको बादशाहने ऊदारामको तीन हजारी जात और पन्द्रहसौ सवारोंका मनसब दिया। यह ब्राह्मण अंबरके पास बड़ी इज्जतसे रहता था। जब शाहनवाजखांने अंबर पर चढ़ाईकी तो आदमखां हबशी, जादूराय, बाबू राय कायस्थ, और ऊदाराम आदि निजामुलमुल्कके कई सरदार अंबरको छोड़ कर शाहनवाजखांके पास चले आये थे। अंबरकी हार होने पर यह लोग आदिलखांके कहने और अंबरके धोखेमें आकर बादशाही नौकरी छोड़ बैठे। अंबरने आदमखांको तो कुरानकी कसम खाकर बुलाया और छलसे पकड़ कर मारडाला। बाबू राय और ऊदाराम निकल कर आदिलखां की सीमामें आये पर उसने आने न दिया। बाबू राय कायस्थ तो उन्हीं दिनोंमें अपने एक मित्रके धोखेसे मारा गया। ऊदाराम पर अंबरने सेना भेजी जिसको वह हरा कर बादशाही सीमामें आ गया और बचन लेकर अपने बालबच्चों भाई बन्दोंको भी ले आया। शाहजहां उस को ३ हजारी जात और हजार सवारके मनसब दिलानेकी प्रतिज्ञाकर अपने साथ लेआया। बादशाहने ५०० सवार अधिक दिये।

शाहजहांकी भेट।

१० (कार्तिक सुदी ४) बृहस्पतिवारको शाहजहांने अपनी भेट बादशाहको दिखाई। जवाहिरात, जड़ाऊ चीजें और सब बहुमूल्य द्रव्य झरोखेके चौकमें सजाये गये थे। हाथी और घोड़े सोने चांदीके साजोंसे सजे हुए बराबर बराबर खड़े थे।

बादशाह लिखता है कि "मैंने शाहजहांका मन प्रसन्न करनेके लिये झरोखेसे उतर कर सब चीजें ब्यौरेवार देखीं। उनमें एक सुन्दर लाल है जो शाहजहांके लिये गोवा बंदरमें २ लाखको मोल

[1] तुजुक जहांगीरीमें इस दिन १३ आबान गलत लिखी है ३ चाहिये।

लिया गया था। तौलमें १८ टांक २। रती है। मेरी सरकारमें कोई लाल १२ टांकसे अधिक न था। जौहरियोंने उसका वही मूल्य स्वीकार किया।

(२) एक नीलम आदिलखांकी भेटमेंसे ६ टांक ७ रतीका है अब तक इतना बड़ा और ऐसे रंग रूपका नीलम नहीं देखा गया था।

(३) चमकोड़ा हीरा आदिलखांकी भेटमेंसे १ टांक ६ रतीका है। इसका मोल ४० हजार बताया गया है। दक्षिणमें चमकोड़ा एक सागका नाम है। जब मुरतिजा निजामशाहने बरारका देश जीता था तो एक दिन स्त्रियों सहित बागमें गया। वहां एक युवतीने चमकोड़के सागमें इस हीरेको पड़ापाया। उस दिनसे इसका नाम चमकोड़ा हुआ। अहमदनगरका राज छिन्न भिन्न होने पर इब्राहीम आदिलखांॐके हाथ आया।

(४) एक पन्ना अदिलखांकी भेटमेंसे है जोनिकला तो नई खांनमेंसे है पर इतना सुरङ्ग और स्वच्छ है कि वैसा अब तक देखनेमें नहीं आया था।

(५) दो मोती एक तो ६४ रत्ती भरका है पचीस हजार रुपये उसका मोल ठहरा और दूसरा १६ रती भरका बहुत चमकीला और उज्वल है इसका मोल बारह हजार रुपये हुआ।

(६) कुतुबुल्मुल्कको भेटमेंसे एक हीरा एक टांक भरका जो पचीस हजार रुपयेका आंका गया।

(७) १५० हाथी जिनमें ३ के साज नो सांकलों तक सोनेके और ८ के चांदीके थे। उनमेंसे २० हाथी लिये गये जिनमें ५ बहुत बड़े और बिख्यात हैं।

नूरवखत् कि जिसको शाहजहांने पहिले दिन भेट किया था सवा लाखका आंका गया।

ॐ बीजापुरपति।

महीपति—आदिलखांका भेजा हुआ जिसका मोल मैंने १ लाख रुपये नियत करके दुर्जनसाल नाम रखा।

बखत्बलन्द—यह भी आदिलखांकी ही भेटमेंका है एक लाख रुपयेका आंका गया। मैंने इसका नाम "गरांबार" रखा।

चौथे और पांचवें हाथीका नाम कद्दूमखां और इमामरजा था।

(८) एक सौ अर्वी और इराकी घोड़ें जिनमें ३ जड़ाऊ साजदार हैं।

शाहजहांने जो भेट अपनी, और दक्षिणके दुनियादारोंसे ली हुई बादशाहको दिखाई थी बहुत बडी थी। उसमेंसे जो बादशाहने छांट करली वह २० लाख रुपयेकी थी। २ लाख रुपये की भेट उसने अपनी मा नूरजहांको दी। ६००००) की भेट दूसरी माताओं और बेगमोंको दी। सबका मूल्य २२ लाख ६० हज़ार रुपये हुआ। बादशाह लिखता [illegible] भेट कभी इस राज्यमें नहीं देखी गई थी।

गुजरातको कूच।

१२ (कार्तिक सुदी ५) शुक्रवारको बादशाहने अपनी माता और बेगमोंको तो सब कारखानोंके साथ आगरे भेजा और आप रातको अहमदाबाद और समुद्रकी शोभा देखने तथा लौटते हुए हाथियोंका शिकार खेलनेके विचारसे गुजरातको रवाना हुआ मांडोसे उतर कर नालछेमें ठहरा।

महाबतखां।

शनिवारकी रातको महाबतखांको काबुल जानेकी आज्ञा हुई घोड़ा और खासा हाथी चलते समय मिला।

कल्याण टोडरमलका बेटा।

राजा टोडरमलका बेटा कल्याण उड़ीसेसे आकर कई दिनों तक दरबारमें आनेसे विमुख रहा था क्योंकि उस पर कई दोष लगाये गये थे। परन्तु निर्णय होने पर निर्दोष निकला। बादशाह ने घोड़ा और खिलअत देकर उसे महाबतखांके साथ बंगशमें भेजा।

आदिलखांके वकील।

सोमवारको आदिलखांके वकीलोंको जड़ाऊ तुर्रे दक्षिणी चालके मिले। एक पांच हजार और दूसरा चार हजारका था।

रायरायांको विक्रमाजीतकी पदवी।

दक्षिणमें अच्छा काम करनेसे बादशाहने शाहजहांके वकील अफजलखां और रायरायांके मनसब बढ़ाये। रायरायांको विक्रमाजीतकी पदवी दी। बादशाह लिखता है—"हिन्दुओंमें यह उत्तम पदवी है और रायरायां अच्छा बन्दा कदर करनेके योग्य है।"

इसी दिन बादशाह ४॥ कोस चलकर गांव केदहसनमें ठहरा। १५ (कार्त्तिक सुदी ८) मङ्गलको बादशाहने १२ मनकी एक नील गाय मारी। दूसरे दिन डेरोंके पास पहाड़की घाटीमें एक नदी पर जो बीस गजकी ऊंचाईसे गिरती थी जाकर दारू पी और रातको लशकरमें आगया।

जैतपुरका जमींदार।

शाहजहांकी प्रार्थनासे जैतपुरके जमींदारके अपराध क्षमा किये गये थे। वह बादशाहकी सेवामें उपस्थित हुआ।

हासिलपुरमें जाना।

बादशाह तीन कोस पर हासिलपुरमें शिकारकी बहुतायत सुनकर बड़े लशकरको वहीं छोड़कर २० (कार्त्तिक सुदी १५) उधर गया।

काबुलके अंगूर।

हुसैनी नामके बिना गुठलीके अंगूर काबुलसे आये। खूब ताजा थे। बादशाह लिखता है कि मेरी जीभ परमेश्वरका गुणानुवाद करनेमें असमर्थ है कि ३ महीनेका रास्ता होने पर भी काबुलके ताजा अंगूर दक्षिणमें पहुंचते हैं।

प्याले।

२४ (अगहन बदी ४) वृहस्पतिवारको हासिलपुरके तालाब पर

बादशाहने सभा सजाकर शाहजहां और बड़े बड़े अमीरोंको प्याले दिये। यूसुफखांका मनसब तीन हज़ारी जात और पन्द्रहसौ सवारोंका करके उसको गोंडवानेकी फौजदारी पर भेजा।

राय बिहारीदास।

दक्षिणके सूबेका दीवान बिहारीदास दरबारमें आया।

बाईस गज पर गोली।

बादशाहने कुरीशा नामक पक्षीको वृक्ष पर बैठा देखकर बंदूक मारी। गोली बाईस गज पर लगी पक्षीकी केवल कुछ छाती दिखती थी।

कमालपुर।

२६ (अगहन बदी ६) शनिवारको बादशाह दो कोस चलकर कमालपुरमें उतरा।

गोंडोंकी भेंट।

शाहजहांका नौकर रुस्तमखां बुरहानपुरसे गोण्डवानेके जमींदारों पर भेजा गया था। वह ११० हाथी और एक लाख बीस हज़ार रुपये लेकर दरबारमें उप[illegible] हुआ।

दांतवाली दो [illegible]यां।

१ आज़र (अगहन बदी १०) बुधवारको काश्मीरके समाचार पत्रसे विदित हुआ कि एक रेशम बेचनेवालेके घरमें दो लड़कियां जन्मीं जिनके मुंहमें दांत थे पीठसे कमर तक जुड़ी हुई थीं। परन्तु सिर हाथ और पांव दोनोंके अलग अलग थे कुछ समय तक जीती रहकर मर गईं।

गुरुवारको एक तालाव पर डेरे होकर प्यालोंकी मजलिस जुड़ी। आदिलखांके वकीलोंकी पांचसौ तोलेकी एक सुन्दर टो[illegible] गई। शुक्रवारको साढ़े चार कोस चलकर परगने दकनामें डेरे लगे। शनिवारको भी इतनाही कूच होकर धारमें मुकाम हुआ।

धार।

बादशाह लिखता है—"धार पुराने शहरोंमेंसे है। सुप्रसिद्ध

राजा भोज यहीं रहता था। उसके समयसे एक हजार वर्ष व्यतीत हुए हैं। मालवेके बादशाह भी बहुत वर्षोंतक धारमें रहे। सुलतान मुहम्मद तुगलक जब दक्षिण विजय करनेको जाता था तो उसने यहां छिले हुए पत्थरोंका क़िला एक टीलेपर बनाया जो बाहरसे तो बहुत सुन्दर है परन्तु भीतर सूना है। मैंने लम्बाई चौड़ाई मापनेका हुक्म दिया तो क़िला भीतरसे लंबा १२ जरीब ७ गज और चौड़ा ७ जरीब १३ गज हुआ। कोटकी चौड़ाई १८। गज और ऊंचाई कंगूरों तक १७॥ गज निकली। किलेके बाहरका भाग पचास जरीबका था।

अमीदशाह गोरी जिसका दिलावरखां खिताब था दिल्लीके बादशाह सुलतान फीरोजके बेटे सुलतान मुहम्मदके समयमें मालवेका स्वतन्त्र सूबेदार था। उसने किलेके बाहरकी बस्तीमें जामा मसजिद बनाई थी जिसके सामने लोहेकी एक लाठ गाड़ी थी। जब सुलतान बहादुर गुजरातीने मालवेको अपने अधीन किया तो इस लाठको गुजरातमें लेजाना चाहा। पर कर्मचारियोंने उखाड़ते समय सावधानी नहीं रखी जिससे जमीन पर गिरकर उसके ७॥ गज और ४। गजके दो टुकड़े होगये। बाकी सवा गज़की है यह टुकड़े वहां योंही पड़े थे इस लिये मैंने हुक्म दिया कि बड़े टुकड़ेको आगरेमें लेजाकर स्वर्गवासी श्रीमानके रौजेमें खड़ा करदें और रातको दीपक उस पर जला करे।†

इस मसजिदके दो दहलीजें हैं। एकके ऊपर यह लेख खुदा है कि अमीदशाह गोरीने सन् ८७० में यह मसजिद बनाई और दूसरीके ऊपर कवितामें भी यही वर्ष खुदा हुआ है।

जब दिलावरखां मरा तो उस समय हिन्दुस्थानमें कोई प्रबल

---

† अब यह लोहेकी लाठ अकबर बादशाहके रौजेमें नहीं है जो आगरेके पास सिकन्दरेमें है। उसके दोनों टुकड़े धारमेंही हैं बड़ा तो अपनी जगहही पड़ा है और दूसरा एजेण्टकी कोठीमें खड़ा है धारके लोग इसको तेलीकी लाठ कहते हैं।

बादशाह न था और अफरातफरीके दिन थे। इसलिये दिलावर खांका बेटा होशंग जो योग्य और साहसी था अवसर पाकर मालवे के सिंहासन पर बैठ गया। उसके मरने पर यह राज्य उसके वजीर "खानजहां" के बेटे महमूद खिलजीके हाथमें चला गया। उससे उसके बेटे गयासुद्दीनको मिला। उसको विष देकर उसका बेटा नासिरुद्दीन गद्दी पर बैठा। उसके पीछे उसका बेटा महमूद उत्तराधिकारी हुआ। उससे सुलतान बहादुर गुजरातीने मालवा छीन लिया और मालवेके बादशाहोंकी परम्परा नष्ट होगई।

जदाराम।

६ (अगहन बदी १४) सोमवारको बादशाहने जड़ाऊ तलवार, एक सौ तोलेकी मोहर और बीस हजार दरब जदारामको दिये।

सादलपुर।

बादशाह ४॥ कोस चलकर सादलपुरमें ठहरा। इस गांव में एक नदी है जिसपर नासिरुद्दीन खिलजीने पुल बांधकर कालियादहके समान विलासभवन बनाये थे। बादशाहने रातको उस नदी और उसके कुण्डों पर दीपमालिका कराई।

शाहजहांको लाल और मोती।

८ (अगहन सुदी २) गुरुवारको प्यालोंकी मजलिस हुई। बादशाहने एक लाल और दो मोती शाहजहांको दिये। लाल पचीस हजार रुपयेका ८ टांक और ५ रत्ती भरका था। बादशाह लिखता है—"यह लाल मेरे जन्मकालमें मेरी दादीने मेरो मुंह दिखाईमें दिया था। वर्षों तक मेरे पिताके सरपेचमें रहा। उनके पीछे मैंने भी सरपेचहीमें रखा था। बहुमूल्य और सुन्दर होनेके सिवा यह इस राज्यके वास्ते शुभ भी रहता आया है इसीलिये शाहजहांको दिया गया।"

जदाराम दक्षिणमें।

इसी दिन बादशाहने खिलअत हाथी और इराकी घोड़े देकर

जदारामको दक्षिणमें नियत किया और उसके हाथ एक खास सुन-हरी कटार खानखानांके वास्ते भी भेजा।

केशव मारू।

११ (अगहन सुदी ४) शनिवारको ४। कोसका कूच होकर गांव जलोतमें और दूसरे दिन पांच कोस पर मदलोरमें डेरे हुए। बादशाह लिखता है—"यह परगना मेरे पिताके समयसे केशवदास मारूकी जागीरमें है और उसके वतनके समान होगया है उसने बाग और भवन बनाये हैं। उनमेंसे एक बावली जो रास्ते पर है बहुत सुन्दर और सजीली बनी है। मेरी समझमें अगर कहीं कोई बावली रास्ते पर बनाई जावे तो चाहिये कि इसी ढङ्गकी बनावे पर इससे दूनी हो।"

हाथीको गर्म्म पानी।

जबसे नूरबखत हाथी आया था खासोआम दौलतखानेमें बांधा जाता था। हाथी जाड़ेमें भी पानीसे प्रसन्न होता है इसलिये जहां कहीं नदी तालाब नहीं मिलता तो नूरबखत मशकमेंसे पानी लेकर अपने शरीर पर डालता। जाड़ेमें पानी ठण्डा होता है इसलिये बादशाहने अपने मनमें ठण्डका विचार करके गुनगुना पानी उसको सूंड़में डलवाया। और दिनों तो ठण्डे पानीसे कांपने लगता था अब जो गर्म्म पानी मिला तो स्वस्थ और प्रसन्न हुआ। बादशाह लिखता है—"यह मेरीही उपजाई हुई बात है।"

सबलगढ़।

१४ (अगहन सुदी ७) मङ्गलवारको ६ कोस चलकर सबलगढ़में और ८ बुधको महो नदीसे उतरकर रायगढ़में डेरे हुए यह भी ६ कोसका पड़ाव था।

राजा पेमनारायण।

१६ (अगहन सुदी १०) गुरुवारको गढ़ेका राजा पेमनारायण जिसका एक हजारी मनसब था अपनी जागीरको बिदा हुआ।

राजा भरजीव।

बगलाणेके राजा भरजीवको बादशाहने चार हजारी मनसब

देकर विदा किया और यह हुक्म दिया कि जब अपने देशमें पहुंचे तो बड़े बेटेको दरगाहमें भेजदे कि वह हुजूरमें रहा करे।

धावला।

१७ (अगहन बदी ११) शुक्रवारको बादशाह पांच कोस चलकर गांव धावलेमें ठहरा।

बकरईद।

१८ (अगहन सुदी १२) शनिवारको बकरईद थी। बादशाह उसका कृत्य करके ३। कोस चला और गांव नागोरमें तालाबके तट पर उतरा।

गांव समरिया।

१९ (अगहन सुदी १३) रविवारको ५ कोस चलकर गांव समरियाके तालाब पर डेरे हुए।

दोहद।

२० (अगहन सुदी १४) सोमवारको ४। कोस पर परगने दोहदमें पड़ाव हुआ। यह परगना गुजरात और मालवेका सिवाना है। जबसे बादशाहने बदनोर छोड़ा था सारे रास्तेमें जंगल और पहाड़ आये थे।

रैनाव।

११ (पौष बदी १) बुधवारको ५। कोस चलकर गांव रैनावमें मंजिल हुई। दूसरे दिन मुकाम हुआ।

जालोत।

२४ (पौष सुदी ३) शुक्रवारको अढाई कोस कूच हुआ गांव जालोतमें डेरा लगा। यहां करनाटकके बाजीगरोंने पहुंचकर बादशाहको अपने खेल दिखाये। एक बाजीगर ५॥ गज लम्बी और एक सेर दो दाम वजनकी जञ्जीरको मुंहमें रखकर धीरे धीरे पानीके घूंटोंसे निगल गया। घड़ी भर तक पेटमें रखकर फिर बाहर लेआया।

नौमदह।

२६ (पौष बदी ५) रविवारको बादशाह पांच कोसका सफर करके गांव नौमदहमें ठहरा। सोमवारको भी पांचही कोस चला। और एक तालाबके निकट उतरा।

सहरा।

मंगलको पौने चार कोसकी ही यात्रा हुई। गांव सहराके पास एक सरोवरके किनारे तम्बू तने।

कुमुदिनी और कमला।

बादशाह लिखता है—कुमुदिनी तीन रंगकी होती है सफेद नीली और लाल। हमने सफेद और नीली तो देखी थी लाल नहीं देखी थी। इस तालमें लाल फूलोंकी खिली कुमुदिनी देखनेमें आई। बहुतही कोमल और मंजुल फूल थे। कमलका फूल कुमुदिनीसे बड़ा होता है। उसका चेहरा लाल होता है। मैंने काश्मीरमें सौ सौ पंखड़ियोंके भी कमल बहुत देखे हैं। यह बंधी हुई बात है कि कमल दिनको फूलता है और रातको बन्द हो जाता है। कुमुदिनी दिनको बन्द होजाती है और रातको खिलती है। भौंरा सदा इन फूलों पर बैठता है और इनके भीतर जो मिठास होता है उसके चूसनेके लिये इनकी नालियोंमें भी घुस जाता है। बहुधा ऐसा होता है कि कमल मुंद जाता है और भौंरा सारी रात उसीमें बैठा रहता है। इसी तरह कुमुदिनीमेंभी। उनके खिलने पर भौंरा निकलकर उड़ जाता है।

इसी वास्ते हिन्दुस्थानके कवीश्वरोंने बुलबुलके समान उसको फूलका प्रेमी मानकर अपनी कवितामें उत्तम उक्तियोंसे उसका वर्णन किया है।

तानसेन कलावत मेरे बापकी सेवामें रहता था वह अपने समय में अद्वितीयही नहीं था वरञ्च किसी समयमें भी उसके तुल्य गवैया नहीं हुआ है। उसने अपने ध्रुपदमें नायिकाके मुखको सूर्य्यकी, उसके आंख खोलनेको कमलके खिलने और उसमेंसे भौंरेके उड़नेकी

उपमा दी है। दूसरी जगह कनखियोंसे देखनेको भौंरेके बैठनेसे कमलका हिलना कहा है।

अंजीर।

यहां अहमदाबादके अंजीर आये। बादशाह लिखता है कि बुरहानपुरके अंजीर भी मीठे और बड़े होते हैं। परन्तु यह अंजीर उनसे कम दानेदार और अधिक मीठे हैं स्वादमें अच्छे हैं।

बुध और वृहस्पतिवारको भी वहीं पडाव रहा।

सरफराजखांकी भेट।

सरफराजखांने गुजरातसे आकर भेट दिखाई। उसमेंसे बादशाहने मोतियोंकी एक माला जो ११ हजार रुपयेमें खरीदी गई थी, दो हाथी, दो घोड़े, ७ बैल, बहल और कई थान गुजराती कपड़ोंके अंगीकार किये। शेष पदार्थ उसीको लौटा दिये। यह तीन पीढ़ीका नौकर था।

रोहू मछली।

१ दे (पौष बदी १०) शुक्रवारको बादशाह सवा चार कोस चलकर गांव भसोदके तालाब पर उतरा। यहां खिदमतिये प्यादों का सरदार राय मान रोहू मछली पकड़कर लाया जो बादशाह को बहुत रुचिकर थी। बादशाह सब प्रकारकी हिन्दुस्थानी मछलियोंमें रोहूको उत्तम समझता है और इधर ११ महीनेसे बहुत खोजने परभी नहीं मिली थी। इसलिये उसको देखकर अति प्रसन्न हुआ और राय मानको एक घोड़ा दिया।

अहमदाबाद गर्दाबाद।

बादशाह लिखता है कि दोहदका परगना गुजरातमें है यहां से सब वस्तुओंमें भिन्नता विदित होती है। जंगल और भूमि और तरहकी, मनुष्य भी पृथक प्रकृतिके तथा बोलियां औरही तौरको हैं। बन जो इस मार्गमें देखे गये उनमें आम खिरनी और इमली आदि फलोंके वृक्ष थे। खेतोंकी रक्षा थूहरके झाड़ोंसे कीजाती है। किसानोंने खेतियोंके चारों ओर थूहरकी बाड़ें लगाकर अपनी

अपनी भूमि पृथक पृथक करली है। बीचमें आने जानेके लिये तंग गलियां छोड़दी हैं। यह देश सारा रेतीला है। थोड़े चलने और भीड़ होजानेसे यहां इतनी धूल उड़ती है कि आदमीका चेहरा मुशकिलसे नजर आता है। मेरे जीमें आया कि अहमदाबादको अबसे "गर्दाबाद" कहना चाहिये न कि अहमदाबाद।

२ (पौष बदी ११) शनिवारको बादशाह ३॥ कोस चलकर मही नदीके किनारे पहुंचा।

रविवारको फिर ३॥ कोस चला और गांव वर्दलेमें ठहरा। जो मनसबदार गुजरातके सूबेमें नियत थे इस स्थान पर हाजिर हुए थे।

४ (सोमवार) को ५ कोस पर चिचमीमामें और मङ्गलवारको ५॥ कोस पर परगने सोंदेमें लशकरके डेरे लगे। यहां एक नीलगाय १३ मनकी शिकार हुई।

६ (बुध) को छः कोसका कूच होकर परगने नीलावमें मुकाम हुआ। बादशाह कसबेमें होकर निकला और १५००) लुटाये।

नीलाव।

पौष सुदी १ गुरुवारको ६॥ कोस चलकर बादशाह परगने नीलावमें उतरा। गुजरातमें इससे बड़ा कोई परगना नहीं था। इसकी उपज ७ लाख रुपयेकी थी बसती भी अच्छी थी। बादशाह उसमें होकर आया और एक हजार रुपये लुटाये। वह लिखता है—"मेरी इच्छा रहती है कि हर बहानेसे जगतको लाभ हो।"

गुजरातमें गाड़ीका सवारी देखकर बादशाहका भी जी चाहा और दो कोस तक गाड़ीमें बैठे। परन्तु रेत और धूलसे बहुत कष्ट पाया। इसलिये फिर पड़ाव तक घोड़े पर गया। रास्तेमें मुकर्रबखांने अहमदाबादसे आकर तीस हजार एक मोती भेट किया।

८ (पौष सुदी २) शुक्रवारको बादशाह ६॥ कोस चलकर समुद्र के तट पर (खंभात) में उतरा।

चौदहवां वर्ष ।

सन् १०२७ हिजरी ।

पौष सुदी २ संवत् १६७४ से पौष सुदी १ सं० १६७५ तक ।

ता० २० दिसम्बर सन् १६१७ से ता० ९ दिसम्बर १६१८ तक ।

खंभात ।

बादशाह लिखता है—"खंभात पुराने बन्दरोंमेंसे है । ब्राह्मणों के कथनानुसार कई हजार वर्ष इसको बसे होगये । पहले इसका नाम त्रंबावती था । राजा त्र्यम्बककुमारका इस देशमें राज्य था । यदि सविस्तार वृत्तान्त इस राजाका जैसा कि ब्राह्मण लोग कहते हैं लिखा जावे तो बहुत बड़ा होता है । उसके पोतोंमेंसे जब राजा अभयकुमारका राज्य था तो दैव प्रकोपसे इतनी राख और धूल बरसी कि सब बस्ती उससे भर गई और बहुतसे मनुष्य भी दब गये । इस अनर्थपात होनेके समाचार राजाको पहलेही उसके इष्ट-देवने स्वप्नमें दर्शन देकर कह दिये थे । राजा उस देवताकी मूर्त्ति को लेकर सकुटुम्ब जहाजमें बैठ गया । वह जहाज भी भंवरमें फंस गया । परन्तु राजाकी आयु थी इसलिये एक खम्भेके सहारे जिस पर वह मूर्त्ति टिकाई गई थी किनारे जालगा और उसने फिर नगर बसानेका विचार करके बस्तीके चिन्ह और मनुष्योंके एकत्र होनेके लिये उसी स्तम्भको गाड़ दिया जिससे त्रिंबावतीका नाम खंभावती पड़गया । वही बिगड़कर खंभात हुआ है । यह हिन्दुस्थान के बड़े बन्दरोंमेंसे है और समुद्रके जोरोंमेंसे एक बड़े जोर* के पास है जो सात कोस चौड़ा और चालीस कोस लम्बा अनुमान किया

---

* जिसको अङ्गरेजीमें डोवर कहते हैं अर्थात् समुद्रके किनारे पर वह जगह जहांसे नावमें बैठकर या माल लादकर जहाज पर जाते हैं ।

जाता है। जहाज जोरमें नहीं आता। बन्दर गोगेमें ठहरता है जो खंभातके अन्तर्गत और समुद्रके निकट है। वहांसे माल गिरावों (नावों) में लादकर खंभातमें लाते हैं। और जब जहाजोंको भरते हैं तो उसी तरह यहांका माल लेजाकर उनमें डालते हैं। मेरे आनेसे पहले कई गिराब फरङ्गदेशके बन्दरोंसे खंभातमें आये थे और लौट जानेके विचारमें थे। १० (पौष सुदी ४) रविवारको उन्हें सजाकर मेरे देखनेके लिये लाये और आज्ञा लेकर अपने जानेके स्थानको गये। सोमवारको मैं भी गिराबमें बैठकर एक कोस तक पानी पर फिरा मङ्गलको शिकारके वास्ते जाकर चीतेंसे दो हरन पकड़वाये।"

१३ (पौष सुदी ७) बुधको नारङ्गसर तालाबके देखनेको बाजार में होकर गया और ५०००) न्यौछावर किये।

स्वर्गवासी श्रीमान्के समयमें इस बन्दरके कर्मचारी कल्याणराय ने उनकी आज्ञासे इस नगरका पक्का कोट ईंट और चूनेका चुनवाया है और बहुतसे व्यापारी देशान्तरसे आकर यहां बसे हैं जो सुरम्य स्थान और सुन्दर हर्म्य बनाकर सुख सम्पत्ति भोगते हैं। बाजार छोटा तो है पर स्वच्छ और खूब बसा हुआ है। गुजराती बादशाहोंके समयमें इस बन्दरको जकातके बहुत रुपये थे। अब इस राज्यमें यह हुक्म है कि चालीसमें १) से अधिक न लें*। दूसरे बन्दरोंमें 'अशूर' के नामसे† १०) में १) और ८¶ में भी १) लेते हैं और नाना प्रकारका कष्ट व्यापारियों तथा यात्रियों को देते हैं। जद्दे में जो मक्के का बन्दर है ४)§ में १) लेते हैं, बरन इससे भी अधिक। इससे जान लेना चाहिये कि गुजरातके बन्दरों का तमगा‡ अगले हाकिमोंके समयमें कितना था। भगवत कृपासे मैंने अपने सब देशोंमें तमगा जो बहुत अधिक था छोड़ दिया है। मेरे राज्यसे तमगेका नामही उठ गया है।

---

* २॥) सैकड़ा। † १०) सैकड़ा। ¶ १२॥) सैकड़ा।
§ २५) सैकड़ा। ‡ दरियाका महसूल।

चान्दी सोनेके टके ।

यहां बादशाहने चान्दी सोनेके टके चलाये। जिनका तोल मामूली रुपयों और मोहरोंसे दूना था। सोनेके टकेमें एक ओर जहांगीरशाही, सन १०२७ और दूसरी ओर जर्बखंभात सन १२ जिलूस खुदा था। चांदीके टकेमें एक तरफ जहांगीरशाही, सन १०२७ और उसके ऊपर गोलाकार एक पद्य खुदा था जिसका यह अर्थ था—

विजय प्रकाशक जहांगीरने चांदीके ऊपर यह छाप मारी।

और दूसरी तरफ बीचमें जर्बखंभात सन १२ जिलूस और उसके ऊपर गोलाईमें यह दूसरा पद्य था—

जबकि दक्षिण जीतकर मंडूसे गुजरातमें आया।

बादशाह लिखता है—"मेरे सिवा किसी समयमें भी टके पर सिक्का नहीं लगा था चांदी और सोनेका टका मेराही निकाला हुआ है।"

भेट।

१४ गुरुवार (पौष सुदी ८) को बन्दर खंभातके कर्मचारी अमानतखांकी भेट हुई। उसका मनसब कुछ बढ़कर डेढ़ हजारी जात और चारसौ सवारोंका होगया।

हाथीकी दौड़।

१५ शुक्रवार (पौष सुदी ९) को बादशाहने सवार होकर नूर-बख्त हाथीको घोड़के पीछे दौड़ाया। बहुत अच्छा दौड़ा। जब ठहराया तो झट खड़ा होगया। बादशाह लिखता है—मेरी यह सवारी तीसरी बार थी।

रामदास।

१६ शनिवार (पौष सुदी १०) को जयसिंहके बेटे रामदास *

* रामसिंह आमेरके राजा जयसिंहका बेटा था मगर वह तो संवत् १६९२ में पैदा हुआथा। यह रामदास राजा राजसिंहका बेटा होगा यहां गलतीसे राजसिंहकी जगह जयसिंह लिखा गया है ऐसा जाना जाता है।

का मनसब कुछ बढ़कर डेढ़ हजारी जात और सात सौ सवारोंका होगया ।

खंभातसे प्रयाण ।

बादशाह समुद्र और ज्वार भाटा देखनेको १० दिन खंभातमें रहा और वहांके रहने वाले व्यापारियों, कारीगरों और पालने योग्य प्रजाको खिलअत, घोड़े, खर्च और जीविका देकर १९ (पौष सुदी १४) मङ्गलके दिन अहमदाबादको गया ।

अरबी मछली ।

बादशाह लिखता है—"उत्तम जातिकी मछली खम्भातमें अरबी नामकी है जिसको मछवे अनेक बार पकड़कर मेरे वास्ते लाये । वह स्वाद भी बहुत होती है पर रोहूको नहीं पहुंचती ।

बाजरेकी खिचड़ी ।

गुजरातवालोंके निज भोजनोंमेंसे बाजरेकी खिचड़ी है जिसको लजीजा भी कहते हैं । बाजरा मोटा अनाज है । हिन्दुस्थानके सिवा दूसरी विलायतमें नहीं होता । हिन्दुस्थानके सब प्रान्तोंसे अधिक गुजरातमें होता है और सब अनाजोंसे सस्ता रहता है । बाजरेकी खिचड़ी मैंने कभी नहीं खाई थी अब हुक्म दिया तो पका कर लाये । बेस्वाद नहीं थी मुझे तो अच्छी लगी । मैंने कह दिया कि सूफियाना१ दिनोंमें जबकि पशु संबंधी भोजन छोड़े हुए हों और बिना मांसके खाना खाता हूं तब यह खिचड़ी विशेष करके लाया करें ।"

बादशाह मङ्गलको ६। कोस चलकर कोसालेमें और बुधको परगने बाबरेमें होकर समुद्रके किनारे उतरा । यह मंजिल भी ६ कोसकी थी । गुरुवारको वहीं रहकर प्यालेकी सभा सजाई

१ मुसलमानोंके भक्त सूफी कहलाते हैं वह जब कोई अनुष्ठान करते हैं तो मांस क्या घी, दूध और दही तक नहीं खाते हैं इसको भी एक प्रकारकी पशुहिंसा समझते हैं ।

और महुतसी अञ्जलियां निसार कीं और सब सभासदोंको बांटी गईं।

रास्तेमें दीवार ।

शुक्रवारको चार कोसका कूच और गांव बाड़ीयेमें मुकाम हुआ रास्तेमें बादशाहने कई जगह दीवारें देखीं जो दो दो गज तक ऊंची थीं। पूछा तो मालूम हुआ कि यह दीवारें लोगोंने पुण्यार्थ बनाई हैं कि जो कोई बोझ लेजाने वाला थक जावे तो अपना बोझ इन पर रखकर सुस्ता ले और फिर बिना किसीके सहारेही उठाकर अपना रस्ता ले। यह बात बादशाहके बहुत पसन्द आई। उसने हुक्म दिया कि सब बड़े बड़े शहरोंमें इसी प्रकार दीवारें बादशाही व्ययसे बनवा दें।

कांकरिया ताल ।

२३ (माघ बदी ३) शनिवारको पौने पांच कोस चलकर कांकरियाताल पर डेरा हुआ जो अहमदाबादके बसानेवाले सुलतान अहमदके पोते कुतुबुद्दीनका बनाया हुआ है। उसका घाट पत्थर और चूनेसे पक्का बंधा है। तालके बीचमें छोटासा बागीचा और एक भवन है। तालके किनारेसे वहांतक जानेके लिये पुल बना है। बहुत वर्षोंसे यह स्थान टूट फूट गया था और कोई ठौर बादशाहके रहनेके योग्य नहीं रहो थी इसलिये गुजरातके बख्शी सफीखांने सरकारसे जीर्णोद्धार करके बागीचा भी सजवा दिया था और एक नया झरोखा भो ताल और बागीचेके ऊपर झुका दिया था। वह बादशाहको बहुत पसन्द आया।

पुलके पासही निजामुद्दीनने जो अकबर बादशाहके राज्यमें कुछ समय तक यहां बख्शी रहा था एक बाग लगाया था।

अबदुल्लहखांकी दण्ड ।

बादशाहसे अर्ज हुई कि निजामुद्दीनके बेटे आबिदसे और अबदुल्लहखांसे बिगाड़ है। इससे अबदुल्लहने इस बागके पेड़ कटवा डाले हैं। यह भी सुना गया कि जब अबदुल्लहखां यहांका हाकिम

था तो एक दिन शराबकी मजलिसमें एक गरीब आदमीको जो कुछ ठठोल भी था, बेसमझीसे हंसी की कोई बात कहने पर उसी जगह मरवा डाला था। इन दोनों बातोंके सुननेसे बादशाह ने कोप करके बख्शियोंको हुक्म दिया कि उसके १००० दुअस्पे और तिअस्पे सवारोंको इकअस्पे रखकर ७० लाख दाम जो बढ़ें वह जागीरमेंसे काटलें।†

शाहआलमका मकबरा।

इसी जगह कुतुबआलमके बेटे शाहआलमका मकबरा भी है जिसको सुलतान महमूद बेगड़ेके पोते सुलतान मुजफ्फरके अमीर ताजखां नामीने एक लाख रुपये लगाकर बनाया था। शाहआलम सुलतान महमूदके समयमें सन ८८० (संवत् १५३२) में मरा था गुजरातियोंका उस पर बड़ा प्रेम था और वह कहते थे कि शाहआलम मुर्दोंको जिला दिया करता था। उसके बापने मना कर दिया था तोभी एक सेवकके मृतपुत्रको अपने पुत्रके प्राण देकर जिला दिया। उसका पुत्र उसी समय मर गया और सेवकका पुत्र जी उठा। बादशाह लिखता है—"मैंने यह बात उसके गद्दीनशीन सैयद महमूदसे पूछी थी। उसने कहा कि मैं अपने बाप दादोंसे ऐसाही सुनता आया हूं। आगे ईश्वर जाने। यह बात अकलसे दूर तो है पर लोगोंमें बहुत विख्यात है इसलिये अद्भुत समझकर लिखी गई।"

मुहूर्त।

बादशाहके अहमदाबादमें प्रवेश करनेका मुहूर्त सोमवारको था इस लिये रविवारको भी बादशाह कांकरिया तालाब पर ठहरा रहा।

---

† हजार सवार दुअस्पा और तिअस्पाकी तनख्वाहके ७० लाख दाम अर्थात् पौने दो लाख रुपये होते थे वह जागीरमेंसे काटे गये एक सवारका १७५) सालाना और १४।/)४ पाई महीना हुआ।

कारेजके खरबूजे ।

हिरातमें "कारेज" एक स्थान है जहांके खरबूजोंके बराबर सारे खुरासानमें कहीं अच्छे खरबूजे नहीं होते हैं। वहांके खरबूजे १४०० कोससे पांच महीनेमें आने पर भी तर ताजा आये। आये भी इतनी बहुतायतसे कि सब नौकरोंको दिये जासके।

बंगालका कोला।

ऐसेही बंगालके कोले भी एक हजार कोस चलकर ताजा पहुंचे। बादशाह लिखता है—यह फल बहुत कोमल होता है इससे मैंने निजके खाने लायक प्यादोंकी डाकसे हाथों हाथ पहुँचाता है।

हाथीके दांत।

इसी दिन अमानतखांने दो हाथी दांत भेंट किये जो बहुत बड़े थे। एक ३ गज ८ तसू लम्बा और १६ तसू मोटा था। तौलमें ३ मन २ सेर निकला।

अहमदाबादमें प्रवेश।

२५ (माघ बदी ५) चन्द्रवारको छः घड़ी दिन चढ़े पीछे बादशाह अपने सुन्दर और सुशील हाथी सूरत गज पर सवार होकर अहमदाबादमें दाखिल हुआ। लिखता है—"यह हाथी उस समय मस्त होरहा था तो भी उसके सरल स्वभावका विश्वास था। बहुत से स्त्री पुरुष, गलियों बाजारोंमें छतों और दीवारों पर बैठे बाट देख रहे थे। अहमदाबादकी जैसी प्रशंसा सुनी थी वैसा न निकला। बाजार चौड़ा लम्बा है परन्तु दुकानें बाजारकी चौड़ाईके तुल्य नहीं हैं। सब घर लकड़ीके हैं, दुकानोंके खम्बे पतले और भद्दे हैं। बाजार और गलियोंमें धूल उड़ती है। मैं कांकरिया तालसे किले तक जिसको भद्र कहते हैं रुपये लुटाता हुआ गया। भद्रका अर्थ शुभ है। गुजराती बादशाहोंके भवन जो भद्रमें थे वह सब इन ५६१ वर्षोंमें गिर गये हैं। वर्त्तमान मकान हमारे नौकरोंने बनाये हैं जो

१ अर्थात् जबसे कि उनका राज्य नष्ट हुआ है।

इस देशमें शासन करनेको आते रहे हैं। अब जो मैं मांडूसे अहमदाबादको चला तो मुकर्रबखांने पुराने स्थानोंको नये सिरसे ठीक किया और जरूरी नये मकान भी बनवाये जैसे झरोखा आमखास आदि।"

आज शाहजहांके तुलादानका शुभदिन था। मैंने नियमानुसार सुवर्ण और दूसरे पदार्थोंसे उसको तोला। उसे अबसे २७ वां वर्ष लगा है। आजही गुजरातका देश भी उसको जागीरमें दिया गया।

मांडूके किलेसे बन्दर खम्भात जिस रास्तेसे आया था १२४ कोस था २८ कूच और ३० मुकाम हुए थे खम्भातमें दस दिन रहा था—वहांसे अहमदाबाद २१ कोस था जो ५ कूच और दो मुकाम में काटे गये। इस तरह पर हम मांडूसे खम्भात होकर १४५ कोस २ महीने १५ दिनमें आये। सब मिलाकर ३३ कूच और ४२ मुकाम हुए।

जामा मसजिद।

२६ (माघ सुदी ९) मंगलको बादशाह जामा मसजिद देखनेको गया जो अहमदाबादके बाजारमें है। वहांके फकीरोंको पांच सौ रुपये दिये।

वह लिखता है—यह मसजिद सुलतान अहमदकी बनाई हुई है उसीने अहमदाबाद बसाया है। इसके तीन दरवाजे हैं और तीनोंके आगे बाजार हैं। जो दरवाजा पूर्वको है उसके सामने उक्त सुलतानका कबरस्तान है जिसमें वह, उसका बेटा मुहम्मद और पोता कुतुबुद्दीन सोये हुए हैं। मसजिदके चौककी लम्बाई कोठड़ियोंको छोड़कर १०३ और चौड़ाई ८९ गज है। फिर ४॥। गज चौड़े दालान हैं। चौकमें छिली हुई ईंटोंका फर्श है। दालानों के खम्भे लाल पत्थरके हैं और कोठड़ियोंके खम्भे ३५४ हैं। खम्भोंके ऊपर गुम्बद बने हैं। कोठड़ियोंकी लम्बाई ७५ गज है और चौड़ाई

२७ गज है। कोठड़ियोंका फर्श, सहन और मिम्बर, संगमर* पत्थरके हैं। आगेकी दो मीनार तीनतीन खण्डके हैं उनकी पाखाओं में वेलबूटे बड़ी कारीगरीके बने हैं। मिम्बरकी दहनी भुजामें कोठड़ीके कोनेसे मिली हुई एक बैठक छांटदी है जो खम्भोंके बीच पत्थरके तख्तोंसे ढकी हुई है और उसके गिर्द छत तक पत्थरका कटहरा लगा हुआ है। तात्पर्य्य यह है कि जब बादशाह जुमे या ईदकी नमाजके वास्ते आवे तो अपने सभासदों सहित उसपर जा कर नमाज पढ़े। उसको यहांवाले अपनी बोलीमें मलूकखाना (राजभवन) कहते हैं। भीड़से बचनेके लिये ऐसी युक्ति की गई है सच यह है कि यह बहुत बड़ी मसजिद है।

शेख वजीहकी खानकाह।

२७ (माघ सुदी १०) बुधवारको बादशाह शेख वजीहुद्दीनकी खानकाहको देखने गया, जो राजभवनके समीपही थी। उसके चौकमें उसकी कबर पर फातहा पढ़ा। यह खानकाह सादिक खांने जो अकबर बादशाहके बड़े अमीरोंमेंसे था बनवाई थी। शेख ३० वर्ष पहले मरा था। वह शेख मुहम्मदगौसके खलीफोंमें से था। शेखके बेटे तथा पोते अबदुल्लह और असदुल्लह भी मरचुके थे। असदुल्लहका भाई शेख हैदर दादाकी गद्दीपर था। बादशाह ने उसको पन्द्रहसौ रुपये उस शेखका उर्स करनेको दिये जो उन्हीं दिनोंमें होनेवाला था और उतनेही रुपये वहांके फकीरोंको अपने हाथसे खैरात किये। पांच सौ रुपये शेख हैदरके भाई वजीहुद्दीन को दिये। ऐसेही उसके दूसरे सम्बन्धियोंको रुपये और भूमि दी। शेख हैदरसे कहा कि जिन फकीरों और गरीबोंकी वह जानता हो हुजूरमें लाकर खर्च और जमीन दिलानेकी प्रार्थना करे।

रुस्तम बाड़ी।

२८ (माघ सुदी ११) गुरुवारको बादशाह रुस्तमबाड़ीमें गया। पन्द्रहसौ रुपये मार्गमें लुटाये। यह बाग बादशाहके भाई शाह

* मकरानेको रंगतके श्वेत पाषाणको संगमर कहते हैं।

मुरादने अपने बेटे रुस्तमके नामसे बनाया था और गुरुवारका उत्सव वहीं करके कई निज सेवकोंको प्याले दिये।

दिनढले शेख सिकन्दरकी हवेलीके बागीचेमें गया जो रुस्तम बाग के पड़ौसमें था। उसमें अञ्जीर खूब पके हुए थे। बादशाह लिखता है कि अपने हाथसे मेवा तोड़नेमें बड़ा मजा आता है। मैंने आज तक हाथसे अञ्जीर नहीं तोड़े थे और इस प्रसंगसे शेख सिकन्दरका मान बढ़ाना भी अभीष्ट था इसलिये सीधा चला गया। शेख सिकन्दर गुजराती है और सज्जनतासे शून्य नहीं है। गुजरातके बादशाहोंका वृत्तान्त* खूब जानता है। ६ वर्षसे मेरे बन्दोंमें नौकर है।

रुस्तमखांको रुस्तमबाड़ी।

बादशाहने शाहजहांकी प्रार्थनासे रुस्तमबाड़ी उसके नौकर रुस्तमखांको देदी। वह अहमदाबादका हाकिम बनाया गया था।

ईडरका राजा कल्याण।

इसी दिन ईडरके राजा कल्याणने उपस्थित होकर एक हाथी और ६ घोड़े भेट किये। बादशाहने हाथी उसीको बखश दिया। वह लिखता है—"यह गुजरातके सीमाप्रान्तका मोतबिर जमींदार है। इसका राज्य राणाके पहाड़ोंसे मिला हुआ है। गुजरातके बादशाह सदा उस पर चढ़ाई करते रहे हैं। यद्यपि किसी किसीने कुछ अधीनताभी स्वीकार की और भेटभी भेजी पर आप कभी किसी के मिलनेको नहीं गया। जब स्वर्गवासी श्रीमाजने गुजरात विजय की तो राजा पर भी सेना भेजी थी। जब उसने अधीन होनेके सिवा अपना बचाव न देखा तो सेवा स्वीकार करके चौखट चूमने को आया। उस दिनसे अबतक सेवकोंमें शामिल है और जो कोई अहमदाबादके शासन पर नियत होता है और जब काम पड़ता है तो सेना सहित उपस्थित होजाता है।

---

* इसने मिरआत सिकन्दरी नामक एक अच्छी तवारीख गुजरात की बनाई है।

चन्द्रसेन ।

१ बहमन (माघ बदी ८) शनिवारको चन्द्रसेन†ने जो इस देश के मुख्य जमींदारोंमेंसे था चौखट चूमकर ८ घोड़े भेंट किये ।

राजा कल्याणको हाथी ।

२ (माघ बदी १०) रविवारको बादशाहने ईडरके राजा कल्याण और सय्यद मुस्तफा तथा मीरफाजिलको हाथी दिये ।

शेख अहमद खट्टूकी जियारत ।

३ (माघ बदी ११) चन्द्रवारको बादशाह बाज और जुर्रोंके शिकारको निकला । रास्तेमें पांचसौ रुपये न्यौछावर किये । उधर ही शख अहमद खट्टूकी जियारत थी । बादशाहने वहां जाकर फातहा पढ़ा ।

यह शेख गांव खट्टू परगने नागोरमें पैदा हुआ । अहमदाबाद का बसानेवाला सुलतान अहमद इसका भक्त था । यहांके लोगोंको इसमें बड़ी श्रद्धा है । शुक्रवारकी रातको बहुतसे छोटे बड़े मनुष्य जियारत करने आते हैं ।

सुलतान अहमदका बेटा सुलतान मुहम्मद उसकी कबर पर एक बड़ा मठ बनाने लगा था जो उसके बेटे सुलतान कुतुबुद्दीनके समयमें पूरा हुआ । यहां दक्षिण दिशामें एक बड़ा पक्का तालाब उसीका बनाया हुआ है । गुजराती बादशाहोंकी कबरें इसी तालाब पर हैं जिनमें सुलतान महमूद बेगड़ा, उसका बेटा मुजफ्फर, मुजफ्फरका पोता महमूदशहीद जो गुजरातका अन्तिम बादशाह था सोये हुए हैं । महमूदकी मूंछें मोटी और मुड़ी हुई थीं जिससे उसको बेगड़ा कहते थे । इन कबरोंके पासही इनके सरदारोंकी भी कबरें हैं ।

बादशाह लिखता है—"शेखका मकबरा अति विशाल और विमल है ५ लाख रुपये इसमें लगे होंगे ।"

---

† यह हलवदका झाला राजा था ।

फतहबाड़ी।

जियारत करके बादशाह फतहबागमें गया। यह उस जगह पर है जहां खानखानाने नन्हूसे जो अपनेको सुलतान मुजफ्फर कहलाता था युद्ध करके जीत पाई थी। गुजरातवाले इसको फतहबाड़ी कहते हैं।

नन्हू।

एतमादखां गुजरातीने अकबर बादशाहसे कहा था कि यह नन्हू बहलवानका बेटा था। जब सुलतान महमूद तथा गुजरातके और किसी बादशाहकी सन्तान न रही थी तो हमने इसको सुलतान महमूदका बेटा बनाकर सिंहासन पर बिठा दिया क्योंकि वह समय ऐसाही था।

इस प्रसङ्गसे बादशाहने सविस्तर वृत्तान्त खानखानांके गुजरात विजय करनेका लिखा है परन्तु वह अकबरनामेमें लिखा जाचुका है इसलिये यहां अनावश्यक समझकर छोड़ दिया गया।

खानखानांने विजय प्राप्त होनेके पश्चात् साबरमती नदीके तट पर यह बाग १२० डोरी भूमिमें लगाया था। इसके आसपास पक्का कोट बना है। बादशाह लिखता है—"अति उत्तम विहारस्थान है दो लाख रुपये इसमें लगे होंगे। मुझको बहुत पसन्द आया। यह कहना चाहिये कि गुजरात भरमें कोई बाग इसके समान न होगा। मैंने यहां गुरुवारका उत्सव करके निज पारिषदोंको प्याले दिये और रातको वहीं रहकर शुक्रको पिछले दिन से शहरमें आया। १०००) रास्तेमें लुटाये।"

उस समय बागबानने प्रार्थना की कि कई चम्पाके झाड़ जो नदी पर बने हुए चबूतरेमें लगे थे मुकर्रबखांके नौकरने काट डाले हैं। बादशाहको यह बात बहुत बुरी लगी और स्वयं निर्णय करके साबित होने पर उसकी दो उङ्गलियां काटनेका हुक्म दिया जिससे दूसरोंको भय हो। बादशाह लिखता है—"मुकर्रबखांको खबर नहीं हुई होगी नहीं तो वह उसी समय दण्ड देदेता।"

११ (माघ वदी १२) मंगलके दिन कोतवाल एक चोरको पकड़कर लाया जो पहले कईबार चोरियां करचुका था और प्रति चोरीमें उसका एक एक अंग काटा गया था। पहली बार दहना हाथ दूसरी बार बाईं उङ्गली, तीसरी बार बायां कान और चौथी बार दोनों पावोंकी फीचें काटी गई थीं। तोभी उसने अपनी आदत नहीं छोड़ी थी। रातको एक घसियारेके घरमें घुसा था उसने जागकर पकड़ लिया पर इसने उसे छुरियोंसे मार डाला। इस पर बड़ा कोलाहल हुआ और घसियारेके भाईबन्दोंने आ पकड़ा। बादशाहने उन्हींको सौंपकर दण्ड देनेकी आज्ञा देदी।

१२ (माघ वदी १३) बुधको बादशाहने तीन हजार रुपये अजमतखां और मोतकिदखांको दिये कि अलग अलग शेख खटूकी कबर पर जाकर वहांके मुजावरों और गरीबोंको बांटदें।

१३ (माघ वदी ४) गुरुवारको बादशाहने शाहजहांके डेरे पर जाकर गुरुवारका उत्सव किया और मुख्य मुख्य सेवकोंको प्याले दिये। शाहजहां सुन्दर मथन हाथीको मांगा करता था जिसे अकबर बादशाह बहुत प्यार करता था और जो घोड़ेके साथ खूब दौड़ता था। अब बादशाह वह हाथी सोनेके गहनों, सांकलों और एक हथनी सहित उसको देआया।

खुर्दा।

इन दिनोंमें समाचार मिला कि मुअज्जमखांके बेटे मुकर्रमखां उड़ीसाके सूबेदारने खुर्दाकी विलायत जीत ली और वहांका राजा भागकर राजमहेन्द्रीमें चला गया। बादशाहने मुकर्रमखांका मनसब बढ़ाकर तीन हजारी और दो हजार सवारोंका कर दिया। घोड़ा सिरोपाव और नक्कारा भी बखशा। बादशाह लिखता है कि उड़ीसा और गोलकुंडेके बीचमें दो जमींदारोंकी आड़ थी एक खुर्देका दूसरा राजमहेन्द्रीका। सो खुर्दा तो बादशाही बन्दोंके अधीन होगया है अब दूसरेकी बारी है।

कुतुबुलमुल्ककी अर्जी।

इन्हीं दिनोंमें कुतुबुलमुल्ककी अर्जी शाहजहांके नाम पहुंची। जिसमें लिखा था कि अब मेरा राज्य बादशाही सीमाके निकटवर्त्ती होगया है और मैं बादशाही बन्दा हूं इसलिये मुकर्रमखांको मेरे राज्यमें हस्तक्षेप न करनेका हुक्म होजावे।

बादशाह लिखता है कि यह दृष्टान्त उसी मुकर्रमखांके बल वीर्य्यका है कि जिससे कुतुबुलमुल्क जैसा पड़ोसी घबड़ा गया।

हलवदका चन्द्रसेन।

हलवदके जमींदार चन्द्रसेनको घोड़ा सिरोपाव और हाथी मिला।

मुजफ्फर।

ठट्ठेके अगले बादशाह मिरजा बाकीतरखांका बेटा मुजफ्फर जो मिरजा बाकीके मरने पर उस राज्य पर मिरजा जानीका अधिकार होजानेसे अपने नाना कच्छके राव भाराके पास रहा करता था बादशाहका प्रधारना सुनकर सेवामें उपस्थित हुआ। अमीर तैमूरके समयसे उसके पूर्वज अधीन रहते आये थे। इसलिये बादशाहने उसका पालन करना उचित समझकर खर्चके वास्ते दो हजार रुपये खिलअत सहित दिये।

फतहबागके अञ्जीर।

(माघ सुदी १४) गुरुवारको बादशाह फतहबागमें गुलाबकी बहार देखनेको गया जो एक क्यारीमें खूब फूला हुआ था। बादशाह लिखता है कि "गुलाब इस मुल्कमें कम होता है अञ्जीर भी पके हुए थे कई अपने हाथसे तोड़े। उनमेंसे एक बड़ा था वह तौलमें ७॥ तोलेका हुआ।"

कारेजके खरबूजे।

इसी दिन खाने आजमके भेजे कारेजके १५०० खरबूजे बादशाहके पास पहुंचे। बादशाहने १००० तो उन सेवकोंको दिये जो सेवामें उपस्थित थे और ५०० अन्तःपुरमें भेजे।

बादशाह चार दिन भोग विलासमें व्यतीत करके २४, (फागुन

बदी ३) चन्द्रवारको रात्रिको नगरमें आया और कारेजके कुछ खरबूजे अहमदाबादके बड़े बूढ़ोंको दिये। वह उनको खाकर अचम्भेमें रह गये कि दुनियामें ऐसी न्यामत भी होती है। क्योंकि बादशाहके कथनानुसार गुजरातमें खरबूजे बहुत खराब होते हैं।

गुजरातके अंगूर।

२७ (फागुन बदी ६) गुरुवारको बकोना नामक बागीचेमें बादशाहने प्यालेकी मजलिस जोड़ी, और निजसेवकोंको प्याले भर भर कर दिये। यह बागीचा राजभवनमें है किसी गुजराती बादशाहका लगाया हुआ था और इस समय एक क्यारीमें पके हुए दाख देखकर बादशाहने कह दिया कि जिन बन्दोंने प्याले पिये हैं वह अपने हाथसे तोड़ तोड़कर दाखोंका भी स्वाद लें।

अहमदाबादसे मालवेको लौटना।

१ असफन्दार (फागुन बदी ८) चन्द्रवारको अहमदाबादसे मालवेको कूच हुआ। बादशाह रुपये लुटाता हुआ कांकरिया ताल तक गया जहां डेरे लगे थे। वहां तीन दिन तक रहा।

मुकर्रबखांकी भेट।

४ (फागुन बदी १२) वृहस्पतिवारको मुकर्रबखांकी भेट हुई। बादशाह लिखता है कि कोई उत्तम पदार्थ न था जिसके लेनेकी रुचि मनमें होती। उसने इसी संकोचसे यह भेट अपने बेटोंको दी थी कि अन्तःपुरमें पहुंचा दें। मैंने एक लाख रुपयेके रत्न और रत्नजड़ित आभूषण लेकर शेष उसीको फेर दिये। कच्छी घोड़ोंमेंसे १०० लिये परन्तु कोई घोड़ा ऐसा न था कि जिसकी प्रशंसा की जावे।

रुस्तमखांको झंडा और नक्कारा।

५ असफन्दार शुक्रवार (फागुन सुदी १३) को ५ कोस चलकर अहमदाबादकी नदी पर डेरे हुए। बादशाहने रुस्तमखांको शाहजहांकी प्रार्थनाके अनुसार जो उसने उसे गुजरातकी सूबेदारी पर छोड़ते समय की थी झण्डा नक्कारा सिरोपाव और जड़ाऊ खञ्जर

इनायत किया। रुस्तमखां शाहजहांके मुख्य सेवकोंमेंसे था। बादशाह लिखता है कि इस राज्यमें यह प्रथा नहीं थी कि शाह-जादोंके सेवकोंको झण्डा और नक्कारा दिया जावे। मेरे पिताकी मुझ पर बहुत कृपा थी तो भी उन्होंने मेरे अनुचरोंके वास्ते कभी पदवी नक्कारे और झण्डे देनेकी चेष्टा नहीं की। परन्तु मुझे शाह-जहांसे इतना अधिक स्नेह है कि मैं लेशमात्र भी कभी उसकी मनोकामना पूर्ण करनेसे विमुख नहीं रहता हूं। वास्तवमें वह मेरा सपूत बेटा है और सम्पूर्ण कृपाओंका पात्र है। युवावस्था और राजलक्ष्मी प्राप्त होनेके पीछे जिधर उसने चढ़ाई की है उधर मेरी इच्छाके अनुसार लड़ाई जीती है।

इसी दिन मुकर्रबखांको घर जानेकी आज्ञा हुई।

बादशाहने क़ुतुबआलमकी कबर पर जाकर वहांके मुजावरोंको पांच सौ रुपये दिये।

६ असफन्दार शनिवार (फागुन बदी १४ तथा अमावस) को बादशाहने महमूदाबादकी नदीमें नाव पर जाकर मछलीका शिकार किया।

सैयद मुबारकका मकबरा।

इसी नदीके तट पर सैयद मुबारकका मकबरा उसके बेटे सैयद मीरांने दो लाख रुपयेसे अधिक लगाकर बहुत पक्का और ऊंचा बनाया था। बादशाह उसके विषयमें लिखता है कि गुजराती बादशाहोंके मकबरे जो देखे गये तो उनमें कोई इसका दशमांश भी नहीं है यद्यच वह देशाधिपति थे और यह नौकर था। श्रद्धा और साहस परमेश्वरका दिया हुआ होता है। सहस्रों धन्यवाद है ऐसे पुत्रको जिसने अपने पिताका ऐसा मकबरा बनाया है।

मछलीमें मछली।

रविवार (फागुन सुदी १) को भी वहीं डेरे रहे। चारसौ मछ-लियां शिकार हुईं। एक बिना छिलके की थी जिसे संगमाही कहते हैं। बादशाहने उसका पेट बहुत बड़ा देखकर चिरवाया

तो उसमेंसे एक छिलकेदार मछली निकली जो तुरन्त निगली हुई थी । संगमाही तोलमें ६॥ सेरकी और दूसरी २ सेरकी हुई ।

गुजरातकी वर्षा ।

८ सोमवार (फागुन सुदी ९) को बादशाह डेढ़ पाव चार कोस चलकर गांव मोदेके पास ठहरा । लोग गुजरातकी बरसातकी बहुत तारीफ करते थे पिछली रातसे दोपहर दिन तक कुछ मेह बरसा—धूल बैठ गई और बादशाहने यहांकी वर्षा भी देख ली ।

मंगलवारको ४॥ कोस कूच होकर जरीसमा गांवके पास डेरे लगे । यहां मानसिंह सेवड़ाके मरनेका समाचार मिला ।

मानसिंह सेवड़ा ।

बादशाह लिखता है कि सेवड़े हिन्दू नास्तिकोंमेंसे हैं जो सदैव नंगे सिर और नंगे पांव रहते हैं । उनमें कोई तो सिर और डाढ़ी मूछके बाल उखाड़ते हैं और कोई मुंड़ाते हैं । सिला हुआ कपड़ा नहीं पहनते । उनके धर्मका मूलमन्त्र यह है कि किसी जीवको दुःख न दिया जावे । बनिये लोग इनको अपना गुरु मानते हैं दण्डवत करते हैं और पूजते हैं । इन सेवड़ोंके दो पन्थ हैं । एक तपा दूसरा करतल (खरतर) । मानसिंह करतलवालों का सरदार था और बालचन्द तपाका । दोनों सदा स्वर्गवासी श्रीमानकी सेवामें रहते थे । जब श्रीमानके स्वर्गारोहण पर खुसरो भागा और मैं उसके पीछे दौड़ा तो उस समय बीकानेरका जमीं-दार रायसिंह भुरटिया जो उक्त श्रीमानके प्रतापसे अमीरोंके पदको पहुंचा था मानसिंहसे मेरे राज्यकी अवधि और दिन दशा पूछता है और वह कलजीभा जो अपनेको ज्योतिषविद्या और मोहन मारण वशीकरणादिमें निपुण कहा करता था उससे कहता है कि इसके राज्यकी अवधि दो वर्षकी है । वह तुच्छ जीव उसकी बात का विश्वास करके बिना छुट्टीही अपने देशको चला गया । फिर जब पवित्र परमात्मा प्रभुने मुझ निज भक्तको अपनी दयासे सुशोभित किया और मैं विजयी होकर राजधानी आगरेमें उपस्थित हुआ तो

लज्जित होकर सिर नीचा किये हुए दरबारमें आया। शेष वृत्तान्त उसका अपनी जगह पर लिखा जाचुका है। और मानसिंह उन्हीं तीन चार महीनेमें कोढ़ी होगया। उसके अंग प्रत्यङ्ग गिरने लगे वह अबतक अपना जीवन बीकानेरमें ऐसी दुर्दशासे व्यतीत कर रहा था कि जिससे मृत्यु कई अंशोंमें उत्तम थी। इन दिनों में जो मुझको उसकी याद आई तो उसके बुलानेका हुक्म दिया उसको दरगाहमें लाते थे पर वह डरके मारे रास्तेमेंही जहर खाकर नरकगामी होगया।

अब मुझ भगवद्भक्तकी इच्छा न्याय और नीतिमें लीन हो तो जो कोई मेरा बुरा चेतेगा वह अपनी इच्छाके अनुसारही फल पावेगा।

सेवड़े हिन्दुस्थानके बहुधा नगरोंमें रहते हैं। गुजरात देशमें व्यापार और लेनदेनका आधार बनियों पर है इस लिये सेवड़े यहां अधिकतर हैं।

मन्दिरोंके सिवा इनके रहने और तपस्या करनेके लिये स्थान बने हुए हैं जो वास्तवमें दुराचारके आगार हैं। बनिये अपनी स्त्रियों और बेटियोंको सेवड़ोंके पास भेजते हैं लज्जा और शील-वृत्ति बिलकुल नहीं है। नाना प्रकारकी अनीति और निर्लज्जता इनसे होती है। इस लिये मैंने सेवड़ोंके निकालनेका हुक्म देदिया है और सब जगह आज्ञापत्र भेजे गये हैं कि जहां कहीं सेवड़ा हो मेरे राज्यमेंसे निकाल दिया जावे।

कच्छी घोड़ा।

१० बुधवार (फागुन सुदी ४) को दिलावरखांके बेटेने अपने बापकी जागीर पट्टनसे आकर एक सुन्दर कच्छी घोड़ा भेट किया। बादशाह लिखता है कि जबसे मैं गुजरातसे आया हूं ऐसा अच्छा घोड़ा कोई मनुष्य भेटमें नहीं लाया था एक हजार रुपयेका था।

सेवकों पर कृपा।

११ गुरुवार (फागुन सुदी ५) को उसी तालाबके तट पर प्यालों की मजलिस जुड़ी। बादशाहने शुजाअतखां, सफीखां आदि कई

सेवकोंको जो इस सूबेके कामों पर नियत थे घोड़े सिरोपाव और गहना देकर बिदा किया। कईके मनसब भी बढ़ाये गये।

कुतुबुलमुल्कके वकीलको जो उसकी भेट लेकर आया था तीस हजार दरब मिले।

अनार और बिही।

इसी दिन शाहजहांने बिही और अनार जो फराह†से उसके वास्ते लाये गये थे भेट किये। बादशाह लिखता है कि अबतक इतने बड़े अनार नहीं देखे थे बिही तो तोलमें २८ तोला ८ माशा और अनार ४०॥ तोलेके हुए।

शेखोंको उपहार।

१६ सोमवार (फागुन सुदी ८) को बादशाहने गुजरातके शेखों को जो पहुंचाने आये थे फिर सिरोपाव खर्च और भूमि देकर बिदा किया और हरेकको एक एक धर्मपुस्तक भी निज पुस्तकालयसे दी जिनकी पीठ पर अपने गुजरातमें आने और पुस्तक देनेकी मिती लिखदी।

बादशाह लिखता है—"इस समय जबतक अहमदाबाद मेरी सवारीके उतरनेसे शोभायमान रहा दिन रात मेरा यही काम था कि सुपात्रोंको अपनी आंखोंसे देखकर धन और पृथिवी प्रदान करूं। शेख अहमद सदर (दानाध्यक्ष) और दूसरे कई मिजाजदां सेवक नियत कर दिये गये थे कि फकीरों और हकदारोंको मेरी सेवामें लाते रहें। तोभी शेख मुहम्मदगौसके बेटों, शेख वजीहुद्दीनके पोते और दूसरे सभायरख को भी हुक्म देदिया था कि उनके जाननेमें जहां कहीं कोई हकदार हो उसको खिदमतमें हाजिर करें। ऐसेही महलमें कई स्त्रियां इसी काम पर लगाई हुई थीं कि दीन और दरिद्री अबलाओंको मेरे पास लाया करें। क्योंकि यह उद्देश्य संपूर्ण रूपसे था कि जब बहुत वर्षोंके पीछे मुझ जैसा बादशाह इस देशके गरीबोंके भाग्यसे

† खुरासानका एक नगर।

यहां आगया हो तो चाहिये कि कोई भी विमुख न रहे। खुदा गवाह है कि इस उद्योगमें मैंने कोई कसर नहीं रखी है और किसी समय भी इस कामके करनेसे निश्चिन्त नहीं बैठ रहा हूं। यद्यपि अहमदाबादमें आनेसे कुछ हर्ष नहीं हुआ है तो भी अपने आनेसे मनको इस अनुभवसे प्रसन्न रखता हूं कि मेरा आना दीन दरिद्रोंके एक बड़े भुण्डको जीविकाका हेतु हुआ है और बहुत लोग निहाल होगये हैं।

कोकबको विचित्र घटना।

१६ मंगलवार (फागुन सुदी १०) को कमरखांका बेटा और और अबदुललतीफ कजवीनीका पोता कोकब पकड़ आया। यह पीढ़ियोंका नौकर था दक्षिणकी सेनामें संयुक्त था। कई दिन तक वहां खर्चसे तंग रहा और इसके अतिरिक्त बहुत वर्षों तक मनसब में कुछ भी वृद्धि नहीं हुई थी इस लिये बादशाहकी कृपा न होनेके भ्रमसे विरक्त होकर बुरहानपुरसे निकल गया और ६ महीने तक दक्षिणके सब देशोंमें दौलताबादसे बिदुर बीजापुर करनाटक और गोलकुण्ड पर्य्यन्त फिरकर दाबुल बन्दरमें गया। वहांसे नावमें बैठकर बन्दर गोवेमें आया। सूरत बन्दर भड़ौच और मार्गकी दूसरी बस्तियोंको देखता हुआ अहमदाबादमें आया था कि शाह-जहांका एक नौकर जाहिद उसको पकड़कर दरगाहमें लाया। बादशाहने देखकर पूछा कि तुमने वंशपरम्परासे सेवामें रहने पर भी ऐसा कपूतपन क्यों किया? उसने अर्ज की कि सतगुरु और सच्चे स्वामीकी सेवामें असत्य नहीं कहा जाता। सत्य यह है कि पहले तो कृपाभिलाषी था परन्तु जब भाग्य अनुकूल न हुआ तो घर छोड़कर जंगलको निकल गया। बादशाह लिखता है कि उस की वाणीकी सत्यता मेरे दिलमें खुब गई और मैंने क्रूरता छोड़कर पूछा कि इस भ्रमणमें तूने आदिलखां, कुतुबुलमुल्क और अंबरको भी देखा था? उसने सविनय कहा—जब मेरे प्रारब्धने इस दरगाहमेंही सहायता न की और अपार समुद्र रूपी

सब राज्यमें भी मेरी प्यास नहीं बुझी तो मैं उन छोटे नालों खोलों में अब होंठ डबोनेवाला था। वह मस्तकही छिद जाय कि जो इस दरगाहमें न झुकाकर दूसरी जगह झुके ।

मैं जिस दिनसे निकला हूं आजतकको दिनचर्य्या एक बहीमें लिखता रहा हूं। उससे मेरा वृत्तान्त विदित होजावेगा ।" उसका यह कहना और भी क्षपाका कारण हुआ। मैंने उसके लेखोंको मंगाकर पढ़ा तो ज्ञात हुआ कि इस पर्यटनमें उसको बहुत कष्ट हुआ है। बहुधा पैदल फिरा है। खाना भी नहीं मिला है। इससे मेरा मन उस पर मेहरबान हुआ। दूसरे दिन मैंने अपने सम्मुख बुलाकर उसके हाथ पांवकी बेड़ियां खुलवा दीं। खिलअत घोड़ा और १०००) खर्चके वास्ते देकर उसका मनसब पहलेसे ड्योढ़ा कर दिया। उसके ऊपर इतनी क्षपा और अनुग्रह की जिसका उसको कभी ध्यान भी न हुआ था ।

काश्मीरकी मरी ।

१७ बुधवार (फागुन सुदी ११) को ६ कोस चलकर गांव बारासिनोरमें कम्प लगा। काश्मीरकी मरीके विषयमें तो पहले लिखा ही गया। इस दिन वहांके समाचारलेखककी विनयपत्रिका पहुंची कि इन देशोंमें मरीका बड़ा जोर है। बहुतसे मनुष्य इस प्रकारसे मरते हैं कि पहले दिन सिरमें पीड़ा और ज्वर होता है नाकसे लहू बहुत निकलता है। दूसरे दिन प्राण निकल जाता है। जिस घरमें एक मनुष्य मरता है फिर उस घरके सब प्राणी मर जाते हैं। जो कोई रोगी या मृतकके पास जाता है वह भी रोगग्रस्त होजाता है। एक मनुष्य मर गया था उसको घासके ऊपर रखकर धोया था। एक गायने वह घास खाई और मर गई। उसका मांस कई कुत्तोंने खाया वह भी सब मरगये। यहांतक होगया है कि मरनेके भयसे बेटा बापके और बाप बेटेके पास नहीं जाता है। अनोखी बात यह है कि जिस बस्तीसे यह रोग फैला था वहां तीन हजार घर जल गये। इस विपदके पीछे तड़केही जो नगर

गांवों और आसपासके लोग उठे तो क्या देखते हैं कि घरोंके द्वारों पर एक लंबी चौकोरकी शकल बनी है २ बड़े चक्र एक दूसरेके सामने, २ चक्र मझोले एक चक्र छोटा और फिर दूसरे चक्र जिन के बीचमें सफेदी नहीं थी। यह शकलें सब घरोंमें होगई थीं और मसजिदोंमें भी। कहते हैं कि तभीसे मरीमें भी न्यूनता होगई है। बादशाह लिखता है कि यह वृत्तान्त बहुत विचित्र था इस लिये लिख दिया है परन्तु मेरी बुद्धि इसको स्वीकार नहीं करती है।

राजा जाम।

१८ गुरुवार (फागुन सुदी १२) को २॥ कोस चलकर मही नदी के तट पर ठहरना हुआ। बादशाह लिखता है—इस दिन जमीं-दार जामने जमीन चूमकर ५० घोड़े १०० मुहरें और १०० रुपये भेट किये। इसका नाम जस्सा है जाम पदवी है जो कोई गद्दी पर बैठता है उसको जाम कहते हैं। यह गुजरात देशके बड़े नामी जमींदारोंमेंसे है। इसका देश समुद्रसे मिला हुआ है पांच छः सहस्र सवार सदा अपने समीप रखता है। काम पड़ने पर दस हजार तक ला सकता है। इसकी विलायतमें घोड़े बहुत होते हैं कच्छी घोड़ा दो हजार तकका होता है। मैंने इस राजा को सिरोपाव दिया।

कूचविहारका राजा,

इसी दिन कूचके राजा लक्ष्मीनारायणने जो बंगालके कोनेमें है बादशाही चौखटको चूमकर ५०० मुहरें नजर कीं, खिलअत और जड़ाऊ खंजर पाया।

सईदखांका बेटा नवाजिशखां जो जूनागढ़का हाकिम था उप-स्थित होकर जमीन चूमनेके सौभाग्यको प्राप्त हुआ।

१९ शुक्रवार (फागुन सुदी १३) को मुकाम रहा। २० शनि-वारको ३॥ कोस चलकर झनूदके तालाब और २१ रविवारको ४॥ कोस पर बदरवालेके तालाब पर मुकाम हुआ। यहां अजमतखां

गुजरातीके मरनेका समाचार अहमदाबादसे आया। अच्छा सेवक और गुजरातकी व्यवस्थाका पूरा ज्ञाता था। इससे बादशाहका चित्त उदास हुआ।

लजवन्ती।

बादशाह लिखता है कि इस तालमें एक दूब देखी गई जिसके परो उंगली या लकड़ीकी नोक लगतेही सुकड़ जाते हैं और कुछ देर पीछे फिर खिल जाते हैं। यह इमलीके पत्तोंसे मिलते हुए होते हैं। इसका नाम अरबी भाषामें लज्जाका वृक्ष है हिन्दीमें लजवन्ती कहते हैं। यह भी अनोखी है और नाम भी अनोखा है।

सिंहका शिकार।

२२ सोमवार (चैत्र बदी १) को वहीं मुकाम रहा। बादशाह ने बन्दूकसे एक बड़ा शेर मारा जो ७॥ मनका था। वह इससे भी बड़े बड़े बहुत मार चुका था। जो माण्डोंगढ़में मारा था वह ८॥ मनका था।

२३ (मंगलवार) को ३॥ कोस चलकर बायव नदी और २४ बुधवारको ६ कोसके लगभग हसदहके तालाब पर मुकाम हुआ। २५ को वहां प्यालेकी मजलिस हुई। प्याले देकर निज सेवकों का मान बढ़ाया गया।

नवाजिशखां पांच सदी जातके बढ़नेसे तीन हजारी जात दो हजार सवारका मनसब और हाथी सिरोपाव पाकर अपनी जागीर को बिदा हुआ।

बलखके घोड़े।

मुहम्मदहुसेन सबजक घोड़े खरीदनेके लिये बलखको भेजा गया था। उसने इसी दिन आकर ड्योढ़ी चूमी। उसके लाये हुए घोड़ोंमेंसे एक अबरश घोड़ा बादशाहको बहुत पसन्द आया। वैसा सुरंग और सुडौल घोड़ा अबतक उसने नहीं देखा था। वह और भी कई राहवार घोड़े अच्छे लाया था। बादशाहने उसको तिजारतखांकी पदवी दी।

कूचका राजा।

२६ शुक्रवार (चैत्र बदी ५) को ५॥ कोस पर गांव जालोदमें डेरे हुए। बादशाहने कूचनरेशके चचा लक्ष्मीनारायणको जिसे अब गुजरातका मुल्क दिया गया था घोड़ा दिया।

लंगूरका बच्चा और बकरी।

२८ रविवार (चैत्र बदी ७) को बादशाह पांच कोस चलकर कसबे दोहदमें ठहरा जो गुजरात और मालवेकी सीमा पर है। यहां पहलवान बहाउद्दीन बरकन्दाजने एक लंगूरका बच्चा बकरीके साथ लाकर प्रार्थना की कि रास्तेमें मेरे एक निर्दयी तोपचीने किसी वृक्ष पर लंगूरनीको गोदमें बच्चा लिये देखकर बन्दूक मारी। लंगूरनी गोली लगतेही बच्चेको एक डाली पर छोड़कर गिर पड़ी और मर गई। मैं उस बच्चेको उतारकर इस बकरीके पास लेगया। परमेश्वरने बकरीके दिलमें दया उपजाई वह उसको चाटने लगी और विभिन्न जाति होने पर भी इसको लंगूरके बच्चेसे ऐसा मोह होगया है कि जैसे पेटका बच्चा हो।

बादशाह लिखता है—"मैंने बच्चेको बकरीसे अलग कराया तो वह व्याकुल होकर चिल्लाने लगी। उधर बच्चा भी बहुत घबराया। लंगूरके बच्चेका मोह तो जो दूध पीनेसे है उतना अधिक विस्मय-जनक नहीं है जितना बकरीका मोह लंगूरके बच्चेके साथ होनेसे होता है और इसी आश्चर्यसे यह बात लिखी गई है।"

२९ सोम और ३० मंगल (चैत्र बदी ८ और ९) को भी वहीं डेरे रहे।

इति प्रथम भाग समाप्त।

बादशाहकी आज्ञा।

"मैंने आज्ञा की कि इस बारह वर्षके वृत्तान्तका एक ग्रन्थ बनाकर कई प्रतियां तैयार करें जिन्हें मैं निज सेवकोंको दूं और समग्र देशोंमें भेजूं और राजवर्गीय तथा विद्वान लोग इसको अपने कामोंका पथदर्शक बनावें।"